चेतन भगत
वन
इंडियन
गर्ल

वन इंडियन गर्ल

चेतन भगत ने सात बेस्टसेलिंग किताबें लिखी हैं, जिनकी अब तक एक करोड़ से ज़्यादा प्रतियाँ बिक चुकी हैं और दुनियाभर की एक दर्जन से अधिक भाषाओं में उनका अनुवाद हो चुका है।

वर्ष 2008 में 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने उन्हें 'भारत के इतिहास में सबसे ज़्यादा बिकने वाला लेखक' बताया था और वे अभी तक अपनी उस हैसियत को कायम रखे हुए हैं। उनकी लगभग सभी किताबों पर बॉलीवुड द्वारा हिट फिल्में बनाई जा चुकी हैं। चेतन एक फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त पटकथा–लेखक भी हैं।

टाइम पत्रिका उन्हें 'दुनिया के सर्वाधिक प्रभावशाली सौ लोगों' की फेहरिस्त में शामिल कर चुकी है और अमेरिका की 'फास्ट' कंपनी ने उन्हें 'दुनिया के शीर्ष सौ रचनात्मक लोगों' में से एक माना है। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' और 'दैनिक भास्कर' में छपने वाले उनके कॉलम आज भारत के सबसे ज़्यादा पढ़े जाने वाले और अपनी एक खास छाप छोड़ने वाले स्तंभों में से हैं। वे एक प्रमुख मोटिवेशनल स्पीकर भी हैं और टीवी पर कई कार्यक्रमों की मेजबानी भी कर चुके हैं।

चेतन ने आईआईटी दिल्ली और आईआईएम अहमदाबाद से पढ़ाई की है। एक दशक तक इंवेस्टमेंट बैंकिंग में काम करने के बाद उन्होंने लेखन को पूरा समय देने के लिए उसे अलविदा कह दिया। वे मुंबई में अपनी पत्नी अनुषा और दो जुड़वां बेटों श्याम और ईशान के साथ रहते हैं।

Downloaded from Ebookz.in

सभी इंडियन गर्ल्स के लिए
खासतौर पर वे
जिनमें सपने देखने और
ज़िंदगी को अपनी शर्तों पर जीने
का साहस है

और उन तमाम औरतों के लिए भी
जो शामिल हैं मेरी ज़िंदगी में[*]

[*]*बावजूद इसके कि मेरा होना कभी-कभी उनके लिए मुसीबत का सबब तक रहा*

Downloaded from Ebookz.in

आभार

हाय ऑल,

इस किताब के लिए अपना योगदान देने वाले हर एक शख्स का शुक्रिया अदा कर पाना तो ख़ैर मेरे लिए मुमकिन नहीं होगा। मेरी ज़िंदगी में आने वाली हर औरत ने किसी-न-किसी रूप में अपनी भूमिका निभाई है। आप सभी यह जानती हैं, लिहाज़ा अगर मैं हमेशा की तरह आपका नाम लेना भूल जाऊँ तो इसके लिए मुझे माफ कर दीजिएगा।

मैं इन लोगों का शुक्रिया अदा करना चाहूँगा:

ईश्वर, जिसने मुझे इतना कुछ दिया।

शाइनी एंटनी, मेरी एडिटर, दोस्त और गाइड। वह शुरुआत से मेरा साथ दे रही हैं और आज भी मेरी किताबों की सबसे पहली पाठक वे ही होती हैं।

मेरे पाठक, जिन्होंने मुझे इतना प्यार दिया। आपके ही कारण मैं आज वह कर पा रहा हूँ, जो मैं हमेशा से करना चाहता था : कहानियाँ सुनाना।

वे तमाम सौ के करीब औरतें, जिनसे मैंने इस किताब के सिलसिले में बात की। सर्बियन डीजे की लड़कियाँ, इंडिगो फ्लाइट अटेंडेंट्स, उन तमाम होटलों के स्टाफ की लड़कियाँ, जहां मैं ठहरा, मोटिवेशनल टॉक्स के दौरान मुझे मिले अनगिनत चेहरे, हवाई जहाज़ों में मिले हमसफर, तमाम लोग। एक वक्त था, जब मैं मुझसे मिलने वाली हर औरत से इस किताब के बारे में बात करता था। उन सभी का शुक्रिया कि उन्होंने मुझसे खुलकर बात की और अपने अहसासों को मुझसे बाँटा। यह किताब उनके बिना मुमकिन नहीं हो सकती थी।

अल्फाबेटिकली अगर एक-एक कर नाम लूँ तो - आभा बकाया, अदिति प्रकाश, अलीशा अरोरा, अमित अग्रवाल, एंजेला वांग, अनुभा बंग, अनुषा वेंकटाचलम, आयशा रावल, अवनि झुनझुनवाला, भक्ति भट, इरा त्रिवेदी, जेसिका रोसेनबर्ग, करुणा सुग्गु, क्रिशन परमार, कुशान पारिख, मेघना राव, मिशेल शेट्टी, निभा भंडारी, प्रतीक धवन, रचिता चौहान, रीमा परमार, शालिनी राघवन, विरली पंचमिया, विविता रेलान, जितिन धवन - आप सभी का मुझे प्रेरणा देने, मेरा सहयोग करने और समय-समय पर इस किताब और मेरी ज़िंदगी के बारे में फीडबैक देने के लिए बहुत शुक्रिया।

रूपा प्रकाशन के एडिटर्स, जो मेरी किताबों को और बेहतर बनाने के लिए जुटे रहते हैं। उनके सेल्सपर्सन्स, रिटेलर्स, ऑनलाइन डिलेवरी बॉय और गर्ल्स, जो घर-घर तक मेरी किताबें पहुँचाते हैं : आप सभी का शुक्रिया।

मेरे आलोचक : जो मुझे और बेहतर बनाने और मेरे गुरूर को काबू में रखने में मददगार होते हैं।

मेरी माँ रेखा भगत, जो मेरी ज़िंदगी में आने वाली पहली औरत हैं। अनुषा भगत, मेरी पत्नी। बहुत शुक्रिया।

मेरे बच्चे : जिन्होंने अपने डैड को थोड़ा कम पाकर उसे थोड़ा और लेखक बनने की इजाज़त दी।

मेरी एक्सटेंडेड फैमिली। मेरा भाई, केतन। मेरे इन-लॉज़। कजिन्स। वे तमाम लोग, जिन्होंने मुझे अपना प्यार दिया है।

इसी के साथ, अब वक्त आ गया है कि हम ‘वन इंडियन गर्ल’ की कहानी शुरू करें!

Downloaded from Ebookz.in

प्रस्तावना

कुछ लोग ज़िंदगी में हमेशा बेहतर फैसले लेने के लिए जाने जाते हैं, मैं उनमें से नहीं हूं। कुछ लोग रात को जल्दी सो जाते हैं, मैं उनमें से भी नहीं हूं। अभी सुबह के तीन बज रहे हैं और मैं पिछले दो घंटे से बिस्तर में करवटें बदल रही हूं। पंद्रह घंटे बाद मेरी शादी होने वाली है। कोई दो सौ मेहमान मेरी शादी में शरीक होने के लिए यहाँ गोवा के इस आलीशान होटल में आए हैं। मैं ही उन सबको यहाँ लाई हूँ। सभी बहुत एक्साइटेड हैं। आखिर यह मेहता फैमिली की पहली डेस्टिनेशन वेडिंग जो है।

मैं दुल्हन हूँ। मुझे अपनी 'ब्यूटी स्लीप' लेनी चाहिए, लेकिन मेरी आँखों में नींद नहीं है। दरअसल, ऐन इस वक्त मुझे जिस एक चीज़ की सबसे कम परवाह है, वह मेरी ब्यूटी ही है। मेरे दिमाग में केवल एक ही चीज़ घूम रही है और वो ये कि इस बखेड़े से बाहर कैसे निकला जाए। क्योंकि जैसा कि मेरे साथ अकसर होता है, मैं फिर से एक ऐसी स्थिति में हूँ, जहाँ मुझे ही नहीं पता कि आखिर यह सब हो क्या रहा है!

Downloaded from Ebookz.in

विषय-सूची

1
2
3
4
न्यूयॉर्क
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
हांगकांग
22
23
24
25
26

27
28
29
30
31
32
लंदन
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42

Downloaded from Ebookz.in

1

‘रूम नहीं हैं? क्या मतलब कि रूम नहीं हैं?’ मैंने गोवा मैरियट के लॉबी मैनेजर अरिजित बनर्जी से कहा।

‘देखिए मैं आपको यह समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि...’ अरिजित ने अपनी नपी-तुली आवाज़ में बोलना शुरू ही किया था कि मॉम ने उसे बीच में टोक दिया।

‘ये मेरी बेटी की शादी है। क्या आप हमारी नाक कटवाओगे?’ उन्होंने इतनी ऊँची आवाज़ में कहा कि रिसेप्शन स्टाफ के बाकी के तमाम लोग चौंक गए।

‘नो मैम, केवल 20 रूम्स की शॉर्टेज है। आपने सौ रूम्स बुक कराए थे, लेकिन हमने तब भी 80 रूम्स देने का ही प्रॉमिस किया था। हम आपको और भी रूम देना चाहते थे, लेकिन चीफ मिनिस्टर के फंक्शन के कारण...’

‘लेकिन हम अपने गेस्ट्स को क्या बोलें, जो अमेरिका से यहाँ आ रहे हैं?’ मॉम ने कहा।

‘मैं तो सजेस्ट करूंगा कि यहां से दो किलोमीटर दूर एक और होटल है, ’ अरिजित ने कहा।

‘हम सब लोग यहाँ एक साथ ही रहेंगे। तुम एक सरकारी फंक्शन के लिए मेरी बेटी की शादी खराब कर दोगे क्या!’ मॉम ने कहा। उनकी साँसें फूलने लगी थीं, जो कि आने वाले तूफान का साफ इशारा था।

‘मॉम, आप प्लीज़ डैड के पास जाकर बैठो, मैं इधर संभाल लूँगी, ’ मैंने कहा। माँ ने घूरकर मेरी ओर देखा। मैं दुल्हन थी। मैं ये सारे काम कैसे संभाल सकती थी! मुझे तो रूम्स के बजाय अपने फेशियल की फिक्र करनी चाहिए।

‘लड़के वाले तीन घंटे में यहाँ पहुँच रहे हैं। मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा है कि यहाँ हो क्या रहा है, ’ उन्होंने लॉबी के बीचोबीच रखे सोफे की तरफ जाते हुए बड़बड़ाते हुए कहा। मेरे पिता वहाँ पर अपनी बड़ी बहन कमला बुआ के साथ बैठे थे। लॉबी के बाकी काउचेस पर दूसरे अंकल और आंटी जमकर बैठे थे। मैरियट पर मेहताओं का कब्ज़ा हो चुका था! माँ ने मेरे पिता को भी तनिक घूरकर देखा, जिसका मतलब यह था कि तुम कभी किसी मामले में खुद कुछ करोगे या नहीं!

पिता पलटकर बैठ गए। मैं फिर लॉबी मैनेजर की ओर मुखातिब हुई।

‘क्या किया जा सकता है, अरिजित? मेरी पूरी फैमिली यहाँ पर है।’ मैंने कहा।

हम दिल्ली से सुबह की फ्लाइट से आए थे। गुलाटी परिवार, यानी लड़के वाले, मुंबई से 3 बजे उड़कर 4 बजे गोवा पहुँचने वाले थे। उन्हें 5 बजे तक होटल ले आने के लिए 20 इनोवा हायर की गई थीं। मैंने टाइम चेक किया : ढाई बज चुके थे।

'देखिए मैम, हमने मेहता-गुलाटी वेडिंग के लिए एक स्पेशल डेस्क सेट की है और अभी हम आपके फैमिली मेम्बर्स के लिए ही चेक-इन कर रहे हैं, ' अरिजित ने कहा।

उसने लॉबी के एक कोने की ओर इशारा किया, जहां मैरियट स्टाफ की तीन लड़कियाँ चेहरे पर परमानेंट स्माइल लिए बैठी थीं। वे सभी का हाथ जोड़कर स्वागत कर रही थीं। हर गेस्ट का सीपियों की माला पहनाकर स्वागत किया जाता और उन्हें रूम की चाबियाँ, मैरियट गोवा का नक्शा और एक वेडिंग इंफॉर्मेशन बुकलेट दी जाती। बुकलेट में आने वाले सप्ताह का पूरा कार्यक्रम लिखा होता, जिसमें सेरेमनीज़ के समय-स्थान वगैरह की सूचनाएँ होतीं।

'हमारी साइड के लोग 50 रूम्स लेंगे तो गुलाटीज़ को भी इतने ही रूम्स लगेंगे।' मैंने कहा।

'मैम, यदि आप 50 रूम्स ले लेंगी तो हमारे पास उनके लिए 30 रूम्स ही रह जाएँगे, ' अरिजित ने कहा।

'सूरज कहाँ है?' मैंने कहा। सूरज मूनशाइन इवेंट्स का ओनर था, हमने इसी इवेंट मैनेजर को शादी के लिए अप्वॉइंट किया था। 'हम आखिरी वक्त में कुछ मैनेज कर लेंगे, ' ऐसा उसने मुझसे कहा था।

'एयरपोर्ट पर, ' अरिजित ने जवाब दिया।

मेरे पिता रिसेप्शन डेस्क पर पहुँचे और पूछा : 'सब ठीक तो है ना, बेटा!'

मैंने उन्हें पूरी सिचुएशन समझाई।

'30 रूम्स! गुलाटीज़ के साथ 120 गेस्ट्स हैं।' उन्होंने कहा।

'एग्जैक्टली!' मैंने अपने हाथ पटकते हुए कहा।

अब मॉम और कमला बुआ भी रिसेप्शन डेस्क पर आ गए। कमला बुआ ने कहा : ' मैंने सुदर्शन से पहले ही कहा था, गोवा में क्या रक्खा है? दिल्ली में मैरिज हॉल और फार्म हाउसेस का कोई टोटा है क्या! लेकिन लगता है तुम लोगों के पास फिज़ूलखर्ची करने के लिए बहुत सारा पैसा है!'

मैं उन्हें पलटकर जवाब देना चाहती थी, लेकिन माँ ने मुझे एक 'मदर लुक' दी तो मैं चुप रही।

आखिरकार वे हमारी मेहमान हैं, मैंने खुद को दिलासा दिया और एक लंबी साँस छोड़ी।

'हमारी तरफ से कितने मेहमान हैं?' माँ ने पूछा।

'मेहता फैमिली की तरफ से 117 गेस्ट्स हैं, ' अरिजित ने अपनी रिजर्वेशन शीट में से गिनती करते हुए कहा।

'यदि हम 80 लोग होते तो दोनों साइड के लोग एडजस्ट कर लेते, ' मैंने कहा। 'लेकिन अब तो कहीं और जाना होगा। मेहताज़ के लिए चेक-इन फौरन बंद कर दो।'

अरिजित ने कोने में बैठी स्माइल करने वाली लड़कियों को इशारा किया। उन्होंने स्माइल करना बंद कर दिया और चेक-इन्स रोकते हुए सीपियों की माला अपनी दराजों में रखने लगीं।

'लेकिन हम लड़के वालों के लिए कमरों की संख्या कम कैसे कर सकते हैं?' माँ ने शॉक्ड आवाज़ में कहा।

'हमारे पास कोई और चारा नहीं है।' मैंने कहा।

'उन्हें कितने रूम्स की उम्मीद थी?' उन्होंने पूछा।

'पचास।' मैंने कहा। 'उन्हें अभी फोन लगाओ। वे यहाँ तक आने से पहले री-एडजस्ट कर लेंगे।'

'लेकिन हम लड़के वालों से एडजस्ट करने को कैसे बोल सकते हैं?' कमला बुआ ने कहा। 'अपर्णा, आर यू सीरियस?'

माँ ने कमला बुआ और मेरी तरफ देखा।

'लेकिन हम केवल 30 रूम्स में कैसे मैनेज करेंगे?' मैंने कहा और अपने पिता की ओर मुड़ते हुए उनसे बोली, 'डैड, उन्हें अभी फोन लगाओ!'

'सुदर्शन, उनके यहाँ पहुँचने से पहले ही उनकी इनसल्ट मत करो।' कमला बुआ ने कहा। 'हम 30 कमरों में ही मैनेज कर लेंगे। ठीक है। हममें से कुछ लोग फर्श पर सो जाएँगे।'

'किसी को भी फर्श पर सोने की ज़रूरत नहीं है, बुआ।' मैंने कहा। 'आई एम सॉरी कि ऐसे हालात बन रहे हैं। लेकिन अगर हमारे पास 80 रूम्स हैं, तो सीधा हिसाब यही है कि एक रूम में तीन लोग रहेंगे। फिर इतने सारे बच्चे भी आ रहे हैं, तो कोई दिक्कत नहीं होगी।'

'हम 30 में ही मैनेज कर लेंगे।' माँ ने कहा।

'मॉम, तब हमें एक रूम में चार लोगों को एडजस्ट करना होगा, जबकि गुलाटीज़ के पास इतना सारा स्पेस होगा। उन्हें बता देते हैं।'

'नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते।' माँ ने कहा।

'क्यों?'

'अरे वो लड़के वाले हैं, तुम्हें क्या इतनी बात समझ नहीं आती?'

मैं अपनी ही शादी में हार का सामना नहीं करना चाहती थी। ख़ासतौर पर उन लोगों के यहाँ पहुँचने के एक घंटे के भीतर ही। लिहाजा मैंने अपने पिता से कहा, 'डैड, ये कोई बड़ी बात नहीं है। उनकी फैमिली हमारी बात को समझ जाएगी। आखिर हम लोग यहाँ पर पूरे छह दिनों के लिए हैं। हमें बहुत दिक्कत हो जाएगी।'

ज़ाहिर है, डैड ने कुछ नहीं सुना। उनकी पत्नी और उनकी बहन, ये दो औरतें उन्हें रिमोट से चलाती थीं। और ऐसा पहली बार हो रहा था कि वे दोनों किसी बात पर सहमत

थीं।

‘बेटा, ये रस्मो-रिवाज़ हैं। तुम अभी नहीं समझतीं। हमें उन लोगों का ख्याल रखना होगा। हमेशा लड़की वालों से ही उम्मीद की जाती है कि वे एडजस्ट करेंगे।’

मैंने और पाँच मिनट तक बहस की, लेकिन जब कोई नतीजा निकलता नज़र नहीं आया तो मैंने हार मान ली। हम एडजस्टमेंट के बारे में बात करने लगे।

‘तुम और अदिति एक कमरे में हो जाना, ’ माँ ने मेरी बहन की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘नहीं, उसे अपने हसबैंड के साथ ही रहने दो। जीजू क्या सोचेंगे?’ मैंने कहा।

‘अनिल दूसरे जेंट्स के साथ एडजस्ट कर लेगा, ’ कमला बुआ ने कहा।

अगले बीस मिनटों तक ये दो औरतें 117 लोगों वाली मेहता फैमिली को 30 कमरों में एडजस्ट करने की प्लानिंग बनाती रहीं। उनके मानदंड बहुत अजीबोगरीब थे, जैसे रूम शेयर करने वालों को एक-दूसरे से नफरत नहीं होनी चाहिए (इसके लिए आपस में लड़ाई-फसाद वाले रिश्तेदारों को अलग-अलग ठहराया जाना था), या ऐसे लोगों को साथ नहीं रखा जाना था, जो एक-दूसरे की ओर आकर्षित हो सकते हों (इसके लिए मिक्स्ड जेंडर वालों को अलग रखा जाना था, फिर चाहे वे अस्सी साल से ऊपर के ही क्यों ना हों)। पाँच बच्चों को एक रूम में पैक किया जाना था, अकसर किसी बुज़ुर्ग के साथ। कमला बुआ, जो कि एक विधवा हैं, ने बहुत ही नाटकीय तरीके से कहा कि वे मेरे माता-पिता के कमरे में फर्श पर सो जाएँगी, जिस पर मेरे पिता को मजबूरन कहना पड़ा कि फर्श पर वे सोएँगे, वे उनके बेड पर सो सकती हैं। अरिजित लगातार कहता रहा कि वह रूम्स में एक्स्ट्रा बेड लगवा देगा। लेकिन फर्श पर सोने को तैयार एक पंजाबी बुआ के त्याग के सामने मैरियट होटल का एक्सट्रा बेड क्या चीज़ है!’

‘मैं तो रोटी और अचार खाकर ही अपना गुजारा कर लूँगी, ’ कमला बुआ ने कहा।

‘ये मैरियट है बुआ। यहाँ सभी के लिए काफी खाना है, ’ मैंने कहा।

‘मैं तो बस यूँ ही कह रही थी।’

‘इससे तो अच्छा होगा कि हम री-लोकेशंस पर ध्यान दें। हमें गुलाटीज़ के आने से पहले ही चेक-इन करना होगा, ’ मैंने कहा।

इस अफरातफरी के बीच मैं यह भूल ही गई कि मैं यहाँ किसलिए आई थी। मैं यहाँ अपनी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल देने को आई थी। मैं यहाँ वह करने आई थी, जो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं सोचा था कि मैं करूँगी : अरेंज्ड मैरिज!

मैं यहाँ हज़ार इंतजामों और बंदोबस्तों के बीच उलझी हुई थी। मैंने पलभर को ठहरकर सोचा कि महज़ एक हफ्ते के भीतर मेरी शादी हो जाएगी, एक ऐसे आदमी के साथ, जिसे मैं ठीक से जानती तक नहीं हूँ। फिर ताउम्र मुझे उसके साथ अपना घर, बिस्तर और ज़िंदगी साझा करनी होगी।

लेकिन मैं अभी तक इस सच का सामना क्यों नहीं कर पाई थी? इसके बजाय मैं चैट पर सूरज से उलझ क्यों रही थी?

मैं : रूम्स को लेकर बहुत प्रॉब्लम हुई, सूरज। यह ठीक नहीं है।

सूरज : सॉरी, रियली सॉरी। पोलिटिकल रीज़न्स थे! मैंने कोशिश की, सचमुच!

मैं : तुमने तो कहा था कि तुम रूम्स का इंतज़ाम करवा दोगे।

सूरज : हाँ, मैंने कहा था। लेकिन गोवा के सीएम को रूम्स की ज़रूरत आन पड़ी। मैरियट एक सीएम को तो मना नहीं कर सकता है ना।

मैं : अभी और कौन-कौन-सी चीज़ों पर इसी तरह से दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा?

सूरज : अब और कुछ नहीं होगा। मुंबई से इंडिगो लैंड कर चुकी है। हम गेस्ट्स को रिसीव करने जा रहे हैं। सी यू सून।

मैं मेहता-गुलाटी चेक-इन्स डेस्क पर पहुँची। मेरी फैमिली के सभी गेस्ट्स चेक-इन कर चुके थे। कुछ ने जरूर तीन-तीन लोगों के साथ रूम शेयर करने की बात पर मुँह बनाया, लेकिन अधिकतर को इससे कोई दिक्कत नहीं थी। माँ का कहना था कि मुँह बनाने वाले लोग वे ही थे, जो हमसे जलते थे। वे लोग, जो इस बात को अभी तक स्वीकार नहीं कर पा रहे थे कि हम एक ऐसे मुकाम पर पहुंच चुके थे कि गोवा में डेस्टिनेशन वेडिंग कर सकें। वहीं माँ के मुताबिक, जो लोग चुपचाप राज़ी हो गए थे, ये वे लोग थे, जो समझते थे कि लड़की वालों को तो हमेशा झुकना ही पड़ता है।

'मेरे सामने ये लड़के वाले-लड़की वाले मत किया कीजिए, मुझे पसंद नहीं, ' मैंने कहा। मॉम और मैं लॉबी में बैठे थे और यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहे थे कि होटल स्टाफ ने गुलाटीज़ के लिए स्पेशल चेक-इन डेस्क तैयार कर रखी है या नहीं।

'क्या तुम एक हफ्ते के लिए अपना यह फेमिनिज़्म का झंडा फहराना बंद सकती हो? यह शादी है, कोई एनजीओ एक्टिविस्ट वेन्यू नहीं है, ' माँ ने कहा।

'लेकिन...'

'मैं जानती हूँ कि ये पूरा खर्चा तुम ही उठा रही हो, फिर भी रीति-रिवाजों का लिहाज़ तो करना ही होता है।'

'लेकिन ये रीति-रिवाज़ जेंडर डिस्क्रिमिनेशन से भरे हुए हैं!'

'तुमने अपने पार्लर की अप्वॉइंटमेंट्स चेक की या नहीं। अदिति भी पूरे सात दिनों तक हेयर-डू और मेकअप चाहती थी।'

जब भी माँ किसी बात का जवाब नहीं देना चाहती थी तो वो इसी तरह से बातचीत का रुख मोड़ दिया करती थी।

'हाँ, अदिति दीदी बिलकुल ऐसा ही चाहती हैं, ' मैंने कहा।

'तो जाओ और चेंज कर लो, ' मॉम ने कहा।

‘क्या!’

‘तुम ये जींस और टी-शर्ट में लड़के वालों से मिलोगी? और अपने गले को तो देखो।’

‘आपने फिर लड़के वाले कहा! और मेरे गले में क्या खराबी है?’

‘तुमने कोई ज्वेलरी नहीं पहनी है! जाओ, जाकर सलवार-कमीज़ पहन लो और मेरे ज्वेलरी बॉक्स से लेकर एक चेन गले में डाल लो।’

‘मैं अभी-अभी यहाँ आई हूँ और तभी से गेस्ट्स के लिए रूम्स के अरेंजमेंट में लगी हुई हूँ। अभी मुझे बन-ठनकर रहने की क्या ज़रूरत है? क्या लड़का भी फ्लाइट से उतरने के बाद सज-सँवरकर यहाँ पर आएगा?’

मेरी माँ ने हाथ जोड़ लिए। जब उनके तमाम तर्क नाकाम हो जाते, तो वे यही करतीं। अजीब बात है कि अकसर उनकी यह जुगत कामयाब भी रहती थी।

मैं हार मानकर उठ खड़ी हुई। उन्होंने मुझे अपने और मेरे रूम की चाबियाँ थमाईं। मैं पहले उनके रूम में गई और उनके ज्वेलरी बॉक्स से एक सबसे पतला सोने का हार निकाला। मैं यह सब करने के लिए क्यों राज़ी हो रही हूँ, नेकलेस पहनते समय मैंने सोचा। शायद इसलिए कि मैं चीज़ों को अपनी तरह से करके कामयाब नहीं हो पाई। वीमन एम्पॉवरमेंट और फेमिनिज़म की तमाम बातों से मुझे कुछ भी हासिल नहीं हुआ। शायद कमला बुआ और मॉम का तरीका ही ज़्यादा सही था।

मैं अपने कमरे में पहुँची। कॉरिडोर में चार बड़े-बड़े सूटकेस ठसे हुए थे। उनमे से दो बड़े बैग मेरी बहन के थे, जो अपने साथ इतनी ड्रेसेस लेकर आई थी कि उतनी कीमत में एक पूरा रीटेल स्टोर खरीदा जा सकता था।

मैंने अपना एक सूटकेस खोला और उसमें से पीले रंग की सिल्क सलवार-कमीज़ निकाली, जिसकी बॉर्डर पर जरी का महीन काम था। मेरी माँ ने कहा था कि इस पूरे हफ्ते कॉटन नहीं पहनना है। मैंने कपड़े उतारे और अपने को आईने में देखा। मेरे लहरदार बाल बड़े हो गए थे और अब मेरे कंधों तक आ रहे थे। मैं पतली-दुबली नज़र आ रही थी। शादी से पहले की गई दो महीनों की डाइट का यह नतीजा था। मैंने हांगकांग में जो ब्लैक ला पेर्ला लॉन्जरी खरीदी थी, उसने भी मेरे फिगर के उतार-चढ़ावों को उभारने में मदद की थी। महंगी अंडरवियर किसी को भी सेक्सी बना सकती है, मैंने मन-ही-मन खुद से कहा। अतीत में कुछ मर्द मुझे सेक्सी कहकर पुकार चुके थे, लेकिन शायद वे सच नहीं कह रहे थे। आखिर मैं अपने आपको लेकर इतनी सख्त क्यों हूँ? आख़िर कुछ मर्द मुझे सच में सेक्सी क्यों नहीं समझ सकते? वेल, अब इन बातों का कोई मतलब नहीं रह गया है। बहुत जल्द मुझे एक नए मर्द के सामने अपने कपड़े उतारने होंगे। इस ख्याल से ही मैं सिहर गई।

मैं आईने के और करीब आई। मैंने अपने चेहरे को नज़दीक से देखा। ‘इट्स ऑल हैपनिंग, राधिका, ’ मैंने ज़ोरों से कहा।

हाय, मैं राधिका मेहता हूँ और इसी हफ्ते मेरी शादी होने जा रही है। मैं सत्ताइस साल की हूँ और मेरी परवरिश दिल्ली में हुई है। मैं लंदन में एक इंवेस्टमेंट बैंक गोल्डमान साक्स के लिए काम करती हूँ। मैं डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप की वाइस प्रेसिडेंट हूँ। मेरी कहानी पढ़ने के लिए शुक्रिया। बहरहाल, मैं आपको एक बात बता देना चाहती हूँ। शायद आप मुझे बहुत ज़्यादा पसंद ना करें। कारण? अव्वल तो यही कि मैं बहुत पैसा कमाती हूँ। दूसरा यह कि दुनिया-जहान की हर चीज़ को लेकर मेरा एक ओपिनियन है। और तीसरा यह कि मैं पहले सेक्स कर चुकी हूँ। नाऊ, अगर मैं लड़का होती तो आपको इन तमाम बातों से कोई तकलीफ नहीं होती। लेकिन चूँकि मैं लड़की हूँ, इसलिए ये तमाम बातें मुझे बहुत हरदिलअज़ीज़ तो नहीं ही बनाती होंगी, है ना?

मैं थोड़ी नर्ड (पढ़ाकू) भी हूँ। मैं और मेरी बहन अदिति की पढ़ाई दिल्ली में पूसा रोड पर स्प्रिंगडेल्स स्कूल में हुई है। वह मुझसे एक साल ही बड़ी है। मेरे पैरेंट्स चाहते थे कि उनकी पहली संतान बेटा हो। जब अदिति दीदी का जन्म हुआ तो उन्होंने तय किया कि इस नुकसान की भरपाई जल्दी-से-जल्दी की जाए। इसीलिए मेरे पिता, एसबीआई नारायणा विहार के ब्रांच मैनेजर सुदर्शन मेहता ने तय किया कि उनकी होममेकर बीवी अपर्णा मेहता एक और संतान को जन्म देगी। अफसोस कि दूसरी संतान भी बेटी हुई यानी कि मैं। बताया जाता है कि उसके बाद उन्होंने दो बार फिर कोशिश की और दोनों ही बार मेरी माँ को एबॉर्शन करवाना पड़ा, क्योंकि यह पाया गया था कि उनके पेट में फिर बेटियाँ पल रही थीं। कुछ साल पहले मैंने इस विषय पर माँ को घेरना चाहा था, लेकिन उन्होंने बात को टाल दिया।

'मुझे अब कुछ याद नहीं है, ' उन्होंने कहा, 'लेकिन मैं अपनी दोनों बेटियों के साथ खुश हूँ।'

'आपने दो बार एबॉर्शन करवाए और आप कह रही हैं कि आपको याद नहीं!'

'तुम मुझे जज करने लगोगी, इसलिए तुम्हें इस बारे में बताने से कोई फायदा नहीं है। तुम्हें पता नहीं है कि बेटा नहीं होने का क्या मतलब होता है!'

उसके बाद मैंने उनसे यह सवाल पूछना ही बंद कर दिया।

स्कूल में अदिति दीदी मुझसे कई गुना अधिक पॉपुलर थी। लड़कों को उस पर क्रश होता था। जबकि मैं ऐसी लड़की थी, जो छठी क्लास से ही चश्मा लगाने लगी थी। अदिति दीदी का रंग गोरा था! जबकि मेरा रंग गेहुँआ था। हम दोनों किसी फेयरनेस क्रीम के एड में दिखाई जाने वाली बिफोर और आफ़्टर तस्वीरों की तरह थीं। ज़ाहिर है, मैं बिफ़ोर वाली तस्वीर की तरह थी। अदिति दीदी ने बारह साल की उम्र से ही डाइटिंग शुरू कर दी थी। तेरह की उम्र से वे अपनी टांगों को वैक्स करने लगी थीं। जबकि मैंने बारह की उम्र में अपनी क्लास में टॉप किया था और तेरह की उम्र में मैथ्स ओलिंपियाड जीता। ज़ाहिर है, मेरी दीदी मुझसे ज़्यादा कूल थीं। स्कूल में लोग या तो मुझे नोटिस ही नहीं करते थे या मेरा मज़ाक

बनाया करते थे। ऐसे में मैं यही पसंद करती थी कि लोग मुझे नोटिस ही ना करें। मैं अपनी किताबों की दुनिया में खोई रहती। एक बार, दसवीं क्लास में मुझे एक लड़के ने भरी क्लास में प्रपोज़ कर दिया। उसने मुझे आर्चीज़ ग्रीटिंग के साथ एक रेड रोज़ दिया। मारे खुशी के मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े, लेकिन पल भर में पता चल गया कि वह मज़ाक था। उसने फूल को दबाया तो उसमें से स्याही की पिचकारी छूट गई। मेरा चेहरा स्याह हो गया। पूरी क्लास हँस पड़ी। गनीमत थी कि मैंने चश्मा पहन रखा था, नहीं तो स्याही मेरी आँखों में चली जाती।

उस दिन मैंने समझ लिया कि मेरी लाइफ केवल पढ़ाई-लिखाई में ही है। बारहवीं क्लास में मैंने स्कूल में टॉप किया था। दिल्ली में टॉप फाइव रैंक मेरी थी। इसके उलट अदिति दीदी ने बामुश्किल बारहवीं पास की थी, अलबत्ता फेयरवेल में उन्होंने 'मिस हॉटनेस' का अनॉफिशियल टाइटिल जरूर जीता था। कुछ मायनों में, या शायद हर मायने में, यह सीबीएसई टॉप करने से बड़ा अचीवमेंट था!

आपने डीयू कट-ऑफ के बारे में तो सुना ही होगा। वैसे हालात मेरे जैसे स्टूडेंट्स के कारण ही बनते हैं। मैंने बारहवीं में 98 परसेंट एग्रीगेट स्कोर किया था। इसके बाद मैंने श्रीराम कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स या एसआरसीसी ज्वॉइन कर लिया। कहते हैं कि वह पढ़ाकुओं के लिए बेस्ट कॉलेजों में से एक है। एसआरसीसी में ही मुझे पता चला कि मैं तो पढ़ाकुओं में भी और बड़ी वाली पढ़ाकू हूँ। मैंने वहाँ भी टॉप किया। मैंने कभी कोई क्लास बंक नहीं की। बामुश्किल ही कभी लड़कों से बात की। मैंने ना के बराबर दोस्त बनाए। स्कूल के दिनों की यादें ही इतनी बुरी थीं कि मैं चाहती थी कि कम-से-कम कॉलेज में ऐसी कोई नौबत ना बने।

कॉलेज खत्म कर मैंने एमबीए एंट्रेंस के लिए कैट लिया। जैसी कि मेरे जैसी पढ़ाकू से उम्मीद की जा सकती है, मैंने 99.7 परसेंट स्कोर किया। वहाँ से मैं सीधे आईआईएम अहमदाबाद पहुँची। दूसरी तरफ अदिति दीदी ने एमिटी कॉलेज से ग्रेजुएशन किया और उसके बाद शादी करने का मन बना लिया। एक अच्छे दूल्हे को लेकर उनके दिमाग में दो क्राइटेरिया थे : एक, लड़का अमीर होना चाहिए और दूसरा, वेल, इसके सिवा कोई और क्राइटेरिया था ही नहीं। उन्होंने यह भी कहा कि वह एक हाउसवाइफ बनकर अपने हसबैंड की देखभाल करना चाहती हैं। दिल्ली के अमीर पंजाबी मर्द, जो खुद कभी कोई लड़की नहीं पटा सकते, इस तरह की लड़कियों की मुराद पूरी करने के लिए ही बने होते हैं। अदिति दीदी ने अनिल से शादी कर ली, जो पहाड़गंज में तीन सेनिटरीवेयर दुकानों और दो होंडा सीआरवी का मालिक था। जिस साल मैंने आईआईएमए में दाखिला लिया, उसी साल दीदी की शादी हुई।

'अब तुम भी जल्द शादी कर लो, ' दीदी ने मुझसे कहा था। 'हर लड़की की शादी की एक उम्र होती है। उसमें देरी मत करो।'

‘मैं अभी केवल इक्कीस साल की हूँ, ’ मैंने कहा। ‘ मैंने अभी अपना मास्टर्स भी नहीं किया है।’

‘जितनी कम उम्र में शादी कर लो, उतना ही अच्छा है। खासकर तुम्हारे जैसी लड़की के लिए, ’ उन्होंने कहा।

‘व्हाट डू यू मीन, मेरे जैसी लड़की?’

उन्होंने एक्सप्लेन नहीं किया। लेकिन मेरे खयाल से उनका इशारा मेरे जैसी उन लड़कियों की तरफ था, जो पढ़ाकू होती हैं, या जिनका रंग गेहुँआ होता है, या फिर जिनके ब्रेस्ट फुटबॉल जितने बड़े नहीं होते, जो कि पंजाबी मर्दों को पसंद है।

मैंने आईआईएमए ज्वॉइन कर लिया। आखिरकार मुझे अपना नर्ड-हेवन मिल गया। यहाँ पर हर कोई पढ़ाई करने में लगा हुआ था। और जैसे ही आपको लगता कि आपने ख़ासी पढ़ाई कर ली, आपको और असाइनमेंट्स दे दिए जाते। मेरी माँ मुझे अकसर फोन लगाती थीं, खासतौर पर उनके पसंदीदा विषय पर बात करने के लिए। ‘अब तो लड़कों से नजरें मिलाना शुरू कर दो। अनिल के सर्कल में बहुत सारे अच्छे अमीर लड़के हैं।’

‘मॉम, मैं एक सेनिटरीवेयर शॉपओनर्स के सर्कल में शादी नहीं करने वाली।’

‘क्यों?’ माँ ने हैरानी से पूछा।

‘यू नो वॉट, मैं वैसे भी अभी कई साल तक शादी नहीं करने वाली हूँ। भूल जाइए। अभी मेरी क्लास है। बाय।’

मैंने आईआईएमए पूरा किया। मेरे जैसी ओवरअचीवर को डे-ज़ीरो से ही जॉब का ऑफर मिल गया। यह न्यूयॉर्क के गोल्डमान साक्स के लिए एक एसोसिएट के रूप मे काम करने का ऑफर था। सालाना आमदनी थी एक लाख बीस हज़ार डॉलर्स!

‘यानी चार लाख रुपया महीना और अड़तालीस लाख रुपया सालाना!’ मैंने फोन पर माँ को बताया।

मुझे जवाब में कुछ सुनाई नहीं दिया। बहुत संभव है कि वे यह सुनकर गश खाकर गिर गई होंगी। मेरे पिता को स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के पच्चीस साल के कैरियर में कभी इससे एक-तिहाई सैलेरी भी नहीं मिली थी।

‘आर यू देयर, मॉम?’

‘अब मैं तुम्हारे लिए एक अच्छा लड़का कहाँ से ढूँढूंगी?’ उन्होंने कहा।

ये उनकी बुनियादी चिंता थी। उनकी तेईस साल की लड़की, जिसकी परवरिश वेस्ट दिल्ली के मिडिल क्लास में हुई, को दुनिया के सबसे बड़े इंवेस्टमेंट बैंक्स में से एक में जॉब मिला था और उन्हें केवल इस बात की चिंता खा रही थी कि अब उनकी बेटी के लिए अच्छा वर कैसे मिलेगा!

‘स्टॉप इट, मॉम। ऐसा क्यों सोच रही हो?’

‘अरे इतना पैसा कमाने वाली लड़की से कौन शादी करेगा? यदि लड़का इससे कम कमाता है, तो वह शादी करने से रहा। और अगर ज़्यादा कमाता है, तो वह एक कामकाजी लड़की को अपने लिए क्यों चुनेगा?’

‘मुझे नहीं मालूम, आप क्या बोल रही हैं। लेकिन मैं अमेरिका जा रही हूँ। मुझे एक बहुत अच्छा जॉब मिला है। क्या आप अपने मेलोड्रामा को किसी और वक्त के लिए बचाकर रख सकती हैं?’

‘तुम्हारे पिता तुमसे बात करना चाहते हैं, ’ उन्होंने कहा और फोन उनकी ओर बढ़ा दिया।

‘गोल्डमान साक्स? यह तो कोई अमेरिकी कंपनी जान पड़ती है, नहीं?’ उन्होंने कहा।

मेरे कमरे की घंटी बजी मैं चौंक गई। अभी मैं गोवा में हूँ, आईआईएमए में नहीं, मैंने खुद को याद दिलाया।

‘कहाँ हो तुम? गुलाटीज़ केवल दस मिनट में यहाँ पहुँच रहे हैं, ’ मेरी माँ ने कहा।

‘मैं अपने कमरे में हूँ, मॉम।’

‘तुमने कपड़े बदल लिए?’

मैंने आईने में देखा।

‘हाँ, तकरीबन।’

‘फिर जल्दी से नीचे आ जाओ। तुम क्या पहन रही हो?’

‘पीली सलवार-कमीज़। जरी बॉर्डर वाली।’

‘सिल्क?’

‘हाँ।’

‘ चेन पहनी?’

‘हाँ।’

‘ठीक है, चली आओ।’

‘हे, रिमेम्बर मी?’ मुझे अपने पीछे किसी की आवाज़ सुनाई दी। मैंने पलटकर देखा।

‘ब्रजेश, ’ मैंने अपने होने वाले पतिदेव से कहा। ‘हाय।’

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इसके बाद अब क्या करूँ। क्या मुझे शरमाना चाहिए? क्या मुझे हँसना चाहिए? क्या मुझे उसे गले लगाना चाहिए? लेकिन भोंदुओं की तरह मैंने उससे हाथ मिला लिया, जबकि वह अपने बाएँ हाथ से अपने काली कमानी वाले

चश्मे को दुरुस्त ही कर रहा था। पिछले कुछ हफ्तों से मैं उससे स्काइप पर बात कर रही थी, लेकिन अभी वह उसकी तुलना में जरा दुबला नज़र आ रहा था। उसका सफेद कुर्ता और नीली जींस कुछ ढीली नज़र आ रही थीं। उसने अपने बाल करीने से साइड में काढ़ रखे थे और वह उनमें स्कूली बच्चों जैसा लग रहा था। मुझे आफ्टरशेव की एक तीखी गंध आई।

मैं लॉबी में थी। लड़के वाले आ गए थे। स्पेशल चेक-इन डेस्क के इर्द-गिर्द वे घेरा बनाकर बैठे थे। होटल स्टाफ ट्रे में कोकोनट वॉटर से भरे गिलास ले आया।

'कोकोनट वॉटर हमारे पैकेज का हिस्सा नहीं था, लेकिन मेरे कहने पर उन्होंने ऐसा किया, ' सूरज ने मुझसे कहा। वह रूम्स को लेकर हुई दिक्कत की भरपाई करने की भरसक कोशिश कर रहा था। उसने मुझे पूरे हफ्ते के कार्यक्रम का एक प्रिंट-आउट दिया। मैंने उस पर एक नज़र डाली।

राधिका वेड्स ब्रजेश : सप्ताह का कार्यक्रम

पहला दिन:अराइवल, चेक-इन्स, ब्रीफिंग, रिसोर्ट में आराम
दूसरा दिन:बच्चों और बुज़ुर्गों के लिए गोवा दर्शन टूर (सुबह 11 से शाम 6 बजे तक)

क्लब क्यूबाना में मिस्टर ब्रजेश गुलाटी के लिए बैचलर पार्टी (रात 8 बजे) मिस राधिका मेहता के लिए एलपीके में बैचलरेट पार्टी (रात 8 बजे) 'तुमने बैचलरर्स पार्टी के लिए बसों का इंतज़ाम कर लिया?' मैंने पूछा। 'हाँ मैम। बसें 7.30 बजे तक एंट्रेंस पर पहुँच जाएँगी।'
मैंने आगे पढ़ा।

तीसरा दिन:फंक्शन रूम में भजन और पूजा (शाम 4 बजे)
चौथा दिन:फंक्शन रूम में सभी लेडीज़ के लिए मेहंदी काउंटर्स (दोपहर 12 से शाम 6 बजे तक)
पाँचवाँ दिन:फंक्शन रूम में संगीत (रात 8 बजे)

'संगीत प्रैक्टिस के लिए कोरियोग्राफर आ गया?' मैंने पूछा।

'नहीं मैडम, वह दो दिन बाद आएगा। उसने कहा है कि प्रैक्टिस के लिए खासा समय मिल जाएगा।'

मैंने एक बार फिर कार्यक्रम को गौर से देखा।

छठा दिन :ग्रैंड बॉलरूम और मेन लॉन्स में वेडिंग (रात 8 बजे से)
सातवाँ दिन :चेकआउट और डिपार्चर (दोपहर 12 बजे)

सूरज ने हर फंक्शन और वेन्यू के डिटेल्स वाली दूसरी शीट मुझे थमा दीं।

'रूम्स को लेकर हुई गड़बड़ी के लिए सॉरी, मैडम। अभी सब कुछ अंडर कंट्रोल है, ' उसने कहा।

सूरज के जाते ही ब्रजेश मेरे पीछे आकर खड़ा हो गया।

'यह जगह बहुत खूबसूरत है। गोवा में शादी एक बेहतरीन आइडिया साबित हो रहा है, ' उसने कहा। उसका एक्सेंट 90 प्रतिशत भारतीय और 10 प्रतिशत अमेरिकन था। दूर से मैंने अपने पैरेंट्स को मैरियट के एंट्रेस पर देखा। वे हाथ जोड़कर ब्रजेश के पैरेंट्स और दूसरे मेहमानों का स्वागत कर रहे थे। मैं फिर ब्रजेश से मुखातिब हुई। 'थैंक्यू। मैंने हमेशा से एक डेस्टिनेशन वेडिंग चाही थी, ' मैंने कहा।

अगले दस लंबे-धीमे सेकेंडों तक अजब खामोशी छाई रही। आखिर हम एक-दूसरे से क्या बात करें? क्या मैं झिझक तोड़ने की शुरुआत करूँ? क्या मैं यह कहूँ कि हे, एक हफ्ते बाद हम लोग ऑफिशियली सेक्स करना शुरू कर देंगे? चुप रहो, राधिका! अब बस भी करो!

'आप बहुत...' ब्रजेश ने सही शब्द खोजते हुए कहा, '...खूबसूरत लग रही हैं।'

'तुम्हें इससे बेहतर कोई और वाक्य नहीं सूझा, दूल्हे मियाँ?' मैंने मन-ही-मन कहा, और फिर खुद को डाँटने लगी : 'चुप रहो, राधिका!' मैं आपको अपनी इस बुरी आदत के बारे में बताना चाहती हूँ। मेरे भीतर एक आवाज़ लगातार चलती रहती है, हर चीज़, हर इंसान के बारे मे बोलती हुई। एक मिनी-मी। कभी-कभी यह आवाज़ मुझ पर इतनी हावी हो जाती है कि मुझे ज़ोर लगाकर सोचना पड़ता है और खुद को याद दिलाना पड़ता है कि हकीकत में हो क्या रहा था।

'थैंक्यू, ' मैंने कहा। 'थैंक्यू, ब्रजेश।'

'ब्रजेश, ' ये भी भला कोई नाम हुआ! इससे अनफैशनेबल नाम और क्या होगा? राधिका, तुम एक ऐसे इंसान से ब्याह करने जा रही हो, जिसका नाम ब्रजेश है। अब तुम्हें मिसेज ब्रजेश गुलाटी के नाम से जाना जाएगा। छी, कितना गंदा! ओके, ओके, चुप हो जाओ! एकदम चुप! कुल-मिलाकर वह एक भला इंसान है और बहुत दूर से यहाँ आया है। आखिर यही बात तो मायने रखती है ना?

'तुम पर येलो अच्छा लगता है, ' ब्रजेश ने अपनी बात जारी रखी।

'एक्चुअली, येलो से बदतर मेरे लिए कोई और कलर नहीं है। मेरे गेहुँआ रंग से वह कतई मैच नहीं खाता। मैंने तो इसे इसलिए पहना, क्योंकि मॉम चाहती थी कि जब गुलाटीज़ आएँ तो उन्हें लॉबी में एक सनफ्लॉवर नज़र आए।' मैं कहना चाहती थी।

'शुक्रिया, ' मैंने कहा। कुछ और बोलो, स्टुपिड गर्ल! 'आपका कुरता भी अच्छा लग रहा है, ' मैंने कहा। उफ्फ, इससे ज़्यादा स्टुपिड बात और क्या बोली जा सकती थी!

‘हैलो बेटा।’ पचास से ज़्यादा का एक आदमी अपनी पत्नी के साथ मेरे पास आया। मेरे लिए पूरी तरह अजनबी होने के बावजूद वे मुझे बहुत एक्साइटेड नज़र आ रहे थे। मुझे यह समझने में जरा समय लगा कि वे कौन थे। अच्छा, तो ये हैं मेरे इन-लॉज! मि. आदर्श गुलाटी और मिसेज सुलोचना गुलाटी। राधिका, कम-से-कम अब कोई स्टुपिड बात मत कहना। मॉम से कुछ सीखो। अदिति से कुछ सीखो। ऐसे मौकों पर अदिति दीदी क्या करतीं, यह सोचो। वे झुककर उनके पैर छू लेतीं। तुम भी ऐसा करो। कम ऑन, लगाओ डाइव!

मैं नीचे झुकी। मैंने उन लोगों के पैर छुए, जिन्हें मैंने इससे पहले केवल दो बार स्काइप किया था, लेकिन अब जो अचानक मेरे सम्मान के हकदार बन गए थे। मेरे पैरेंट्स जरूर उनसे कई बार मिल चुके थे। डैड ने मुझे बताया था कि भले लोग हैं। भले लोग! आखिर इस बात का पता कैसे लगाया जाता है कि कौन भला है और कौन नहीं? क्या इस दुनिया में सच में कोई भले लोग हैं भी? देखो, मेरा दिमाग फिर काम करने लगा, यह पलभर को भी चुप नहीं बैठता!

‘आपकी फ्लाइट कैसी थी, अंकल?’ मैंने कहा।

‘मुंबइ से बस एक ही घंटे की तो फ्लाइट है। ब्रजेश की तरह नहीं, जो कि आधी दुनिया का चक्कर लगाकर यहाँ आया है।’ आदर्श अंकल ने कहा।

‘केवल तुम्हारे लिए, ’ सुलोचना आंटी ने कहा और मेरे चेहरे को अपने हाथों में ले लिया। फिर उन्होंने मेरे माथे पर एक चुंबन दिया। ज़ाहिर है, जिस मुल्क में कुछ सासू माँ दहेज के लिए बहुओं को जला देती हैं, उसकी तुलना में तो वे भले लोग ही मालूम हो रहे थे।

ब्रजेश के रिश्तेदारों ने हमें चारों ओर से घेर लिया।

‘आओ, आओ, दुल्हन को देखो, ’ उनमें से एक आंटी ने कहा। बंदर पिंजरे से बाहर आ चुका था और लॉबी में इस नज़ारे को मुफ्त में देखने के लिए मजमा लग चुका था। मेरे आस-पास कई लोग जमा हो गए थे और मैं उनमें से ज़्यादा-से-ज़्यादा नामों को याद रखने की कोशिश करने लगी।

‘ये हैं मेरी माँ की बहनें, रोहिणी मासी और गुंजन मासी, ’ ब्रजेश ने कहा, ‘और ये हैं मेरे डैड के भाई, पुरोहित चाचा और अमित चाचा।’

मैं सभी को झुक-झुककर प्रणाम करती रही। जैसे ही मुझे किसी के सिर में सफेद या हिना से डाई किए हुए बाल नज़र आते, मैं तुरंत झुककर उसके पैर छू लेती। ठीक वैसे ही, जैसे मेरी माँ मुझसे उम्मीद करती हैं। इस सबके बीच ही ब्रजेश पलभर को मुझे एक तरफ ले गया।

‘हे, तुम्हें इस सबसे कोई दिक्कत तो नहीं हो रही है?’

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।

‘क्या हम कहीं थोड़ी देर को टहलने जा सकते हैं?’ उसने कहा।

वह मुझसे मेलजोल बढ़ाने की कोशिश कर रहा था। मैंने उससे पहले ही कह दिया था कि मैं उसे अच्छे-से जानना चाहती हूँ और वह इसी कोशिश में लगा था कि हम दोनों एक-दूसरे को अच्छे-से जान लें।

‘हाँ क्यों नहीं? चलो पूल की तरफ चलते हैं।’ मैंने कहा।

Downloaded from Ebookz.in

2

मैरियट पूल के आसपास पाम के हरे दरख्त हवा में लहरा रहे थे। शाम के पाँच बजे थे। दिसंबर की रोशनी में होटल के कॉटेज डूबे हुए थे और उनकी मुलायम छायाएँ जैसे हर तरफ गिर रही थीं। हम वॉकिगं पाथ की ओर चले गए। होटल हमारे बाएँ हाथ की ओर था और दाएँ तरफ अरब सागर था। मुझे लगा कि मैं गलत कपड़े पहनकर यहाँ आ गई हूँ, क्योंकि होटल के दूसरे मेहमान शॉर्ट्स और वेस्ट में यहाँ-वहाँ घूम रहे थे।

‘तो आप कल ही सैन फ्रांसिस्को से यहाँ पहुँचे हैं?’ मैंने कहा।

‘हाँ, कल रात को ही तो पहुँचा, ’ उसने कहा। ‘मैं अपनी छुट्टियों का ज़्यादा-से-ज़्यादा फायदा उठाना चाहता था। शादी के लिए एक हफ्ता काफी है। उसके बाद एक-दो दिन मुंबई में, फिर अपने घर में। फिर बाली में हनीमून। यानी एक-एक पल का इस्तेमाल।’

हनीमून शब्द सुनते ही मुझे झटका लगा। मेरे भीतर मिनी-मी की आवाज़ जाग गई।

‘हनीमून! एक दर्जन स्काइप कॉल्स और एक बार की मुलाकात के बाद? इस आदमी के साथ बाली में एक पूरा हफ्ता, जो अभी मेरे साथ चल रहा है? जबकि वहाँ तो हम एक-दूसरे के साथ नेकेड रहेंगे। चुप करो राधिका, कल की मत सोचो, आज पर अपना ध्यान लगाओ!

‘इतनी लंबी उड़ान थका देने वाली होगी ना?’ मैंने कहा।

‘तुम्हें देखते ही मेरी सारी थकान छू-मंतर हो गई।’

मैं मुस्करा दी। यह आदमी पूरी कोशिश कर रहा है, मुझे भी थोड़ी कोशिश करनी चाहिए।

ब्रजेश भी मुस्करा दिया। उसकी आँखें बच्चों की तरह मासूम थीं। ‘फ़ेसबुक कैसा चल रहा है?’ मैंने पूछा।

‘ये महीना बहुत बिज़ी रहा। एक पूरा प्रोजेक्ट मैंने पूरा किया। बहुत काम था, फ्रंट एंड इंटरफेसेस, बैकएंड सिस्टम्स, अंडरलाइंग एपीआई।’

‘एपीआई?’

‘एप्लिकेशन प्रोग्राम इंटरफेस। सॉफ्टवेयर एप्लिकेशंस बनाने के लिए रूटीन्स, प्रोटोकॉल और टूल्स का एक सेट। बेसिकली, सॉफ्टवेयर कंपोनेंट्स के इंटरेक्शंस का सिस्टम।’

मैंने सिर हिला दिया, हालाँकि मुझे कुछ भी समझ नहीं आया था।

‘तुम्हें मेरी बात समझ नहीं आ रही है ना?’

मैं हँस पड़ी।

‘मैं जानता हूँ। यह दुनिया का सबसे एक्साइटिंग जॉब तो नहीं ही है, ’ उसने सपाट स्वर में कहा।

‘कम ऑन, आखिरकार तुम फ़ेसबुक में काम करते हो। दैट्स कूल।’

‘लोगों को लगता है कि फ़ेसबुक में कोई काम नहीं होता है। वे लोग दिनभर अपनी डीपी ही अपडेट करते रहते हैं।’

क्या मुझे उससे पर्सनल बातें करनी चाहिए। क्योंकि अगर मैंने उसे रोका नहीं तो वह तो मजे से अगले दो घंटे तक कंप्यूटर कोड के बारे में बातें करता रहेगा। राधिका, कुछ करो!

‘तुम्हें अपना जॉब पसंद है?’ मैंने पूछा।

ब्रजेश ने कंधे उचका दिए। ‘ठीक है। वहाँ बहुत सारे स्मार्ट लोग है। हमेशा कुछ-ना-कुछ वहाँ होता रहता है। पैसा भी अच्छा मिलता है। स्टॉक ऑप्शंस। फ्लेक्सी टाइम...’

‘और स्टार्ट-अप वाले आइडिया के बारे में क्या?’ मैंने कहा। उसने एक बार पहले अपनी खुद की एक सॉफ्टवेयर कंपनी लॉन्च करने की बात कही थी।

‘हाँ, वह भी है। मैं अब भी उसे करना चाहता हूँ, ’ ब्रजेश ने जवाब दिया।

‘तो फिर?’

‘फ़ेसबुक को छोड़ना बहुत मुश्किल है। सैलरी, स्टॉक ऑप्शन्स, बेनेफिट्स। प्लस, मुझे फंडिंग की भी ज़रूरत होगी। उस लेवल की सिक्योरिटी को छोड़ना और फिर इतना सब अरेंज करना आसान नहीं है।’

मैंने सिर हिला दिया। हमें काम के अलावा दूसरों मसलों पर भी बातें करनी थीं। शुक्र है कि उसने विषय बदल लिया।

‘मुझे गोवा बहुत अच्छा लगता है, ’ उसने कहा। ‘मैं यहाँ कोई दस साल बाद आया हूँ। हम यहाँ इंजीनियरिंग कॉलेज से आए थे। ज़ाहिर है, ऐसे आलीशान रिसोर्ट्स में नहीं। हम एक बहुत मामूली-सी जगह पर ठहरे थे, शैक्स में खाना खाया था।’

‘मुझे शैक्स पसंद हैं।’

‘तुम्हें सैन फ्रांसिस्को भी बहुत अच्छा लगेगा, ’ उसने कहा।

‘मैं न्यूयॉर्क में रह चुकी हूँ, लेकिन वेस्ट कोस्ट में नहीं।’

‘कैलिफोर्निया न्यूयॉर्क से बहुत अलग है। वहाँ ज़िंदगी ज़्यादा सरल है।’

‘सैन फ्रांसिस्को में गोल्डमान का जो ग्रुप है, उसे भी ज़्यादा चिल्ड माना जाता है।’

‘सब कैसा चल रहा है? तुम्हारा ट्रांसफर हो गया?’

मेरे फोन की घंटी दो बार बजी।

‘सॉरी, फोन। शायद मॉम को किसी चीज़ की जरूरत है, ’ मैंने कहा।

‘श्योर, ’ ब्रजेश ने कहा।

मुझे एक अननोन नंबर से दो मैसेज आए थे। नंबर ‘+1’ से शुरू हो रहा था। मैंने सोचा, शायद किसी ने अमेरिका से मैसेज भेजा है।

'हे, मैंने सुना तुम शादी कर रही हो, क्या सच?' यह था पहला मैसेज।

'दिस इज़ देबू, बाय द वे। उम्मीद है तुम्हें याद होगा, ' यह था दूसरा।

देबू? देबाशीष सेन! पूरे तीन साल बाद? देबू मुझे मैसेज कर रहा था!

'हाय', मैंने जवाब दिया। तुरंत उसका जवाब आया।

'हाय राधिका, कैसी हो? तुम्हारा नंबर ढूँढने में मुझे पसीना आ गया। लेकिन मैं तुमसे बात करना चाहता था।'

'सब ठीक तो है?' ब्रजेश ने मुझे फोन में खोई हुई देखकर कहा।

'हाँ, सब ठीक है, ' मैंने कहा, लेकिन मेरी आवाज़ नर्वस थी। मैंने फोन को झुकाया और अपनी हथेलियों में दबा लिया।

'सो ऑल डन?' ब्रजेश ने कहा।

'क्या?'

'अरे भई, तुम्हारा ट्रांसफर। हम उसी बारे में तो बात कर रहे थे।'

'यस यस। हो गया है तकरीबन। मुझे कुछ समय लंदन और सैन फ्रांसिस्को के बीच शटल करना होगा, लेकिन मान लो कि हो गया है।'

मेरा फोन मेरे हाथ में ही तीन बार और वाइब्रेट हुआ। मुझे उसे नजरअंदाज़ कर देना चाहिए था, लेकिन अपने ऑब्सेसिव कंपल्सिव डिसऑर्डर के चलते मैं उन्हें नजरअंदाज़ नहीं कर पाती। आखिर, वह मॉम या अदिति दीदी का भी मैसेज हो सकता था। लेकिन ऐसा था नहीं।

'हे बेबी! मैं बस तुमसे सॉरी कहना चाहता हूँ, ' देबू का मैसेज था। आगे लिखा था : 'जब मुझे पता चला कि तुम्हारी शादी हो रही है, तो मैं यकीन ही नहीं कर पाया।'

मुझे इसका जवाब देना था, इसलिए लिखा : 'क्यों? तुम्हें ऐसा क्यों लगा कि ऐसा नहीं हो सकता?'

हम गार्डन के आखिरी कोने तक पहुँच गए थे, इसलिए फिर वापस लौटकर जाने के लिए मुड़ गए।

'हमें रहने के लिए कोई अच्छी जगह ढूँढनी होगी। फ़ेसबुक मेनलो पार्क में है, गोल्डमान साक्स डाउनटाउन है, राइट?' ब्रजेश ने कहा।

'हूँ, डाउनटाउन में क्या है?' मैंने कहा। मेरा दिमाग अब भी देबू के मैसेज में उलझा हुआ था।

'गोल्डमान साक्स का कैलिफोर्निया ऑफिस, ' ब्रजेश ने एक-एक शब्द जान बूझकर धीरे-धीरे कहा।

मेरा फोन बार-बार वाइब्रेट होता रहा। मैंने तय कर लिया था कि अब मैं अपना फोन चेक नहीं करूंगी और ब्रजेश पर ही फोकस करूंगी।

‘तो हमें यह डिसाइड करना होगा कि हमें डाउनटाउन रहना है या फिर मेनलो पार्क के पास, जो कि पालो आल्टो में है, ’ ब्रजेश ने कहा।

‘यस, श्योर।’

‘श्योर, व्हाट?’

‘तुम ठीक कह रहे हो।’ मैंने कहा, जबकि मुझे बिलकुल नहीं पता था कि उसने क्या कहा है।

‘ मैंने कहा कि तुम्हें चुनना होगा : डाउनटाउन या पालो आल्टो?’

‘मुझे क्या चुनना होगा?’

‘राधिका, आर यू ओके? मैं इतनी देर से कह रहा हूँ कि हमें अपने रहने की जगह चुनना होगी।’

अब जाकर मुझे समझ आया कि माजरा क्या है।

‘ओह हाँ। वेल, तुम पहले ही मेनलो पार्क में रह रहे हो ना?’

‘हाँ, लेकिन लीज़ दो महीनों में खत्म होने जा रही है।’

फोन पर एक और मैसेज आया। बस एक नज़र देख लूँ, मैंने खुद से कहा। मैं जल्दी से अपना फोन चेक करूँगी और फिर ब्रजेश पर पूरी तरह से फोकस करूँगी।

मैंने फोन उठाया। देबू के अनेक मैसेज थे। उनमें से एक यह था :

‘आई लव यू!’

फ़क! मेरे दिमाग में गूंजा। गनीमत है कि मैंने यह कहा नहीं। मैंने तुरंत फोन बंद कर दिया और चेहरे पर अपना हाथ रख लिया।

‘मैं वैसे भी वहाँ से जाना चाहता था, ’ ब्रजेश ने कहा और फिर मुझसे पूछा : ‘राधिका, आर यू ओके? सबकुछ कंट्रोल में है ना?’

‘एक्चुअली, मुझे वापस जाना होगा। मॉम को कोई चीज़ चाहिए। ज्वेलरी की प्रॉब्लम, ’ मैंने कहा।

‘आह, इंडियन वेडिंग्स!’ ब्रजेश ने कहा।

बिलकुल ठीक। मुझे अपने होने वाले पति से एक घंटे के भीतर ही झूठ बोलना पड़ा था। मैं बहुत अच्छी दुल्हन तो साबित नहीं ही होने जा रही थी। मैंने तो आपको पहले ही बोल दिया था कि आप मुझे ज़्यादा पसंद नहीं करेंगे।

‘तो हम जल्द ही मिलेंगे?’ मैंने कहा।

‘ऑफकोर्स, ’ ब्रजेश ने कहा। उसकी आँखों में चमक थी। ‘आखिर हमारी शादी होने वाली है। अब तो हमें साथ ही रहना है। चलो, लौट चलते हैं।’

मैंने अपने फोन को कसकर पकड़ लिया, मानो उसमें से कोई मैसेज निकलकर बाहर गिर पड़ेगा। ब्रजेश ने मुझे लिफ्ट लॉबी मे छोड़ा, जहाँ हमें उसका एक कज़िन मिला, जो उससे बात करना चाहता था। लिफ्ट का दरवाज़ा बंद हुआ। मैंने चौथे फ्लोर का बटन

दबाया और गहरी साँस ली। फिर मैंने अपना फोन चेक किया, जिसमें देबू के बीसियों मैसेज थे।

‘पिछले कुछ महीनों से मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा हूँ। आज ही तुम्हें टेक्स्ट करने की हिम्मत जुटा पाया। मैंने तुम्हारी कद्र नहीं की, यह एक बहुत बड़ी भूल थी। आई लव यू!’

आखिरकार वो कहना क्या चाहता है?

लिफ्ट मेरे फ्लोर पर पहुँच गई। मैं अपने रूम तक गई और घंटी बजा दी। अदिति दीदी ने दरवाज़ा खोला।

‘तुम थीं कहाँ?’ उसने मुझे शरारती नजरों से देखते हुए पूछा। ‘ब्रजेश के साथ?’

मैं मुस्करा दी, मानो रंगे-हाथों पकड़ गई हो। आखिर मुझे अपने होने वाले पति के नाम का ज़िक्र होने पर हर बार शरमाकर मुस्कराना जो था।

अदिति दीदी ने अपना एक सूटकेस खोल रखा था। वह इतना बड़ा सूटकेस था, जैसा कि मर्डरर लोग लाश छुपाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। उसने बेड पर तीन ड्रेस फैला रखी थीं।

‘ब्रजेश है कैसा?’ उसने एक लाल साड़ी को फोल्ड करते हुए कहा।

‘डिसेंट। अभी हम एक-दूसरे को समझ ही रहे हैं, ’ मैंने सोफे पर लेटते हुए कहा। फिर अपना फोन निकाल लिया। आखिर मैं बार-बार अपना फोन क्यों निकाल रही थी?

अदिति दीदी ने बोलना जारी रखा। ‘मैं तो शादी से पहले अनिल को बिलकुल भी नहीं जानती थी। तुम भी शादी के बाद ही उसे ठीक से जानोगी। इसमें हनीमून मददगार साबित होगा।’ उसने आँख मारते हुए कहा।

मैंने सिर हिला दिया, जबकि मैं सोच रही थी कि देबू को क्या जवाब दूँ।

‘मैं सच में तुम्हें प्यार करता हूँ, ’ देबू ने फिर मैसेज किया। जो इंसान पहले एक मैसेज का जवाब देने में दस दिन लगाता था, वो अब एक मिनट में दस मैसेज भेज रहा था।

‘तुम होश में तो हो?’ मैंने जवाब दिया। इसके बाद देबू से मेरी चैट पर बातचीत हुई।

‘नहीं, यहाँ अभी सुबह के पाँच बज रहे हैं। मैं कॉफी पी रहा हूँ, नशे में बात नहीं कर रहा हूँ।’

‘गुड। तब तो तुम्हें यह पता होना चाहिए कि मैं पाँच दिन बाद शादी कर रही हूँ।’

‘क्या!! इतनी जल्दी!!’

‘यस, मेहमान यहाँ पहुँच चुके हैं।’

‘किससे शादी कर रही हो?’

‘उससे, जो तुम्हारे जितना इनसिक्योर नहीं है...’ मैंने लिखा और फिर मिटा दिया।

‘ब्रजेश गुलाटी।’ मैंने लिखा और फिर इसे भी मिटा दिया।

फिर मैंने सोचा कि कोई जवाब नहीं देना ही ठीक होगा। दीदी ने दो ड्रेस उठाईं, एक नीली और दूसरी लाल।

‘कल के बैचलरेट के लिए इनमें से क्या पहनूँ? ऑनेस्टली बताना, ’ उसने कहा।

‘दोनों अच्छे हैं। तुम्हें क्या पसंद है?’ मैंने कहा।

‘मुझे तो लाल वाली ड्रेस पसंद है, लेकिन ये बहुत शॉर्ट है। ये ज़्यादा अटेंशन तो नहीं खींचेगी ना?’ उसने कहा।

बिलकुल खींचेगी। लेकिन मेरी बहना, तुमने हमेशा यही तो चाहा है। तो अब क्यों खुद को रोक रही हो?

‘यह ठीक है। जो तुम्हे पसंद हो, वही पहनो, ’ मैंने कहा।

‘तब मैं ब्लू वाली ही पहन लेती हूँ। वह घुटनों तक आती है। दुल्हन की बड़ी बहन वाले लुक वाली ड्रेस।’

‘तुम मुझसे केवल एक साल ही बड़ी हो, ’ मैंने कहा।

‘हाँ, यह तो है। फिर कल इकलौता ऐसा दिन है, जब मुझे एक वेस्टर्न ड्रेस पहनने का मौका मिलेगा। उसके बाद तो ट्रेडिशनल ही पहनना हैं। मैं यहाँ मौजूद बहुत थोड़ी ऐसी लड़कियों में से हूँ, जो इस तरह की ड्रेस पहनकर कॉन्फिडेंस के साथ चल सकती है।’

उसने अपनी रेड ड्रेस उठाकर दिखाई। हाँ, अपने सुपर-स्लिम फिगर के चलते अदिति दीदी ही ऐसी ड्रेस पहन सकती थी।

‘रेड, दीदी। डिबेट यहीं खत्म करो।’ मैंने कहा।

मेरा फोन घनघनाया।

‘बेब्स, तुम किससे शादी कर रही हो?’ देबू पूछ रहा था।

‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, कम-से-कम तुम तो मेरी ज़िंदगी में अब नहीं हो, देबाशीष।’ मैंने जवाब दिया।

‘कम-से-कम मुझको देबू कहकर तो पुकारो।’

‘मैं बिज़ी हूँ, देबाशीष। अभी मेरे पास इस सबके लिए वक्त नहीं है।’

‘शादी कहाँ हो रही है?’

मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

‘तुमने मुझे इनवाइट नहीं किया, ’ उसने ताना मारते हुए कहा।

‘ऐसहोल, तुमने मेरे फोन तक नहीं उठाए’, मैं कहना चाहती थी, लेकिन कहा नहीं। फोन की घंटी बजी। देबू ने मुझे फोन लगाने की कोशिश की थी। मैंने फोन काटा और एक मैसेज भेज दिया।

‘मुझे फोन मत लगाओ। मैं तुम्हें पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं बिज़ी हूँ। मेरे आस-पास लोग हैं।’

‘तो केवल मुझे इतना ही बता दो कि शादी कहाँ हो रही है?

‘क्यों?’

‘बस जानना है।’

‘व्हाटेवर, ’ मैंने जवाब भेजा।

‘मैं किसी भी दोस्त से फोन करके पूछ सकता हूँ, फिर तुम ही क्यों नहीं बता देतीं?’

‘गोवा।’

‘वॉव! डेस्टिनेशन वेडिंग एंड ऑल।’

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। अपना ध्यान भटकाने के लिए मैंने अदिति दीदी से पूछा : ‘आप इसके साथ कौन-सी जूतियाँ पहनेंगी?’

‘ओह हाँ, ये तो एक इशू है। मेरे पास ये चार इंच हील वाली स्टिलेट्टो है और ये तो ज़रूर ही सबका ध्यान खींचेंगी।’

‘हाँ। प्लस, हमें डांस भी करना है। इसमें मुश्किल होगी। मैं तो फ्लैट्स पहन रही हूँ।’ मेरी बहन को लगता है कि हमारे बीच सबसे करीबी रिश्ता तभी बनता है, जब हम कपड़ों और जूतियों की बातें कर रहे होते हैं। वो मेरे पास आई और मेरे गाल खींचे। ‘तुम अपनी बैचलरेट में फ्लैट्स नहीं पहन सकतीं। तुम कितनी क्यूट हो, कुछ भी नहीं समझतीं।’

मैं भले ही डिस्ट्रेस्ड डेट्स की एक्सपर्ट होहूं। मैंने भले ही दिवालिया हो चुकी कंपनियों को बचाया हो। भले ही स्ट्रक्चर्ड कॉम्प्लेक्स टेकओवर किए हों। मैं भले ही गोल्डमान साक्स में वाइस प्रेसिडेंट होहूं। लेकिन अगर मैं कंफर्टेबल फ्लैट्स पहनना पसंद करती हूँ, तो मुझे यही कहा जाएगा कि मैं कुछ भी नहीं जानती। मैंने कल की पार्टी के लिए एक ब्लैक ड्रेस निकालकर रखी थी। दीदी ने उसे देखा और कहा, ‘यह तो बहुत सिंपल है।’ फिर वे उसे एसेसराइज करने लगीं। मैंने फिर अपना फोन चेक किया।

‘गोवा में कहाँ?’ देबू का मैसेज था।

‘क्यों?’

‘क्या मैं कॉल कर सकता हूँ, प्लीज़।’

‘नहीं।’

‘क्या यह कोई रिसोर्ट है?’

‘देबू, तुम न्यूयॉर्क में हो और अपना ध्यान वहीं लगाओ। क्या तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड नहीं है?’

‘आई एम सॉरी, राधिका।’

‘इट्स ओके। लाइफ गोज़ ऑन।’

‘हाँ, सच है। लेकिन मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। और अब तुम्हारी शादी हो रही है।’

मैंने एक स्माइली बनाकर भेज दी।

‘तुम शादी के बाद कहाँ रहोगी? हांगकांग?’

‘नहीं, मैं एक साल पहले हांगकांग से लंदन चली आई हूँ।’

‘ओह, तो लंदन में?’

‘सैन फ्रांसिस्को।’

‘आह, कोई आईटी वाला बंदा है?’

‘देबाशीष मुझे जाना है।’

‘अब भी मुझ पर गुस्सा हो?’

‘हूँ तो नहीं, लेकिन अब हो जाऊँगी। मुझे मेहमानों के साथ डिनर के लिए तैयार होना है।’

‘ओके। मैं कैजुअली ही पूछ रहा हूँ। शादी कहाँ पर है?’

‘मैरियट।’

‘नाइस! वह तो बहुत खूबसूरत जगह होगी।’

‘चैटिंग करना बंद करो। वैसे तुम बात किससे कर रही हो? लोगों को हम जानते हैं, वे तो यहीं हैं, गोवा में, ’ अदिति दीदी ने कहा।

‘हूँ, कोई नहीं। बस कुछ काम था, ’ मैंने कहा और फोन एक तरफ रख दिया। दुल्हन ने पहले दूल्हे और अब अपनी बहन से झूठ बोला था।

‘यह लो, मेरा बॉडी नेकलेस। इससे तुम्हारी डल ड्रेस चमक उठेगी, ’ उसने कहा।

‘जिसे तुम डल ड्रेस कह रही हो, वो प्रादा है दीदी, ’ मैंने कहा।

‘मुझे फर्क नहीं पड़ता, वो चाहे जो भी, उसका कोई गेटअप तो होना चाहिए ना। यह बहुत सोबर है। तुम बहुत सोबर हो।’

लेकिन लगता नहीं था कि मैं ज़्यादा देर तक सोबर रह सकूँगी, खासतौर पर देबू के अगले मैसेज के बाद।

‘मैं आ रहा हूँ’ उसने कहा।

‘क्या?’ मैंने खुले मुँह के साथ लिखा।

‘मैं इंडिया आ रहा हूँ। मुझे फ्लाइट्स चेक करने दो।’

‘तुम पागल हो गए हो!’

‘नो रियली, मुझे सच में तुमसे बात करनी है।’

‘देबू, काम डाउन, ओके? ये कोई मज़ाक नहीं है।’

‘कम-से-कम तुमने अब मुझे देबू तो कहा।’

‘व्हाटेवर। मुझे जाना है, प्लीज़ अब मैसेज मत करना।’

‘सी यू सून। बाय।’

‘गो टू वर्क। बाय।’

‘तुम फिर अपने फोन में लग गईं। ये चक्कर क्या है?’ अदिति दीदी ने कहा। ‘सभी लोग डिनर के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। तैयार हो जाओ।’

‘क्या मैं ऐसे ही चल सकती हूँ?’
‘नहीं। तुम दुल्हन हो।’
‘तो क्या मुझे हर दो घंटे में कपड़े बदलने होंगे?’
‘जाओ और जल्दी से नहा लो। और प्लीज़ बाथरूम में फोन लेकर मत जाना।’

3

‘दीदी, अब चलो, बस वेट कर रही है, ’ मैंने कहा। अदिति दीदी ने पिछले दो घंटे एक दर्जन कपड़े बदलने में खर्च कर दिए थे। आखिरकार उसने वह रेड ड्रेस ही पहनी, जिसे वो शुरू से पहनना चाहती थी।

‘इसमें क्लीवेज बहुत दिख रहा है ना?’ उसने कहा।

आखिर तुम यही तो चाहती हो ना? मैं दुल्हन हूँ। ये मेरी बैचलरेट पार्टी है। क्या तुम एक हफ्ते के लिए भी मुझे प्रायर्टी बनते नहीं देख सकतीं!

रूम के फोन की घंटी बजी। मैंने फोन उठाया।

‘हे, ’ ब्रजेश ने कहा। मैं उसकी आवाज़ पहचानने लगी थी। यह एक अच्छी बात थी, है ना?

‘हाय ब्रजेश, ऑल सेट?’

‘हाँ, मेरी गैंग बस में है। मैं रिसेप्शन से कॉल लगा रहा हूँ।’

‘ओह, आप लोग पहले पहुँच जाइए। ड्राइवर को पता होगा कि क्लब क्यूबाना कहीं पर है?’ मैंने कहा।

‘हाँ, वो जानता है। वह अरपोरा में है। एलपीके से तुम्हारी बस भी यहाँ जल्द आ रही है ना?’

‘बहुत जल्द।’

‘काश कि हम दोनों एक ही जगह जा रहे होते, ’ ब्रजेश ने कहा।

मैं हँस पड़ी।

‘दैट्स स्वीट, ब्रजेश, लेकिन आखिर बैचलर पार्टी का मतलब ही यही है कि तुम एक तंग करने वाली बीवी के बिना एक कुँवारे के रूप में अपनी आखिरी रात को एंज्वॉय करो। आज के दिन लड़के और लड़कियाँ अलग ही होते हैं।’

‘लेकिन तुम तो मुझे तंग नहीं करतीं।’ उसने कहा।

‘ऑबवियसली, तुम अभी मुझे जानते ही नहीं।’

‘मैं यहाँ से जाने से पहले तुम्हें देखना चाहता था। मेरी पूरी गैंग ही सभी सजी-धजी मेहता-गर्ल्स को देखना चाहती थी।’

‘कहीं तुम्हारी गैंग की नज़र मेरी इनोसेंट कजिन्स पर तो नहीं है।’

मैंने फोन रख दिया और अदिति दीदी की ओर मुड़ी, जो आईने के सामने खड़ी होकर अब भी अपनी ड्रेस एडजस्ट कर रही थी। आखिरकार मैंने कहा : ‘दीदी, आप समझ रही हैं या नहीं कि यह मेरी बैचलरेट है आपकी नहीं! ’

◆

‘ये रहा, ’ मेरी सेकेंड कज़िन ज्योति ने एक बड़े-से पीले साइनबोर्ड की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर लिखा था : ‘लव पैशन कर्मा’ या एलपीके। यह क्लब होटल से महज़ आधे घंटे के फ़ासले पर नेरूल नदी के करीब है। उसे स्टोन एज स्टाइल में डिज़ाइन किया गया है, जिसमें पत्थर की गुफाएँ और मूर्तियाँ बनाई गई हैं। हम पंद्रह लड़कियों का ग्रुप था और सूरज ने हमारे लिए दो बाउंसर्स का बंदोबस्त भी करवाया था। एक सेमी-प्राइवेट एरिया में हमें एक टेबल मुहैया कराई गई थी, जिस पर बलून्स और शैम्पेन की बोतलें थीं।

नाइस जॉब, सूरज, मैंने मन-ही-मन सोचा।

‘कुछ लड़कियाँ तो उम्र में बहुत ही छोटी लग रही हैं मैडम, ’ क्लब के मालिक ने अदिति दीदी से कहा।

‘ये सभी अठारह से ज़्यादा की हैं, ’ दीदी ने पुख्ता जवाब दिया। ‘फिर भी ठीक है, उन्हें सॉफ्ट ड्रिंक्स ही दो। पर हाँ, मेरी बहन आज जरूर नशे में धुत्त हो जानी चाहिए।’

‘नो दीदी, ’ मैंने कहा, लेकिन तब तक क्लब का मालिक एक राउंड टेकिला ला चुका था। मुझे दो लेनी पड़ी। ज्योति ने एक और राउंड की फरमाइश की। मेरे पड़ोसी की बेटी रजनी चाहती थी कि म्यूजिक और तेज बजाया जाए। मेरे बचपन की दोस्त श्रुति की च्वॉइस हनी सिंह के गाने थे। दीदी की बेस्ट फ्रेंड सलोनी चाहती थी कि ड्रिंकिंग गेम्स खेले जाएँ। होशोहवास खो देने को तैयार पंद्रह पंजाबी लड़कियों से ज़्यादा क्रेजी और कुछ नहीं हो सकता।

मुझे ब्रजेश का मैसेज आया : ‘क्लब क्यूबाना इज़ नाइस। थैंक्स।’

‘यू आर वेलकम। कैसा चल रहा है?’

‘तीन ड्रिंक हो गईं। और तुम?’

‘मुझे टकिला शॉट्स पीने पड़े।’

‘वॉव। रुको, तुमसे चैटिंग करने पर लड़के मुझे छेड़ रहे हैं।’

‘हाहा, गो हैव फन।’ मैंने अपना फोन एक तरफ रख दिया।

अदिति दीदी ने इन शब्दों के साथ मेरे नाम का टोस्ट पिया : ‘मेरी इकलौती प्यारी स्वीटेस्ट सिस्टर के लिए, जिसने हमेशा मन लगाकर पढ़ाई की और कभी कोई शरारती हरकत नहीं की।’ मैं मुस्करा दी। दीदी ने आगे कहा : ‘मैं बहुत मुश्किल से पास हो पाती थी, लेकिन वह हमेशा टॉप करती। मैं एक हाउसवाइफ बन गई, लेकिन वह एक हाई-फाई बैंकर बनी। मेरे पास बूब्स थे, उसके पास ब्रेन्स!’

यह सुनकर सभी लड़कियां हँस पड़ीं। यहाँ तक कि बाउंसर्स भी शरमा गए। मेरा फोन घनघनाया। यह जरूर ब्रजेश होगा। वह स्वीट है। मुझसे लगातार कनेक्ट होने की कोशिश कर रहा है।

‘हे! मैं जेएफके एयरपोर्ट पर हूँ और पता लगा रहा हूँ कि कोई लास्ट-मिनट टिकट है या नहीं।’ देबू का मैसेज था।

‘व्हाट!’ मैंने जवाब में लिख भेजा।

‘यहाँ से मुंबई पंद्रह घटे का सफर है। फिर तो गोवा तक आसानी से पहुँचा जा सकता है।’

‘देबू, आर यू सीरियस? बंद करो यह सब!’

अदिति दीदी की नज़र मुझ पर पड़ी।

‘जरा देखो तो उसे। अपने होने वाले पति से चैटिंग कर रही है। कम-से-कम आज तो उसे बख्श दो।’ उसने कहा। सभी हँस दिए। लेकिन अगला मैसेज देखकर मैं टेंशन में आ गई।

देबू ने मुझे जेएफके से एयर इंडिया काउंटर की तस्वीर भेजी थी। इसके साथ एक स्माइली थी।

‘लो लो, एक और शॉट लो ना, ’ मेरी एक कज़िन ने मुझसे इसरार करते हुए कहा।

इससे तो अच्छा होगा कि मुझे शूट कर दो।

‘मिस यू, ’ एक और मैसेज आया।

‘क्या तुम अपनी यह बकवास बंद करके घर जाओगे, ’ मैंने जवाब में लिखा, लेकिन उसे भेजने से ऐन पहले मैंने देखा कि यह ‘मिस यू’ मैसेज ब्रजेश की तरफ से आया था। मैंने तुरंत उसे हटाकर लिखा : ‘ऑ, सो स्वीट’ और इसके साथ बहुत सारी स्माइली भेज दीं। मुझे इसके अलावा और कुछ नहीं सूझा। इसके बाद मैंने देबू को मैसेज लिखा : ‘प्लीज़ मुझे तंग मत करो और घर चले जाओ।’

‘गर्ल्स, अगर हम आज की शाम के लिए दुल्हन को उसके फोन से अलग कर दें तो कैसा रहेगा?’ अदिति दीदी ने अनाउंस किया।

‘नहीं दीदी, ऐसा नहीं...’ मैं बोल ही रही थी कि उसने मेरा फोन छीनकर अपने हैंडबैग में रख लिया। फिर कहा, ‘यह एक बैचलरेट के रूप में तुम्हारी आखिरी रात है। फोन में वक्त ज़ाया करने के बजाय कुछ क्रेजी चीज़ें करो।’ मैं उससे कहना चाहती थी कि मेरे फोन में पहले ही बहुत सारी क्रेजी चीज़ें हो रही हैं!

‘ठीक है, ’ अदिति दीदी ने कहा। ‘अब चैलेंज द ब्राइड खेलते हैं। सभी ब्राइड को कोई चैलेंज देंगे और राधिका को उसे करना होगा।’

मैंने आसपास देखा। हमारी टेबल कोने में थी। बीच मे कई लोग बार स्टूल्स पर बैठे थे। आधे कस्टमर्स इंडियन थे, जो यहाँ क्रिसमस की छुट्टियाँ मनाने आए थे। बाकी यूरोपियन और अमेरिकन टूरिस्ट थे।

ज्योति ने मुझे पहला टास्क दिया।

‘वो देखो उधर एक टकला गोरा।’ उसने बार में बैठे एक अधेड़ व्यक्ति की ओर इशारा किया। ‘पता करो कि उसका नाम क्या है और वो किस देश का है।’

‘ये तो बहुत आसान है।’ दीदी ने कहा।

‘अच्छा तो फिर उसका नाम और देश का नाम पता करो और उसकी टक्कल पर एक किस करो!’ सभी हँस दिए।

‘नो वे, ’ मैंने कहा।

‘यस वे। यह लो, इसे पी जाओ।’ सलोनी ने मुझे आधा गिलास शैम्पेन दी। मैं उसे गटागट पी गई। ‘अब जाओ।’ अदिति ने कहा। मैं बार की ओर बढ़ी।

‘हाय देयर, ’ मैंने उस आदमी से कहा। उसने एक सफेद वेस्ट और जीन्स पहन रखी थी। उसके दाएँ हाथ में दो रिंग थीं और कंधे पर एक ड्रैगन टैटू बना हुआ था।

‘हाय, यंग लेडी, ’ उसने ऑस्ट्रेलियन एक्सेंट में कहा। मुझे इसे कंफर्म करना था।

‘क्या आप एक ऑस्ट्रेलियन क्रिकेटर हैं?’ वह हँस पड़ा।

‘नो मैट, मैं ऑस्ट्रेलियन ज़रूर हूँ, लेकिन क्रिकेट नहीं खेलता।’

‘क्या आप फिलिप ली हैं?’ मैंने वहीं एक नाम बना लिया।

‘क्या वह भी कोई प्लेयर है?’

‘तो आप फिलिप नहीं हैं?’

‘नहीं।’ उसने कहा। ‘क्या मैं तुम्हें एक ड्रिंक खरीदकर दूँ, यंग लेडी?’

‘वेल, तब आप कौन हैं?’

‘मैं मार्क हूँ। आप कौन-सी ड्रिंक लेना पसंद करेंगी?’

‘टकिला शॉट।’

मार्क ने शॉट्स ऑर्डर किए। अभी तक मैं अपनी तीन में से दो टास्क पूरा कर चुकी थी।

‘चीयर्स, ’ उसने शॉट लेने पर कहा। मैंने गिलास टेबल पर रख दिया।

‘तुम यहाँ छुट्टियाँ मनाने आई हो?’

‘एक्चुअली, मैं यहाँ शादी करने आई हूँ!’

‘रियली?’

‘हाँ। और अब मुझे जाना होगा। बाय, मार्क।’

इससे पहले कि वो कुछ कहता, मैंने उसका सिर चूम लिया।

‘थैंक्स फॉर द ड्रिंक, ’ मैंने कहा और वहाँ से चली आई। लड़कियों ने स्टैंडिंग ओवेशन से मेरा स्वागत किया।

‘अब बहुत हुआ, ’ मैंने कहा। मार्क ने मुझे देखकर बार से आँख मारी।

लड़कियाँ हँस-हँसकर दोहरी हुई जा रही थीं। हम शैम्पेन की चार बोतलें गटक चुके थे। इसके बाद हमने चार और ऑर्डर कीं। हमें यह भी नहीं पता चला कि हमने आखिर कब

नाचना शुरू कर दिया। डीजे ने ‘सुबह होने ना दे’ और ‘बेबी डॉल’ जैसे ट्रैक बजाने शुरू कर दिए। पब में मौजूद कुछ मर्दों ने मेरी कज़िन्स के साथ फ्लर्ट करने की कोशिश की, लेकिन अदिति दीदी ने उन्हें फटकार दिया। लेकिन एक घंटे बाद हमने देखा कि लड़कों का और एक समूह क्लब में आ धमका है। हम लड़कियों को माजरा समझने में थोड़ा वक्त लगा।

‘ओह माय गॉड, ये तो ब्रजेश जीजू और उनकी गैंग है!’ सलोनी ने कहा।

ब्रजेश डांस फ्लोर पर चलकर मेरे पास आया।

‘नॉट अलाउड, नॉट अलाउड, ’ ज्योति ने कहा।

‘तुम तो क्लब क्यूबाना में थे ना। क्या हुआ?’ श्रुति ने ब्रजेश के ममेरे भाई अखिल से पूछा।

‘कुछ नहीं। हमने कुछ ड्रिंक्स लीं। फिर हम इस बात पर लड़ने लगे कि जब गोवा में मौजूद सबसे खूबसूरत लड़कियाँ यहाँ अकेले पार्टी कर रही हैं, तो फिर हम वहाँ क्या कर रहे हैं।’ अखिल ने कहा।

श्रुति शरमा गई। ऊपर-ऊपर से भले ही लड़कियों ने लड़कों के वहाँ आने का विरोध किया, लेकिन मन-ही-मन वे इससे खुश थीं। हम लड़कियाँ ऐसी ही होती हैं। हम चाहती हैं कि हमें कोई चाहे, फिर चाहे हम ऊपर से ऐसा दिखाएँ कि हम ऐसा नहीं चाहतीं।

‘तुम बहुत खूबसूरत दिख रही हो, ’ ब्रजेश ने कहा। डीजे अब हनी सिंह का ‘ब्लू आईज’ बजा रहा था, शायद इसलिए ताकि सुरूर में डूबे हुए सिंगल मर्द फ्लोर पर आ जाएँ।

‘ज़ाहिर है आपने बहुत पी ली है, ’ मैंने कहा। क्योंकि मैं बाकी लोगों को तो बहुत खूबसूरत नज़र नहीं आ रही थी।

‘वेल, मैंने पी तो है, मगर इतनी भी नहीं। लेकिन मैंने तो हमेशा ही तुम्हें बहुत खूबसूरत माना है, ’ ब्रजेश ने कहा।

स्वीट, मैंने मन-ही-मन कहा। मेरे भीतर की टकिला ने उसे एक हग दिया।

‘ मैंने तुम्हें बहुत सारे मैसेज किए, ’ ब्रजेश ने कहा।

‘ओह? लेकिन मेरा फोन? मुझे यह भी नहीं मालूम कि मेरा फोन कहाँ पर है।’

‘मैं जानना चाहता था कि अगर हम यहाँ आ जाएँ तो ठीक रहेगा ना। मैंने सबको रोकने की बहुत कोशिश भी की।’

‘इट्स ओके। आखिर हम यहाँ पर मौज-मस्ती करने ही तो आए हैं।’

‘नाइस म्यूजिक।’

‘तुम डांस करना चाहोगे?’

‘मुझे डांस नहीं आता।’

‘मुझे कौन-सा आता है।’

मैंने उसके कंधे को थाम लिया और हम ‘ब्लू आईज’ की धुन पर थिरकने लगे। लड़कियों ने आह भरी और फिर ‘हाऊ स्वीट, हाऊ स्वीट’ करने लगीं।

देखिए, मैं एक अच्छी लड़की भी हो सकती हूँ। क्या मैं एक अच्छी लड़की बनने की कोशिश नहीं कर रही हूँ? मैंने अपने भीतर की मिनी-मी से पूछा, जो कि मेरी निजी दोस्त और क्रिटिक थी। लेकिन मिनी-मी अब तक सो चुकी थी। यह अल्कोहल की कृपा से हुआ था। शायद अधिकतर लोग इसीलिए पीते हैं, ताकि अपने भीतर के क्रिटिक की आवाज़ को चुप करा सकें। फिर उसके बाद वे जो चाहें, वह कर सकें।

4

दोपहर के 4 बजे थे। बीती रात पार्टी करने वाले हर इंसान पर हैंगओवर हावी था। हम सुबह 6 बजे होटल लौटे थे और सीधे ब्रेकफास्ट करने चले गए थे। मुझे याद है कि मैं अपनी मॉम के साथ बैठकर पैनकेक्स ऑर्डर कर रही थीं। लेकिन मैं पूरे समय ऊँघती रही और ज़्यादा खा नहीं सकी।

'वेक अप। ये ठीक नहीं है। ब्रजेश के पैरेंट्स सोचेंगे कि कैसी अनकल्चर्ड दुल्हन उनके घर आ रही है। इस तरह भला कोई पीता है?' मेरी माँ मुझे हिलाते हुए कह रही थीं।

'उनके बेटे ने भी तो ऐसा ही किया। वह तो उल्टे हमारे क्लब चला आया।'

'वो लड़का है।'

उस हैंगओवर वाली हालत में भी मेरे भीतर की फेमिनिस्ट जाग उठी और मैंने माँ को घूरकर देखा।

'लड़का हुआ तो क्या?' अल्कोहल के कारण आया हुआ कांफिडेंस अब भी मुझमें कायम था।

'कुछ खा लो। और फिर थोड़ा आराम कर लो। आज भजन होंगे, इसलिए कुछ डिसेंट-सा पहन लेना। आखिर तुम लोगों को भजन से पहले वाली रात को ही ऐसे पार्टी करने की ज़रूरत क्या थी?'

'आप बुजुर्गों को पार्टी के अगले दिन भजन करने की क्या ज़रूरत है?'

'तुम पैसा कमाने लगी हो, इसका मतलब तुम कुछ भी बोलोगी?'

मैं चुप रही। मैंने नहीं कहा कि उनकी यही अनकल्चर्ड और गैरज़िम्मेदार बेटी आज अपनी शादी का खर्चा खुद उठा रही थी। एक लाख पचास हज़ार डॉलर्स या एक करोड़ रुपए मेरी सैलेरी से वेडिंग बजट के नाम पर कटे थे। क्या उन्हें इसकी कोई परवाह भी थी?

मुझे खुद को शांत करने के लिए एक गिलास ऑरेंज ज्यूस गटकना पड़ा। तुमने अपनी लाइफ की पहले ही बारह बजा ली है, क्या अब तुम कुछ दिन अच्छे से रह सकती हो या नहीं? मेरे भीतर की आवाज़ ने मुझसे कहा। ओह, गुड मोर्निंग, मिनी-मी। तुम नींद से कब जागीं?

मुझे अपने रूम में ले जाया गया। वहाँ अदिति दीदी अब भी अपनी लाल ड्रेस पहने सो रही थी। मैंने चेंज करके टी-शर्ट और पायजामा पहना, दीदी की टांगें ठीक कीं और उनके पास लेट गई। मेरा सिर ऐसे दर्द कर रहा था, मानो किसी ने उस पर हथौड़े मारे हों। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं।

दोपहर में ढाई बजे मुझे दीदी ने उठाया।

'उठ जाओ, भजन करना है।'

'भजन चार बजे होंगे, अभी से क्यों उठा रही हो?' मैंने कहा। मेरी आँखों में दिन की रोशनी चुभ रही थी। दीदी ने परदे खोल दिए।

'तुम्हें तैयार होने के लिए भी तो समय चाहिए। यह लो, तुम्हें यह ऑरेंज साड़ी पहननी है।'

'नहीं।' मैंने कहा और एक तकिये से अपना मुँह ढाँक लिया।

लेकिन आखिरकार मुझे उठना ही पड़ा। मैं कपड़े पहनने की लंबी प्रक्रिया को लेकर बड़बड़ाती रही, जिसे लड़कियाँ ही समझ सकती हैं। होटल ने एक हेयर और मेकअप ड्रेसर को हमारे रूम में भिजवाया, जिसके हेयर-ड्रायर की आवाज़ से मेरा सिर और दुखने लगा।

हम नीचे फंक्शन रूम में पहुँचे। उसे इस तरह सजाया गया था, मानो वह किसी मंदिर के अंदरूनी हिस्से जैसा लगे। दीवारें गेंदे के फूलों से सजी थीं। बीच में साँई बाबा की बड़ी-सी तस्वीर रखी थी। मेरे पैरेंट्स किसी भी भगवान से ज़्यादा उनमें आस्था रखते थे। दूसरे हिंदू भगवानों की मूर्तियाँ भी वहाँ थीं। भजन गायकों ने अपने माइक सेट कर रखे थे।

नौजवान लोग पीछे की तरफ बैठे थे। ब्रजेश के दोस्त और कजिन्स ने सिल्क के कुर्ता-पायजामे पहन रखे थे। तरोताज़ा दिखने के लिए वे शॉवर लेकर आए थे। अपने हैंगओवर से निपटने के लिए वे कॉम्बिफ्लैम की गोलियों का सेवन कर रहे थे। लड़कियों की हालतभी कोई बेहतर नहीं थी। उनमें से अधिकतर लहंगा या सलवार-कमीज़ पहने दीवार से टिककर बैठी थीं। जिस तरह से भारतीय लड़कियाँ छोटे कपड़े पहनने वाली पार्टी चिक्स से तुरंत ढँकी-छुपी भजन गाने वाली कन्याएँ बन जाती हैं, वह किसी चमत्कार से कम नहीं।

भजन शुरू हुए। सिंगर की आवाज़ बहुत अच्छी थी, लेकिन हैंगओवर के कारण हमें वह बिजली की कड़कड़ाहट जैसी सुनाई पड़ रही थी। ब्रजेश ने मेरी ओर देखा और मुस्करा दिया। मैंने इशारा किया कि मैं सो जाना चाहती हूँ। उसने मेरी तरफ कॉम्बिफ्लैम की एक गोली बढ़ा दी।

'तुम्हारी तबियत तो ठीक है?' कमला बुआ ने कहा।

'बस थकान है।'

'मेरे पास एक आयुर्वेदिक दवाई है, जो अच्छा काम करती है।' कमला बुआ ने कहा। लेकिन मैं उनसे कहना चाहती थी कि कॉम्बिफ्लैम से बेहतर कुछ नहीं हो सकता।

'भजन अच्छे हैं बुआ।' मैंने कहा।

हमारे लिए ब्लैक कॉफी आईं। मैंने दो कप उठा लिए। कॉफी पीने के बाद जैसी मुझमें थोड़ी चेतना आई।

'चलो अब आगे आकर प्रार्थना करो बेटा', मेरी एक आंटी ने मुझसे कहा।

ब्रजेश और मैं दोनों आगे बढ़े और भगवान के आगे सिर झुकाया। सिंगर्स ने हम दोनों के लिए एक स्पेशल गाना गाया। मैंने ब्रजेश की ओर देखा। उसकी आँखें बंद और हाथ जुड़े

हुए थे। वह सच में प्रार्थना कर रहा था। मुझे अफसोस हुआ कि मैं उसकी जितनी श्रद्धा से प्रार्थना नहीं कर पा रही थी।

फिर मैं पीछे जाकर लड़कियों के साथ बैठ गई। ब्रजेश लड़कों के पास चला गया। अगला भजन थोड़ा ज़्यादा पॉपुलर था, इसलिए लोग भी साथ में गाने लगे। लेकिन तेज आवाज़ के बावजूद मुझे हल्की-सी झपकी लग गई। लेकिन जैसे ही दाढ़ी वाला एक नौजवान कमरे के भीतर आया, मैं एक झटके से जाग गई। उसके घुंघराले बाल थे और उसने सफेद कुर्ता-पायजामा पहन रखा था।

'ओह गॉड, देबू?' मेरे मुँह से निकल गया।

'क्या?' मेरे पास बैठी रजनी ने कहा।

'कुछ नहीं, ' मैंने कहा।

वह कांफिडेंस के साथ साँई बाबा की तस्वीर के पास गया, घुटनों के बल झुका और सिर नवाया। इसके बाद वह लड़कों के बीच जाकर बैठ गया। फिर भजन की लय पर हाथ बजाकर ताल देने लगा।

ये यहाँ पर क्या कर रहा है? कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही? नहीं ऐसा तो नहीं है।

उसने मेरी ओर देखा और मुस्करा दिया। ठीक उसी समय ब्रजेश भी मेरी ओर देखकर मुस्कराया। मैंने दोनों को एक फेक-स्माइल दी। मुझे देबू से बात करनी थी। लेकिन कैसे? मेरा फोन कहाँ था?

'मेरा फोन कहाँ है? आज तो मैंने उसे देखा ही नहीं। कहीं क्लब में ही तो नहीं रह गया?' मैंने रजनी से कहा।

'कल रात को तो वह अदिति दीदी के पास था ना?'

मैंने अदिति दीदी के कंधे थपथपाए। वे मेरे सामने सलवार-कमीज़ पहने बैठी थीं और बहुत आस्था से भजन गा रही थीं। कोई भी नहीं कह सकता था कि बीती रात उन्होंने 'बेबी डॉल' गाने पर सनी लियोनी के हर स्टेप को करके दिखाया था।

'क्या है?' उन्होंने कहा। मैंने इशारे से उनसे पूछा कि मेरा फोन कहाँ है। उन्होंने अपने पर्स में हाथ डाला और उसे निकालकर मुझे दे दिया।

उसमें केवल 5 परसेंट बैटरी बची थी। मैंने अपने मैसेजस चेक किए। कुछ ब्रजेश के मैसेज थे, जब वह रात को क्लब क्यूबाना आना चाह रहा था। देबू के भी मैसेज थे कि वह अब टेक-ऑफ कर रहा है। और फिर एक मैसेज यह भी कि वह गोवा पहुँच चुका है।

'तुम यहाँ पर कर क्या रहे हो?' मैंने देबू को मैसेज किया।

उसने अपना फोन चेक नहीं किया। वह भजनों में खोया हुआ था। मैंने उसे इशारा किया कि वह अपना फोन चेक करे।

उसने अपना फोन चेक किया और बहुत सारी विंक स्माइलीज भेज दीं।

'लेकिन तुम यहाँ क्यों आए हो?'

‘नाइस सरप्राइज़, है ना?’

‘बकवास बंद करो, देबू। मेरी पूरी फैमिली यहाँ पर है।’

‘हाँ, मैंने देखा। दूल्हे को भी देखा। उसकी भी पूरी फैमिली यहीं है। गोल्डन सिल्क कुर्ता, यही पहना है ना दूल्हे ने?’

‘क्या चाहिए तुम्हें?’

‘आमने-सामने की बातचीत।’

‘मैं नहीं कर सकती।’

‘मैं इतनी दूर से आया हूँ, प्लीज़।’

‘मेरा फोन बंद हो रहा है।’

‘मुझसे मिलो।’

‘कैसे?’

‘कहीं भी, कभी भी।’

‘भजन के बाद, होटल की जिम में।’

मैंने सोचा कि ठीक है, वैसे भी भजन के बाद जिम मे कौन आएगा। देबू ने थंब्सअप का साइन बनाकर भेजा।

◆

देबू बेंच प्रेस पर बैठा था। उसके हाथ में एक डम्बबेल थी और वह बाइसेप कर्ल्स कर रहा था। मैं उसके सामने खड़ी थी।

‘आर यू क्रेज़ी?’ मैंने कहा।

‘यहाँ आने के लिए शुक्रिया। और तुम इस ऑरेंज साड़ी में बहुत खूबसूरत लग रही हो। वॉव। जस्ट वॉव।’

‘व्हाटेवर। लेकिन क्या तुम उस डम्बबेल को नीचे रखोगे?’

‘मैं तो बस नैचुरल लगने की कोशिश कर रहा हूँ।’

‘तुम कुर्ते में हो और मैं साड़ी में। हम यहाँ नैचुरल लग ही नहीं सकते। देबू, तुम्हारा दिमाग तो ठिकाने है ना। तुम फ्लाइट पकड़कर सीधे यहाँ आ पहुँचे।’

‘हाँ, और अब जेटलैग मुझे घेरे हुए हैं।’

‘तुम्हें पता नहीं, मैं यहाँ कैसे आई हूँ। सभी लोग मुझे डिनर के लिए ढूँढ रहे होंगे। यह कोई मज़ाक नहीं है। मेरी पूरी फैमिली यहाँ पर है। उनकी इज़्ज़त का सवाल है। तुम एकदम से भजन करने कैसे चले आए?’

‘क्योंकि मैं यह प्रार्थना करना चाहता था कि मेरा मिशन कामयाब हो।’

‘कैसा मिशन?’

‘तुम्हें फिर से हासिल करना। क्योंकि अभी मेरे लिए तुम इस दुनिया की सबसे कीमती चीज़ हो।’

मैं हैरान रह गई और उसकी ओर देखती रही। उसके चेहरे पर हमेशा की तरह दो हफ्ते की दाढ़ी थी और उसके बाल घुंघराले थे। उसका वजन जरूर थोड़ा बढ़ गया था।

‘कैसी हो बेबी?’

‘मुझसे इस तरह बात मत करो।’ मैंने इतनी जोर से कहा कि ट्रेडमिल पर चल रहे एक अमेरिकी आदमी ने पलटकर मेरी ओर देखा।

‘तुम्हें अंदाज़ा भी है, मुझे तुम्हारी वजह से क्या कुछ सहना पड़ा? तुमने तो जैसे मुझे अपनी ज़िंदगी से निकालकर फेंक ही दिया था।’

‘वो मेरी बेवकूफी थी। तब मैं केवल चौबीस साल का इनसिक्योर नौजवान था।’

‘और अब तुम क्या हो? अठाइस साल के एक बेवकूफ?’

‘हो सकता है। लेकिन अब मैं कम-से-कम इतना बड़ा तो हो ही गया हूँ कि यह समझ सकूँ कि तुम मेरी ज़िंदगी में आई सबसे खूबसूरत इंसान थीं।’

‘क्या? इट्स ओवर, देबू। यह बहुत पहले ही खत्म हो चुका है। तुम तो मेरे फोन का भी जवाब नहीं देते थे।’

‘आई एम सॉरी।’

‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब मैं तुमसे कहूँगी कि यहाँ से चले जाओ। जाओ, कोलकाता में अपने पैरेंट्स से मिल आओ। आखिर तुम इंडिया में हो।’

‘न्यूयॉर्क, बेबी।’

‘व्हाट न्यूयॉर्क?’

‘क्या तुम्हें वे दिन याद नहीं, जो हमने न्यूयॉर्क में साथ बिताए थे? हमारे बीच इशूज़ थे, माना। लेकिन तुम वो तमाम यादें कैसे भूल सकती हो?’

उसने मेरी आखों में झाँककर देखा। ऐसा लग रहा था मानो वह बहुत तकलीफ में हो। यह मेरे साथ पहली बार हुआ था कि कोई आधी दुनिया का चक्कर लगाकर मेरे लिए आया हो। और जिस इंसान ने आपके लिए यह किया हो, उस पर आप देर तक चिल्ला नहीं सकते।

‘तुम सबकुछ भूल गई हो, बेबी?’ देबू ने फिर पूछा।

‘नहीं देबू, मुझे सबकुछ याद है, ’ मैंने कोमल स्वर मे कहा।

न्यूयॉर्क

चार साल पहले

Downloaded from Ebookz.in

5

‘बे-गल्स। वे इन्हें ऐसे ही प्रनाउंस करते हैं, बे-ग-ल्-स, -’ अविनाश ने गोल्डमान साक्स के 85 ब्रॉड स्ट्रीट, वर्ल्डवाइड हेडक्वार्टर्स के ब्रेकफास्ट काउंटर पर कहा।

अविनाश आईआईएमए का मेरा बैचमेट था। मेरी तरह उसने भी यहाँ पर जॉब पाने में कामयाबी पाई थी। वो अपना एमबीए करने से पहले भी विदेश में जॉब कर चुका था। अमेरिका में चीज़ें कैसे होती हैं, इस बारे में वह मुझसे कहीं बेहतर जानता था। उसने डॉनट के आकार वाली ब्रेड उठाई, उसे काले प्लास्टिक के एक चाकू से हॉरिज़ोन्टली स्लाइस किया और उस पर पनीर लगा दिया।

‘बेगल और क्रीम चीज़, क्लासिक कॉम्बो, ’ उसने कहा।

‘थैंक्स अविनाश, ’ मैंने कहा। मैंने ज़िंदगी में पहली बार एक वेस्टर्न स्टाइल ऑफिस सूट पहना था। आईआईएमए में हुए अपने इंटरव्यू तक में मैंने साड़ी ही पहनी थी।

कहीं यह स्कर्ट बहुत टाइट तो नहीं? कहीं मेरा पिछवाड़ा बहुत बड़ा तो नहीं दिख रहा? मेरे बाल तो ठीक हैं? मेरे भीतर रहने वाली मिनी-मी आज बहुत बोल रही थी। आखिर यह उसके लिए बक-बक करने की एक परफेक्ट सिचुएशन जो थी।

दुनियाभर से दो सौ और फ्रेश रिक्रुट्स ने ज्वॉइन किया था। हमारी एसोसिएट ट्रेनिंग दस सप्ताह तक चलने वाली थी और इसके लिए हमें सुबह 7.30 बजे रिपोर्ट करना था। एक क्विक ब्रेकफास्ट के बाद क्लासेस शुरू होनी थीं और शाम 6.30 तक चलती रहनी थी।

कॉर्पोरेट फाइनेंस, इक्विटीज़ एंड डिस्ट्रेस्ट डेट्स जैसे अलग-अलग डिपार्टमेंट्स के पार्टनर्स और सीनियर एम्पलॉइज़ को, सेशंस लेकर हमारे ग्रुप में होने वाली चीज़ों के बारे में बताना था। 20 हज़ार लोगों की फर्म में कोई 200 पार्टनर्स थे और वे सीनियर-मोस्ट पोजिशंस पर थे। उनकी सालाना कमाई करोड़ डॉलर तक होती।

‘गोल्डमान साक्स बिज़नेस प्रिंसिपल्स खोलिए, ’ एक सीनियर पार्टनर गैरी कोलबर्ट ने कहा, जो किसी अमीर बुजुर्ग जैसे नज़र आ रहे थे। गोल्डमान के कुल चौदह बिज़नेस प्रिंसिपल्स थे।

‘लॉन्ग टर्म ग्रीड, ’ गैरी ने बोलना शुरू किया। ‘प्रिंसिपल्स में यह पंक्ति पढ़िए। जी हाँ, यहाँ पर हमारा यही मकसद रहता है।’

इंवेस्टमेंट बैंकिंग और लालच का चोली-दामन का साथ होता है। यह गोल्डमान की ईमानदारी थी कि वे इसको स्वीकार करते थे। वे इसमें कोई देरी भी नहीं करते थे, क्योंकि जितना लालच किया जाए, पे-ऑफ उतना ही अच्छा मिलता था। गैरी ने गोल्डमान में अपने पैंतीस साल लंबे कैरियर के बारे में बताया, जिसकी शुरुआत एक ऑपरेशंस असिस्टेंट के रूप में हुई थी।

'गोल्डमान में सभी जमकर मेहनत करते हैं। इससे बचने का कोई तरीका नहीं है। यदि आपको आराम की लाइफ चाहिए तो यह जगह आपके लिए नहीं है, ' गैरी ने कहा। वेल, तब तक बहुत देर हो चुकी थी और अब मैं कहीं और नहीं जा सकती थी। मैं न्यूयॉर्क में थी और ऐसी कहानियाँ सुन चुकी थी कि किस तरह से नए एसोसिएट्स को ऑफिस में ही सोना पड़ता था।

हमारी ट्रेनिंग शुरू हुए दो हफ्ते हो गए थे, जब अविनाश मेरे पास आया और बोला : 'यहाँ न्यूयॉर्क में हम इंडियन फ्रेंड्स का एक ग्रुप है। हम आज रात ड्रिंक्स के लिए मिल रहे हैं। तुम आना चाहोगी?'

'मुझे मर्जर मॉडल स्प्रेडशीट पूरी करना है, ' मैंने कहा।

'तुम मुग्गु की मुग्गु रह गईं, ' अविनाश ने कहा। हमेशा काम में मसरूफ रहने वालों को 'मुग्गु' कहा जाता था। आईआईएमए में मुझे जो तमगे मिले थे, वे इतनी आसानी से मेरा पीछा छोड़ने वाले नहीं थे।

लेकिन सच कहूँ तो मैंने झूठ बोला था। मेरा एक हेयरकट अप्वॉइंटमेंट था। यहाँ आने के बाद मैंने अपने पढ़ाकू और अनफैशनेबल लुक को त्यागने का मन बना लिया था। मेरी क्लास की एक एसोसिएट ट्रेनी के बेहद खूबसूरत, कमर तक लहराते बाल थे, और मैं भी ऐसे ही बाल चाहती थी। उसने मेरे लिए 32वीं स्ट्रीट के एक सैलून में बुकिंग करवा दी थी।

ज़ाहिर है, मैं अविनाश को यह नहीं बता सकती थी। वह मेरी हँसी उड़ाता। आईआईएमए एल्युमनी ग्रुप में खबर फैल जाती कि मुग्गु बाल सँवार रही है।

'तुम न्यूयॉर्क में हो, तुम्हें थोड़ा जी भी लेना चाहिए।' अविनाश ने कहा।

'ड्रिंक्स पार्टी कहाँ पर है?' मैंने कहा।

'व्हिस्की ब्लू पर। यह डब्ल्यू होटल में एक बार है। बेंजामिन होटल के ठीक सामने, जहाँ तुम ठहरी हो।'

दुनिया में कुछ प्रॉब्लम्स ऐसी होती हैं, जो केवल हम लड़कियों के लिए ही होती हैं। जैसे कि क्या पहनें! उस रात मेरे पास पहनने के लिए अच्छा कुछ नहीं था।

'पक्का तो नहीं कह सकती, मैं देखती हूँ।' मैंने कहा।

'क्या देखती हूँ, बस चली आओ।' उसने कहा।

◆

मेरे जैसी थोड़ी हटके लड़कियों के लिए, जिनके लिए शॉपिंग बहुत मुश्किल होती है और जो यह तय नहीं कर पाती हैं कि क्या पहना जाए, बनाना रिपब्लिक सबसे अच्छी जगह है।

'हाय, यंग लेडी।' एक एफ्रो-अमेरिकन सेल्स असिस्टेंट ने मुझसे कहा।

‘मुझे कुछ दोस्तों के साथ ड्रिंक्स पर जाना है और शॉपिंग करना मेरे बस की बात नहीं। क्या आप मेरी मदद करेंगी?’ मैंने अपनी ज़िंदगी में अभी तक केवल टेक्स्ट बुक की ही शॉपिंग की थी।

शॉप असिस्टेंट ने मेरे लिए एक ब्लू लैस ड्रेस निकाली। ड्रेस फिट थी, लेकिन वह मेरी जांघों तक जाकर खत्म हो जा रही थी।

‘यह बहुत छोटी है, ’ मैंने कहा।

‘बिलकुल नहीं। वैसे भी ये गर्मियों के दिन हैं। आप इसमें बहुत अच्छी लग रही हैं, ’ उसने कहा। मुझे उसका यह कहना अच्छा लगा, हालाँकि उसे ऐसी बातें कहने के पैसे मिलते थे। ‘लेकिन आपकी लेग्स को वैक्स करना होगा, बशर्ते आप नैचुरल रहना ना पसंद करती हों।’ सेल्सपर्सन ने मशहूर अमेरिकन पोलिटिकल करेक्टनेस का उदाहरण देते हुए कहा।

मैं रात नौ बजे व्हिस्की ब्लू पहुँची। इस आलीशान बार और लाउंज के सोफे बहुत अच्छी हालत में नहीं थे और यहाँ लाइट भी डिम थी। सबसे पहले मुझे अविनाश ने पहचाना।

‘हे, तुम लेट हो गईं। और वॉव!’

‘क्या?’

‘तुम्हारी ड्रेस। मैं तो तुम्हें पहचान ही नहीं पाया।’

मैं मन-ही-मन सोचने लगी कि यह कौन-सा वाला वॉव था : ‘ओह माय गॉड, तुम कितनी खूबसूरत लग रही हो’ वाला या ‘हाय राम, ये तुमने क्या पहन लिया’ वाला?

अविनाश ने मुझे सबसे इंट्रोड्यूस कराया : ‘दैट्स रुचि, आशीष, निधि, रोहन और ये हैं हमारे ड्रीमर-फिलॉस्फर देबू। और गाईज़, ये हैं राधिका, आईआईएमए की मेरी बैचमेट, एक नंबर की मुग्गु हैं ये!

फ़क यू, अविनाश! मैंने मन ही मन सोचा।

‘लेकिन यह देखने में तो मुग्गु नहीं लगती, ’ देबू ने कहा और मेरे बैठने के लिए जगह बनाई।

हमारे पास दो सोफा थे। उनमें से एक पर रुचि, आशीष और निधि बैठे थे। दूसरी पर रोहन, अविनाश, देबू और मैं थे। वेटर ने मेरे ऑर्डर के बारे में पूछा।

‘मैं तो ज़्यादा पीती नहीं, ’ मैंने कहा।

‘डोंट वरी, वे एक बार में एक गिलास ही देते हैं, ’ देबू ने कहा। मैं मुस्करा दी।

उसने मेरी आँखों में झाँककर देखा। वाकई उसका लुक फिलॉस्फरों जैसा था, बढ़ी दाढ़ी और बिखरे हुए बालों के साथ।

‘वाइन, ठीक है?’ उसने कहा।

‘श्योर, ’ मैंने कहा।

‘लेडी के लिए एक गिलास शिराज़, ’ देबू ने वेटर से कहा। इससे पहले मेरे लिए किसी ने शिराज़ ऑर्डर नहीं की थी। बाद में मुझे पता चला कि यह एक किस्म के अंगूर से बनी वाइन का नाम है।

‘चीयर्स, ’ ड्रिंक्स आने के बाद देबू ने कहा।

सभी ने अपने गिलास उठाए। देबू ने कहा : ‘यहाँ आने वाले नए लोगों अविनाश, राधिका और रोहन के नाम : वेलकम टू यूनाइटेड स्टेट्स, वेलकम टू न्यूयॉर्क!’

धीरे-धीरे मुझसे उन लोगों के बारे में पता चलता रहा। रोहन आई आईआईएमसी से आया था। उसका जॉब मोर्गन स्टेनले में था। निधि और आशीष एक-दूसरे को डेट कर रहे थे। वे मेरिल लिंच न्यूयॉर्क में दो साल काम कर चुके थे।

जब सब बातचीत में खोए हुए थे, तब देबू मुझसे मुखातिब हुआ और कहा : ‘गोल्डमान साक्स, राइट? दैट्स अ बिग डील। कैसा लग रहा है वहाँ काम करना?’

‘इट्स ओके। मैं अब भी ट्रेनिंग में ही हूँ। बहुत कुछ मेरे सिर के ऊपर से ही निकल जाता है। तुम सुनाओ, तुम्हारा कैसा चल रहा है? तुम भी किसी बैंक में हो?’

देबू हँस पड़ा। ‘बिलकुल नहीं। मेरा हिसाब-किताब से कोई लेना-देना नहीं है। मैं बीबीडीओ में काम करता हूँ। यह मेडिसन एवेन्यू पर एक एड एजेंसी है।’

‘दैट्स सो कूल, ’ मैंने कहा।

‘मुझे यही एक अच्छा क्रिएटिव कैरियर समझ आया।’

‘तुम कहाँ से हो?’ मैंने कहा।

‘मैं कलकत्ता में पला-बढ़ा। फिर दिल्ली के एसआरसीसी में चला गया, फिर यहाँ से मास्टर्स किया...’

मैंने उसे बीच में ही रोक दिया : ‘एसआरसीसी? तुम वहाँ किस बैच में थे?’

‘ मैंने तीन साल पहले पास किया, ’ उसने कहा।

‘व्हाट! यानी तुम मुझसे एक बैच सीनियर हो।’

एक ही कॉलेज से पढ़ाई करने के बावजूद हम लोग कभी मिले नहीं थे।

‘सॉरी, मुझे याद नहीं आ रहा हम कब मिले थे, ’ मैंने कहा। ‘इसमें तुम्हारी गलती भी नहीं। मैं ही वहाँ हरदम पढ़ाई में डूबी रहती थी।’ हम दोनों हँस दिए। मेरे गिलास से ज़रा-सी वाइन मेरे पैरों पर गिर गई। उसने मुझे एक टिशू दिया। अंधेरा था, फिर भी मैंने पाया कि वह मेरी टाँगों को देख रहा था।

ओह, तो इसी तरह से लड़के लड़कियों को चेक आउट करते हैं। गनीमत है कि अभी अंधेरा है। लगता है मुझे अपने लिए जल्द ही एक वैक्सिंग अप्वॉइंटमेंट भी बुक कराना होगा।

‘तुम कहाँ ठहरी हो?’ देबू ने कहा।

‘सडक के उस पार, बेंजामिन होटल में। लेकिन केवल ट्रेनिंग तक। जल्द ही मुझे अपने लिए एक अपार्टमेंट ढूँढना होगा।’

उसने सिगरेट जलाई और मुझे ऑफर की। मैंने मना कर दिया।

‘क्या मैं कुछ कह सकता हूँ?’

‘श्योर।’

‘तुम्हारी यह ड्रेस बहुत अच्छी है।’

‘ओह थैंक्स।’

‘लेकिन तुम चाहो तो मैं वह प्राइस टैग हटा सकता हूँ। सिक्सटी नाइन नाइंटी फाइव। अच्छे दामों पर मिल गई।’

मेरे चेहरे का रंग बदलकर रेड वाइन जैसा हो गया। मैं अपने जीवन में इससे पहले कभी इतना एम्बैरेस नहीं हुई थी।

‘या तुम अगर ड्रेस लौटाना चाहती हो तो उसे वहीं रहने दो। अमेरिका में रिटर्न पॉलिसी बहुत ज़ोरदार है।’

मैंने जैसे-तैसे अपनी पीठ पर टंगे प्राइस टैग को ढूँढा। वह हँसा, टेबल से कटलरी चाकू उठाया और टैग को काट दिया।

‘वाट्सअप, गाईज़?’ अविनाश ने पूछा।

‘कुछ नहीं। मुझे इनकी ड्रेस अच्छी लगी तो ब्रांड चेक कर रहा था।’ देबू ने कहा।

‘तुम एड वाले हमेशा इन चीज़ों में दिलचस्पी लेते हो, ’ अविनाश ने कहा।

ड्रिंक्स के बाद ग्रुप के लोगों ने रेज़ जाने का फैसला किया, पिज्जा खाने के लिए एक बेहतरीन जगह।

‘तुम्हें खाने में क्या पसंद है?’ देबू ने पिज्जा खाते हुए मुझसे पूछा।

मुझे ऐसी कोई खास चीज़ पसंद नहीं थी और इंडियन फूड का नाम मैं यहाँ लेना नहीं चाहती थी, इसलिए मैंने बोल दिया, ‘चाइनीज़!’

‘यहाँ एक जगह बहुत अच्छा चाइनीज़ मिलता है। यदि तुम चाहो तो हम कभी चल सकते हैं।’

क्या उसने अभी-अभी मुझे अपने साथ बाहर ले जाने की बात कही थी? थैंक यू, बनाना रिपब्लिक। या शायद वह केवल मदद करना चाह रहा है और मुझे बताना चाह रहा है कि अच्छा चाइनीज़ फूड कहाँ मिलता है।

वह मेरी ओर देख रहा था, जवाब के इंतज़ार में।

‘हाँ, क्यों नहीं? तुम मुझे एड्रेस दे सकते हो, या अगर वे होम डिलीवरी कर सकें तो...’

‘मेरा मतलब यह था कि क्या तुम मेरे साथ वहाँ जाना चाहोगी?’

‘ओह, ’ मैंने कहा और चुप हो गई।

‘केवल तुम और मैं, ’ देबू ने कहा।

मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। क्या इसी को लोग डेट कहते हैं?

‘ओके, हम चल सकते हैं’ मैंने गहरी साँस छोड़ते हुए कहा।

‘तो अगले शुक्रवार?’

मेरे दिमाग में कई तरह के विचार घूम रहे थे। क्या वह बहुत जल्दी नहीं कर रहा था? यदि मैं हाँ कह दूँ, तो यह बहुत चीप तो ना लगेगा? कहीं वह मुझे एक स्लट तो नहीं समझ लेगा? लड़कियाँ इस दुनिया में कैसे रहें, इसका कोई यूज़र मैन्यूअल क्यों नहीं होता।

‘शुक्रवार।’ मैंने कहा और चुप हो गई। वह जरूर यह सोच रहा होगा कि आखिर गोल्डमान ने मुझे नौकरी पर रखा कैसे।

‘हाँ वीकेंड, जिसमें अगले दिन ऑफिस जाने का टंटा नहीं।’ उसकी आवाज़ अब बहुत सहज नहीं जान पड़ रही थी।

‘ठीक है।’ मैंने यह ठीक ऐसे कहा, जैसे मुझे सात भारी सूटकेस उठाने पड़े हों।

‘कूल। फिर मैं तुम्हें मैसेज करके बता दूंगा कि कितने बजे चलना है।’

‘श्योर, ’ मैंने कहा।

‘यदि तुम मुझे अपना नंबर दे सको तो, ’ उसने कहा।

‘ओह, ऑफकोर्स।’ मैंने कहा।

Downloaded from Ebookz.in

6

‘डिस्ट्रेस्ड डेट : स्पेशल सिचुएशंस ग्रुप, ’ प्रोजेक्शन सिस्टम की स्लाइड पर लिखा हुआ था। एसोसिएट ट्रेनिंग क्लास में सन्नाटा पसरा हुआ था। यह सबसे मुश्किल ग्रुप था। हर साल इस ग्रुप में केवल एक या दो एसोसिएट्स को जॉब मिलता था। लेकिन यह जॉब हासिल करने वालों को तेज़ तरक्की और बढ़िया बोनस भी दिया जाता था।

इस प्रजेंटेशन के लिए सभी इंतजार कर रहे थे।

‘गुड मोर्निंग, एवरीवन, ’ स्पीकर ने ब्रिटिश एक्सेंट में कहा। ‘आई एम नील गुप्ता, हांगकांग ऑफिस में स्पेशल सिचुएशंस ग्रुप में पार्टनर।’

मैंने अपनी डेस्क से सिर उठाकर देखा। वह छह फीट का तगड़ा शख्स था। गालों की हड्डियाँ उभरी हुईं, हल्का भूरा रंग, कुछ पके बाल। उसने नेवी ब्लू सूट और मैचिंग टाई पहन रखी थी। उसने कहा : ‘मैं आपको डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप का एक ओवरव्यू देना चाहता हूँ, जो कि गोल्डमान में होने के लिए सबसे एक्साइटिंग जगह है।’ मेरे पास चार अमेरिकन लड़कियाँ बैठी थीं : मैगी, एंजेला, जेसिका और कैरोलिन। वे एक-दूसरे को देखकर ‘ही-इज़-सो-हॉट’ की मुद्रा बना रही थीं। यदि वह इस ग्रुप का पार्टनर नहीं होता तो वह बहुत आसानी से उन विज्ञापनों में आने वाला एक मॉडल बन सकता था, जिनमें चंद खास लोग महंगी घड़ियाँ खरीदते नज़र आते हैं।

उसने स्लाइड बदली। इस स्लाइड में बिज़नेस की अलग-अलग स्टेज के बारे में बताया गया था। शुरुआत स्टार्टअप स्टेज से होती थी, जिसमें आगे चलकर ग्रोथ, मैच्योरिटी, डिक्लाइन और डिमाइस की स्टेजेस थीं।

‘एंजेल फंड्स, वेंचर कैपिटल और प्राइवेट इक्विटी। इन्हें कंपनी का मैटर्निटी वार्ड भी कहा जा सकता है, क्योंकि ये नई कंपनियों के लिए मददगार होते हैं।’ लड़कियाँ उसे देखकर कनखियों से इशारे करती रहीं। हांगकांग की लड़कियों को उसे देखकर गर्व की अनुभूति होती रही।

नील ने अपनी बात जारी रखी : ‘दूसरी तरफ हम डेथ वार्ड वाले हैं। हमारा काम तब शुरू होता है, जब कंपनी नाकाम हो चुकी होती है और हमारे सामने यह सवाल होता है कि क्या हमें कुछ ज़ोरदार करना चाहिए या फिर लाइफ सपोर्ट को हटाने का वक्त आ गया है। आपको क्या लगता है यह कितना सरल होगा?’

वह क्लास में टहलता हुआ मेरे पास आ खड़ा हुआ। उसने ज़बर्दस्त परफ्यूम लगा रखा था, ऐसा कि आपका उसके पास जाकर उसे सूँघने का मन हो।

‘यू यंग लेडी, तुम्हें लगता है कि फैक्टरियों को बंद करके लोगों को नौकरी से निकाल देना आसान है?’

मैं इसकी उम्मीद नहीं कर रही थी कि जहाँ दुनियाभर से लोग आए हों, वहाँ मुझसे कोई सवाल पूछा जाएगा। क्या होगा अगर मैंने कोई मूर्खतापूर्ण बात कह दी तो। कहीं वे मुझे पर दिल्ली एक्सेंट में तो नहीं हँसेंगे?

मैं नर्वस-सी उठ खड़ी हुई।

'बैठ जाओ और अपनी सीट पर से ही जवाब दो। कहाँ से हो तुम?'

'इंडिया, सर।'

'आह, मेरी परवरिश वहीं की है। बारह की उम्र में यूके चला आया था। एनीवे, तो तुम्हें क्या लगता है, किसी बिज़नेस को कब बंद कर देना चाहिए?'

'जब तमाम ऑप्शंस खत्म हो गए हों। जब उसे चलाए रखने का मतलब पैसा बर्बाद करना बन जाए। जब कोई उम्मीद ना बचे।'

'जब कोई उम्मीद ना बचे, हूँ, बात तो अच्छे से कही है। लेकिन जब ऐसा होता है, तब क्या दिल नहीं टूट जाता?'

मैं चुप रही। वो आगे बढ़ गया।

'मरे हुए लोगों को दफनाने की कोशिश करने को क्या गलत ठहराया जा सकता है?' नील ने कहा। उसके इस उदाहरण ने तस्वीर को साफ कर दिया था। इससे यह विषय भी रोचक बन गया। नील ने आगे कहा : 'मैं बारह साल में पार्टनर बन गया। फर्म के दूसरे पार्ट्स में इसके लिए बीस से ज़्यादा साल लगते हैं। हमारे एसोसिएट को उतना पैसा मिलता है, जितना दूसरे ग्रुप्स में वीपी को मिलता है। अगर आप डिस्ट्रेस्ड डेट से जुड़े रहते हैं, तो आपको एक ख़ासा अमीर व्यक्ति बनने से कोई रोक नहीं सकता।'

गोल्डमान साक्स कभी भी सार्वजनिक रूप से पैसों की बात नहीं करता था। ट्रेनी एक-दूसरे के कानों में फुसफुसाते कि नील के पास कंपनी के कोई तीन करोड़ डॉलर मूल्य के शेयर थे! इस जानकारी ने उसकी बोल्डनेस में और इज़ाफा कर दिया था।

उसका सेशन खत्म होने पर तालियों से स्वागत किया गया। जाने से पहले उसने आखिरी बात कही : 'ग्रुप में कुछ ही जगहें खाली हैं। जिनको दिलचस्पी है, वे ट्रेनिंग कोऑर्डिनेटर को अप्लाई करें। हम शॉर्टलिस्ट करने के बाद फिर आपसे मिलेंगे।' फिर उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा, 'कोशिश करना, इतने सब के लिए इतना तो किया ही जा सकता है।'

क्या उसने मुझे अप्लाई करने के लिए इशारा किया था? क्या उसको मेरा जवाब अच्छा लगा? तभी मेरा फोन घनघनाया। देबू का मैसेज था।

'ताओ रेस्तरां। 58वीं स्ट्रीट और पार्क एवेन्यू के बीच। रात आठ बजे। ओके?'

ओह, मैं तो भूल ही गई थी कि आज मेरी डेट है। लेकिन उससे पहले मुझे एक और ज़रूरी काम करना था। मेरी वैक्सिंग अप्वॉइंटमेंट।

◆

‘ओहो... जरा धीरे, इट हर्ट्स, ’ मैंने वैक्सिंग लेडी से कहा।

‘तुमने यह पहले कभी नहीं किया?’ कोई पचपन साल की वैक्सिंग लेडी कैथरीन ने कहा।

मैं अपनी अंडरवियर में लेटी हुई थी। मैं ‘कंप्लीटली बेयर’ में आई थी, 68वीं स्ट्रीट और मैडिसन पर मौजूद एक वैक्सिंग स्टूडियो।

‘किया तो है, लेकिन केवल दो बार। इंडिया में। सालों पहले।’ मैंने कहा।

‘रियली? क्या तब भी दर्द हुआ था?’

‘हाँ, हुआ तो था। घर में एक शादी थी और अदिति दीदी ने मुझ पर ज़ोर डालकर यह करवाया था। लेकिन उसके बाद नहीं।’ काश देबू को पता चल जाता कि उसके साथ एक प्लेट नूडल्स खाने के लिए मुझे क्या सहन करना पड़ रहा है। कैथरीन ने मोल्टेन वैक्स के बॉउल में स्पातुला डुबोया।

‘कोल्ड वैक्स में और दर्द होता है, लेकिन रिजल्ट लंबे समय तक रहता है।’ उसने मेरी ऊपरी जाँघों पर वैक्स लगाया, फिर उस पर छह इंच लंबी और दो इंच चौड़ी एक सफेद पट्टी बिछाई। बाल उस पर चिपक गए। मैं समझ गई कि कहर ढाया जाने वाला है।

‘क्या आप मुझे लोकल एनेस्थेसिया नहीं दे सकतीं?’

‘रिलैक्स, हनी।’

मैंने अपने दाँतों को भींच लिया और आँखें मूंद लीं। मुझे लग रहा था जैसे मैं मिडिल ईस्ट में हूं। वहाँ पर औरतों को कोई भूल करने पर कोड़ों से मारकर सज़ा दी जाती है। मुझे लग रहा था, मेरे लिए भी ऐसा कोई फतवा जारी किया गया है। उसने मेरी जाँघें साफ कीं, फिर मुझे पलटने को कहा। मुझे लग रहा था कि मैं कोई मछली हूँ, जिसे डिनर के लिए तैयार किया जा रहा हो।

‘तुम ब्राज़ीलियन पसंद करोगी? उसमें केवल पंद्रह डॉलर और लगेंगे।’

‘ये क्या होता है?’

‘इसका मतलब है सबकुछ सफाचट। वहाँ पर भी।’

मुझे उसकी बात समझने में कुछ सेकंड लगे। तब जाकर मुझे समझ आया कि वह करवाने में कितनी तकलीफ होने के साथ ही कितना अजीब भी महसूस होगा।

‘क्या लड़कियाँ वह करवाती हैं?’

‘सभी लड़कियाँ। आजकल के लड़कों को बुशेस पसंद नहीं।’

ठीक है, मैंने खुद से कहा। पंद्रह डॉलर ही तो और लगेंगे। करवा ही लिया जाए।

‘यू वांट इट?’ कैथरीन ने पूछा।

शायद हाँ। आज रात देबू के लिए नहीं, लेकिन शायद मेरे लिए। राधिका, बहुत हुआ पढ़ाकू बनकर रहना। इसे करवा ही डालो!

'श्योर, ब्राजीलियन हो जाए।'

इसके बाद जो हुआ, उसे मैं डिटेल में नहीं बताना चाहूंगी। कैथरीन ने मेरे शरीर के उस हिस्से का अच्छे-से मुआयना किया, जिसे अभी तक किसी ने देखा नहीं था। फिर उसने वहाँ पर कोल्ड वैक्स लगा दिया। मैं सोचने लगी कि हम लड़कियाँ यह सब क्यों करवाती हैं? लड़के ऐसा क्यों नहीं करवाते? फिर मैंने सोचा कि इससे तो सऊदी अरब में कोड़े खाना ही बेहतर।

'देयर वी गो, ' कैथरीन ने दस मिनट बाद कहा। 'तुम्हें जल्द ही इसकी आदत हो जाएगी। और मेरा यकीन मानो, उसको यह बहुत पसंद आएगा।'

ऐसा कोई नहीं है, मैं उसे कहना चाहती थी। कि मैं आज केवल वॉन्टन सूप लेने जा रही हूँ, वॉन्टन सेक्स करने नहीं।

कैथरीन अपने साथ क्रिस्टल डॉट्स की एक स्ट्रिप लेकर लौटी।

'और एक स्पेशल प्रमोशन के चलते ब्राज़ीलियन करवाने वाले अपने सभी कस्टमर्स को हम देते हैं मुफ्त स्वारोव्स्की सेवा। यकीन मानो, इससे बिलकुल तकलीफ नहीं होगी।'

मुझे यकीन नहीं हुआ, जब कैथरीन ने वहाँ पर तीस क्रिस्टल्स का एक पैटर्न बना दिया। इसके बाद उसने मुझे खड़े होकर आईने में देखने को कहा।

'मैं किसी स्ट्रिपर जैसी दिख रही हूँ, ' मैंने कहा।

'नहीं, तुम सेक्सी दिख रही हो।'

'लेकिन मैं वहाँ पर क्रिस्टल्स पहनकर नहीं चल सकती... यू नो।'

'कोई बात नहीं, वे दो दिन में निकल जाते हैं। खासतौर पर जब तुम उसे साबुन से अच्छे से रगड़ो।'

देबू का फोन आया।

'हे, ट्रेनिंग हो गई? टाइम पर पहुँच जाओगी ना, या हम 8.30 पर मिलें?'

'हाँ, ट्रेनिंग हो गई। बस थोड़े 'इंटर्नल इशूज' थे। मैं जल्द ही पहुँच रही हूँ।'

◆

'तुम तो कमाल लग रही हो।' उसने कहा।

'थैंक यू, ' मैंने कहा।

'और तुम्हारी ड्रेस भी बहुत प्यारी है।'

'और देखो, आज कोई टैग भी नहीं, ' मैंने कहा और पीछे मुड़कर दिखाया।

हम दोनों हँस पड़े। मैंने एक मिलिट्री ग्रीन लेस ड्रेस पहनी थी। वह मेरे घुटनों से बहुत ऊपर खत्म हो जा रही थी। लेकिन मुझे नहीं लगता देबू ने अभी तक उसे नोटिस किया था, जिसके लिए मैंने सौ डॉलर खर्च किए थे। रेस्तरां में डिम लाइट थी और मेरी टाँगें टेबल के नीचे छुपी हुई थीं।

देबू ने हमारे लिए एक सेट डिनर ऑर्डर किया।

हम ताओ में अपर लेवल में बैठे थे। न्यूयॉर्क को देखते हुए यह एक काफी बड़ा रेस्तरां था। नीचे हम बुद्ध की एक बड़ी-सी मूर्ति और जेन कोई पॉन्ड देख सकते थे।

'नाइस प्लेस, ' मैंने कहा।

'तुम्हें पता है कि यहाँ पर 'सेक्स एंड द सिटी' की शूटिंग हुई थी?' देबू ने पूछा।

'नहीं। वैसे तुम्हारा आज का दिन कैसा रहा?'

'अच्छा। हम अंडर आर्मर नाम के एक नए स्पोर्ट्सवियर ब्रांड को प्रमोट कर रहे हैं। उम्मीद है कि यह चलेगा। गोल्डमान में सब ठीक चल रहा है?'

'मैं अब भी ट्रेनिंग के दौर से ही गुज़र रही हूँ। काम बहुत है और आने वाले दिनों में और बढ़ने वाला है।'

मैंने उसे नील के प्रज़ेंटेशन के बारे में बताया। और यह भी कि कैसे मुझसे उसने भरी क्लास में सवाल पूछा था। मैंने कहा : 'सोच रही हूँ कि डिस्ट्रेस्ड डेट के लिए अप्लाई नहीं करना चाहिए। वैसे भी यह बहुत कठिन है।'

'तुम अप्लाई क्यों नहीं कर सकतीं? तुम आईआईएमए से हो। तुम आसानी से उसे क्रैक कर दोगी।'

'लेकिन मेरी क्लास में दुनिया के टॉप कॉलेजेस के लोग हैं। हार्वर्ड, स्टेनफर्ड, एक-एक कर गिनते जाओ।'

'तो क्या हुआ? तुमने उस सवाल का जवाब दिया था ना?'

मैंने देबू की ओर देखा। उसने मेरी बातों को ध्यान से सुना था। उसकी गहरी काली आँखें कैंडल लाइट में चमक रही थीं। मैं अपनी कुर्सी पर पीछे खिसकी और क्रॉस लेग कर बैठ गई। ऐसा करना बहुत स्मूद लगा और इसकी वजह सोचकर मैं मुस्करा दी।

'तुम मुस्करा क्यों रही हो?' उसने पूछा।

'कुछ नहीं।'

'सुनो, ' उसने मेरे हाथों पर अपना हाथ रखते हुए कहा, 'तुम्हें अप्लाई करना ही होगा। बहुत सारे इंडियंस इस शहर में आते हैं और इसे देखकर घबरा जाते हैं। लेकिन तुम ऐसा मत करो। तुम वह कर सकती हो और करोगी।'

'थैंक्स। और तुम्हारा वह अंडर आर्मर भी कामयाब रहेगा।'

'चीयर्स।' उसने कहा और हमने अपने पानी के गिलास उठा लिए। वेटर हमारा खाना लेकर आ गया - चिकन नूडल सूप और वेजिटेबल फ्राइड राइस। सूप का स्वाद मुझे नहीं

जमा तो मैं राइस खाने लगी।

‘तुम्हें चिकन पसंद नहीं?’ उसने कहा।

‘मैं मीट खा लेती हूँ, लेकिन मैं वेजीटेरियन ही प्रिफ़र करती हूँ, ’ मैंने कहा।

‘मैं भी वेजीटेरियन हूँ, ’ उसने कहा।

‘रियली?’

‘मैं बंगाली हूं। हम लोगों के लिए फिश और चिकन, वेजीटेबल की तरह ही हैं।’

हम दोनों हँस पड़े।

पूरे डिनर के दौरान हम बातें करते रहे। उसने मुझे कोलकाता में अपने पैरेंट्स के बारे में बताया। उसके पिता की एक प्रिंटिंग प्रेस थी, हालाँकि अब उससे ज़्यादा कमाई नहीं होती थी। उसकी माँ हाउसवाइफ थी। देबू बचपन से ही एक पेंटर बनने के सपने देखता था। लेकिन बाद में वह एक कमर्शियल आर्टिस्ट बनने पर राज़ी हो गया। उसके पैरेंट्स ने इतनी बचत की थी कि उसे अमेरिका में डिज़ाइन एंड आर्ट्स का कोर्स करने भेज सकें। कैम्पस प्लेसमेंट के ज़रिये उसे यह जॉब मिला था।

‘एडवरटाइज़िंग की फील्ड कूल लगती है। और वह भी मेडिसन एवेन्यू पर। दुनिया में यह करने के लिए इससे बेहतर जगह कोई दूसरी नहीं।’ मैंने कहा।

‘लेकिन अंदर से सबकुछ इतना कूल नहीं है। पोलिटिक्स चलती रहती है। पैसा बहुत नहीं मिलता। मैं लकी था कि मुझे अच्छे कैम्पेन्स में काम करने का मौका मिला। लेकिन जूनियर्स को ज़्यादा क्रिएटिव काम नहीं मिलता।’

‘लेकिन बात केवल किस्मत की ही नहीं होगी। तुम अपने काम में माहिर भी होंगे।’

उसने मेरी ओर देखा और मुस्करा दिया। वह चॉपस्टिक्स की मदद से खा रहा था। मैंने भी कोशिश की, लेकिन नाकाम रही। मिनी-मी ने मुझसे कहा कि तुम्हारे लिए फोर्क और स्पून से खाना ही बेहतर रहेगा।

‘थैंक्स फॉर दर कांप्लिमेंट, ’ उसने कहा। ‘डेज़र्ट?’

मैंने मेनू देखा। उसमें स्वीट रेड बीन पुडिंग और टोफू आइस्क्रीम लिखा था।

‘रेड बीन पुडिंग? यह क्या होता है?’ मैंने कहा।

‘राजमा। कह लो राजमे की खीर।’

‘छी।’

‘चाइनीज डेज़र्ट्स में वो बात नहीं होती है।’

‘बंगाली मिठाइयों का कोई जवाब नहीं।’ मैंने कहा।

देबू का सीना जैसे गर्व से फूल गया।

‘बंगाली मर्द भी बुरे नहीं होते।’ उसने कहा।

क्या उसने मेरे साथ फ्लर्ट किया? क्या इसे ही फ्लर्टिंग कहते हैं? क्या मुझे भी इसका कोई ऐसा ही जवाब देना चाहिए?

‘बंगाली मिठाइयों जितने ही स्वीट?’ मैंने पूछा।

देखा, मैं भी फ्लर्ट कर सकती हूँ।

उसे इसकी उम्मीद नहीं थी। उसने थोड़ा रुककर कहा : ‘तुम खुद ही क्यों नहीं पता कर लेतीं?’

दैट्स इनफ, राधिका। अब बात खतरे के निशान से ऊपर जा रही है। सब्जेक्ट बदलने की कोशिश करो। तुम अपनी पहली ही डेट पर स्लट समझी जाना पसंद नहीं करोगी।मैं खुद से बात कर रही थी।

देखिए, हमारे साथ यही होता है। जब हम किसी मर्द के साथ होती हैं, तो हमें लगता है जैसे हम कोई इन्तिहान दे रही हों। सवालों का सोच-समझकर जवाब देना। इस तरह दिखाना मानो हम कुछ समझती ही नहीं। नैचुरल होने के बजाय हमेशा बनने की कोशिश करना।

‘मर्दों का पता नहीं। अलबत्ता अभी मैं जरूर एक रसगुल्ला खाना चाहूँगी।’ मैंने कहा। ‘लेकिन यहाँ मैनहटन में वो कहाँ मिलेगा।’

‘कोई बात नहीं। हम बंगालियों ने हर जगह अपनी छाप छोड़ी है। तो किसी रसगुल्ला प्लेस में चलें?’

‘यहाँ पर?’

उसने सिर हिलाया और मुस्करा दिया। बिल आया। उसने खोलकर देखा।

‘हम आधा आधा कर लें।’ मैंने कहा और बीस डॉलर के दो नोट निकाल लिए।

उसने कुछ पल सोचा और फिर कहा : ‘एक्चुअली, नो। इस बार मेरी तरफ से यह दावत।’

डेट्स पर तो ऐसा ही होता है, लेकिन फिर जेंडर इक्वेलिटी का क्या होगा? मैंने खुद से कहा।

‘क्यों? हम मिलकर कर सकते हैं।’ मैंने कहा।

‘नहीं, ’ उसने पर्स से पैसे निकालते हुए कहा। ‘इतने ज़्यादा नहीं हैं। तुम चाहो तो रसगुल्ले अपने पैसों से खा लेना।’

देबू और मैं एक येलो कैब लेकर 28वीं स्ट्रीट और लेक्सिंगटन एवेन्यू पर पहुँचे। यह एरिया मरी हिल कहलाता है।

‘इसको करी हिल भी कहते हैं, ’ देबू ने टैक्सी से निकलते ही बताया। आसपास का नज़ारा देखकर मैं समझ गई कि क्यों। सड़क के दोनों तरफ इंडियन, बांग्लादेशी, पाकिस्तानी रेस्तरां थे। कुछ तो भारत के रोडसाइड ढाबों की याद दिलाने वाले थे।

‘क्या हम न्यूयॉर्क में ही हैं?’ मैंने हँसते हुए कहा।

‘यह मिडटाउन मैनहटन है, ’ देबू ने कहा। ‘तुम्हें पसंद आया?’

‘मुझे बहुत अच्छा लगा। इन फैक्ट, अच्छा होता यदि हम पहले यहीं आते।’

‘ओह, तब तो ताओ पर बेकार ही पैसा खर्च किया। काश कि मुझे पता होता कि तुम एक चीप डेट हो सकती हो।’

डेट! डसने डेट शब्द का इस्तेमाल किया। क्या मैं एक डेट पर हूँ? हम लाहौरी कबाब नाम की एक परांठा शॉप पर थे, इसके बावजूद डेट पर होने की बात मुझे रोमांचित कर रही थी।

‘क्या हम एक परांठा ले सकते है?’ मैंने कहा।

‘हाँ, लेकिन हमने अभी तो खाना खाया है।’

‘मैं पंजाबी हूँ। राइस को हम लोग खाना नहीं समझते।’

देबू ने दो गोभी परांठे ऑर्डर किए। मैंने देखा कि वहाँ चार इंडियन लड़के भी मौजूद थे, जिन्होंने नियोन कंस्ट्रक्शन वर्कर वाली जैकेट पहन रखी थी। मैंने देखा कि वे मेरी टांगों को घूर रहे थे।

चलो, आख़िरकार इतना पैसा खर्च करने के बाद कोई तो देखने वाला मिला, मैंने खुद से कहा।

रेस्तरां में इंडियन मिठाइयाँ भी थीं। परांठों के बाद हमने दो-दो रसगुल्ले खाए।

बेहतर होगा अगर कल तुम लंच ना ही लो, मिनी मी ने कहा, मोटी टांगों को वैक्स करने से भी कोई फायदा नहीं होने वाला।

‘मुझे अच्छा लग रहा है कि तुम एंज्वॉय कर रही हो, ’ देबू ने कहा।

‘सॉरी, मैंने कई हफ्तों से इंडियन फूड नहीं खाया था, ’ मैंने कहा।

उसने एक टिशू से मेरे होंठ पोंछ दिए। मैं मुस्करा दी।

‘ब्रुकलिन में जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ भी कुछ इंडियन रेस्तरां हैं।’ देबू ने कहा।

‘तुम ब्रुकलिन में रहते हो?’ मैंने कहा।

‘हाँ। मैंने कहा था ना कि एड की दुनिया केवल कागज़ पर ही ग्लैमरस होती है। वे इतना पैसा नहीं देते। हम ब्रुकलिन में ही रहने की जगह अफोर्ड कर सकते हैं।’

‘हम यानी?’

‘मैं शेयर करता हूँ। मेरे साथ दो और बंदे हैं।’

‘ओह ओके। मुझे भी जल्द ही एक अपार्टमेंट लेना है।’ मैंने कहा।

बिल आया। इस बार मैंने पैसा चुकाया। कुल जमा आठ डॉलर। हम उठ खड़े हुए।

‘तुम अगले हफ्ते कोई मूवी देखना चाहोगी? शाहरुख खान की ‘डॉन 2’आ रही है।’

‘यहाँ पर इंडियन मूवीज़ के थिएटर भी है?’ मैंने उत्साह से कहा।

‘हाँ हैं कुछ। तो अगले शुक्रवार?’

मैंने सिर हिलाकर हामी भर दी।
डेट नबंर टू, बेबी, मैंने खुद से कहा और मन-ही-मन खुद को एक हाई-फाइव दिया।

7

एक महीने बाद

एसोसिएट ट्रेनिंग के आख़िरी दिन मुझे अपनी ट्रेनिंग मैनेजर जेन रोसेनबर्ग का एक मेल मिला। उसने मुझे अपने ऑफिस बुलवाया था।

मैं सोचने लगी कहीं मुझसे कोई भूल तो नहीं हो गई। मैंने देबू से मिलने के लिए कुछ क्लास स्किप की थीं। क्या उन्हें पता चल गया?

मैंने और देबू ने दो फिल्में देखी थीं। एक, 'यान्की बेसबॉल गेम' और दूसरा 'द लॉयन किंग' नाम का एक ब्रॉडवे म्यूज़िकल। हमने मैनहटन के तमाम रेस्तरां छान मारे थे और इटैलियन, इंडियन, मिडिल -ईस्टर्न हर तरह का खाना खा लिया था।

मुझे न्यूयॉर्क से प्यार हो गया था। मुझे देबू भी अच्छा लगने लगा था, हालाँकि अभी तक हमारे बीच रोमांटिक रिलेशन नहीं थी।

हमारी अगली डेट कल थी। इसके लिए मैंने एक शॉर्ट वाइन -कलर्ड ड्रेस चुनी थी, मेरी अब तक की सबसे बोल्ड ड्रेस।

तभी मार्क नाम के एक अमेरिकन एसोसिएट ने आकर कहा कि क्या जेन ने मुझे भी अपने ऑफिस बुलाया है।

'हाँ। लेकिन तुम्हें कैसे मालूम?'

'क्योंकि मेरे ईमेल पर तुम्हारा नाम भी सीसी में था। तुम, मैं और एक और एसोसिएट कार्ल वोंग को बुलाया गया है।

◆

मैं 85 ब्रॉड स्ट्रीट पर सोलहवें फ्लोर पर मौजूद जेन के ऑफिस पहुँची। जेन, चालीस पार की एक महिला, अपनी डेस्क पर बैठी कंप्यूटर में खोई हुई थी।

'वेलकम, तो आप लोग न्यू एसोसिएट्स हैं, ' जेन ने कहा।

मैंने मार्क और कार्ल की ओर देखा। वो मेरी तुलना में ज़्यादा रिलैक्स नज़र आ रहे थे।

' मैंने आप लोगों को यहाँ इसलिए बुलाया, क्योंकि मेरे पास आपके लिए फ्रेश ऑफ़र्स हैं। आप तीनों का सिलेक्शन डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप के लिए कर लिया गया है।'

'यस्स!'मार्क ने कहा और हवा में मुक्का मारा। फिर मार्क और कार्ल ने हाई-फाइव किया।

'रियली!' मैंने कहा। मैं तो पूछना चाहती थी कि कहीं कोई भूल तो नहीं हो रही है। ये सच है कि मैंने एप्लाई किया था। मैं कुछ लोगों से मिली भी थी। लेकिन मुझे तो कभी नहीं

लगा था कि मेरा दूर-दूर तक कोई चांस है।

‘ये एक टफ चैलेंज है, लेकिन एक ग्रेट अपॉर्च्यूनिटी भी है, ’ जेन कह रही थी। ‘क्या आप इसे एक्सेप्ट करते हैं या फिर आप किसी दूसरे डिपार्टमेंट में जाना चाहेंगे?’

‘यस ऑफ कोर्स, आई एक्सेप्ट, ’ मार्क ने कहा। ‘आएम गोइंग टू किल इट!’

‘टोटली एक्सेप्ट, ’ कार्ल ने कहा। मूल रूप से चीनी होने के बावजूद उसकी आवाज़ में अमेरिकी एक्सेंट था।

‘और तुम रा-डी-का?’

‘यस, वेल आई एम थिंकिंग।’

मैं क्या सोच रही थी? क्या मैं यह कर पाऊँगी? कहीं भूल से तो मेरा नाम नहीं ले लिया गया? कहीं यह बहुत कठिन तो नहीं होगा? हम लड़कियों के साथ यही दिक्कत है। लड़के तो इस ऑफर पर खुशी से कूद रहे थे और मैं उलझन में डूबी हुई थी। मिनी-मी, क्या तुम कुछ देर को चुप रहोगी? मैंने एक गहरी साँस ली।

‘यस, आई एक्सेप्ट, ’ मैंने कहा।

ऑफर लेटर साइन करते समय मैंने अपने भीतर रोमांच की एक सिहरन महसूस की। मैं इसे किसी से शेयर करना चाहती थी। मैंने तय किया कि इंडिया बाद में फोन करूंगी और मैं पहले देबू को बताऊंगी।’ देबू, मुझे डिस्ट्रेस्ड डेट मिल गया है!’ मैंने कहा।

‘ मैंने तो पहले ही कहा था कि तुम यह कर सकती हो और करोगी।’

‘हाँ, तुमने कहा तो था। देखते हैं अब क्या होता है। तुम क्या कर रहे हो?’

‘मैं ऑफिस में एक प्रज़ेंटेशन में बिज़ी हूँ। तो हम कल मिल रहे हैं, राइट?’

‘बिलकुल और इस बार दावत मेरी तरफ से। मेरे खयाल से हमें सेलिब्रेट करना चाहिए।’

‘श्योर। आई कांट वेट, ’ देबू ने कहा।

मैंने एक और ज़रूरी कॉल किया।

‘कंप्लीटली बेयर? मैं कल के लिए एक वैक्सिंग अप्वॉइंटमेंट बुक कराना चाहती हूँ।’

‘शैम्पेन, मैम। जैसा कि आपने ऑर्डर किया था, ’ वेटर ने कहा। उसने दो गिलास तैयार किए और बॉटल को एक आइस बकेट में रख दिया।

हम सोहो के एक्वाग्रिल में आए थे। इस रेस्तरां की ख़ासियत थी सी-फूड। देबू ने मुझे बताया था कि कोलकाता में हर खाने में फिश होती थी। हमने सेट डिनर चुना। वेटर साल्मन और एस्पैरेगस से बना स्टार्टर लेकर आया।

‘वाह, ये तो कमाल है!’ देबू ने कहा।

'तुम्हें सी - फूड पसंद है, इसीलिए मैंने यह जगह चुनी है, ' मैंने कहा। उसने सिर हिलाकर खींसे निपोर दीं। हर बार उससे मिलने पर मुझे उसके कर्ली बाल, बड़ी दाढ़ी और मुस्कराहट और अच्छी लगने लगी थी।

मेरी ड्रेस मेरी जांघों पर ही ख़त्म हो जा रही थी। मैं सोच रही थी कि वो इसको नोटिस करेगा या नहीं।

'जब से हम पहली बार मिले, तब से हर हफ्ते मिलते रहे हैं, है ना?' उसने कहा। मैंने उसके होंठों पर अपनी नज़रें जमा दीं।

हाँ, यह सच था। फिर हमने अभी तक किस क्यों नहीं किया? क्या किसी लड़की के लिए ऐसा सोचना गलत है? क्या उसे मुझे इसके लिए पूछना चाहिए?

'क्या सोच रही हो?' देबू ने कहा।

'हुँ, कुछ नहीं। शायद अपने नए असाइनमेंट को लेकर नर्वस हूँ।'

आखिर कोई लड़की यह कैसे बोल सकती है कि वह किसिंग के बारे में सोच रही थी? ऐसा तो सुपर - स्लट ही करती हैं।

'रिलैक्स। तुम कुछ भी कर सकती हो। तुम बहुत स्मार्ट हो। मैं अपनी ज़िंदगी में इतने स्मार्ट लोगों से कम ही मिला हूँ।'

मैंने उसकी ओर देखा। एक मर्द होकर एक लड़की की स्मार्टनेस की तारीफ करना! अब तो मैं उसे और चूमना चाहती थी। देबू, तुम कुछ करोगे या नहीं? या बस - बस ठूँस - ठूँसकर खाते ही रहोगे?

मैंने अपनी टाँगें समेट लीं और उनकी स्मूदनेस को एंज्वॉय करने लगी। देबू, अगर तुम सही कदम उठाते हो तो आज की रात तुम्हें बहुत खुशियाँ मिल सकती हैं।

'डिस्ट्रेस्ड डेट। यह सुनने में ही डरावना लगता है, ' देबू ने कहा।

आखिर मैं सब्जेक्ट को डिस्ट्रेस्ड डेट से बदलकर मेरी वैक्स टाँगों तक कैसे लेकर आऊँ?

'हाँ, डरावना तो है। आपको खब्ती बिज़नेस ओनर्स से निगोशिएट करना होता है। वे कभी-कभी बैंक को पैसे चुकाने से मना कर देते हैं। तब हमें उनकी प्रॉपर्टीज़ ज़ब्त करके अपनी रकम हासिल करनी होती है।'

'वॉव। यह सुनने में तो एक रेगुलर डेस्क जॉब नहीं लगता।'

'हाँ। इसीलिए टीम में बामुश्किल ही कोई लड़की है। यह मर्दों का जॉब है।'

'व्हाट नॉनसेंस। एक लड़की यह क्यों नहीं कर सकती। लडकियाँ बेहतर निगोशिएटर होती हैं।'

मुझे तुम पसंद हो। सचमुच। आगे बढ़ते जाओ, देबू।

देबू बोलता रहा : 'ये सब मर्दों की फैलाई हुई बकवास है, ताकि लडकियाँ कोई पोज़िशन न हासिल कर सकें। हकीकत तो यह है कि मर्द तुम जैसी टैलेंटेड लड़कियों से

डरते हैं।'

'थैंक्स, देबू।'

लेकिन आज रात मेरे सामने डिस्ट्रेस्ड डेट से भी बड़ा चैलेंज था। मुझे देबू को बढ़ावा देना था, ताकि बात आगे बढ़ सके। लेकिन, जैसा कि ज़ाहिर है, चूँकि मैं एक लड़की हूँ, इसलिए मुझे यह दिखावा भी करना था कि मैं कुछ नहीं जानती।

वेटर ने हमें हमारा फाइनल कोर्स लाकर दिया : मिसो सॉस के साथ परोसी गई कॉडफिश।

'वॉव, इससे बेहतरीन फिश मैंने कभी नहीं खाई। या शायद इससे बेहतर कोई और चीज़ ही मैंने कभी नहीं खाई है।' देबू ने कहा।

'हाँ। लेकिन अभी डेज़र्ट बाकी है। सबसे अच्छे को सबसे आखिर के लिए बचाकर रखो।' मैने कहा।

क्या यह डबल मीनिंग था? फ़क, अपने आपको एक स्लट साबित मत करो, राधिका!

वह हँस पड़ा। क्या उसे मेरी बात समझ में आई थी?

'तुम तो जानती ही हो बोंगस और मिष्टी का नाता।' उसने कहा। नहीं, वो नहीं समझा था।

'काम कैसा चल रहा है?' मैंने कहा।

'बढ़िया। अंडर आर्मर वाले मामले में हमें लगभग कामयाबी मिल गई है। मेरे बॉस का कहना है कि अगर मैं यह डील कराने में कामयाब हो जाता हूँ तो वे मुझे प्रमोट करके सीनियर क्रिएटिव एसोसिएट बनवा देंगे।'

'यह तो सुनने में डिस्ट्रेस्ड डेट एसोसिएट से कहीं कूल लग रहा है।'

वह हँस दिया : 'तुम्हें पैसे ज़्यादा मिलते हैं। तो ज़्यादा कूल वह है।'

मैं पैसों के बारे में बात नहीं करना चाहती थी, इसलिए फिर से सब्जेक्ट बदलने की कोशिश करने लगी।

'अंडर आर्मर एक कूल ब्रांड है। कल मैंने उनका स्टोर देखा। ग्रेट स्टफ, ' मैने कहा।

'मैं उनके कैम्पेन पर काम करने के लिए बेताब हूँ।'

हमारी आखिरी डिश डार्क चॉकलेट माउस केक विद ऑरेंज सॉस थी।

'तुमने कमाल का रेस्तरां चुना, राधिका, ' देबू ने कहा। 'पहले - पहल तो मुझे लगा था कि यह बहुत फैंसी है। लेकिन खाना बहुत मज़ेदार था। वॉव!'

वेटर बिल लाया। उसने उसे देबू को थमाया, लेकिन मैंने उसे उसके हाथ से छीन लिया। मैंने देबू से कहा था कि यह ट्रीट मेरी तरफ से होगी। मैंने बिल पर एक नजर दौड़ाई। 200 डॉलर का बिल था। मैंने बिल फोल्डर में पैसा रखा और उसे वेटर को दे दिया।

'बहुत भारी बिल था ना? तुमने इतना खर्च क्यों किया?'

‘लुक, मैं न्यूयॉर्क में अपने अकेले दोस्त के साथ सेलिब्रेट करना चाहती थी। सो थैंक्यू फॉर बीइंग हियर।’

मैंने अपना शैम्पेन का गिलास उठाया। उसने भी ऐसा ही किया और एक टोस्ट दिया : ‘मेरी टैलेंटेड दोस्त राधिका के नाम, जो डिस्ट्रेल्ड डेट में जाकर मर्दों को बताएगी कि काम कैसे किया जाता है!’

हमने तय किया कि एक्वाग्रिल से बेंजामिन होटल तक का सफर हम पैदल चलकर तय करेंगे। वहाँ से देबू ब्रुकलिन की एक सीधी ट्रेन पकड़ सकता था। मेरे पास अब केवल 30 मिनट बचे थे। मेरे भीतर का एक हिस्सा चीखकर कहना चाहता था कि देबू, मुझे किस करो! लेकिन ज़ाहिर है, एक अच्छी इंडियन लड़की के रूप में ताउम्र ब्रेनवॉशिंग किए जाने के कारण मैं ऐसा नहीं कर सकती थी।

देबू ने कोई पहल नहीं की। अलबत्ता पूरे रास्ते वह बहुत अच्छी बातें ज़रूर करता रहा।

‘यह बहुत जरूरी है कि लडकियाँ अच्छा काम करके दिखाएँ। यह नौजवान लड़कियों के लिए भी एक उदाहरण होगा। वे इससे इंस्पायर होंगी।’ उसने कहा।

‘लेकिन मैं किसको इंस्पायर कर रही हूँ?’ मैने कहा। मेरे दिमाग में इस समय कई चीज़ें चल रही थीं। जैसे, क्या उसने मेरे लेग्स पर गौर किया। कहीं डिनर से मेरा पेट ज़्यादा तो नहीं फूल गया। मेरे बूब्स तो अपनी जगह पर ठीक से हैं ना? क्या इस बंदे को धीमे नहीं चलना चाहिए ताकि मैं अपनी हील्स में आराम से चल सकूँ।

‘ऑफ कोर्स, तुम एक इंस्पिरेशन हो। मिसाल के तौर पर, तुम्हारे कज़िन्स के लिए।’

मैं हँस दी।

‘क्या हुआ?’ उसने कहा।

‘पता नहीं। मेरी बहन अदिति ने बहुत मुश्किल से ग्रेजुएशन किया है, फिर भी उसे पसंद करने वालों की तादाद बहुत है। मेक – अप, कपड़ों वगैरह के बारे में वह मुझसे कहीं ज़्यादा जानती है।

अब जाकर देबू ने कहा : ‘तुम्हारी कपडों की च्वॉइस बहुत अच्छी है।’

‘रियली?’ मुझे इस पर यकीन करने में दिक्कत हो रही थी।

‘हाँ। तुम्हारी एक सटल अंडरस्टेटेड स्टाइल है। जैसे यही रेड ड्रेस, माफ करना, लेकिन... ’

‘लेकिन क्या?’

‘लेकिन तुम इसमें बहुत हॉट लग रही हो!’

ओह देबू! भगवान तुम्हारा भला करे। तुम्हारी हर इच्छा पूरी हो। जीवन में पहली बार मुझे किसी ने हॉट कहा था। दुनिया में आखिर कोई ऐसा था, जिसे मैं हॉट लगी थी। मेरे भीतर मेरी आत्मा ब्रेकडांस कर रही थी।

‘सचमुच?’ मैंने अपने टोन को जितना हो सके, उतना कैजुअल रखते हुए कहा।

‘हाँ। उम्मीद करता हूँ तुमने मेरी बात का बुरा नहीं माना होगा।’

बुरा? अरे, तुम तो यह लगातार बोलते रहो। होटल पहुँचने में अभी भी दस मिनट थे। प्लीज़, मेरी तारीफ करते रहो। मेरे कपड़ों, लुक्स और मेरे लेग्स के बारे में बोलोगे तो और अच्छा होगा। मैंने इन कांप्लिमेंट्स को बहुत मिस किया है।

‘नहीं, मैं क्यों बुरा मानने लगी। जनरली हम काम वगैरह की ही बातें करते हैं। लेकिन इट्स ओके। मैं तो यह जानने को तैयार रहती हूँ कि आखिर मर्द लोग सोचते क्या हैं।’ मैंने कहा और हँस पड़ी।

‘आई थिंक, तुम्हारे पास एक बहुत अच्छा फ़िगर है।’ उसने कहा।

कौन सा हिस्सा, कौन सा हिस्सा? मैं एक्साइटमेंट में चीखना चाहती थी। तुम्हें मेरी कमर अच्छी लगी? या बूब्स? या पिछवाड़ा? बोलो ना, देबू।

‘रियली?’ मैंने कुछ इस तरह कहा, जैसे कि मुझे ऐसी बात कहे जाने की कोई उम्मीद ही नहीं थी।

‘हाँ। तुम्हारे लेग्स, आई मीन... यू हैव नाइस लेग्स।’

‘ओह, तो तुम्हें मेरे बारे में बस यही अच्छा लगता है?’

स्टुपिड, राधिका। ये क्या था? मैंने खुद से कहा।

‘नहीं, नहीं। मुझे तुम्हारा चेहरा भी पसंद है। तुम्हारे बाल, आँखें। तुम्हारी पूरी पर्सनैलिटी, एक्चूअली।’

‘हाँ, अब तो तुम यह कहोगे ही। लेकिन पसंद तो तुम्हें मेरे लेग्स ही आए हैं।’

वैसे भी यह अच्छा ही है। क्योंकि मैंने इसके लिए 100 डॉलर चुकाए हैं।

‘नो, नो, सॉरी... आई मीन... ’

‘रिलैक्स देबू, मैं मज़ाक कर रही हूँ।’ मैंने कहा और उसका गर्म हाथ थाम लिया। मैं नहीं चाहती थी कि उसका मूड उखड़ जाए। लेकिन मैं यह भी नहीं चाहती थी कि इसे मेरी तरफ से एक पहल समझा जाए। ओह, हम लड़कियों को इतने रूल्स क्यों फॉलो करने पड़ते हैं

मैंने उसका हाथ छोड़ दिया। हम बार्न्स एंड नोबेल बुकस्टोर के करीब से गुज़रे और हमें एक ट्रैफिक सिग्नल क्रॉस करना पड़ा। इस बार उसने मेरा हाथ थाम लिया। हमने हाथ थामे सड़क पार की। लेकिन उसने मेरा हाथ उसके बाद भी नहीं छोड़ा।

मैंने उसे कनखियों से देखा। वह मुस्करा दिया।

‘एक्चुअली, मेरी बहन ज़्यादा खूबसूरत है।’ मैंने कहा।

‘ओह, इस पर यकीन करना कठिन है, बशर्ते वह कोई मिस यूनिवर्स वगैरा ना हो।’

मैं उसके इस इनडायरेक्ट कांप्लिमेंट पर मुस्करा दी। मेरा मन कर रहा था कि उसके घुंघराले बालों में अपनी अंगुलियां फिराने लगूँ।

फिर उसने कहा : ‘एक्चुअली, अगर वो मिस यूनिवर्स होगी तो भी मैं तुम्हें ही ज़्यादा खूबसूरत मानूंगा।’

खूबसूरत झूठ! आह, ज़िंदगी में इनका भी एक मुकाम होता है। मैंने आह भरते हुए सोचा।

‘थैंक्स, देबू।’

हम बेंजामिन होटल पहुँचे। हमारा रिश्ता थोड़ा आगे बढ़ चुका था। हमने एक-दूसरे का हाथ थाम लिया था। लेकिन बात इसके आगे नहीं बढ सकी थी।

‘तो ये है वो जगह, जहाँ मैं रहती हूँ। ट्रेन ठीक यहाँ आकर रुकती है।’ मैंने सबवे साइन की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘हमने बहुत अच्छा वक्त गुज़ारा। ट्रीट के लिए थैंक्स।’

‘यू आर वेलकम, ’ मैंने कहा। ‘बाय।’

मेरा दिल बैठ - सा गया। मैं नहीं चाहती थी कि वो चला जाए।

‘हे, एक चीज़।’ उसने कहा।

‘हाँ?’

‘तुम्हारे पास रूम में तुम्हारी दीदी की फोटो है। मैं बस देखना चाहता था कि क्या वह वाकई तुमसे भी सुंदर है।’

क्या यह उसकी तरफ से एक पहल है? उसने मेरे रूम का नाम लिया। क्या वह मेरे साथ ऊपर आना चाहता है? या वह केवल इतना ही चाहता है कि मैं ऊपर जाकर वह फोटो नीचे ले आऊँ? लेकिन अदिति दीदी की तस्वीर तो मेरे पास फोन में ही है।

मैं मुस्करा दी।

‘दैट्स स्वीट। सो आर यू।’ मैंने कहा।

‘मैं भी क्या? सुंदर?’

‘नहीं, हैंडसम, स्मार्ट। और क्रिएटिव भी।’

‘थैंक्स, ’ उसने कहा।

‘ओके, मेरे पास लैपटॉप में दीदी के कुछ फोटो हैं। तुम ऊपर आना चाहोगे?’ मैंने कहा।

'नो वे। वे तुमसे ज़्यादा सुंदर तो नहीं हैं।' देबू ने कहा।

'ओह, कम ऑन। अदिति दीदी का कोई जवाब नहीं है।'

'लिसन, श्योर वे सुंदर हैं। लेकिन तुमसे ज़्यादा नहीं। तुम्हारे फीचर्स बेहतर हैं।'

'लेकिन मेरी माँ ने तो कभी ऐसा नहीं कहा।' मैंने कहा।

'इसके पीछे कोई पंजाबी कहानी होगी। यही कि जितनी गोरी चमड़ी, उतनी ही खूबसूरती। नॉनसेंस!'

हम बेड के किनारे बैठे थे। मेरा लैपटॉप बीच में रखा था। स्क्रीन पर दो साल पुराना एक फैमिली एलबम खुला हुआ था।

'मैं अपनी पूरी ज़िंदगी एक पढ़ाकू, गंभीर लड़की ही रही हूँ। दीदी को हमेशा मुझसे सुंदर माना गया।'

'सॉरी, वो तुम्हारी बहन हैं, लेकिन वे हमेशा ऐसे कपड़े पहने नज़र आ रही हैं, जैसे उन्हें कहीं पार्टी में जाना हो। जबकि ये तो घर की तस्वीर है।'

'वो ऐसी ही है।'

'तुम्हारा चश्मा बहुत कमाल का हुआ करता था।'

मैं हँस पड़ी।

'एक साल पहले मैंने कॉन्टैक्ट लेंस लगाना शुरू कर दिया।' मैंने कहा और एक तस्वीर की ओर इशारा करते हुए कहा: 'ये पापा हैं। सिंपल, खामोश रहने वाले इंसान। वे कभी नहीं चाहते कि समाज में उनके खिलाफ कुछ बुरा कहा जाए। और ये मॉम हैं, जो पूरी तरह पापा पर हावी रहती हैं।'

देबू तस्वीरों को गौर से देखता रहा।

'मैं घर को मिस करती हूँ। ये तस्वीरें देखकर तो और याद आने लगी है। मैं मॉम के साथ बैठकर टीवी सीरियल देखना चाहती हूँ, और कुछ नहीं करना चाहती।'

'नई हॉटशॉट डिस्ट्रेस डेट बैंकर, अब बहुत देर हो चुकी है।'

मैंने झूठमूठ का उदास चेहरा बना लिया।

मुझे हग करो। जल्दी-जल्दी आगे बढ़ो, देबू। क्या मुझे तुम्हे एक इंस्ट्रक्शन मैन्युअल देना पड़ेगा?

'स्वीट फैमिली, ' देबू ने कहा।

'हूँ।' मैंने कहा। मैं छोटे, बोरिंग जवाबों से बातचीत को रोक देना चाहती थी। कभी-कभी खामोशियाँ भी असर कर जाती है। लेकिन अफ़सोस कि कुछ इंटेलेक्चुअल बंगाली मर्द कुछ समझते ही नहीं।

‘तुमने नाओमी वुल्फ की किताब ‘ब्यूटी मिथ’ पढ़ी है?’ देबू ने कहा।

‘नहीं, क्या है उसमें?’

‘उसे एक लैंडमार्क फ़ेमिनिस्ट बुक माना जाता है। किताब कहती है कि लड़कियों को हमेशा उनके गुड लुक्स के बारे में याद दिलाकर उन पर दबदबा कायम रखा जाता है।’

‘रियली? वेल, कुछ हद तक यह सच भी है।’

‘क्या लड़के भी अपने लुक्स की इतनी तुलना अपने भाइयों से करते है?’

‘शायद नहीं।’ किसी और जगह पर, किसी और वक्त में, मैं इस इंटेलेक्चुअल डिस्कशन में शामिल हो सकती थी, लेकिन अभी नहीं। अभी मेरे दिमाग में कुछ और चल रहा था।

‘बिलकुल, क्योंकि इसके ज़रिये मर्द औरतों पर काबू रखना चाहते हैं और...’

‘मेरे पैर दर्द करने लगे हैं, ’ मैंने उसे बीच में ही टोक दिया। अपने जूते निकाले और पैर ऊपर कर लिए। मेरी पहले ही शॉर्ट ड्रेस मेरी जाँघों पर और ऊपर आ गई। देबू भूल गया कि वो क्या कह रहा था। शायद औरतें भी किसी-न-किसी तरीके से मर्दों को अपने काबू में रखती हैं।

‘सॉरी, तुम क्या कह रहे थे?’

‘हूँ, कुछ नहीं। मैं तुम्हें वह बुक दूंगा।’

‘मुझे इन हील्स में इतना पैदल चलने की आदत नहीं है।’

‘अगर मैं तुम्हें फुट मसाज दूँ तो कैसा रहेगा?’

और आख़िरकार इस बार रिपब्लिक डे पर बहादुरी का अवार्ड देबाशीष सेन को ही दिया जाना चाहिए, मैंने मन-ही-मन अनाउंस किया!

‘रियली? तुम्हें आता है?’

यह उन कुछ बेवकूफाना बातों में से थी, जो कि लड़कियों को कहनी पड़ती है। हमें अपनी मासूमियत दिखाने के लिए ऐसी बातें बोलनी पड़ती हैं।

मुझे अपने पैरों पर उसके हाथों का स्पर्श अच्छा लग रहा था।

‘वॉव, देट्स नाइस!’ मैंने कहा।

वह मेरी पिंडलियों की मसाज करता रहा। फिर उसके हाथ धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ने लगे। मैंने उसे रोका नहीं।

‘तुम्हारे पास लोशन है?’ उसने कहा। मैंने बेडसाइड टेबल की ओर इशारा किया। उसने मोइश्चराइजर की एक बॉटल निकाली और मेरे पैरों पर लगा दी। त्वचा पर ठंडा लोशन लगते ही मैं सिहर गई। उसने मेरे पैरों पर अपने गर्म हाथ रख दिए और पिंडलियों से घुटनों तक मसाज करने लगा।

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। मैंने महसूस किया कि अब उसके हाथ मेरे घुटनों से ऊपर भी बढ़ रहे हैं। इससे पहले किसी ने मुझे कभी वहाँ पर छुआ नहीं था, बशर्ते हम

वैक्सिंग-चेम्बर लेडी की गिनती ना करें। मेरे शरीर में सुख की सिहरन दौड़ने लगी।

पल-दर-पल उसकी हिम्मत बढ़ने लगी। हम दोनों चुप थे। उसके हाथों ने अब मेरी ड्रेस की सीमा को छू लिया। उसकी अंगुलियाँ मेरी जांघों पर फिसल रही थीं।

क्या सबकुछ बहुत जल्दी-जल्दी नहीं हो रहा है? मेरे भीतर की एक आवाज़ ने कहा, लेकिन मुझे उसकी परवाह नहीं थी।

'यह ठीक है?' देबू ने कहा।

मैंने सिर हिला दिया और आँखें खोल लीं। मैंने उसे इशारे से अपने पास बुलाया। वह आगे झुका। हमारे होंठ मिले। मैंने अपनी ज़िंदगी का पहला किस किया।

मैंने महसूस कर लिया कि अब वह भी एक्साइट हो गया है। उसके होंठ मेरे होंठों को छोड़ने के लिए तैयार ही नहीं थे। हमारी जीभों ने एक-दूसरे को छुआ। मैं समय, जगह मौका सब भूल गई थी। मैने फिल्मों में किसेस देखे थे। मैंने कल्पना की थी कि मेरा पहला किस कैसा होगा। लेकिन यह मेरी देखी और कल्पना की गई हर चीज़ से बेहतर था।

'तुम बहुत खूबसूरत हो' उसने मेरे कानों में फुसफुसाते हुए कहा।

उसने अपने हाथ मेरी ड्रेस के ऊपर मेरे ब्रेस्ट पर रख दिए। वह उन्हें भीतर ले जाना चाहता था, लेकिन ऐसा कर नहीं पा रहा था। मैं चाहती थी कि अपनी पूरी ड्रेस उतारकर अपने को उसे सौंप दूँ।

मैंने उसे हल्का-सा पीछे धक्का दिया।

'सबकुछ बहुत जल्दी नहीं हो रहा है?' मैंने कहा, जैसे कि ऐसे मौकों पर कोई भी लड़का इस पर हाँ कहेगा।

'नहीं, बिलकुल नहीं। इट फील राइट, ' देबू ने कहा। उसका एक हाथ मेरी जाँघों पर था।

वह अपना दूसरा हाथ मेरी पीठ पर ले गया और मेरी ड्रेस की ज़िपर ढूंढने की कोशिश करने लगा।

'रोशनी बहुत है, ' मैंने कहा। उसने मेरे शरीर की तारीफ जरूर की थी, लेकिन मैंने इससे पहले कभी किसी मर्द के सामने अपने कपड़े नहीं उतारे थे।

उसने कमरे की बत्तियाँ बुझा दीं। खिड़की के परदे खुले रहे। मैनहटन की स्काइलाइन से आने वाली हल्की-सी रोशनी में हम दोनों एक-दूसरे को देखभर पा रहे थे।

मैंने लाल लॉन्जरी की मैचिंग पेयर पहनी थी, शायद इसी उम्मीद में कि आज कुछ हो।

देबू ने मेरी ड्रेस उतार दी और मेरी ब्रा को खोल दिया। फिर उसने अपनी शर्ट उतार ली।

'तुम क्या कर रहे हो, देबू?' मैंने अपनी ब्रा को थामते हुए कहा। मुझे लगा कि अभी मुझे ऐसा जताना चाहिए, मानो यह सब उसकी मर्ज़ी से हो रहा है।

‘जस्ट गो विद द फ्लो।’ देबू ने वही कहा, जो लड़के तब कहते है, जब वे वास्तव में कहना चाह रहे होते हैं कि: प्लीज़, सेक्स में रुकावट मत डालो!

उसने ब्रा उतारकर फेंक दी और मेरे ब्रेस्ट्स को भींच लिया।

‘इतनी सख्ती से नहीं, प्लीज़, ’ मैंने कहा।

‘सॉरी, ’ देबू ने कहा।

‘तुम यह पहले कर चुके हो?’ मैंने कहा।

उसने कुछ देर सोचा, फिर कहा: ‘यदि मैं कहूँ हाँ तो क्या तुम मुझे रुकने को कह दोगी?’

मैं हँस पड़ी।

‘नो, सिली। लेकिन ये मेरा फर्स्ट टाइम है, ’ मैंने कहा।

‘मेरी एक गर्लफ्रेंड थी। दो साल पहले।’

‘क्या अभी उसकी बात करना जरूरी है?’

उसने मेरे निपल्स को चूमा। फिर ऊपर आकर मेरी कॉलरबोन को किस किया। फिर मेरी ठोढ़ी को और आखिर में कई मिनटों तक मेरे होंठों को चूमता रहा। अब उसने मेरी अंडरवियर पर हाथ रखा। मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। क्या मैं एक मर्द के सामने पूरी नेकेड होने जा रही थी?

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसने मेरी पैंटीज निकाली। फिर अपना ट्राउजर्स और अंडरवियर निकाला। मैंने इससे पहले किसी नंगे मर्द को इतने करीब से नहीं देखा था। मैं उसे ध्यान से देखना चाहती थी, लेकिन उसने मुझे कसकर पकड़ लिया और मुझे चूमता रहा। उसके हाथ मेरी जांघों पर थे।

‘तुम्हारे लेग्स कितने सॉफ्ट हैं।’ उसने कहा। मैंने मन-ही-मन तय कर लिया कि मैं कंप्लीटली बेयर की लाइफ मेंबरशिप ले लूंगी।

अब उसने मेरी टाँगों के बीच वाली जगह पर छुआ। ट्रीटमेंट ब्राज़ीलियन के कारण वहाँ पर भी सबकुछ स्मूद था।

‘वॉव, तुम बहुत गीली हो रही हो, ’ उसने कहा।

मैं गीली ही नहीं थी, मैं जैसे पूरी तरह से भीग चुकी थी। वह झुका और अपने चेहरे को मेरी टांगों के बीच ले गया।

‘तुम क्या कर रहे हो?’ मैंने कहा।

‘गोइंग डाउन।’

‘डाउन कहाँ?’

‘वहाँ।’

‘रियली? तुम्हारा मुँह, वहाँ पर!’

‘हाँ, जस्ट रिलैक्स!’

अगले दस मिनटों तक क्या हुआ, मैं डिस्क्राइब नहीं कर सकती। उसकी जीभ मुझे वैक्सिंग स्ट्रिप्स की तुलना में बहुत सॉफ्ट महसूस हो रही थी। उसकी हर हरकत मुझे चरम सुख की ओर लेती जा रही थी। लोग इसे हर समय क्यों नहीं करते? वॉव, इससे पहले मुझे कभी किसी ने बताया क्यों नहीं कि सेक्स इतना अच्छा होता है।

उसने एक अंगुली भीतर डाली। मैं सिसक उठी।

'केयरफुल, ' मैने कहा।

'कैसा लग रहा है?' उसने कहा।

मैंने सिर हिला दिया। मेरी आँखें बंद थीं।

वह जीभ से अपना काम करता रहा। मैं अब बहुत उत्तेजित हो गई और उस बिंदु पर पहुँच गई थी, जहाँ यह सहन करना कठिन होता जा रहा था।

'स्टॉप, ' मैने कहा।

'क्या?'

'यहाँ आओ।'

वह मेरे पास आया। मैंने उसे चूमा। कुछ समय पहले उसका मुँह जहाँ पर था, उसको देखते हुए तो यह थोड़ा अजीब ही था।

वह मेरे ऊपर झुका।

'क्या मैं कर सकता हूँ?'

क्या मैं अब सेक्स करने जा रही थी? वॉव, क्या मैं आखिरकार बड़ी होने वाली थी।, लेकिन क्या मुझे ऐसा करना चाहिए?

'मेरे पास प्रोटेक्शन है। मेरे पर्स में।' उसने कहा।

हाय राम, ये तो पूरी तैयारी से आया था! क्या मैं उसके लिए इतना आसान शिकार थी?

लेकिन मैं अब और सोचना नहीं चाहती थी। मैंने सिर हिलाकर हामी भर दी।

वह बहुत ऐहतियात से मेरे भीतर दाखिल हुआ। मुझे थोड़ा दर्द हुआ। सच कहूँ तो उसकी जीभ का स्पर्श मुझे ज़्यादा बेहतर लगा था। लेकिन इसी का नाम सेक्स है, जिसे हमें करना ही था।

राधिका मेहता, तो आखिरकार तुमने सेक्स कर ही लिया, मैंने मन-ही-मन कहा और खुद को हाई-फाइव दिया। ऐसा लग रहा था, जैसे मैंने कोई बड़ी अचीवमेंट हासिल की हो, आईआईएमए में दाखिल होने और गोल्डमान साक्स में जॉब मिलने जैसी। या फिर डिस्ट्रेस्ड डेट की जिम्मेदारी मिलने जैसी। क्या वह जॉब मेरे लिए कठिन साबित होगा? ओहो, मैं भी क्या सोच रही हूँ, अभी जब एक मर्द मेरे भीतर घुसा हुआ है!

'तुम कमाल हो!' उसने कहा।

मुझे अच्छा लगा कि उसने ऐसा महसूस किया। जहाँ तक मेरा सवाल है, तो मैं समझ नहीं पा रही थी कि आखिर सेक्स को इतना हौवा क्यों बनाकर रखा गया है।

क्या मैं उसे फिर से वहाँ जाकर वह करने को कहूँ? या क्या अब उसके लिए देरी हो चुकी है?

उसके स्ट्रोक्स तेज़ होने लगे। उसने मेरे कंधो को कसकर भींच लिया और कराहने लगा। शायद उसे आर्गेज्म हो चुका था। कुछ देर तक गहरी साँसें लेने के बाद उसकी पकड़ मुझ पर ढीली हो गई।

'वॉव, ' देबू ने कहा। 'अमेजिंग! है ना?'

तो, मुझे अपने पहले सेक्स के बाद अब कैसा फील हो रहा था? वेल, वैसा ही, जैसे आप महीनों तक सलमान खान या शाहरुख खान की किसी फिल्म का इंतज़ार करो, फिर उसे फर्स्ट डे फर्स्ट शो देखने जाओ और पाओ कि फिल्म अच्छी तो थी, लेकिन इतनी अच्छी भी नहीं!

'हाँ, सचमुच अमेजिंग!' मैंने कहा। मेरे खयाल से बिस्तर में हमें असहमति नहीं जतानी चाहिए।

वह मेरे बाजू में लेट गया और छत को देखने लगा। हमने एक-दूसरे के हाथों को थाम लिया।

'तुम कयामत हो। इसके लिए शुक्रिया!' उसने कहा।

शुक्रिया!! किस बात के लिए? क्या शो खत्म हो चुका था? वह अचानक बिना चार्ज किए फोन जैसा बरताव क्यों करने लगा था?

'वॉज़ इट गुड?' मैंने कहा।

'आई रिपीट, अमेज़िंग। मैं तो फिनिश हो गया हूँ।'

'फिनिश्ड?'

'मेरा मतलब है सेटिंस्फाइड।'

'देबू।'

'हाँ।'

'क्या तुम मुझे भी सेटिस्फाई कर सकते हो, प्लीज़?'

'हूँ?' उसने मेरी ओर अचरज से देखते हुए कहा।

'वह तुमने जो नीचे जाकर किया था, क्या उसे फिर कर सकते हो?' मैंने कहा।

'श्योर, बेबी।'

गुड। आखिरकार मैंने एक अच्छी और शर्मीली हिंदुस्तानी लड़की जैसा व्यवहार नहीं किया, भले ही मुझे इसके लिए एक स्लट माना जाए। वैसे भी में एक 'फ्रस्ट्रेटेड इंडियन गर्ल' होने बजाय एक 'सेटिस्फाइड स्लट ' बनना ज़्यादा पसंद करूँगी।

पाँच मिनट बाद, मैं भी ज़ोर से कराह रही थी। वॉव। मैंने उसके सिर को अपनी टाँगों के बीच ज़ोरों से थाम लिया था। मेरी टाँगें काँप रही थीं और फिर मेरा पूरा शरीर थरथराने लगा। ओके, तो ऐसा होता है ऑर्गेज्म!

'कैसी हो तुम?'

मैंने एम्बैरेसमेंट में अपना चेहरा छिपा लिया।

'व्हाट? मैंने पूछा तुम कैसी हो?' उसने हँसते हुए कहा।

'सेटिस्फाइड!' मैंने जवाब दिया!

9

दो महीने बाद

‘हम इस मेगाबॉउल डील्स में अटक-से गए हैं, ’ जोनाथन हस्की ने कहा। वे वाइस प्रेसिडेंट थे और डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप में मेरे बॉस भी।

मेरा फोन घनघनाया। मैंने समय देखा। शाम के 7 बज चुके थे। मुझे एक घंटे में देबू से मिलना था, लेकिन अब यह नामुमकिन जान पड़ता था।

हम गोल्डमान साक्स डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप के मीटिंग रूम में थे। गोल्डमान की तरफ से जोनाथन, क्लार्क स्मिथ और मैं मौजूद थे। क्लार्क स्मिथ ग्रुप के एक और एसोसिएट थे। मेगाबॉउल को लोन देने वाली सातों बड़ी बैंकों के प्रतिनिधि भी वहाँ मौजूद थे। मेगाबॉउल बोस्टन स्थित बिल्डर कंपनी थी, जो बॉउलिंग एलीज़ बनाने का काम करती थी। लोगों को तो उनकी बॉउलिंग एलीज़ में खेलने पर मज़ा आता है, लेकिन उनके क्रेडिटर्स की हालत दूसरी थी। मेगाबॉउल कोई पचास मिलियन डॉलर के कर्ज़ डिफॉल्ट कर चुकी थी।

‘कोई एसेट्स नहीं बचे है। कंपनी के पास ढेर सारी बॉउलिंग पिन्स और बॉउलिंग बॉल्स के सिवा कुछ नहीं है।’ जोनाथन ने कहा।

पचास मिलियन डॉलर रिकवर करने के लिए तो बहुत सारे बॉउलिंग बॉक्स की दरकार होगी, मैंने मन-ही-मन सोचा। बैंकर्स एक-दूसरे की ओर खामोशी से देख रहे थे और मेगाबॉउल को इतनी बड़ी रकम कर्ज़ में देने की अपनी साझा कमअक्ली पर एक-दूसरे से हमदर्दी जता रहे थे।

‘बोलिए कि क्या किया जाए?’ एक बैंकर ने कहा। ‘हम उनके स्टुपिड सीईओ से डील नहीं कर सकते। हमें तो बस इस सबसे बाहर निकलने का रास्ता सुझा दीजिए।’

मेरे हाथ ने हैंडबैग मे जाकर फोन को पकड़ लिया।

‘राधिका, ’ जोनाथन ने मेरा नाम पुकारते हुए कहा, ‘प्लीज़ अपना प्लान शेयर करो।’

डैम, मुझे केवल देबू को यह बताना था कि आज रात मै नहीं आ सकूँगी। लेकिन अब मुझे अपना फोन छोड़कर हैंडबैग से हाथ बाहर निकालना पड़ा।

‘श्योर, जोनाथन।’ मैंने कहा और इस मीटिंग के लिए तैयार की गई अपनी स्पेशल बुकलेट बाहर निकाली।

बुकलेट का पहला पन्ना खोलते हुए मैंने कहा, ‘हमारी बेसिक प्रिमाइस यह है कि मेगाबॉउल को कैसे चालू रखें। लिक्विडेशन में ज़्यादा वैल्यू नहीं है, एक डॉलर पर महज़ छह सेंट जितनी। लेकिन अगर हम सीईओ को कंटिन्यू करने देते हैं, तो यह पचास सेंट तक पहुँच जाएगी।

'फायर हिम!' डर्क ग्रिग्ली, बैंक ऑफ अमेरिका के एक मोटे और गंजे बैंकर ने कहा। 'उसी के कारण यह पूरा बखेड़ा हुआ है।'

'हाँ, यह सच है।' मैंने कहा। 'लेकिन हमें अभी इस बात के लिए उसकी ज़रूरत है कि ऑपरेशंस को उसे ही स्थिर करना होगा। हमें लोगों की छंटनी करनी होगी और सैलेरीज़ में कटौती करनी होगी। यह तमाम डर्टी वर्क करने के लिए उसका इस्तेमाल करना ठीक रहेगा।'

मैंने उन्हें पूरा प्लान समझाया। इस प्लान के मुताबिक चलने पर कंपनी अपने खर्चों पर लगाम लगा सकती थी।

जब वे लोग बुकलेट में खोए हुए थे तो मैंने सोचा कि देबू को एक मैसेज कर दूं ताकि उसे नाहक ही रेस्तरां ना जाना पड़े। लेकिन बैंकर्स को मेरे बॉयफ्रेंड की कोई परवाह नहीं थी।

'क्या गारंटी है कि यह प्लान कामयाब होगा?' एक कर्ज़दार ने कहा।

'गारंटी तो कोई नहीं है, लेकिन अब जब हम आखिरकार बिज़नेस की कीमत समझने लगे हैं, तो पच्चीस मिलियन तक रिकवरी की जा सकती है। या फिर डॉलर पर पचास सेंट जितनी।' मैंने कहा।

'हम तीस सेंट ही दे सकते हैं, ' जोनाथन ने कहा।

हम लोग इसी तरह से काम करते हैं। तीस सेंट की बात करेंगे और उम्मीद करेंगे कि पचास सेंट की रिकवरी हो।

'तीस सेंट? ये तो कुछ भी नहीं है।' डर्क ने कहा।

'गोल्डमान इसको रिवाइव करने की पूरी रिस्क ले रहा है' जोनाथन ने कहा।

क्रेडिटर्स इकट्ठा हो गए। 'क्या हम आप लोगों को दस मिनट के लिए छोड़ सकते हैं?' जोनाथन ने कहा और उठ खड़ा हुआ।

यस, ये मेरे लिए कॉल करने का मौका था। जोनाथन, क्लार्क और मैं रूम से बाहर चले गए।

मैं दौड़कर अपने क्यूबिकल पर गई और देबू को फोन लगाया।

'हे बेबी! कहाँ हो तुम? मैं बस निकलने ही वाला था। तुमने मेरा मैसेज देखा?' देबू ने कहा।

'नहीं, मैं अभी अभी मीटिंग से बाहर आई हूँ।'

'क्या?'

'हम एक डील फायनल करने वाले हैं। मेरी पहली डील, एक्चुअली।'

'लेकिन 7:30 बज चुके हैं और 8 बजे की बुकिंग है। कॉमेडी सेलर लेट इंट्री नहीं मिलती है।'

'आई एम सो सॉरी, क्या तुम इसे कैंसिल करा सकते हो?'

‘लेकिन हम पहले ही पे कर चुके हैं। पंद्रह-पंद्रह डॉलर्स।’

‘पता है। लेकिन आई एम सॉरी।’

‘क्या? रियली?’ उसने कहा। उसकी आवाज़ धीमी हो चली थी।

‘एक काम करो ना। इसके बदले में आज रात मेरे घर जाओ।’

‘कब?’

‘डिनर करो और आ जाओ। मैं जल्द ही वहाँ पहुँच जाऊँगी।’

मैंने फोन रख दिया और अपनी डेस्क पर इंतज़ार करने लगी। मैंने ट्राइबेका में एक वन-बेडरूम यूनिट रेंट पर ली थी। ट्राइबेका वॉलस्ट्रीट की सबसे पुरानी रेसिडेंशियल बसाहटों में से थी। देबू के पास एक एक्स्ट्रा चाबी थी, क्योंकि वह अकसर मेरे घर आया करता था। मैं भी ब्रुकलिन वाले उसके रूम पर कुछ मर्तबा जा चुकी थी। एक टिपिकल बैचलर रूम, जिसे वह दो और लड़कों के साथ शेयर करता था।

मेरी डेस्क का फोन घनघनाया। जोनाथन ने मीटिंग रूम से कॉल किया था।

‘क्या आप और क्लार्क आ सकते हैं?’ उसने कहा।

हम दोनों तुरंत वहाँ पहुँच गए।

‘क्लार्क और राधिका, मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हमने डील कर ली है। लेंडर ग्रुप एग्री हो गया है।’

‘ये तो बहुत अच्छी ख़बर है।’ मैंने कहा।

‘राधिका, हमें जल्दी से एक टर्म शीट चाहिए। डॉक्यूमेंटेशन हम बाद में कर लेंगे।’

मेरा दिल बैठ गया। टर्म शीट बनाने में कोई दो घंटे लग जाएँगे। जोनाथन और क्लार्क लेंडर्स को पास ही हैरी एंड कैफे एंड स्टीक पर ड्रिंक्स के लिए ले गए और मैं अपनी डेस्क पर बैठकर काम करने लगी। देर रात जोनाथन आया। उसने अपनी घड़ी देखी और कहा: ‘आधी रात होने वाली है। ओह नो, सॉरी अबाउट दिस। अब तुम्हें घर जाना चाहिए, राधिका।’ उसने कहा।

‘मैंने तुम्हें फायनल टर्म शीट मेल कर दी है।’ मैंने अपना कंप्यूटर लॉग-आउट करते हुए कहा।

‘वेलडन, इस डील्स में तुम्हारा काम फैंटास्टिक था। तुम ग्रुप के लिए एक रियल एसेट हो, ’ जोनाथन ने कहा।

गोल्डमान बिल्डिंग से निकलते समय मेरे दिल में एक मीठी खुशी थी। जोनाथन के शब्द मेरे दिमाग में गूँज रहे थे। मैं उन्हें देबू को बताने के लिए बेचैन थी।

‘आई एम स्लीपिंग, बेबी।’ जैसे ही मैंने बेडरूम की सीलिंग लाइट चालू की, मुझे देबू की शिकायती आवाज़ सुनाई दी।

‘सॉरी।’ मैने लाइट कर करते हुए कहा। और उसके बाद बेडसाइड लैंप चला दिया।

‘कितना बजा है?’ उसने उनींदी आवाज़ में कहा।

‘12. 30।’

‘क्या? तुम अभी तक ऑफिस में थीं?’

‘हाँ। क्या करती। ये मेरी पहली बिग डील थी। पता है जोनाथन ने मुझसे क्या कहा?’

‘क्या?’

‘उसने कहा, राधिका तुम ग्रुप के लिए एक बिग एसेट हो।’

‘हाँ, हाँ, क्यों नहीं। वे लोग तुम पर सारा काम जो लाद दे रहे हैं।’

‘ऐसा नहीं है। वे लोग भी देर तक रुके थे। डॉक्यूमेंटेशन में बहुत सारी छोटी-छोटी चीज़ो पर ध्यान देना होता है। उसी में देर हो गई।’

‘डिनर किया?’

‘नो बेबी।’

‘क्या?’ देबू बेड में उठ बैठा।

‘समय ही नहीं मिला।’

‘ये तो हद है! रुको।’

वह बिस्तर से उठा, लिविंग रूम में ओपन किचन तक गया और फ्रिज अंडों की एक ट्रे निकाल ली।

‘मैं तुम्हारे लिए कुछ भुर्जी बना देता हूँ। तुम ब्रेड के साथ खा लेना।’

‘तुम सो जाओ, मैं कुछ और ले लूंगी।’

‘तुम्हें कुछ हॉट खाना चाहिए।’

‘मेरा हॉट बॉयफ्रेंड कैसा रहेगा? यहाँ आओ।’

मैंने उसकी टी-शर्ट पकड़कर उसे खींचा और चूम लिया।

‘सॉरी, मुझे आने में देर हो गई। चलो उसकी भरपाई कर लेते हैं।’

उसने मुझे धक्का दिया। ‘पहले, अंडे।’

फिर वह भुर्जी बनाने लगा। उसने अंडे फेंटे, प्याज-टमाटर छीले और स्टोव पर सॉसपैन रख दिया। दस मिनट बाद उसने मेरे सामने मेरा डिनर पेश कर दिया।

‘ट्राय, ’ उसने कहा।

मैंने एक बाइट ली।

‘कैसा है?’

‘यमी। थैंक यू।’

‘वेलकम।’

‘देबू, सुनो।’

‘क्या?’

‘आई लव यू।’

‘आई लव यू टू। लेकिन तुम्हारे दर्शन ही नहीं हो पाते।’

‘सॉरी, बेबी।’

‘लेट्स मूव इन टुगेदर। साथ रहेंगे तो एक-दूसरे को दिखते भी रहेंगे।’

मैं चुप हो गई।

‘डोंट वरी। मै अपने हिस्से का रेंट चुकाऊंगा।’

‘अरे, वो बात नहीं है। लेकिन उसका मतलब होगा लिव-इन। यानी कि एक सीरियस रिलेशनशिप।’

‘क्या अभी ऐसा नहीं है?’

मैं मुस्करा दी।

‘मेरा घर साफ-सुथरा रखना होगा ओके?’ मैंने कहा।

10

एक साल बाद

'मॉम, मैं शादी के बारे में बाद में सोच लूंगी। मेरा जॉब अभी नया है। पहले मुझे उस पर फोकस करने दो। प्लीज़।' मैंने कहा।

मैं वॉलस्ट्रीट स्टेशन प्लेटफॉर्म की सबवे स्टेप्स पर दौड़ रही थी। शुक्रवार शाम के रश-ऑवर के कारण कुछ भी सुनाई देना मुश्किल साबित हो रहा था।

'जॉब इतना ज़रूरी नहीं है।' उन्होंने कहा। मैंने किचन में चाय बनाने की आवाज़ सुनी। यहाँ शाम के 8.30 बजे थे, लेकिन इंडिया में सुबह के 6 बज रहे थे।

'नहीं, यह बहुत जरूरी है। मैं एक बहुत चैलेंजिंग ग्रुप में हूँ। यहाँ सभी को लगता है कि मैं सबसे अच्छा काम करने वालों में से हूँ।' मैंने कहा।

'और यहाँ जो सब लोग बोल रहे हैं कि मेहता की दूसरी बेटी की शादी क्यों नहीं हो रही है, उसका क्या? लोग कह रहे हैं कि कहीं लड़की में कोई खराबी तो नहीं।'

'रियली, मॉम? तुम्हें भी लगता है कि मुझमें कहीं कोई खराबी है?'

मैं नंबर 3 ट्रेन में सवार हो गई। दरवाजे बंद हो गए। ट्राइबेका, चैम्बर्स स्ट्रीट तक पहुँचने के लिए मुझे तीन स्टॉप के बाद उतरना था। कुल जमा पाँच मिनट का सफर था।

'तुम एक साल से बाहर हो। तुम्हारी बहन की शादी हुए दो साल होने आए। कम-से-कम हम लड़का तो देखना शुरू कर दें। इसमें भी बहुत समय लगता है।'

'अदिति दीदी खुद शादी करना चाहती थीं, मैं नहीं चाहती।'

'तुम शादी करना नहीं चाहतीं?'

'अभी नहीं। मेरी लाइफ को तो देखो। रात के 8.30 बज रहे हैं, अब जाकर मैं घर जा रही हूँ।'

'इतनी देर। ये किस तरह का जॉब है आख़िर!'

'क्या आप मेरी लाइफ के हर पहलू को क्रिटिसाइज़ करना बंद करेंगी?

मुझे अभी शादी-वादी नहीं करनी है।'

'फिर तुम चाहती क्या हो?'

'बहुत-सी दूसरी चीज़ें। मैं अच्छा काम करना चाहती हूँ। इस साल प्रमोट होना और एक अच्छा बोनस पाना चाहती हूँ। मैं ट्रैवल करना चाहती हूँ। न्यूयॉर्क के मज़े लूटना चाहती हूँ।'

'क्या तुम्हारे साथ कोई लड़का है?'

मेरा दिल ज़ोरों से धड़क उठा। माँ की छठी इंद्री जाग गई थी।

'नहीं, ऐसा तो नहीं।'

'फिर कैसा है?'

'मेरे यहाँ कुछ दोस्त हैं। जैसे देबाशीष। वह भी एसआरसीसी से है।'

'देबाशीष कौन?' उन्होंने उत्सुकता से पूछा।

'देबाशीष सेन। वो कॉलेज में मुझसे सीनियर था, लेकिन तब मैं उसे नहीं जानती थी। वो यहाँ मैनहटन में एक एड एजेंसी में काम करता है।'

'बंगाली?' उन्होंने कुछ-कुछ अविश्वास से कहा।

'हाँ, तो?'

'कुछ नहीं। बंगाली लोगों के बदन से बदबू आती है ना? वे लोग बहुत मच्छी खाते हैं।'

'व्हाट नॉनसेंस!'

'ख़ैर, उम्मीद है वह केवल तुम्हारा दोस्त ही होगा।'

मैं उन्हें बताना चाहती थी कि हम लोग सब्जी-भाजी की तरह कंडोम खरीदते हैं!

'हाँ। वैसे भी मुझे टाइम ही नहीं मिलता।'

मैं उन्हें कुछ क्यों नहीं बता रही थी? मुझे बताना चाहिए। लेकिन पहले मुझे देबू से तो कोई जवाब मिले।

'वैसे तुम उस तरह की लड़की हो नहीं। अदिति वैसी थी।'

'वैसी मतलब कैसी?'

'कुछ नहीं। तुम लिखने-पढ़ने वाली लड़की हो। तुम कहाँ से ब्बॉयफ्रेंड वगैरा बनाओगी? हमें ही तुम्हारे लिए कोई ढूँढना होगा।'

'रियली मॉम? आप मेरे लिए ऐसा करेंगी? मैं आपका कर्ज़ कैसे चुका पाऊँगी?'

'इट्स ओके। पैरेंट्स को तो यह करना ही होता है।'

वो मेरे ताने को समझी नहीं। मैं तो और बोलना चाहती थी, लेकिन मौके की नज़ाकत भाँपकर गुस्सा पी गई।

'मेरा स्टेशन आ गया है। डैड कैसे हैं?'

'चाय का इंतजार कर रहे हैं। वे अब भी यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि रिटायर्ड लाइफ का क्या करें।

'आपको पैसा मिल गया?'

'हाँ, बहुत पैसा था बेटा।'

'डैड से कहो कि अपनी कार बदल लें। कम-से-कम एक होंडा सिटी ही ले लें। मारुति तो अब म्यूज़ियम में रखने लायक चीज़ हो गई है।'

'मैं कह दूँगी उन्हें। लेकिन हमें अपनी बेटी से पैसा लेना अच्छा नहीं लगता।'

'क्यों? अगर मैं बेटा होती, तब भी आप यही बोलते?'

'लेकिन तुम तो बेटा नहीं हो।'

‘तो क्या हुआ? मैं आपकी संतान हूँ। मैं आपकी लाइफस्टाइल बेहतर बनाने में मदद क्यों नहीं कर सकती?’

‘फिर भी बेटे की बात और होती है।’

‘मॉम, आप तो जानती ही हैं कि मुझे इस तरह की बातों से गुस्सा आता है। आज का दिन बहुत मुश्किल भरा था। तेरह घंटे लंबा। क्या आप मुझसे कोई अच्छी बातें नहीं कर सकतीं?’

‘वी मिस यू।’

‘आई मिस यू गाईज़ टू।’

‘हमें बुरा लगता है कि हमारी बेटी तेरह घंटे काम करके घर पैसा भिजवाती है। तुम्हारे पापा के रिटायरमेंट के बाद हमारे हाथ सिमट जरूर गए हैं, लेकिन अब भी हालात इतने बदतर नहीं हुए हैं।’

‘फिर वही, मॉम! आप चुप हो जाइए और मुझे अपनी फैमिली के लिए कुछ करने दीजिए।’

‘चिल्लाकर बात मत करो। अभी यहाँ सुबह ही हुई है।’

‘तो आप भी मुझे इरिटेट क्यों कर रही हैं?’

‘मैंने कहाँ किया? अगर अभी से शादी की बात नहीं चलाऊँगी तो तुम्हारा घर कैसे बसेगा?’

‘बाय, मॉम। मैं अब और बहस नहीं कर सकती। डैड के साथ चाय पीजिए।’

‘ठीक है। आजकल के बच्चे तो बहुत ही हाई-फाई हो गए हैं। कभी भी फोन लगा देंगे, कभी भी बात करना बंद कर देंगे, कभी भी चिल्लाने लगेंगे।’

मैंने तीन गहरी साँस ली और सॉरी कहा।

‘जाओ, अब घर जाकर आराम कर लो। इतना पैसा कमाना भी अच्छी बात नहीं।’

मैं अपार्टमेंट में दाखिल हुई। देबू लिविंग रूम में बैठा फुटबॉल देख रहा था। उसने एक लुज़ ग्रे टी-शर्ट और ब्लैक शॉर्ट्स पहनी हुई थी। हाथों में था बीयर का एक कैन।

‘हे, ’ उसने टीवी से नज़रें हटाए बिना कहा।

‘हाय, ’ मैंने बुझी हुई आवाज़ में कहा। क्या उसके लिए सोफे से उठकर मुझे एक हग देना भी मुश्किल है?

मैंने अपनी जैकेट निकाली और उसे डायनिंग टेबल पर रख दिया। मैंने देखा कि वहाँ मिस्टर चाऊ, ट्राइबेका के एक चाइनीज़ रेस्तरां के बॉउल्स रखे थे।

‘तुमने खाना ऑर्डर किया था?’

‘हाँ। मेरा कुछ बनाने का मन नहीं हो रहा था। फिर टीवी गेम भी चल रहा था।’

‘लेकिन यह कितना गंदा है। तुम कुछ हेल्दी फूड ऑर्डर कर सकते थे।’

‘मेरा चाऊ चीप है। हम इसको दो दिन तक खा सकते हैं।’

मैंने डायनिंग चेयर पर अपना हैंडबैग पटक दिया। कभी-कभी मुझे लगता था कि देबू कुछ ज़्यादा ही पैसे बचाने के फेर में रहता था।

‘मैंने माँ को फोन लगाया था। मैं उनसे बात करना चाहती थी, लेकिन आखिर में मैं उन पर चिल्ला पड़ी।’

‘ऊहूँ, ’ उसने टीवी से नज़रें हटाए बिना कहा। ‘ये तो अच्छी बात नहीं है।’

‘देबू! क्या तुम एक मिनट के लिए अपना टीवी बंद कर सकते हो?’ मैंने लगभा चिल्लाते हुए कहा।

देबू ने कुछ हैरत से मेरी ओर देखा। उसने टीवी तो बंद नहीं किया, लेकिन उसे म्यूट कर दिया।

‘क्या हुआ बेबी?’

‘मैं यहाँ एक थका देने वाले दिन के बाद घर आई हूँ, तुम कम-से-कम मुझे देखकर खुश होने का दिखावा तो कर ही सकते हो।’

‘ऑफ कोर्स, मैं खुश हूँ बेबी।’

‘गिव मी अ हग। जब मैं घर में आऊँ तो ऐसे दूर से केवल हे मत कहो।’

वह अपनी सीट से उठा, मेरे पास आया और मुझे हग कर लिया।

मैंने उसे दूर धकेला। ‘मेरे कहने पर नहीं। अपने मन से करो। आज मेरी माँ से बहुत बहस हुई।’

‘किस बारे में?’

‘गेस करो।’

‘बेटी की शादी को लेकर ही होगी, और क्या?’

‘हाँ देबू।’ मैंने कहा।

माँ और मेरे बीच हर हफ्ते कम-से-कम एक बार शादी को लेकर बहस होती ही थी। देबू इस बारे में जानता था। मैं उम्मीद करती थी कि वह इस मामले में कुछ करेगा। लेकिन उसके लिए तो एक स्टुपिड माइनर लीग अमेरिकन फुटबॉल गेम ज़्यादा ज़रूरी था।

‘उनकी बातों पर इतना ध्यान मत दो। वे ओल्ड-फैशन्ड हैं।’

उसने एक पेपर प्लेट निकाली, उस पर कुछ नूडल्स लिए और मुझे थमा दी। मेरे अनिश्चित भविष्य के मुआवज़े के तौर पर चीप चाऊमीन की एक प्लेट!

‘देबू, रियली क्या तुम्हें यही लगता है कि मुझे यह बात परेशान कर रही है?’

‘और क्या?’

ये लड़के लोग कभी किसी बात को समझते क्यों नहीं? हम लड़कियों के साथ कभी कोई एक चीज़ नहीं होती है। कई चीज़े हमें एक साथ परेशान करती रहती हैं, जैसे ऑफिस में काम का प्रेशर, बॉस की डर्टी लुक, ट्रेन में अपने से दुबली लड़कियों को देखना और इसी में जोड़ लीजिए, बॉयफ्रेंड का फ्यूचर प्लान्स में कोई दिलचस्पी नहीं लेना।

'जी नहीं, बात केवल इतनी ही नहीं है।' मैं अपनी आवाज़ को जितना संभाल सकती थी, उतना संभालते हुए मैंने कहा।

'ओह!'उसने अचरज जताते हुए कहा।

'देबू! ये क्या है?'

'क्या हुआ? मैने क्या किया?'

'वही जो तुमने नहीं किया।'

'हग? ओह, उसके लिए सॉरी।'

'बात हग की नहीं, बात हमारी है। क्या सचमुच तुम्हें कुछ समझ नहीं आ रहा, या तुम दिखावा कर रहे हो?'

'बेबी, साफ-साफ बोलो।'

मैंने प्लेट को परे सरका दिया। मैं नहीं खाना चाहती थी। और ना ही मैं देबू की बेबी-बेबी की रट सुनना चाहती थी।

'हुआ क्या है?'

'देबू! हम कहाँ जा रहे हैं?'

'मतलब?'

मैंने रिमोट उठाया और टीवी बंद कर दिया।

'हम? यानी कि हम अपनी रिलेशनशिप में कहाँ जा रहे हैं? मेरी माँ मेरी शादी कर देना चाहती हैं। तुम सुन रहे हो या नहीं?'

'लेकिन तुम तो शादी नहीं करना चाहतीं ना? कम-से-कम अभी तो नहीं, राइट?' उसने कहा।

'लेकिन हमारा फ्यूचर क्या है?'

'आई लव यू, बेबी। आई मीन, राधिका। और तुम भी मुझे चाहती हो। हम एक-दूसरे से इतना प्यार करते हैं। हमें और क्या चाहिए?'

'ये सब तो ठीक है। हाँ, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि शायद मैं तुममें कुछ ज़्यादा ही इनवॉल्व हो रही हूँ| मैं किसी और के बारे में सोच भी नहीं पाती हूँ।'

'ये तो अच्छी बात ही है ना?'

'लेकिन हमारा कोई फ्यूचर है या नहीं, या हम केवल रेंट और सेक्स ही शेयर करते रहेंगे?'

‘ऐसा मत बोलो।’

मैं सोफे पर आकर बैठ गई और टीवी चला दिया।

वह आया और उसने टीवी बंद कर दिया।

‘तुमने टीवी क्यों चालू किया?’ उसने कहा।

‘जब तुम्हें बात करने में कोई दिलचस्पी नहीं है, तो और क्या करूँ। यही दिखावा करते हैं कि जैसे कोई प्रॉब्लम ही नहीं है।’

‘ठीक है, मैं बात करूँगा।’

‘श्योर। मैं सुन रही हूँ।’

‘मेरे जॉब की प्रॉब्लम है। मुझे प्रमोशन का इंतज़ार है।’

‘वह अगले महीने मिल सकता है।’

‘हाँ, लेकिन कौन जाने नहीं भी मिले। मेरे दो कलीग्स ने बॉस को बोल दिया है कि मैं प्रमोशन के लायक नहीं हूँ। एड की दुनिया में गलाकाट प्रतियोगिता होती है। मैं बहुत टेंशन में हूँ।’

‘वेल, यह तो बहुत बुरा है। लेकिन इसका हमसे क्या सरोकार है?’

‘मैं एक सीनियर क्रिएटिव डायरेक्टर बनना चाहता हूँ। मुझे प्रमोशन और पैसा चाहिए। शादी करने से पहले मैं खुद को और मजबूत बना लेना चाहता हूँ। मुझे अपने कैरियर पर फ़ोकस करना है।’

‘मैं तुमसे ये नहीं कह रही हूँ कि अगले हफ्ते मुझसे शादी कर लो।’

‘अच्छा सुनो, मुझे यह प्रमोशन मिल जाए, एक-दो नए अकाउंट्स मिल जाएँ, उसके बाद मैं अगला कदम उठाने को तैयार रहूँगा।’

‘मैं माँ को क्या बोलूँ?’

‘उन्हें मेरे बारे मे बता दो। कह दो कि मेरा एक बॉयफ्रेंड है।’

‘वे यह सुनकर पागल हो जाएँगी। मैं सही समय पर ही उन्हें बताऊंगी।’

‘जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। यहाँ आओ।’

मैं अपनी सीट से हिली नहीं। वह खुद चलकर मेरे पास आया।

‘आई लव यू।’ उसने कहा।

‘मी टू। सॉरी मैंने तुम्हें तंग किया।’

◆

हम बिस्तर पर लेटे थे। वह अपनी अंगुलियाँ मेरी बाँह पर दौड़ा रहा था।

‘आज रात नहीं, देबू। मेरा मूड नहीं है।’

‘तुम्हें अच्छा लगेगा।’

‘नहीं।’
उसने मेरी ब्रेस्ट पर हाथ रख दिया। मैंने उसे दूर कर दिया।
‘अपने कैरियर पर फ़ोकस करो, देबू। यहाँ-वहाँ ध्यान मत भटकाओ। गुडनाइट।’

Downloaded from Ebookz.in

11

‘पहले कंपनी प्रॉपर्टीज़ पर फोरक्लोज़। उन्हें इतना डरा दो कि वे हमारे हिसाब से खेलने लगें।’ मैंने जोनाथन से कहा। हम ऑफिस पैन्ट्री में कॉफी मशीन के पास खड़े मेडट्रोन नाम की एक सेमी-कंडक्टर कंपनी के बारे में बात कर रहे थे।

‘स्मार्ट सजेशन।’ जोनाथन ने कहा।

मैंने दो एस्प्रेसो बनाई और एक कप उसकी ओर बढ़ा दिया।

मेरा फोन बजा। देबू का नाम देखकर मैंने उसे एक तरफ रख दिया।

‘गो अहेड, उठा लो।’

‘पर्सनल कॉल है। मैं बाद में लगा लूँगी।’

‘नहीं, नहीं, बात कर लो। मैं बाद में तुमसे तुम्हारी डेस्क पर आकर मिलता हूँ।’

जोनाथन के जाते ही मैंने फोन उठाया।

‘हाय, मिडिल-ऑफ-द-डे कॉल। नाइस!’

‘वेल, अभी तुम बीबीडीओ के एक सीनियर क्रिएटिव डायरेक्टर से बात कर रही हो।’

‘ओह माय गॉड, तो तुमने यह कर दिखाया! कांग्रेट्स, देबू। यह तो आज की सबसे बड़ी ख़बर है।’

‘थैंक यू। सबसे पहले तुम्हें ही बताया है।’

‘ज़ाहिर है। और अब हम इसे सेलिब्रेट करेंगे।’

‘इट्स ओके। उन्होंने दो और को प्रमोट किया।’

‘यह बहुत बड़ी बात है। खैर, मुझे जाना होगा। तुम घर कब तक पहुँच जाओगे?’

‘7.30 बजे तक। क्यों?’

‘कुछ नहीं। शायद मुझे आज ज़रा देर हो जाए। ओके, मिस्टर सीनियर क्रिएटिव डायरेक्टर, बाय!’

मैंने तुरंत एक प्लान बनाया और अविनाश, आशीष और निधि को मैसेज किया।

‘एक बड़ी खबर है। देबू प्रमोट हो गया है। आज 7 बजे हमारे घर पर सरप्राइज़ सेलिब्रेशन ड्रिंक्स होगी। ठीक समय पर पहुँच जाना। 55-बी, 50 फैंकलिन स्ट्रीट, ट्राइबेका।’

चंद ही मिनटों में सभी ने कंफ़र्म कर दिया। मैंने कुछ और को मैसेज किया। कुछ अपने दोस्तों को भी साथ लाना चाहते थे। आधे घंटे में मैंने एक मिनी-पार्टी अरेंज कर ली थी, जिसमें कोई एक दर्जन मेहमानों ने शिरकत करने की इजाज़त दे दी थी। सबसे आखिर में, मैंने देबू को एक मैसेज किया। ‘बिज़ी डे। देर हो सकती है। डिनर करके सो जाना।’

‘सरप्राइज़!’ सभी एक स्वर में चिल्लाए। देबू पल भर को समझ ही नहीं पाया। उसके शॉक्ड एक्सप्रेशंस देखकर सभी हँस पडे। मैंने रेज़ के यहाँ से पिज़्ज़ा ऑर्डर किया था। होल फूड्स के यहाँ से सैलेड, नट्स और बार स्नैक्स आए थे। फ्रिजर में शैम्पेन थी। यह पहली बार था, जब मैं और देबू हमारे छोटे-से अपार्टमेंट में इतने सारे लोगों से मिल रहे थे। लिविंग रूम में हँसी-ठट्ठा गूँज रहा था। इसे देखकर मुझे लगा, जैसे मेरी दुनिया पूरी हो गई है। मैंने बत्तियाँ मद्धम कर दीं और म्यूजिक चला दिया।

‘क्या शानदार पार्टी है!’ निधि ने कहा।

‘लेकिन तुम मेरे साथ कभी ऐसा कोई सरप्राइज़ मत करना’, आशीष ने कहा, जो कि अब निधि का पति था।

‘हम मैरिड हैं और वे लवर्स हैं, दोनों में फ़र्क है।’

‘जो भी हो।’ उसने कहा। निधि हँस दी।

मैंने अपने कंधो पर किसी का हाथ महसूस किया। मुड़कर देखा तो देबू था। वह मेरी आँखों में गहरे झाँक रहा था। ‘आई लव यू।’ उसने कहा।

‘आई लव यू टू।’ मैंने कहा।

देबू ने मुझे होंठों पर चूम लिया। आशीष ने सीटी बजाई। सभी हमारी तरफ देख रहे थे। मैंने अपना चेहरा छुपा लिया। मैं अपनी ज़िंदगी में इससे खुश पहले कभी नहीं थी।

‘मैंने तो तुम्हें दोपहर को ही बताया था। तुमने यह सब कैसे कर लिया?’ देबू ने कहा।

‘मैंने आधे दिन की छुट्टी ले ली।’

‘मुझे इतना स्पेशल फील कराने के लिए शुक्रिया, सुपरवुमन।’

‘यू आर वेलकम। लेकिन पार्टी के बाद घर की सफाई करनी में तुम्हें भी मदद करनी होगी।’ मैंने कहा।

तीन महीने बाद

‘सुपर्ब जॉब ऑन मेगाबाउल। हम पच्चीस नहीं तीस मिलियन रिकवर कर सकेंगे। वेल डन, राधिका।’ मैं अपने लैपटॉप पर जोनाथन का एक पुराना मेल पढ़ रही थी।

‘बेबी, अपना लैपटॉप बंद करो और यहाँ आओ।’ देबू ने उनींदी आवाज़ में कहा। मैं बेड पर उसके पास बैठी थी। कमरे की बत्तियाँ बंद थीं। लेकिन लैपटॉप की स्कीन उसे तंग कर रही थी।

‘स्कीन बहुत ब्राइट है। अभी क्या समय हो रहा है?’ देबू ने कहा।

‘11.30, ’ मैंने कहा। ‘बस कुछ और मिनट।’

‘तुम क्या काम कर रही हो?’ उसने मेरी कमर पर हाथ रखते हुए कहा।

‘मेरी परफॉर्मेंस रिव्यू। कल मुझे इसे सबमिट करना है।’

‘तुम कमाल हो, ’ उसने कहा।

‘अनफॉर्च्यूनेटली, यहाँ पर ऐसा कोई ऑप्शन नहीं है। मुझे उन सभी डील्स के डिटेल्स लिखना है, जिन पर मैंने पिछले साल काम किया है।’

‘वे लोग जानते हैं, तुम कितनी अच्छी हो। अब सो जाओ। मैं तुम्हें छूना चाहता हूँ।’ देबू ने मुझे अपने करीब खींचते हुए कहा।

‘तुम सो जाओ। मैं जानती हूँ कि लैपटॉप से तुम्हें दिक्कत हो रही है। तो मैं लिविंग रूम में जाकर बैठ जाऊंगी।’

‘लेकिन वहाँ तो बहुत सर्दी है।’

‘मैं हॉल का हीटर चला लूंगी।’ मैंने कहा, देबू का सिर चूमा और लिविंग रूम में चली गई। वहाँ मैंने अपना लैपटॉप फिर से खोला और परफॉर्मेंस रिव्यू फॉर्म पढ़ा।

उन अवसरों का वर्णन करो, जब आपने किसी डीस मे अपनी तरफ से कोई अहम योगदान दिया हो।

मैंने पिछले एक साल में तीन डील्स पर काम किया था। इनमें से मेगाबॉउल पर मेरा योगदान सबसे ज़्यादा था। मैंने डिटेल्स दर्ज किए। पिछले साल जब मैंने फर्म ज्वॉइन की थी, तब हमारे पास एक फिक्स्ड बोनस था। मेरी परफॉर्मेंस रिव्यू ही यह तय करने वाली थी कि इस साल मुझे कितना बोनस मिलेगा।

मैं आखिरी सवाल पर पहुँची:

आप अपनी परफॉर्मेंस को पाँच में से कितने अंक देना चाहेंगी:

1. उम्मीद से कहीं नीचे।
2. उम्मीद से नीचे।
3. अपेक्षानुरूप।
4. अपेक्षा से बेहतर।
5. अपेक्षा से कहीं बेहतर।

मैं कुछ देर सोचती रही। पाँचवें विकल्प को चुनना तो बहुत ज़्यादा हो जाता, इसलिए मैंने तीसरे विकल्प को चुना और सबमिट कर दिया।

‘हो गया?’ बेडरूम से देबू की आवाज़ आई।

‘हाँ, अभी आई।’ मैंने कहा।

मैं पार्टनर जॉन क्रूज के कमरे में धीमे-धीमे टहल रही थी। उसकी सेक्रेटरी ने मुझे इंतज़ार करने को कहा था। गोल्डमान में बोनस डे के दिन पूरे ऑफिस की हवा ही बदल जाती थी। लोग बहुत उत्साहित होते थे, लेकिन बाहर से ऐसा दिखाते थे, मानो सबकुछ बहुत कूल हो। बैंकर्स बोनस के लिए ही काम करते है और आंकड़ों पर बहुत कुछ नि र्भर रहता है। ज़ीरो बोनस या बहुत कम नंबरों का यह भी मतलब हो सकता था कि अब आप फर्म को छोड़कर जा सकते हैं।

जॉन क्रूज न्यूयार्क डिस्ट्रेस्त्र टीम में सभी को बोनस की घोषणा करने वाले थे। मेरी बेस सैलेरी 120000 डॉलर सालाना थी।

‘हाऊ यू डुइंग?’ जॉन ने अपनी स्कीन से नज़रें हटाए बिना कहा। वह कोई भी आंकड़ा सार्वजनिक करने से पहले रिलैक्स रहने की हिदायत देता था। उसके पास मैजिक स्क्रीनशीट थे, जिसमें सभी बोनस डाटा का उल्लेख था।

‘मैं ठीक हूँ। आप कैसे हैं?’ मैंने कहा।

‘कुछ-कुछ सांता क्लॉज़ जैसा महसूस कर रहा हूँ।’

मैं मुस्करा दी, लेकिन थोड़ा-सा ही। पार्टनर के ऑफिस में हमें सलीके-से बरताव करना ही होता है।

‘ये तुम्हारा पहला रियल बोनस होगा, है ना?’

मैंने सिर हिला दिया।

‘तुमने यह कैसे किया?’ उसने पूछा।

‘मैं जल्द ही पता लगाने की कोशिश करूंगी।’

वह हँस दिया। ‘वेल, तमाम रिव्यू में से खुद को सबसे बुरी रेटिंग आप ही ने दी है। आपने खुद को केवल तीन नंबर दिए, जबकि लगभग सभी ने आपको पाँच दिए हैं।’

मैं कुछ ना कह सकी। मेरे भीतर खुशी मचलने लगी थी। पिछले बारह महीनों में मैने जो मेहनत की थी, उसकी अहमियत को लोग समझ रहे थे।

‘तो इस साल के लिए आपका बोनस है डेढ़ लाख डॉलर्स!’

‘क्या!’ मेरे मुँह से निकल ही गया।

‘क्या का, क्या मतलब है? तुम्हें अच्छा लगा ना?’ जॉन ने कहा।

‘सॉरी, लेकिन आपने कितना बताया?’

‘एक लाख पचास हज़ार डॉलर्स! तो आपका टोटल कंपेनसेशन होगा, एक लाख बीस हज़ार बेस प्लस एक लाख पचास हज़ार बोनस। यानी इस साल आपने दो लाख 70 हज़ार डॉलर्स कमा लिए हैं।’

मेरा सिर चकराने लगा। मैंने पैर ज़मीन पर टिका दिए, ताकि कहीं मैं चकराकर गिर ना पड़ूँ। दो लाख 70 हज़ार डॉलर्स! मैंने मन-ही-मन यह आँकड़ा दोहराया। यानी एक करोड़ पचास लाख रुपए!

‘आपको बेस इंक्रीमेंट भी मिली है। जिससे अब यह बढ़कर एक लाख 40 हज़ार डॉलर्स हो गई है। कीप इट अप।’

‘वेल, हाँ। थैंक्स, जॉन। मैं हमेशा अपना बेस्ट देने की कोशिश करूँगी। ये मेरे लिए बहुत बड़ी रकम है।’

‘लेकिन तुम इसे डिजर्व करती हो। बाय द वे, एसोसिएट लेवल पर यह सबसे बड़े बोनस में से है। और हाँ, ये तमाम नंबर्स कान्फिडेंशियल है। इन्हें कभी किसी से शेयर मत करना।’

‘मैं समझती हूँ।’

‘गुड। बैक टु वर्क नाऊ।’

अपनी सीट पर लौटते समय ऐसा लग रहा था, जैसे मैं हवा में तैर रही हूँ। मेरे पास वाले क्यूबिकल में बैठे क्रैग से मैं हाई-फाइव करना चाहती थी, लेकिन कर नहीं सकी। मैं केवल मुस्करा दी। मैंने अपने कंप्यूटर पर एक फाइनेंशियल मॉडल स्प्रेडशीट खोली। लेकिन मेरा दिमाग फ़ोकस नहीं कर पा रहा था। मुझे यह ख़बर किसी ना किसी से शेयर करनी ही थी। इंडिया में अभी सब लोग सो रहे थे। मैंने देबू को कॉल किया।

उसने फोन नहीं उठाया।

मैंने सोचा कि शायद वह किसी मीटिंग में होगा। आधे घंटे बाद मैंने फिर कोशिश की। उसने फिर फोन नहीं उठाया। मैं सोचने लगी कि अभी वह कहाँ होगा। आखिरकार एक घंटे बाद उसने कॉल बैक किया।

‘क्या बात है?’

‘लंच पर मिलना चाहोगे?’

‘कब, अभी?’

‘हाँ।’

‘मैं काम पर हूँ। बाहर कदम भी नहीं रख सकता। एक अकाउंट पर बहुत पोलिटिक्स हो रही है।’

‘मुझे बोनस मिला है।’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

‘कूल। कितना मिला है?’

‘मैं आमने-सामने बैठकर बताना चाहूँगी।’

‘तो आज रात घर पर बता देना।’

‘आज कहीं बाहर चलते हैं।’

‘रियली?’

‘हाँ। मैं तुम्हारे ऑफिस के पास कोई जगह चुन लूंगी। काम से सीधे वहीं आना। 6.30 बजे?’

12

मैंने नेराई बुक किया, एक हाईली-रेटेड ग्रीक रेस्तरां, जो बीबीडीओ ऑफिस से केवल दस मिनट की पैदल दूरी पर था। बुकिंग के बाद मैंने देबू को मैसेज भेजा।

'नेराई, 55 ईस्ट 54वीं स्ट्रीट (मैडिसन एंड पार्क के बीच), 6.30 बजे।'

5.30 बजे मैं ऑफिस से निकल गई। मुझे साउथ फेरी स्टेशन तक पैदल जाना था और रेस्तरां तक पहुँचने के लिए '1' ट्रेन पकड़नी थी। लेकिन मैंने टैक्सी ली। आज मैं 20 डॉलर की कैब राइड अफोर्ड कर सकती थी। न्यूयॉर्क की येलो टैक्सी ने एफडीआर ड्राइव ली, जो मैनहटन के ईस्ट कोस्ट से सटा एक हाईवे है। वह बिना किसी ट्रैफिक सिगनल के मुझे 49वीं स्ट्रीट तक ले गई। वहाँ से टैक्सी वेस्ट की ओर मुड़ी और मुझे नेराई की ओर ले गई।

चूँकि मैं जल्दी पहुँच गई थी, इसलिए मैंने आराम से रेस्तरां का जायज़ा लिया। ईंट की सफेद दीवारों पर ग्रीक पेंटिंग्स टंगी थीं। मैंने वाइन लिस्ट देखी और ग्रीक रेड वाइन ऑर्डर कर दी।

देबू का मैसेज आया: 'सॉरी, स्टक एट वर्क। दस मिनट लेट हो जाऊँगा।'

'कोई बात नहीं।' मैंने जवाब दिया।

'तब तक तुम कुछ ऑर्डर कर दो। मुझे भूख लग रही है।'

मैंने वाटरमेलन-चीज़ सैलेड और डिप्स ऑर्डर कीं। खाना आ गया, लेकिन देबू नहीं। आखिरकार वह 7 बजे पहुँचा।

'आई एम सो सो सॉरी।'

'इट्स फाइन।' मैंने कहा और उठकर उसे हग किया।

उसने अपना लंबा काला ओवरकोट निकाला और उसे कुर्सी पर टांग दिया।

'बहुत काम है?'

'पोलिटिक्स ज़्यादा है। यह कि कैम्पेन का क्रेडिट किसको मिलेगा। जब से मेरा प्रमोशन हुआ है, मैंने क्रिएटिव काम करने से ज़्यादा समय पोलिटिक्स को मैनेज करने में बिताया है।'

'आखिर तुम सीनियर हो। मैनेजर्स को यही तो करना होता है।'

'हाँ शायद। ओह, खाना आ गया है। कैसा है? मैं तो भूख से मरा जा रहा हूँ।'

'अभी तक चखा नहीं। तुम्हारा वेट कर रही थी।'

देबू ने ब्रेड उठाई और डिप के साथ ली। मैंने सलाद लिया। कुछ बाइट्स के बाद जैसे उसकी जान-में-जान आई तो बोला: 'एनीवे, तुम्हारा क्या रहा? बिग डे?'

मैं मुस्करा दी।

'तो फोन पर बताने को तुम तैयार नहीं थीं। वीकडे पर बाहर डिनर पर बुला लिया। तुम्हें सस्पेंस में रखने में मज़ा आता है।'

'ऐसा कुछ नहीं है। लेकिन मै आमने-सामने बैठकर ही बताना चाहती थी।'

'तो कितना मिला है?'

'जॉन ने मुझे आज अपने रूम में बुलाया और कहा कि मुझे दूसरे लोगों ने बहुत अच्छे रिव्यूज़ दिए हैं।'

'देखा, मैंने तो पहले ही कह दिया था कि तुम स्टार हो।'

'वेल, जब आपके पार्टनर आपकी तारीफ करते हैं, तो अच्छा लगता है।'

'व्हाट्स द नंबर, बेबी?'

'बता दूँगी।'

'मैं और इंतजार नहीं कर सकता।'

'लेकिन किसी को बताना मत।'

'मैं भला किसको बताऊंगा?'

'एक सौ पचास।'

'एक सौ पचास क्या?' उसने कंफ्यूज़ होते हुए कहा।

'एक सौ पचास सौ डॉलर्स!'

'एक लाख पचास हज़ार डॉलर्स!!'

'जी हाँ।'

'यू मीन टोटल कंपेनसेशन? तुम्हें ऑलरेडी 120 मिलते हैं, तो 30 बोनस?'

'जी नहीं। 150 बोनस, टोटल 270।'

देबू का मुँह खुला-का-खुला रह गया: 'यानी तुमने पिछले साल दो लाख सत्तर हज़ार डॉलर्स कमाए?'

'जी हाँ।'

'ओह, होली फ़क! ये बैंके भी!'

'वेल, सभी को इतना नहीं मिला है। लेकिन मुझे फाइव रेटिंग मिली थी, इसलिए इतना ज़्यादा मिला।'

'नाइस।' उसने दबी हुई आवाज़ में कहा।

वेटर ऑर्डर लेने आया। उसने मेनू खोला और पाँच मिनट तक उसका मुआयना करने के बाद कहा: 'वन लैंड केबाब एंड वन फालाफेल, प्लीज़।' वेटर चला गया।

'यू ओके विद ऑर्डर, बेबी? तुम कुछ और लोगी?' देबू ने कहा।

'नहीं। अलबत्ता ऐसा लग रहा है कि तुम्हें मेरी बातों से ज़्यादा दिलचस्पी मेनू में है।'

'नहीं, नहीं। एनीवे, तुम कुछ कह रही थीं?'

मैं मुस्करा दी: 'मैं कह रही थी कि एसोसिएट्स में से मुझे सबसे ज़्यादा बोनस मिला है।'

'दैट्स नाइस, बेबी। आई मीन, मैं तो इतने सारे पैसों को इमेजिन भी नहीं कर सकता। यू नो, प्रमोशन के बावजूद मेरा टोटल कंपेनसेशन 80 हज़ार तक ही पहुँच पाया है।'

उसे अपनी सैलेरी बताने की ज़रूरत क्या है, मुझे पहले ही पता है: मैंने सोचा।

'तुम भी बहुत अच्छा कर रहे हो।' मैंने कह तो दिया, लेकिन अगले ही पल लगा कि गलत बात कह दी। ऐसा लगा जैसे में रेस में दूसरे नंबर पर आए किसी बच्चे को हिम्मत बंधा रही हूँ कि तुम भी अच्छा दौड़े। बहरहाल, शायद उसने इसे नोटिस नहीं किया।

'लेकिन मेरी कंपनी के लोग स्टुपिड हैं। तुम यकीन नहीं करोगी इसी कैम्पेन में क्या हुआ।'

मुझे समझ नहीं आ रहा है कि यहाँ पर देबू के बारे में बात क्यों हो रही है, जबकि यह बिग मोमेंट तो मेरा है ना: मैंने मन-ही-मन सोचा।

वेटर रेड वाइन की एक बोतल लेकर आया। देबू ने उसकी ओर अचरज से देखा।

'मैंने सेलिब्रेट करने के लिए ग्रीक वाइन ऑर्डर की थी। एक पूरी बोतल!' मैंने वेटर को इशारा किया कि वह हमारे लिए दो गिलास तैयार कर दे।

'कूल।' उसने कहा। 'नाइस।'

कूल और नाइस, यह इंसान क्या कभी इन दोनों शब्दों से आगे नहीं बढ़ेगा क्या?

खाना आया। उसका चेहरा चमक उठा।

'इस लैंब की महक कितनी शानदार है। बेबी, तुम बहुत अच्छे रेस्तरां चुनती हो। अब जैसे यही रेस्तरां ले लो। ऑफिस के इतना करीब, लेकिन मुझे पता ही नहीं था। किसी दिन मैं अपनी टीम के साथ यहाँ आऊंगा।'

मिस्टर देबाशीष सेन, मैं रेस्तरां चुनने के अलावा और भी दूसरे काम करती हूं। जैसे कि बहुत सारे पैसे कमाना। रिव्यूज़ में टॉप रेटिंग हासिल करना। क्या तुम इसके लिए मेरी ज़रा भी तारीफ नहीं कर सकते?

'दिस इज़ यमी? तुम भी ट्राय करो। यह तो बस कमाल है।' देबू ने कहा। मेरे बोनस की ख़बर पर उसने जितना उत्साह दिखाया था, उससे दस गुना ज़्यादा वह खाने पर दिखा रहा था। मैंने अपना खाना खुद सर्व किया। यह देखकर मुझे अचरज हुआ कि अब मैं भी अपने बोनस को लेकर इतनी खुश नहीं अनुभव कर रही थी।

अरे यार, मैं तारीफे सुनने के लिए इतनी बेचैन क्यों रहती हूँ? गोल्डमान साक्स के सबसे सीनियर पार्टनरों में से एक जॉन ने मेरे काम की तारीफ की है, और क्या चाहिए? हम लड़कियों में यह खराबी किसलिए होती है कि जब तक हमारा आदमी हमारी तारीफ ना कर दे, हम उसको पूरी नहीं मानते।

'कैसा लगा? लैंब तो बहुत ही सॉफ्ट है ना?'

‘हाँ, अच्छा है।’ मैंने कहा। मेरा मन कर रहा था कि कहूँ: जहन्नुम में जाओ!

आखिर वह मेरी तारीफ क्यों नहीं कर सकता? जब उसको प्रमोशन मिला था तो मैंने ज़मीन-आसमान एक कर उसके लिए एक सरप्राइज पार्टी रखी थी। लेकिन अभी उसको लैंब चट करने से ही फ़ुरसत नहीं थी।

देबू मुझे कोई डेढ़ साल से जानता था। वह समझ गया कि मैं अपसेट क्यों हूँ।

‘मुझे तुम पर नाज़ है, बेबी। सो प्राउड ऑफ यू। तुमने यह सब अचीव करने के लिए बहुत मेहनत की है, मैं जानता हूँ।’

‘ओह, थैंक्स।’ मैंने कहा और उसका हाथ थाम लिया।

‘आई एम सॉरी, लेकिन मैं अभी तक उस नंबर पर यकीन नहीं कर पा रहा हूँ। तुम्हारे पास तो अभी पूरे दो साल का एक्सपीरियंस भी नहीं है।’

‘डिस्ट्रेस्ड में पैसा अच्छा मिलता है। जो डील मैंने करवाई थी, उससे भी कंपनी को बहुत पैसा मिला। लेकिन हाँ, जब मैंने सुना तो मैं भी सकते में आ गई थी।’

‘तुम मुझसे तीन गुना ज़्यादा पैसा कमाती हो। माइंडब्लोइंग!’

उसने ऐसी बात क्यों कही? कंपेयर करने की ज़रूरत ही क्या है? मैं उसे यह भी बताना चाहती थी कि मुझे बेस इंक्रीमेंट भी मिला है, लेकिन मैंने उसे ना ही बताना ठीक समझा।

‘वेल, दो लोगों के बीच में कोई-ना-कोई तो ज़्यादा ही कमाएगा। कुछ इंडस्ट्रीज अच्छा पे भी करती हैं।’

‘हम्म्म।’

‘चलो कहीं छुट्टियाँ बिताने चलते हैं। कहीं भी। यूरोप? हवाई?’

वह हँस दिया: ‘फीलिंग रिच?’

‘आई एम रिच। वी आर रिच। चलो इस वीकेंड शॉपिग करते हैं। आओगे?’

‘शायद। तुमने अपने पैरेंट्स को बताया?’

‘बता दूँगी। जब मॉम उठेंगी, तब उन्हें बताऊंगी।’

‘वे लोग यह सुनकर कितने खुश होंगे।’

‘आई होप सो। मैं चाहती थी कि वे एक होंडा सिटी कार खरीदें। लेकिन अब शायद मैं उनसे इससे भी बेहतर कार खरीदने को कहूँगी।’

‘उन्हें तुम पर कितना नाज़ होगा।’

‘थैंक्स, देबू। लेकिन क्या तुम्हें भी मुझ पर नाज़ है? सच मे?’

‘हाँ, बिलकुल है।’

हमने एक-दूसरे की आँखों में देखा। हमने इस शहर में अपने लिए एक मुकाम बनाया था। हमने ना केवल सर्वाइव किया, बल्कि हम यहाँ पर फले-फूले भी। हमें एक-दूसरे का

साथ पसंद था। मैंने उसका हाथ थाम लिया। उसने कुछ कहने के लिए अपना गला साफ किया। क्या वह कोई रोमांटिक बात कहने जा रहा था?

'सॉरी, लेकिन यह लैंब का आखिरी पीस तुम खाओगी या मैं खा जाऊँ?' उसने कहा।

'पूरे डेढ़ लाख डॉलर्स!' मैंने फोन पर माँ को बताया।

'रुपए में बताओ।'

'अभी एक डॉलर पैंतालीस रुपए के बराबर है, तो मान लो 70 लाख रुपया।'

'ये तुम्हारा बोनस है?'

'मैं थोड़ा पैसा आपके अकाउंट में भिजवा रही हूँ। प्लीज़ शॉपिंग कर लेना।'

'तुम्हें 70 लाख रुपए बोनस में मिले?'

'हाँ।'

'सैलेरी अलग?'

'हूँ।'

'वैसे तुम क्या काम करती हो?'

'मतलब?'

'मतलब इतना पैसा कभी किसी जॉब में मिलता है?'

'मैंने आपको बताया था ना कि मैं डिस्ट्रेस्ड डेट में हूँ। हम उन कंपनियों के साथ काम करते हैं, जो मुश्किल दौर से गुज़र रही हैं।'

'यदि कंपनियाँ मुश्किल में होती हैं, तो तुम इतना पैसा कैसे बना लेती हो?'

मैं हँस दी: 'हो जाता है। डैड पास में हैं?'

'हाँ।' उन्होंने कहा, फिर ज़ोर से आवाज़ देकर उन्हें पुकारा: 'अजी सुनते हो, तुम्हारी बेटी ने 70 लाख रुपए कमाए हैं।'

उनकी आवाज़ पूरी कॉलोनी में सुनी जा सकती थी। गोल्डमान के कॉन्फिडेंशियलिटी क्लॉजेज की ऐसी कम तैसी!

मैंने डैड को भी बोनस की पूरी रामायण सुनाई। एक मिनट की चुप्पी के बाद उन्होंने भावुक आवाज़ में कहा: 'इतना तो एसबीआई चेयरमैन को भी नहीं मिलता। तुम अभी चौबीस साल की ही हो। मेरी गुड़िया इतनी बड़ी कब हो गई?'

मैं अपने आँसुओं को रोक नहीं पाई।

'मैं अब भी आपकी गुड़िया ही हूँ, डैड। वही जो आपकी अंगुली पकड़कर स्कूल जाती थी।'

मैंने उनके सुबकने की आवाज़ सुनी। मेरे पापा घर की सभी औरतों से ज़्यादा रोते थे।

‘आई एम सो प्राउड ऑफ यू।’

‘आई लव यू। आई मिस यू।’

‘घर जल्दी आना।’

‘आऊँगी। क्रिसमस के आसपास मैं छुट्टियाँ लूंगी। आपको क्या चाहिए? क्या मैं आपके लिए कुछ ला सकती हूँ?’

‘बस मेरी लिटिल गर्ल को मेरे पास जल्दी-से-जल्दी ले आना।’

मैंने फोन रख दिया। मैं एक लंबे समय के बाद इतना रोई थी। किसको मालूम था कि दो लाख सत्तर हज़ार डॉलर्स आपको इतना इमोशनल बना सकते हैं?

13

'चीयर्स!' जोनाथन ने टोस्ट उठाते हुए कहा। 'मेरे अमेजिंग एसोसिएट्स क्रैग और राधिका के लिए।'

हमने अपने-अपने गिलास उठा दिए। डिस्ट्रेस्ड डेट की परंपरा के मुताबिक पूरे ग्रुप ने बोनस अनाउंसमेंट वीक के शुक्रवार को ड्रिंक्स का मज़ा लिया। हम हैरीज कैफे एंड स्टीक पर आए थे, जो कि गोल्डमान बिल्डिंग से महज़ पांच मिनट के फ़ासले पर था। यह वॉलस्ट्रीट का एक इंस्टिट्यूशन था, जहाँ सीनियर बैंकर्स और सीईओ लंच करते थे और दुनिया की कुछ सबसे बड़ी डील्स को अंजाम देते थे। हम कोई बीस लोग बार एरिया मे बैठे थे। जॉन क्रूज केवल चंद मिनटों के लिए आए, सीनियर एमडी और वाइस प्रेसिडेंट्स से बतियाए और अपने हैम्पटंस बीच हाउस में वीकेंड मनाने चले गए।

लोग यहाँ पर अपनी बीवियों, पतियों, गर्लफ्रेंड्स-बॉयफ्रेंड्स के साथ आए थे। मैंने भी देबू को बुलाया था। आखिरकार मैंने यह हिम्मत जुटाई थी कि उसे अपनी टीम के सामने ला सकूँ।

'हैप्पी विद योर नंबर?' क्रैग ने मुझसे पूछा। भले ही गोपनीयता कायम रखना कितना ही जरूरी क्यों ना हो, बोनस गॉसिप से बढ़कर कोई और चीज़ बतियाने के लिए नहीं हो सकती थी।

'मेरा पहला बोनस है, खुशी तो होगी ही।'

'उम्मीद है उन लोगों ने तुम्हें अच्छा पे किया होगा।'

'हे! ये तो जोनाथन की वाइफ है ना?' मैंने सब्जेक्ट बदलते हुए कहा। मैंने जोनाथन की डेस्क पर उनकी तस्वीरें देखी थीं।

'हाँ, वही क्लारा हैं।'

'तुम्हारा साथ देने के लिए कोई आ रहा है?' मैंने पूछा।

'अमांडा कुछ ही मिनटों में पहुँच रही है।' क्रैग ने अपनी गर्लफ्रेंड के बारे में कहा।

'और तुम्हारा साथ?'

'मेरा भी एक दोस्त आ रहा है!'

'दोस्त?'

मैं हँस दी।

'ओके, बॉयफ्रेड। सॉरी, मैंने अभी तक यहाँ उसके बारे में किसी को बताया ही नहीं।'

'मुझे नहीं मालूम था तुम्हारा एक बॉयफ्रेंड है।'

'मैंने कभी उसके बारे में बात ही नहीं की।'

'वेल, आज हम उसे देख लेंगे। हमारी सुपरस्टार एसोसिएट का बॉयफ्रेंड।'

‘मैं अभी सीख ही रही हूँ।’

‘यू आर गुड। मुझे यह स्वीकार करते अच्छा तो नहीं लग रहा, फिर भी सच यही है कि तुम मुझसे बेहतर हो। वे लोग तुम्हें अगले छह महीने में वाइस प्रेसिडेंट बना देंगे। देखती जाओ।’

‘पता नहीं।’

‘अमांडा इज़ हियर!’ क्रैग ने ज़ोर से कहा।

सुनहरे बालों वाली एक बेहद खूबसूरत लड़की भीतर आई। सभी लोग ठहरकर उसे देखने लगे। उसके बाल घुंघराले थे और उसका मेकअप लाजवाब था: ऑक्सब्लड लिपस्टिक और स्मोकी आईज़।

वो आई और क्रैग को हग किया। पलभर में वह एसोसिएट होने के बावजूद एक सुपरस्टार बन गया।

मैंने अपना फोन चेक किया।

‘अभी भी काम में ही उलझा हूँ। सॉरी।’: (देबू का मैसेज था)।

‘जल्दी आओ। यहाँ सब आ गए हैं।’ मैंने जवाब दिया।

क्रैग ने अमांडा से मेरा परिचय कराया।

‘मैंने तुम्हारे बारे में बहुत सुन रखा है।’ अमांडा ने कहा।

‘सच?’

‘क्रैग हमेशा आपकी बात करते रहते हैं कि आप कितनी अच्छी निगोशिएटर है और अपने काम में कितनी अच्छी है।’

‘ऐसा नहीं है। बस कभी-कभी किस्मत मेरा साथ देती है।’ मैंने हँसते हुए कहा। मैं काम्प्लिमेंट्स पर इसी तरह रिएक्ट करती थी। मैं ‘थैंक यू’ कहकर उसे स्वीकार नहीं करती थी, उल्टे तारीफ को ही नकार देती थी।

‘तो आप एक्ट्रेस हैं?’ मैंने कहा।

‘हाँ। अभी एक थिएटर में छोटा-सा पार्ट कर रही हूँ। टीवी और मूवीज़ के लिए भी ऑडिशन दे रही हूँ। लेकिन यह बहुत मुश्किल है, इसलिए साथ ही मैं एक पार्ट-टाइम पियानो टीचर के रूप में भी काम करती हूँ।’

‘आप इतनी खूबसूरत हैं। आपको जरूर अपनी मंजिल मिल जाएगी।’

‘न्यूयॉर्क में खूबसूरत लड़कियों की कोई कमी नहीं है।’ अमांडा ने कहा।

‘लेकिन तुमसे खूबसूरत कोई नहीं।’ क्रैग ने कहा और उसे सिर पर किस किया। वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। पार्टी में सभी की नज़रें अमांडा पर ही जमी हुई थीं। मैं अमांडा जैसा बनना चाहती थी। पता नहीं क्यों। मैंने ऐसा सोचने के लिए मन-ही-मन खुद को लताड़ लगाई, क्योंकि अमांडा के पास कोई ढंग का जॉब नहीं था। वह फाइनेंशियल डील्स नहीं कर सकती थी। वह साल के दो लाख सत्तर हज़ार डॉलर नहीं कमाती थी। लेकिन

इसके बावजूद अमांडा इतनी हॉट थी और मर्द उसके आसपास तितलियों की तरह मंडरा रहे थे। लेकिन मेरी ज़िंदगी में आने वाला इकलौता मर्द अभी तक गायब था।

'देबू, कहाँ हो तुम?' मैंने उसे फिर एक मैसेज भेजा।

उसने एक घंटे तक कोई जवाब नहीं दिया। तब तक मैं अपने ग्रुप के सभी लोगों की बीवियों से मिल चुकी थी और तीन गिलास शैम्पेन पी चुकी थी। मेरा सिर कुछ-कुछ चकराने लगा था।

देबू ने 9.30 पर फोन लगाया।

'देबू, कहाँ हो तुम? सबलोग जाने वाले हैं। तुम्हें मेरा मैसेज मिला कि नहीं?'

'हाँ, लेकिन ये मुसीबत भी आज ही होनी थी। मैं तुम्हें बताऊंगा।' उसके आसपास से लोगों की आवाज़ें आ रही थीं।

'अभी तुम कहाँ हो?'

'मैं अपनी टीम के साथ नीचे ड्रिंक लेने आया हूँ।'

'देबू? लेकिन तुम्हें तो ड्रिंक्स के लिए आज मेरे ऑफिस आना था। मुझे तुम्हें सबसे मिलाना था।'

'स्टुपिड पोलिटिक्स हो रही है। मुझे लोगों से बात करनी पड़ेगी। लेकिन मैं आऊंगा।'

'कब तक?'

'एक घंटे में!'

'तब तक सब खत्म हो जाएगा। रियली देबू? तुम्हें भी आज ही काम लेकर बैठना था।'

'मैं उलझा हुआ हूँ। मैं तुम्हें बता नहीं सकता, यहाँ पर कैसे पीठ पर वार किए जाते हैं।'

'देबू, तुम्हारे ऑफिस में क्या होता है, उससे मुझे कोई सरोकार नहीं। तुमने कहा था कि तुम आओगे।'

'मुझे लगा था कि मैं आ जाऊंगा। वैसे भी, वहाँ पर बैंकर लोग ही हैं ना। मुझे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं।'

'रियली? लेकिन मैं भी एक बैंकर हूँ।'

'तुम्हारी बात अलग है। लेकिन बैंकर लोग हमेशा पैसों और डील्स की ही बात करते रहते हैं।'

'देबू, वे लोग भी इंसान हैं। आज यहाँ सब लोग अपने-अपने पार्टनर्स के साथ आए हैं। मैंने क्रैग को बता भी दिया था कि तुम आ रहे हो। अब मैं उसे क्या कहूँ?'

'यही कि मेरा बॉयफ्रेंड किसी काम में व्यस्त हो गया।'

'ठीक है। बाय!'

'तो मैं एक घंटे में वहाँ आऊँ या नहीं?'

‘रहने दो। पीठ पर वार करने वाले अपने कलीग्स के साथ ही रहो। इट्स ओके। बाय।’

मैंने फोन रख दिया। फिर मैंने शैम्पेन का एक गिलास उठाया और साँस में पूरा पी गई। जोनाथन ने मुझे देख लिया।

‘शायद किसी को फ्रेंच बबल्स का मज़ा लेते हुए आहिस्ता-आहिस्ता पीना पसंद नहीं है।’ उसने कहा।

‘हे जोनाथन।’

‘क्रैग ने मुझे बताया कि तुम्हारा बॉयफ्रेंड आ रहा है।’

‘वह किसी काम में फँस गया है।’

‘ओह, ये तो बुरा हुआ। वह क्या करता है?’

मुझे खुद ही नहीं पता कि वह करता क्या है, मैं कहना चाहती थी। लेकिन मैंने गहरी साँस ली, खुद को काबू में किया और कहा: ‘वह मैडिसन एवेन्यू पर काम करता है। एडवरटाइज़िंग में।’

‘ओह, नाइस। दर क्रिएटिव टाइप्स।’

‘हां, शायद।’

‘बैंकर और क्रिएटिव, अच्छा कॉम्बिनेशन है।’

पैंतालीस मिनट बाद सभी लोग छोटे-छोटे ग्रुप्स बनाकर हैरीज़ की और चले गए। उनके अपने-अपने डिनर प्लान्स थे। मेरा कोई प्लान नहीं था। मैं बाहर चली आई और एक कैब ढूँढने लगी। लेकिन शुक्रवार होने के कारण मुझे कोई कैब नहीं मिली। मैं सबवे में गई और अपने फोन को देखा। देबू ने कोई कॉल या मैसेज नहीं किया था। मुझे सहसा याद आया कि मैंने कुछ नहीं खाया था। मैं बाहर चली आई और पैदल ही घर की ओर जाने लगी। रास्ते में मैंने अपने लिए एक पिज्जा स्लाइस ली। इस हालत में भी मैंने सोचा कि उस इडियट देबू ने खाना खाया होगा या नहीं और यह सोचकर एक पिज्जा उसके लिए पैक करवा लिया।

मैं घर पहुँची तो देखती क्या हूँ कि देबू महाराज कुर्सी पर बैठे टीवी देख रहे हैं!

‘तुम यहाँ?’ मैंने कहा। वह उठा और मेरे हाथ से पिज्जा बॉक्स और हैंडबैग ले लिया। मैंने अपना विंटर कोट निकाला और हैंगर पर टांग दिया।

‘मैं दस मिनट पहले ही आया हूँ।’ उसने कहा।

‘तुमने खाना खाया?’

‘नो, नॉट रियली। बस कुछ बार स्नैक्स।’

‘मैं पिज्जा लाई हूँ, खा लो।’

‘थैंक्स बेबी।’

‘डोंट बेबी मी। जस्ट ईट।’

‘तुम अपसेट हो? कुछ हुआ क्या?’

भला यह कैसा सवाल हुआ? क्या देबू दिमाग से पैदल है?

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। हम लिविंग रूम में अपनी छोटी डाइनिंग टेबल पर आमने-आमने बैठ गए। मैंने बाक्स से पिज्जा स्लाइस निकलीं और उन्हें प्लेट्स में रख दिया।

‘लुक्स यमी।’ उसने कहा।

मैंने पिज्जा स्लाइस की ओर देखा और मुझे अमांडा की याद आई। मैं दावे से कह सकती हूँ कि वो इस तरह की चीज़ें नहीं खाती होगी। यही तो उसकी खूबसूरती का राज़ है। जब मुझे यह खयाल आया कि मैं यह कैलोरी बम डिनर खा रही हूँ, तो मुझे गुस्सा आ गया। मैने प्लेट सरका दी।

‘क्या हुआ, बेबी?’ देबू ने कहा। उसके मुँह में खाना भरा था।

‘मुझे भूख नहीं है।’

‘क्यों?’

‘मैं यह नहीं खा सकती।’

‘लेकिन तुम ही तो इसे खरीदकर लाई हो।’

‘हाँ, क्योंकि मैं स्टुपिड हूँ, ओके। अब मुझे बेबी कहना बंद करो।’

देबू ने अपनी पिज्जा स्लाइस भी नीचे रख दी।

‘सुनो, मैं जानता हूँ कि तुम अपसेट हो, क्योंकि मैं तुम्हारी पार्टी में नहीं आया। लेकिन आज का दिन मेरे लिए बहुत मुश्किल रहा है। उन लोगों ने मुझे और मेरे दो और जूनियर्स को अंडर आर्मर अकाउंट से बाहर कर दिया।’

‘क्या? कैसे? वो तो तुम्हारा अकाउंट था ना?’

‘मैंने तुम्हें बताया था ना। पोलिटिक्स। वे इसको री-शफल कहते हैं। लेकिन हकीकत यह थी कि उन्होंने मुझसे मेरा अकाउंट ले लिया।’

‘यह सब आज हुआ?’

‘यह मुझे आज बताया गया। लेकिन वे महीनों से इसकी तैयारी कर रहे थे। सब प्लान्ड था।’

‘सॉरी टु हियर दैट। तुम्हारे पास और भी अच्छे अकाउंट होंगे ना?’

‘मेरी ऐसी-तैसी हो गई है।’

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। वह मुझे कई दिनों से बता रहा था कि उसके ग्रुप में पोलिटिक्स हो रही है। एडवरटाइज़िंग में काम करने का उसका उत्साह दिन-ब-दिन खत्म होता जा रहा था। उसकी टीम के कई सदस्य उसे क्लाइंट मीटिंग्स से भी बाहर रखते थे।

‘उस समय तुम ऑफिस से बाहर क्या कर रहे थे?’

‘मैं अपने दोस्तों के साथ था और सोच रहा था कि क्या किया जाए।’

‘तो कुछ सोचा?’

‘उन्होंने मेरी बारह बजा दी, इसमें सोचना क्या है?’

‘तो तुम अपने दोस्तों के साथ समय बिताने के बजाय मेरे ऑफिस की पार्टी में आ सकते थे।’

‘राधिका, क्या तुम्हें केवल अपने ऑफिस की पार्टी की ही परवाह है?’

‘नहीं। लेकिन अगर तुम मेरी केयर करते हो तो।’

‘व्हाट डु यू मीन? अगर मैं एक स्टुपिड बैंकर पार्टी में नहीं आया तो कोई बड़ी बात हो गई क्या?’

मैं उठ खड़ी हुई और टेबल पर जोर से मुक्का मारा।

‘वह कोई स्टुपिड बैंकर थिंग नहीं थी। वह मेरी पार्टी थी। मुझे इस हफ्ते एक बहुत बड़ा बोनस मिला है और वहाँ पर उसी बात का सेलिब्रेशन हो रहा था। मैं चाहती थी कि तुम मेरी टीम से मिलो और मेरी टीम तुमसे मिले। डिड यू गेट इट?’

‘बैठ जाओ। क्या हम डिनर कर सकते हैं?’

‘मुझे कुछ नहीं खाना है, ’ मैंने चीखते हुए कहा।

‘शोर मत मचाओ। तुम नशे में हो?’

‘नहीं।’

‘अ बिट हाई?’

‘इससे फ़र्क नहीं पड़ता। मैं अब भी तुमसे ज़्यादा साफ तरीके से सोच सकती हूँ।’

‘क्या?’

‘यही कि तुम्हें अपना जॉब बदलने की ज़रूरत है। क्या तुम वहाँ खुश हो?’

‘नॉट एग्ज़ैक्टली। लेकिन बीबीडीओ बहुत बड़ा नाम है। मैं उसे कैसे छोड़ सकता हूँ?’

‘बड़े नाम का क्या अचार डालना है। यदि यह तुम्हारे लिए ठीक नहीं है, तो छोड़ो। डिजिटल एडवरटाइज़िंग में इतना कुछ हो रहा है। वहाँ जॉब ढूँढने की कोशिश करो।’

‘यह इतना आसान नहीं है। फिर वे लोग स्टार्ट-अप्स हैं और उनका कुछ तय नहीं।’

‘ठीक है, तो फिर जहाँ हो वहीं बने रहो। लेकिन तब हर बात की शिकायत मत करो।’

‘क्या मैं तुमसे कुछ शेयर भी नहीं कर सकता?’

‘कर सकते हो, लेकिन इसका कोई इलाज भी तुम्हें खोज ना होगा ना। लेकिन तुम तो इस बारे में कुछ करते ही नहीं हो।’

‘व्हाट डू यू मीन कि मैं इस बारे में कुछ नहीं करता?’

‘मेरी माँ मुझे हर हफ्ते फोन लगाती हैं। वे चाहती हैं कि मैं अपने लिए कोई लड़का पसंद करूं। मैं तुम्हें हर बार यह बताती हूँ। क्या तुम्हें कभी इससे कोई हिंट मिली?’

वह चुप रहा। मैंने सभी टची टॉपिक्स एक बार में ही खोल दिए थे |

‘तुम तो देख ही रही हो, मेरा कैरियर अभी किस हालत में है। यदि यह ठीक होता तो मैं उस बारे में सोचता भी।’

‘तो उसको ठीक करने के लिए कुछ करो।’

मैं कमरे से बाहर निकल गई। शॉवर लिया और सोने चली गई। मैंने सभी बत्तियाँ बुझा दीं। देबू ने भी चेंज किया और मेरे पास आकर लेट गया। उसने अपनी बाँह मुझ पर रखी, मैंने उसे दूर हटा दिया।

‘कम हियर, बेबी।’

‘सो जाओ।’ मैंने कहा।

‘हमने दस मिलियन डॉलर का इंवेस्टमेंट किया था। लेकिन हम अब 36 मिलियन डॉलर्स रिकवर करेंगे।’ मैंने कहा।

हमने सिटी प्रॉपर्टीज़ में इंवेस्ट किया था। यह मैनहटन की एक फर्म थी, जिसकी हालत खस्ता हो गई थी। लेकिन हमारे द्वारा इंवेस्टमेंट करने के बाद ही प्रॉपर्टी मार्केट में सुधार आ गया और हमारा पैसा बढ़कर तिगुना हो गया।

‘फ़ैंटास्टिक। अब हमें इसे बेच देना चाहिए।’ जॉन ने कहा।

‘व्हाट अ डील! वेलडन राधिका!’

‘इसमें जोनाथन और क्रैग ने मुझे अच्छी तरह से गाइड किया था।’ मैंने कहा।

मैं अपनी सीट पर आ गई और देबू को फोन लगाया। मैं उसे इसके बारे में बताना चाहती थी।

‘हे, ’ उसने कहा।

‘क्या चल रहा है?’

‘एक काम में लगा हूँ, लेकिन लगता नहीं कि बात बनेगी। तुम सुनाओ।’

‘ऑफिस में हूँ। एक और डील क्लोज़ कर दी है।’

‘तुमने किसी काम से फोन लगाया था?’

‘हाँ।’ मैंने कहा। लेकिन शायद अब मैं उसे अपनी कामयाबी के बारे नहीं बताना चाहती थी। फिर मैं खुद ही सोचने लगी कि ऐसा क्यों हो रहा है।

‘कुछ नहीं, बस ऑफिस में आज का दिन अच्छा रहा।’ मैंने कहा।

‘अच्छा मतलब? तुम और पैसा कमाने में कामयाब रहीं?’

वह हँस दिया, लेकिन मुझे यह बात अच्छी नहीं लगी।

‘नहीं, ऐसा नहीं है। मै बस अच्छा महसूस कर रही थी। यहाँ हमारे पास वह सबकुछ है, जो किसी का भी सपना हो सकता है। हमें ग्रेटफुल होना चाहिए।’

‘हाँ बेबी।’ देबू ने कुछ इस अंदाज में कहा, मानो वह जम्हाई लेने वाला हो। ‘दैट्स स्वीट। एनीवे। मुझे अब फिर से अपने काम में लगना चाहिए।’

‘श्योर। सॉरी कि मैंने तुम्हे डिस्टर्ब किया।’

‘बाय, बेबी।’ उसने कहा और फोन रख दिया और अपनी स्क्रीन की ओर लौट गई।

◆

‘हाय, दिस इज़ राधिका मेहता फ्रॉम न्यूयॉर्क ऑफिस।’ मैंने कहा। मैंने हमारे हांगकांग ऑफिस में एक कांफ्रेंस कॉल लगाया था। समय के अंतर का ध्यान रखते हुए मैंने यह कॉल

अपने घर से रात दस बजे लगाया था। मैं लिविंग रूम के सोफे पर बैठी थी। देबू बेडरूम में बैठा एक बुक पढ़ रहा था।

‘हाय राधिका, दिस इज़ पीटर वू फ्रॉम हांगकांग ऑफिस।’ एक व्यक्ति ने कहा। ‘जोश एंग फ्रॉम हांगकांग।’ एक दूसरी आवाज़ ने कहा। ‘जोनाथन फ्रॉम न्यूयॉर्क।’ जोनाथन ने कहा।

मैंने फोन को स्पीकर मोड में रख दिया, ताकि मेरे हाथ फ्री रह सकें। मैंने अपने लिए एक मिंट टी बनाई थी और हाथों में उसका कप थाम रखा था।

जोनाथन ने डील के बारे में बताया।

‘हम लक्सविज़न नाम की एक कंपनी के साथ डील कर रहे हैं। यह चश्मों और सनग्लासेस की मैन्युफेक्चरर है। राधिका पहले ही इंफो मेमो भेज चुकी हैं। फिलहाल यह कंपनी मुश्किल में है और उसके पास कोई कैश नहीं रह गया है। उसके पास एसेट्स के नाम पर चीन में कुछ कंपनियाँ ही हैं।’

गोल्डमान साक्स के ऑफिसों का आपसी तालमेल बहुत अच्छा था। डील न्यूयॉर्क में आई थी, लेकिन हम अपने हांगकांग ऑफिस से इस बारे में बात कर रहे थे। जोश और पीटर को चीन में बताए गए कंपनी के प्लांट्स को जाकर देखना था कि वे वास्तव में वहाँ पर हैं भी या नहीं।

‘क्लाइंट का कहना है कि फैक्टरी शेन्जेन में है, जो हांगकांग से ज़्यादा दूर नहीं है।’ मैंने कहा।

‘तब तो हम एक दिन की ट्रिप में इसका पता लगा लेंगे।’

‘यह बहुत अच्छा होगा। वे लोग कह रहे हैं कि फैक्टरी कस्बे के बीचोबीच है और अगर उसे बंद कर दिया जाए तो वहाँ पर रेसिडेंशियल फ्लैट्स बनाकर भी बेचे जा सकते हैं।’ मैंने कहा।

जैसे ही मैंने अपना वाक्य पूरा किया, देबू लिविंग रूम में चला आया। मैंने उसे अंगुलियों के इशारे से चुप रहने को कहा। उसने सिर हिला दिया। फिर वह फ्रिज की ओर गया और स्ट्रॉबेरी योगर्ट का एक कप निकाल लिया। उसने मुझे ऑफर किया, लेकिन मैं अपनी चाय के साथ खुश थी। मैंने उसे एक फ्लाइंग किस दिया। वह मुस्करा दिया।

फिर मैं कॉल की ओर मुड़ी। ‘शेन्जेन तेज़ी से बढ रहा है। ऐसे में लोकेशन और लोकल अथॉरिटी की सहमति पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। लेकिन कामकाजी मज़दूरों के बारे में क्या?’ जोश ने कहा। वह हांगकांग डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप में वीपी था।

देबू डायनिंग टेबल पर बैठ गया और अपना स्नैक खाने लगा। स्पीकर पर ऑनलाइन कॉल जारी रहा।

‘हमें दो सौ कामगारों की ज़रूरत होगी। लेकिन वे तभी तक रुके रहेंगे, जब तक कि हम कंस्ट्रक्शन जारी रखें।’ मैंने कहा।

'लेकिन अगर हम बिज़नेस चालू रखेंगे तो इसमें अभी केवल 40 मिलियन डॉलर का खर्चा होगा। लेकिन अगर हम अपार्टमेंट के लिए ज़मीन बेच दें तो हमें 71 मिलियन मिलेंगे।' जोनाथन ने कहा।

'वॉव, ये तो कमाल है!' पीटर ने कहा।

'बिलकुल। और इसीलिए हम चाहते हैं कि लैंड सेल के ऑप्शंस टटोल लें।' मैंने कहा।

'ठीक है। हमें कुछ दिनों का वक्त दीजिए। हम विजिट करके आते हैं।' जॉन ने कहा।

'उम्मीद है हमें अच्छी खबर सुनने को मिलेगी।' मैंने कहा।

कॉल पूरा हुआ। मैंने फोन रखा और लैपटॉप बंद कर दिया। देखा कि देबू वहीं बैठा था।

'अरे, तुम यहीं हो।'

'हूँ, तुम्हारी बातें सुन रहा था।'

'बोरिंग बैंकर स्टाफ, राइट?'

'कुछ-कुछ। लेकिन शायद मैं समझ पा रहा था कि यह किस बारे में था।'

'यह एक नई डील है। कंपनी दिवालिया हो चुकी है, लेकिन चीन में उसकी कुछ फैक्टरियाँ हैं।'

'हाँ, और तुम लोग उस पर ताला लगवाकर उसकी ज़मीन अपार्टमेंट्स के लिए बेचना चाहते हो।'

'बिलकुल। फैक्टरी पुरानी है, लेकिन उसकी लोकेशन बहुत कमाल की है। चीन तेज़ी से बढ़ रहा है और यह शहर के बीचोबीच में है। चलो, देर हो गई है, अब सो जाते है।'

'नो, वेट। फैक्टरी में काम करने वाले वर्कर्स का क्या होगा?'

'उन्हें जाना होगा। हम उन्हें कुछ मुआवज़ा देंगे।'

'और उनके परिवार? तुम लोग उन्हें नए जॉब क्यों नहीं दे सकते?'

'देबू, ये वो लोग खुद देख लेंगे। हम उन्हें मुआवज़े के तौर पर कुछ महीनों की सेलेरी देंगे।'

'इतना आसान नहीं है। ये किस तरह का घटिया पूंजीवाद है!'

'क्या? सीरियसली? घटिया पूंजीवाद!'

'तुम ज़्यादा-से-ज़्यादा पैसा कमा लेना चाहती हो।'

'वेल, ये मेरा जॉब है। हम पैसा इंवेस्ट करते हैं ताकि हमें उस पर अच्छा रिटर्न मिल सके।'

'लेकिन इसके लिए तुम्हें लोगों के पेट पर लात मारने की क्या ज़रूरत है?'

'ये कोई बंगाली कम्युनिज़्म वाली प्रॉब्लम तो नहीं? बंगालियों को कम्युनिज़्म से कुछ ज़्यादा ही प्यार होता है।'

‘मुझे नहीं मालूम, लेकिन यह गलत है।’

‘मैं कुछ गलत नहीं कर रही हूँ। हम वही कर रहे हैं जिससे कानूनी तरीके से ज़्यादा-से-ज़्यादा मुनाफा कमाया जा सके।’

‘ताकि पहले ही अमीर गोल्डमान साक्स के पार्टनर्स और अमीर बन जाएँ? लेकिन फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों का क्या होगा?’

‘देबू! ये मुसीबत गोल्डमान साक्स ने नहीं पैदा की है। यह कंपनी मैनेजमेंट की गलती है। उसने बहुत सारा कर्ज़ा ले लिया, बिना सोचे-समझे बिज़नेस किया और कंपनी दिवालिया हो गई। इसीलिए आज उसके मजदूरों को नुकसान झेलना पड़ रहा है। हम तो केवल इस फैले हुए रायते को साफ करना चाहते है।’

‘जैसे गिद्ध लाशों पर मंडराने लगते हैं। गिद्ध भी यही कह सकते हैं कि वे सफाई करने आते हैं, जबकि वे केवल अपना पेट भरने आ रहे होते हैं।’

‘ये कोई बहुत अच्छी तुलना तो नहीं है, लेकिन तुम चाहो तो ऐसा मान सकते हो।’

‘तुम्हें इस काम का पैसा मिलता है?’

‘तो? हम बड़ी रिस्क भी तो लेते हैं। नहीं तो इस तरह की कंपनियों को कोई छूना भी नहीं चाहता।’

‘तुम्हें अपना जॉब पसंद है?’

‘हाँ देबू। आई लव इट! मैं अपना काम बहुत अच्छे से करती हूँ। और यह बहुत एक्साइटिंग भी है। मैं बहुत कुछ सीख रही हूँ। गोल्डमान साक्स एक बड़ी कंपनी है। मुझे पैसा भी खूब मिल रहा है। काम का दबाव जरूर है, लेकिन मुझे यह पसंद है।’

‘पता नहीं। लेकिन मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा है। आई होप, यह नौकरी करते-करते तुम पत्थर ना बन जाओ।’

‘पत्थर? क्या मतलब?’

‘जब मैं तुमसे मिला था, तब तुम एक स्वीट, इनोसेंट लड़की थी। तुम्हारे भीतर सॉफ्टनेस थी।’

‘मैं अब भी वही हूँ। और ये केवल एक जॉब है। अच्छा तुमने डिजिटल एड एजेंसीज़ के लिए अप्लाई किया?’

‘कर दूँगा।’

‘मुझे तो लगा था कि तुम कहोगे मैं कर रहा हूँ।’

‘मैं कर दूँगा, राधिका। मुझ पर ज़ोर मत डालो। सो, यही मैं कहना चाह रहा था। तुम सख्त होती जा रही हो।’

‘मैं केवल तुम्हारी फ़िक्र कर रही हूँ। मैं चाहती हूँ कि तुम अपने जॉब में खुश रहो, तुम अच्छे से सेटल हो जाओ, फिर हम आगे की स्टेप उठाएँ।’

‘कौन-सी स्टेप?’

अब पानी सिर के ऊपर निकल चुका था। देबू अच्छी तरह जानता था कि मैं क्या कह रही हूँ, फिर भी वह अनजान बनने का नाटक कर रहा था। फिर भी मैंने खुद को संभालते हुए कहा: 'हमारी शादी के बारे में। कितनी बार मुझे यह मामला तुम्हारे सामने उठाना होगा? ऐसा लग रहा है, जैसे मैं तुमसे भीख माँग रही हूँ।'

'तुम्हें कोई भीख-वीख माँगने की ज़रूरत नहीं है।'

'तो मैं अपनी माँ के सामने कब तक बातें बनाती रहूँ।'

'मैं तुम्हें कह चुका हूँ कि मैं अभी इसके लिए तैयार नहीं हूँ।'

'हम कल शादी नहीं करने जा रहे है, देबू। लेकिन हमें कुछ प्लान्स तो बनाने होंगे ना। मुझे अपने पैरेंट्स को बताना होगा कि मेरी ज़िंदगी में कोई है, ताकि वे मेरे लिए लड़का ढूँढने के लिए दिल्ली में मारे-मारे ना फिरें।'

'तुम मुझसे क्या चाहती हो?'

'मुझे बताओ कि हमारे बारे में तुम्हारे क्या प्लान्स हैं। तुम एक साल बाद शादी करना चाहते हो, दो साल बाद, या तीन साल बाद? कुछ तो बताओ।'

'इस बारे में कोई भी बात करना बहुत जल्दबाज़ी होगी।'

'हम पिछले दो साल से लिव-इन में हैं। अब बिलकुल समय आ गया है कि हम इस बारे में सोचें।'

'मुझे नहीं लगता कि समय आया है।'

'और मुझे लगता है कि समय आ गया है।' हमारी आँखें टकराईं।

'तब तो तुम्हीं ठीक होंगी। आफ्टर ऑल, तुम्हें ज़्यादा बोनस मिलता है। राइट?'

'व्हाट द फ़क! क्या कहा तुमने?' मैंने उसे अंगुली दिखाते हुए कहा।

'कुछ नहीं।'

'तुमने हमारे मैरिज डिस्कशन के बीच में मेरे बोनस को लाने की कोशिश की?'

'नहीं।'

'हाँ, तुमने ऐसा किया। मेरे बोनस की बात तुम्हारे दिमाग में क्यों बैठी हुई है?'

'नो, आई डोंट केयर।'

'यू श्योर? जब मैं तुमसे मिलीं, तब अगर मैं एक स्वीट और इनोसेंट लड़की थी, तो तुम भी एक स्वीट बॉय थे, जो मैनहटन में टहलते समय फेमिनिज़्म की बात किया करता था। याद है या नहीं?'

'तुम्हें कितना बोनस मिला है, इसकी मुझे परवाह नहीं, ओके? कुल जमा यही बात है।'

'फिर क्या बात है? बताओ मुझे। अगर हम दो साल से साथ रह रहे हैं, तो हमारे लिए अपने फ्यूचर की बात करना गलत क्यों है?'

'आई एम नॉट श्योर।'

‘किस बारे में?’

‘मुझे नहीं मालूम। मान लिया, हमने शादी कर ली। फिर हमारा एक परिवार होगा, बच्चे होंगे, राइट?’

‘हाँ बिलकुल।’

‘तो मैंने हमेशा सोचा है कि मेरे बच्चों की माँ कैसी होगी।’

‘बच्चों की माँ?’ कभी-कभी देबू ऐसी पागलों जैसी बातें करता था कि लगता था ये लोग अपनी एड एजेंसी में बैठकर जाने कौन-सी चरस लेते होंगे।

‘हाँ, यह बहुत जरूरी है कि मेरे बच्चों की माँ कैसी होगी?’ देबू ने कहा।

‘श्योर, मैं भी अपने बच्चों के लिए एक अच्छा पापा चाहूँगी। क्या अब तुम पॉइंट पर आओगे?’

‘तो क्या तुम इसी तरह काम करती रहोगी या बच्चे होने के बाद काम छोड़ दोगी?’

‘आई डोंट नो। मैंने इस बारे में सोचा नहीं। लेकिन मैं काम करना जारी रखना चाहूँगी।’

‘तुम्हें लगता है तुम ऐसा कर पाओगी’

‘देखते हैं। यदि मैं इतना ही पैसा कमाती रही तो मैं फुल टाइम हेल्प लेना अफोर्ड कर पाऊँगी। मैं ऑफिस के पास एक घर ले लूंगी और अपने पैरेंट्स को यहाँ बुला लूंगी...’

‘सी, इसी को लेकर मैं श्योर नहीं हूँ।’

‘क्या?’

‘यही कि अगर तुम यही सख्त जॉब करती रही, यह लोगों के पेट पर लात मारने का काम, तो क्या तुम अपने बच्चों को प्यार कर पाओगी?’

‘व्हाट द फ़क, देबू?’ अब मैंने चिल्लाकर कहा।

‘देखो, तुम आपा खो रही हो, जबकि तुम ही डिस्कस भी करना चाहती हो।’

‘यह डिस्कशन नहीं है। तुम बुलशिट बातें कर रहे हो। स्वीपिंग जजमेंट्स!’

‘ऐसा नहीं है। ओके, आई लाइक यू, आई लव यू, लेकिन मैं चाहता हूँ कि मेरे बच्चों की माँ घर पर उनकी देखभाल करे।’

‘शायद मैं ऐसा ही करूँगी, अगर ज़रूरत हुई तो।’

‘देखो, तुम खुद ही श्योर नहीं हो। क्योंकि तुम्हारे पास यह हाई-फाई मेगा-जॉब है।’

‘मेरे जॉब से मेरे एक अच्छी माँ होने का कोई संबंध नहीं है, ओके?’

हम तीस सेकेंड तक चुपचाप एक-दूसरे को घूरते रहे। आखिरकार, वह बोला।

‘मुझे नहीं लगता कि हम यह कर सकते है। रियली, आई कांट।’

पलभर को मेरा दिल ही थम गया। क्या उसने ब्रेकअप की बात कही थी? ओह माय गॉड! क्या मुझे प्यार करने वाला इकलौता आदमी भी मुझे छोड़कर जाने की धमकी दे रहा था?

मैंने खुद को संभालते हुए सॉफ्ट आवाज़ में कहा: 'देबू, क्या बात है? तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?'

उसने कंधे उचका दिए।

'काम का तनाव?'

'नहीं।'

'मेरे जॉब की वजह से? देखो, यह डिस्ट्रेस्ड डेट बिज़नेस है। इसमें इतना परेशान मत होओ।'

'केवल यही बात नहीं है।'

आधी रात हो चली थी। मुझे सुबह 6.30 पर उठकर एक अर्ली मॉर्निंग मीटिंग की तैयारी करनी थी।

'देबू, शांत हो जाओ। सॉरी, मैंने तुमसे ऊँची आवाज़ में बात की। मैं तुम्हें समझने की कोशिश करूँगी। ओके?'

मैं आगे बढ़ी और उसे बाहों में भर लिया। 'यह मेरी गलती है। यह इस तरह की बातों के लिए सही समय नहीं है।' मैंने कहा।

'इट्स फाइन, ' उसने अपने को मेरी बाँहों से छुड़ाते हुए कहा।

'अब सो जाएँ?' मैने कहा।

उसने सिर हिला दिया।

हम साथ-साथ लेट गए। मैंने अपना नाइटसूट उतारा और उसे अपने करीब खींच लिया।

'मैं थक गया हूँ। गुडनाइट, बेबी।' उसने कहा और दूसरी तरफ मुँह करके सो गया।

मैं पूरी रात सो ना सकी और यही सोचती रही कि अगर देबू मुझे छोड़कर जाने के बारे में सोचने लगा तो मैं क्या करूँगी?

◆

मैं पाँच बजे ही उठ गई। अगला एक घंटा मैंने ब्रेकफास्ट बनाने में लगाया। मैंने पैनकेक्स बनाए, जो देबू को बहुत पसंद थे। मैंने एक फ्रूट ट्रे भी बनाई, अंडे उबाले और टोस्ट बनाया। मैं सोच रही थी कि मैं यह सब क्यों कर रही हूँ। क्या मैं देबू को खुश करना चाहती थी? क्या मैं उसे यह बताना चाहती थी कि मैं घर का काम भी अच्छे से संभाल सकती हूँ और एक अच्छी माँ बन सकती हूँ? या शायद मैं उसी तरह से स्वीट और इनोसेंट हो जाना चाहती थी, जिसे कि दब्बू और आज्ञाकारी कहा जाता है?

लेकिन मैं इतना ज़रूर चाहती थी कि देबू उठे और यह देखकर बहुत खुश हो जाए। मैं यह उस चाइना डील या बोनस से भी ज़्यादा चाहती थी। सच यही था कि उसके इन शब्दों

ने मुझे अंदर से हिला दिया था कि मैं शायद एक अच्छी माँ नहीं बन सकती।

वह 6.45 बजे लिविंग रूम में आया। मैं तब तक प्लेट्स सजा चुकी थी और ऑरेंज ज्यूस से भरा एक जार भी टेबल पर रख चुकी थी।

'वॉव।' उसने आँखें मलते हुए कहा।

'गुड मॉर्निंग, ' मैंने बेहद खुशगवार आवाज़ में कहा।

'ये तुम क्या कर रही हो?'

'पैनकेक्स बना रही हूँ। तुम्हें बहुत पसंद हैं ना। तुम इसे मैपल सीरप या हनी के साथ खाते हो।'

'मैपल सीरप। यह वीकेंड है?' उसने उलझन के साथ कहा।

'नहीं, बुधवार है। लेकिन मैंने सोचा कि आज कुछ स्पेशल बनाना चाहिए।'

मैंने ब्लूबेरी, रैस्पबेरी और ब्लैकबेरी से सजी प्लेट उसके सामने सरका दी।

'फैंसी!'

'बेरी तुम्हारे लिए अच्छी हैं। जब तक पैनकेक्स नहीं बन जाते, इनसे शुरुआत करो।'

'तुम्हें काम पर नहीं जाना है?'

'जाना तो है।'

'आज तुम्हारी एक इंपोर्टेंट मीटिंग थी ना?'

'हाँ, तुम्हारे साथ ब्रेकफास्ट करने के बाद मैं उसके लिए तैयारी करने लगूँगी।'

पैनकेक्स की महक से घर भर गया। मैंने दो केक प्लेट में निकाले और उन पर मैपल सीरप डाल दिया। फिर मैंने एक केले की पतली स्लाइसेस काटीं और उन्हें पैनकेक्स के आसपास सजा दिया। मैंने प्लेट देबू की ओर बढ़ा दी।

'और तुम?' देबू ने पूछा।

'मैं और बना रही हूँ।'

क्या अब वह मुझे कम सख्त मानेगा? मैंने मन-ही-मन सोचा। वह चुपचाप खाता रहा, शायद यह सोचता हुआ कि कहीं यह कोई सपना तो नहीं। मैंने अपने पैनकेक्स तैयार किए और उन्हें लेकर उसके सामने बैठ गई।

'बहुत यमी बने हैं।' उसने कहा।

'थैंक यू।'

'थैंक यू तो मुझे कहना चाहिए। तुमने इतनी मेहनत की। तुम कितनी बजे उठ गई थीं?'

'पाँच बजे। केवल एक घंटा जल्दी।' मैंने झूठ कहा, क्योंकि मैं पूरी रात सोई ही नहीं थी।

'तुम थकी-सी लग रही हो।'

'इट्स ओके।' मैंने पैनकेक का एक टुकड़ा काटा।

‘राधिका, मैं कुछ कहना चाहता हूँ।’

मैं जनती हूँ कि तुम सॉरी कहोगे। इट्स ओके। मैंने मन-ही-मन कहा।

‘क्या?’

‘दिस इज़ रियली स्वीट।’

‘थैंक्स। ये मेरे स्वीट बॉयफ्रेंड के लिए एक स्वीट जेस्चर है।’

‘राधिका, दिस इज़ रियली स्वीट, बट...’

‘बट क्या?’

‘आज तुम यह सब कर रही हो, यह कमाल है। लेकिन मैं खुश नहीं हूँ।’

‘किस बात को लेकर, बेबी?’

‘हमें लेकर।’

‘क्यों? रात वाली बात पर? तब हम दोनों गुस्से में थे।’ मैंने कहा।

‘बात केवल कल रात या गुस्सा आने की नहीं है। मैं इस बारे में कई दिनों से या शायद कई हफ्तों से सोच रहा हूँ।’

‘रियली? और तुमने इस बारे में मुझसे कभी बात भी नहीं की।’ मैंने कहा। मुझे महसूस हुआ कि मैं स्टुपिड थी, जो सुबह से उसके लिए यह सब पका रही थी।

‘बात करने को कुछ था ही नहीं! लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं खुश नहीं हूँ।’

‘तुम मुझसे बोर हो गए हो?’

‘डोंट बी स्टुपिड।’

‘फिर?’

‘मेरे मन में मेरी पत्नी की एक कल्पना है। मेरे बच्चों की माँ की एक कल्पना। मैं तुम्हें जज नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है मुझे एक हाउसवाइफ चाहिए।’

‘क्या?’ मेरे हाथ से मेरा फोर्क लगभग नीचे गिर गया।

‘मैं यही देखकर बड़ा हुआ हूँ। मैं काम पर जाऊँ, पैसे कमाऊँ, मेरी बीवी घर संभाले, छोटी-छोटी ज़रूरतों का खयाल रखे। हैप्पी फैमिली।’

‘तुम क्या कह रहे हो? क्या तुम्हीं ने यह नहीं कहा था कि आज के ज़माने में औरतें कुछ भी अचीव कर सकती हैं? क्या तुमने मुझे डिस्ट्रेस्ड डेट के लिए अप्लाई करने के लिए इनकरेज नहीं किया था?’

‘किया था। और मैं अब भी तुम्हें एडमायर करता हूँ। मै ऐसी औरतों की इज़्ज़त करता हूँ, जो कुछ बड़ा अचीव करती हैं।’

‘लेकिन तुम ऐसी किसी औरत के साथ रह नहीं सकते?’

‘पता नहीं। शायद हाँ, शायद नहीं। लेकिन जब मैं अपनी शादी के बारे में सोचता हूँ, तो मैं यही सोचता हूँ कि मेरा एक घर होगा, जहाँ पर मेरी बीवी और मेरे बच्चे मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे।’

‘और मैं ऐसी नहीं हो सकती?’

‘क्या तुम अपना जॉब छोड़ोगी’

‘क्यों देबू? मुझे अपना जॉब क्यों छोड़ना चाहिए? मुझे यह पसंद है और यह मुझे बहुत कुछ देता है।’

‘और घर का क्या होगा?’

‘घर? तुम भी तो काम पर जाओगे ना? तो मैं क्यों नहीं जा सकती?’

‘ओह, तो तुम चाहती हो कि तुम काम करो और मैं घर पर रहूँ?’

‘मैंने ऐसा नहीं कहा। लेकिन मैं घर और नौकरी में से किसी एक को चुनूँ ही क्यों?’

‘समझ गया।’

‘क्या समझे?’

‘तुम और पैसा कमाओ। नौकरी मैं छोड़ूँ। तुम अपना हाई-फाई जॉब नहीं छोडोगी।’

‘विल यू स्टॉप इट? जब तुम अच्छा करते हो, तो मैं तुम्हारे लिए खुश होती हूँ, है ना? तो तुम मेरी कामयाबी से खुश क्यों नहीं हो सकते? किसी को भी तब तक नौकरी छोड़ने की ज़रूरत नहीं होती, जब तक कि उन्हें ऐसा करने को मजबूर ना होना पड़े। इसके बाद भी हमारी एक हैप्पी फैमिली हो सकती है।’

देबू चुप रहा। ज़ाहिर है, मेरी बातों का उस पर कोई असर नहीं हुआ था।

‘कुछ कहो।’ मैंने अपनी प्लेट नीचे रखते हुए कहा।

वह चुपचाप बैठा रहा। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैंने एक टिशू पेपर से अपनी आँखें पोंछी।

उसने अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दिया।

‘डोंट क्राय।’

‘तो पहले ऐसा कुछ करो मत कि मुझे रोना आ जाए।’

‘रहने दो यह सब। तुम अपने को स्ट्रेस में डाल रही हो।’

‘मैं ठीक हूँ।’

‘तुम एक सिम्पल इंडियन गर्ल हो। तुम्हें प्यार करने और प्यार किए जाने दोनों की ज़रूरत महसूस होती है।’

‘हाँ, मैं ऐसी ही हूँ।’

‘मैं हम सबका खयाल रखूँगा। क्या तुम केवल मेरा और मेरे बच्चों का ध्यान नहीं रखना चाहोगी?’

‘7.20 हो गए हैं और मुझे जाना है।’

मैं बाथरूम की ओर चली गई। पीछे से देबू की आवाज़ आई।

‘देखो, तुम यही करती हो। मैं तुमसे कुछ बात कर रहा हूँ और तुम।’

‘मेरी मॉर्निंग मीटिंग है, जिसमें मुझे डील प्रज़ेंट करनी है। मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया था।’

‘लेकिन मैं एक ज़रूरी बात कर रहा हूँ। आज की मीटिंग रहने दो।’

‘नहीं कर सकती। मुझे चाइना डील प्रज़ेंट करनी है।’

मैं बाथरूम में गई, जल्दी से शॉवर लिया और नाइटक्लॉथ के बजाय व्हाइट शर्ट और ब्लैक ट्राउजर्स पहन लिए। जब मैं बाहर आई, तब भी देबू डायनिंग टेबल पर बैठा हुआ था।

‘मुझे इसी बात का डर है। माँ बनने के बाद भी तुम ऐसा ही करोगी। तब क्या होगा?’

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं पाँच सेकेंड तक उसे घूरकर देखती रही। इससे वह थोड़ा नर्वस हो गया। मैंने दरवाज़ा खोला और बाहर निकल गई। दरवाज़ा बंद करते समय मैंने उसे एक बार फिर घूरकर देखा और ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर दिया।

15

'वॉव, बिग पार्टी नाइट येस्टरडे?' जोनाथन ने कहा। हम मीटिंग रूम में बैठे दूसरों के आने का इंतज़ार कर रहे थे।

'नहीं, मैं घर पर ही थी। हमने चाइना डील कॉल पर बात भी तो की थी।'

'लेकिन तुम्हारी आँखें लाल हैं।'

'एक्चुअली, मैं ठीक से सो नहीं पाई।'

'डील स्ट्रेस?'

'लाइफ स्ट्रेस।'

जोनाथन मुस्करा दिया।

'मैं समझ सकता हूँ।'

अगले कुछ मिनटों में क्रैग, जॉन और डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप के कुछ और वीपी और एसोसिएट्स भी आ गए। मैंने लक्सविजन डील प्रजेंट की।

'मैं इसमें जल्द ही किसी लोकल चाइनीज प्रॉपर्टी डेवलपर को इनवॉल्व करूँगा।' जॉन ने कहा।

वह सही था। चीन में बहुत सारे नियम-कायदे थे। सिस्टम में से बचकर निकलने के लिए एक ताकतवर लोकल पार्टनर की दरकार थी।

'श्योर।' मैंने कहा। 'हांगकांग ऑफिस फैक्टरी विज़िट कर रहा है। मैं उनसे कहूँगी कि वे कुछ डेवलपर्स से बात करके रखें।'

मैंने अपना प्रज़ेंटेशन पूरा किया और बैठ गई। एक और टीम ने अपनी डील प्रज़ेंट की। मेरा सिर दर्द कर रहा था। मैं स्पीकर के प्रज़ेंटेशन पर पूरा ध्यान देने की कोशिश कर रही थी कि मेरा फोन बजा। पहले तो मैंने उसे इग्नोर किया, लेकिन वह लगातार घनघनाता रहा। मीटिंग रूम में अंधेरा था और स्पीकर एक स्लाइड प्रज़ेंटेशन दे रहा था। मैंने फोन निकाला और उसे टेबल के नीचे करके पढ़ने लगी। उसमें देबू के कई मैसेजेस थे।

'राधिका, अब मैं यह नहीं कर सकता।'

'तुम मेरे बारे में चाहे जो सोचो, लेकिन मैं यह नहीं चाहता।'

'मेरा यकीन करो, तुम्हारे साथ रहना आसान नहीं है।'

'मैं एक सिम्पल लाइफ जीना चाहता हूँ। एक सिम्पल इंडियन गर्ल चाहता हूँ।'

'मैं ब्रेकअप करना चाहता हूँ। मुझे मूव आउट करना है।'

'इस महीने का रेंट मैं फ्रिज पर रख जाऊँगा। बाय।'

ये मैसेजेस पढ़ते समय मेरा चेहरा सफेद हो गया। मैं वहाँ रिएक्ट नहीं कर सकती थी, इसलिए मैंने अपने दाँतों को भींच लिया, ताकि आँखों से आँसू ना बह निकलें।

‘एक्सक्यूज़ मी, ’ मैंने जोनाथन के कानों में फुसफुसाते हुए कहा और उठ खड़ी हुई। ‘मुझे बाहर जाना है।’ यह कहकर मैं दबे पाँव मीटिंग रूम से बाहर निकल आई।

मैं लेडीज़ रूम में गई और तमाम मैसेजेस को फिर से पढ़ा।

फिर मैंने देबू को फोन लगाया। उसने मेरा फोन काट दिया। मैंने फिर लगाया। फिर मैंने उसे एक मैसेज भेजा: ‘कैन यू कॉल मी?’

उसने दस मिनट तक कोई जवाब नहीं दिया। मैं अपने क्यूबिकल में आकर बैठ गई और हाथों से अपना चेहरा ढाँक लिया। ट्राइसिया, हमारे ग्रुप में कोई साठ साल की एक अमेरिकी महिला सचिव, ने मुझे देखा तो पूछा: ‘यू ओके’

मैंने सिर हिला दिया। ‘बस थोड़ी थकी हुई हूँ।’

‘क्या तुम मुझे फोन करोगे?’ मैंने एक और मैसेज भेजा।

‘बात करने को कुछ है ही नहीं।’ उसका जवाब आया।

मैंने उसे कॉल किया। उसने फिर मेरा फोन काट दिया।

‘मैं बिज़ी हूँ।’ उसका मैसेज आया।

‘इससे ज़्यादा जरूरी क्या हो सकता है?’

‘कैन यू लीव मी अलोन, प्लीज़?’

मेरी आँखों से आँसू फूट पड़े। मैं ऑफिस में रोना नहीं चाहती थी, लिहाज़ा मैंने आँसू का घूँट निगल लिया।

‘हम दो साल से साथ रह रहे हैं। क्या इसे खत्म कर देना इतना आसान है?’

‘मुझे यह पहले ही कर लेना चाहिए था।’

मैंने उसे फिर कॉल किया। इस बार उसने फोन उठा लिया।

‘मैंने कहा था मैं बात नहीं कर सकता। मुझे बार-बार कॉल मत करो, प्लीज़।’

‘क्या हम बाद में बात कर सकते हैं’

‘मुझे जाना होगा, बाय।’

बस इतना ही। मेरा चेहरा लाल पड़ गया। मुझे मालूम था कि इससे पहले कि मैं सबके सामने टूट जाऊँ, मुझे ऑफिस से चल देना होगा।

‘मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही। मैं बाहर वॉक करने जा रही हूँ।’ मैंने ट्राइसिया से कहा। ‘अगर मेरी ज़रूरत हो तो जोनाथन को मुझे कॉल करने को कह देना।’

मैं 85 ब्रॉड स्ट्रीट से बाहर निकल आई। वह एक खूबसूरत और चमकीला दिन था, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि वह न्यूयॉर्क में मेरा सबसे बुरा दिन है। मैं लगातार अपना फोन देखती रही, इस उम्मीद में कि वह कॉल करेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैं वॉलस्ट्रीट पर दर्जनों चक्कर लगा चुकी थी। इस शहर में देबू जितना करीबी मेरा कोई और दोस्त नहीं था। मैं इस शहर की कल्पना भी उसके बिना नहीं कर सकती थी। शायद, वह केवल

अपसेट भर है, मैने खुद से कहा। लेकिन मुझसे बातें करते समय वह कितना ठंडा, कितना ठोस जान पड़ रहा था।

एक घंटे बाद मैं काम पर लौट आई। जैसे-तैसे दिन पूरा किया। मैंने लंच तक नहीं किया। पाँच बजे मैं ऑफिस से निकल गई और सबवे के मार्फत घर पहुँची।

मैंने लिविंग रूम की बत्तियाँ जलाईं। फिर बाथरूम में गई, जहाँ देखा कि काउंटर पर देबू के परफ्यूम या ट्रिमर नहीं थे। हुक में कोई कपड़े नहीं थे। बेडरूम में क्लोसेट खाली पड़ा था।

मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने मुझे ज़ोर से लात मारी हो!

नहीं, यह केवल एक बुरा सपना है। कल रात मैं ठीक से सो नहीं पाई थी, इसलिए मैं यह सब इमेजिन कर रही हूँ, मैंने सोचा।

मैं बेड पर बैठ गई और खाली क्लोसेट को देखने लगी। फिर मैं रो पड़ी। मैं रोती रही। तब तक, जब तक कि मेरी आँखें देबू के कबर्ड जितनी खाली नहीं हो गईं।

◆

‘प्लीज़ देबू, तुम्हारे बिना घर खाली लग रहा है।’ मैंने कहा।

मैं सबवे कंपार्टमेंट में एक पोल पकड़े खड़ी थी। देबू को घर छोड़े पाँच दिन हो गए थे। मैंने हर दिन उसे फोन लगाकर वापस घर आने को कहा था।

‘वह तुम्हारा घर है। तुम मेरे बिना वहाँ पहले भी रहती थीं, राइट?’

‘हाँ, लेकिन उसके बाद वह हमारा घर बन गया था।’

‘ऐसा नहीं है। वह किराये का मकान है। और सच कहो तो उसका किराया बहुत ज़्यादा है। इट्स ओके, तुम्हें आदत हो जाएगी।’

‘प्लीज़ देबू। क्या तुम्हें मेरी याद नहीं आती?’ मेरे भीतर एक हिस्सा ऐसा था, जो इस तरह से उसके सामने गिड़गिड़ाने से बहुत बुरा महसूस कर रहा था। मैं सबवे में सबके सामने उससे बात करते हुए आँसू बहा रही थी।

‘मैं बस तुम्हारी एक आदत था। यकीन मानो।’

‘मेरा स्टॉप आ गया है। मैं तुम्हें घर से फिर फोन लगाऊँगी।’

तुम कितनी डेस्परेट हो गई हो? मेरे भीतर की मिनी-मी ने कहा। हाँ, मैं डेस्परेट हूँ, लेकिन केवल प्यार के लिए। प्यार के लिए ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है।

घर पहुँचकर मैंने उसे फिर फोन लगाया। उसने फोन उठाया। पीछे कुछ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

‘मैं ऑफिस के लोगों के साथ बाहर आया हूँ। बाद में बात करें?’

‘केवल दो मिनट के लिए मुझसे बात कर लो, प्लीज़, ’ मैंने कहा। मैं अकेलेपन से घिर गई थी और जैसे भी हो, उससे बात करना चाहती थी।

‘चैट पर आओ। लेकिन केवल दो मिनट के लिए।’ उसने कहा। और मैं एक आज्ञाकारी सेविका की तरह ऐसा करने के लिए भी तैयार हो गई।

‘वाट्सअप, ’ उसने मैसेज किया।

‘तुम्हारा दिन कैसा रहा?’

‘फाइन। क्या तुम्हें यही कहना था?’

‘मैं सो नहीं पा रही हूँ।’

‘तुम्हें आराम से सोना चाहिए।’

‘आई बेग यू, लौट आओ।’

‘फिर से वो नहीं, राधिका। प्लीज़। मैं तुम्हें अपने फैसले के बारे में बता चुका हूँ।’

‘मेरी गलती क्या है? मुझे बता दो, मैं अपने में चेंज कर लूंगी।’

‘सब ठीक है।’

‘तुम चाहते हो कि मै जॉब छोड़ दूँ, है ना?’

‘यह तुम्हारी लाइफ है। जो मर्ज़ी हो करो।’

‘देबू, प्लीज़!’

‘लिसन, ऑफिस वाले साथ हैं, मुझे जाना होगा। बाय।’

उसके बाद उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने फ्रिज खोला, व्हाइट वाइन की एक बॉटल खोली और अपने लिए एक बड़ा गिलास तैयार किया। उसके बाद एक और। फिर एक और।

नशे की हालत में ही मैंने उसे एक मैसेज भेजा।

‘आई लव यू, देबू।’

उसने मैसेज देख लिया, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

‘मैं तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकती हूँ, मेरे लिए कोई और चीज़ मायने नहीं रखती।’ मैंने दूसरा मैसेज भेजा।

‘लव यू, देबू। मोर देन एनीवन एल्स।’ मैं एक के बाद एक मैसेजेस भेजती रही। फिर मैंने देखा कि वह कुछ लिख रहा है। वह कुछ जवाब देने जा रहा था। मुझे खुशी ने घेर लिया।

‘मुझे परेशान मत करो, इस बात को अच्छी तरह से कहने का और कोई तरीका है क्या?’ देबू का रिप्लाई आया।

मैंने अपने लिए चौथा गिलास तैयार कर लिया। मुझे अब उसे और परेशान नहीं करने के लिए खुद को तैयार करना था।

Downloaded from Ebookz.in

16

देबू के मेरी ज़िंदगी से चले जाने के एक महीने के बाद हमने लक्सविजन डील कर ली। चाइना फैक्टरी साइट पर रीयल-एस्टेट प्रोजेक्ट की बहुत संभावनाएँ थीं। अगर हमें सही लोकल पार्टनर्स मिल जाएँ तो हम दो साल में इस पर अच्छा मुनाफ़ा कमाने की उम्मीद कर सकते थे। हमने एक बहुत मुश्किल डील को क्लोज़ किया था और जोनाथन पार्टी मनाने के मूड में था।

'मैं ड्रिंक्स खरीदने जा रहा हूँ। सात बजे हैरीज पर मिलते हैं।' उसने क्रैग और मुझसे दोपहर में कहा। क्रैग ने अपने क्यूबिकल से थंब्स अप करके अपनी सहमति दी।

'राधिका, यू ऑन?' जोनाथन ने पूछा। मैंने उसे खाली नज़रों से देखा। पिछले एक महीने में मैंने ऑटोपायलट मोड में काम किया था। मैं सुबह ऑफिस पहुँचती, अपनी सीट पर बैठती, कंप्यूटर पर काम करती और 8 बजे घर के लिए निकल जाती। मैं कोशिश करती थी कि घर जाने में जितनी देर हो, उतना अच्छा। मैं खुद को घर पहुँचने से पहले थका देना चाहती थी। जब मुझमें हिम्मत होती, मैं देबू को मैसेज या कॉल करती, लेकिन उसने मुझे किसी भी तरह का रिस्पॉन्स देना बंद कर दिया था। मैंने लोगों से घुलना-मिलना बंद कर दिया था। खाना ना के बराबर खाती। माँ से भी कम-से-कम बातें करने की कोशिश करती। मैं रात में दो या तीन घंटे ही सो पाती थी। पूरे समय छत को ताकती रहती या टीवी पर फिट या खुश रहने की जुगत बताने वाले शो देखती रहती।

यही कारण था कि जोनाथन के एक सीधे-से सवाल को भी मैं समझ नहीं पाई थी।

'आज शाम को तुम्हारे कोई प्लान्स तो नहीं हैं?' उसने फिर पूछा।

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया। भला, मेरे प्लान्स अब कहाँ से होते।

'फिर हैरीज पर आ जाओ। हम लक्सविजन डील-क्लोजिंग को सेलिब्रेट करेंगे।

'श्योर।' मैंने कहा।

टूटा दिल, शराब का नशा और उस पर मेरे जैसी लड़की: यह एक खतरनाक कॉम्बिनेशन था। सभी दिल खोलकर सेलिब्रेट कर रहे थे और मैं अपना दर्द भुलाने के लिए शराब पिए चली जा रही थी। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मैं उस इंसान से इतना प्यार करती थी। मैं उससे नफ़रत करने के कारण तलाशने लगी। कैसे वह बैठकर टीवी देखता रहता था और कुछ नहीं करता था। कैसे वह वीकेंड पर शाम तक नहाता नहीं था। कैसे वह मेनू में से सबसे सस्ती चीज़ें ही ऑर्डर करता था। हाँ राधिका, वो इस लायक नहीं था। लेकिन अजीब बात थी कि जिन चीज़ो के कारण पहले मुझे उस पर गुस्सा आता था, अब उन्हीं के कारण मैं उसे याद कर रही थी। मैं बार में एक कोने में जाकर बैठ गई और दूर से अपने साथियों को देखती रही।

गाना बज रहा था: पैसेंजर का 'लेट हर गो।' मैं सोचने लगी कि पैसेंजर को कैसे पता कि अभी मैं क्या सोच रही हूँ?

You need the light when it is burning low
Only miss the sun when it starts to snow.

'वाट्सअप, राधिका?' जोनाथन मेरे पास आया। 'कम, ज्वॉइन अस।'

'अभी आती हूँ। वैसे भी मैं यहां आराम से बैठी हूँ और यह गाना मुझे पसंद है।'

Starting at the ceiling in the dark
Same old empty feeling in your heart
Cause love comes slow and it goes so fast.

जोनाथन ने अपना गिलास उठाया और मैंने अपना। हमने चीयर्स किया।

'डिस्ट्रेस्ड ग्रुप में तुम्हें अच्छा तो लग रहा है ना?' जोनाथन ने कहा।

मैंने कंधे उचका दिए।

'क्या?'

'पता नहीं। आई कान्ट रियली से।'

और इसके बावजूद कि जोनाथन मेरा कलीग और बॉस था, मैं उसके सामने फूट-फूटकर रोने लगी। फ़क, आजकल मैं इतना रोने क्यों लगी हूँ? क्या अब मैं अपने को अपने कलीग्स के सामने बेवकूफ साबित करना चाहती हूँ? मैंने मन में कहा।

'क्या हम तुम्हारी कुछ मदद कर सकते हैं?' जोनाथन ने हैरत से कहा।

मैंने नजरें झुकाए रखीं और सिर हिलाकर इनकार कर दिया।

अमेरिका के लोग किसी के पर्सनल स्पेस में दखल देना पसंद नहीं करते। इसलिए जोनाथन ने कहा: 'मैं जा रहा हूँ। तुम्हें जब ठीक लगे, हमारे साथ शामिल हो जाना, ओके?'

मैंने हामी भर दी।

मैंने अपना जॉब छोड़ने का फैसला कर लिया था। कोई भी डील या कंपनी या जॉब इसके लायक नहीं था। इन सबका मोल तभी तक था, जब देबू मेरे साथ था। मुझे प्यार की दरकार थी। लेकिन गोल्डमान हमें बोनस में प्यार नहीं दे सकता था। मैं एक, दो, तीन, चार, पाँच गिलास शराब पी गई। फिर मैंने देबू को यह बताने के लिए फोन लगाया कि मैं यह जॉब छोड़ रही हूँ। उसने फोन नहीं उठाया। मैं उसे यह आमने-सामने बैठकर बताना चाहती थी। मैंने जोनाथन को जाने का इशारा किया और बाहर चली आई। शराब के कारण मैं

अपने को हल्का महसूस कर रही थी। एक फ्लोरिस्ट से मैंने कोई एक दर्जन लाल गुलाब खरीदे और एक येलो कैब में सवार हो गई।

'टिफनी ऑन फिफ्थ एवेन्यू, प्लीज़।' मैंने कहा।

मैं ऐन वक्त पर टिफनी स्टोर पहुँची, जबकि वह बंद होने ही वाला था।

'रिंग्स, फॉर मेन।' मैंने कहा।

सेल्सपर्सन ने मुझे सोने और प्लेटिनम की कई रिंग दिखाईं। मैंने प्लेटिनम की एक क्लासिक रिंग चुनी।

'एक्सीलेंट च्वॉइस! इसके लिए 2000 डॉलर्स।'

मैंने अपना क्रेडिट कार्ड निकाला।

'थैंक्यू। क्या आप गिफ्ट-रैपिंग कराना चाहेंगी?'

'यस प्लीज़।'

स्टोर से निकलकर मैंने एक और टैक्सी पकड़ी।

'ब्रुकलिन हाइट्स, प्लीज़।'

टैक्सी एफडीआर पर चल पड़ी, ब्रुकलिन पुल पार किया और ब्रुकलिन पहुँच गई। देबू की बिल्डिंग तक पहुँचने में मुझे 40 मिनट लगे। वह फिर से अपने पुराने रूममेट्स के साथ रहने चला गया था। उसकी बिल्डिंग की लिफ्ट खराब थी तो मैं सीढ़ियों के रास्ते पाँच मंज़िल ऊपर चढ़कर गई। बेल बजाने से पहले मैं रुक गई। मैं उसको सरप्राइज़ देना चाहती थी। मैं उसके पास एक रिंग, गुलाबों का एक बुके और जॉब छोड़ने का अपना फैसला लेकर आई थी। मैं वैसी ही लड़की बन जाना चाहती थी, जैसी कि वह चाहता था। मैंने उसके घर के बाहर रखा प्लांट पॉट उठाया। चाबियाँ उसी के नीचे थीं।

मैंने दरवाज खोला। लिविंग रूम में अंधेरा था। मैंने बत्तियाँ जला दीं। दो बेडरूम के दरवाज़े बंद थे। ये देबू के रूममेट्स के बेडरूम थे। मैं तीसरे बेडरूम की ओर बढ़ी। मुझे म्यूज़िक की आवाज़ सुनाई दी। हाँ, देबू भीतर था। मैंने दो बार नॉक किया, लेकिन शायद उसने सुना नहीं। क्या वह म्यूजिक सुनते–सुनते सो गया था? मैंने चाबी से दरवाज़ा खोला और आहिस्ता से भीतर दाखिल हुई। मैं सीधे उसकी बाँहों में समा जाना चाहती थी। एक छोटा-सा बेडसाइट लैम्प जल रहा था। जो मैंने देखा, उसे समझने में कुछ सेकेंड लगे। देबू और एक गोरी लड़की एक-दूसरे से गुत्थमगुत्था थे और उनके शरीर पर कोई कपड़े नहीं थे। मैं साँस नहीं ले पा रही थी। मुझे दरवाज़ा बंद कर बाहर निकल जाना था, लेकिन इसके बजाय मैं वहीं खड़ी रही।

'व्हाट द फ़क!' देबू ने मुझे देखते ही कहा।

'आई, आई, सॉरी...सॉरी...'

'ओह फ़क, ' अमेरिकन लड़की ने कहा। उसके बाएँ ब्रेस्ट पर एक बड़ा-सा टैटू बना हुआ था। उसका ऊपरी होंठ भी छिदा हुआ था। पता नहीं क्यों मैं वहाँ खड़ी ये तमाम ब्योरे

नोटिस करती रही और वहाँ से भाग क्यों नहीं गई।

'राधिका' देबू ने कहा।

मैं काँपने लगी थी।

'यू नो हर?' लड़की ने कहा।

'हूँ।' देबू ने कहा। 'जानता हूँ, नहीं जानता था। तुम यहाँ क्या कर रही हो?'

'कुछ नहीं।' मैंने कहा। मारे शर्म के मेरा चेहरा लाल हो गया था। वाकई, मैं यहाँ क्या कर रही थी: एक हाथ में बुके और दूसरे में टिफनी बॉक्स लिए हुए?

और फिर, पलभर में मैं वहाँ से बाहर निकल गई। मैंने उसके घर से बाहर दौड़ लगा दी। मुझे मालूम नहीं, वह मेरे पीछे आया या नहीं। मुझे नहीं लगता वह आया होगा। ना ही मैंने पीछे पलटकर देखा। मैं केवल दौड़ती रही। मैं कहीं खो जाना चाहती थी। मैं दुआ कर रही थी कि कोई कैब मिल जाए, लेकिन नहीं मिली।

'रोना नहीं, रोना नहीं, रोना नहीं, राधिका।' मैंने खुद से कहा। मैं जल्दी-से-जल्दी अपने घर पहुँचना चाहती थी, लेकिन मेरे हाथ और घुटने जवाब देने लगे थे। मैं वहीं बीच सड़क पर घुटनों के बल बैठ गई और रोने लगी। सुबक-सुबककर नहीं, बल्कि दहाड़ें मारकर रोना। कुछ लोगों ने अपने अपार्टमेंट की खिड़कियाँ खोलकर मुझे देखा। मुझे परवाह नहीं थी। लेकिन आखिर मुझसे भूल कहाँ हुई थी?

टैटू वाली लड़की के साथ देबू की इमेज मेरे ज़ेहन से जा नहीं पा रही थी।

एक पुलिस कार आकर मेरे पास रुकी।

'यू ऑल राइट, लेडी?' एक कॉप ने कहा।

मैंने उसकी ओर देखा और सिर हिला दिया।

'तुम यहाँ रहती हो?'

'नहीं, ट्रायबेका।'

'घर जाना है?'

मैंने फिर सिर हिला दिया।

'आओ, हम तुम्हें सबवे स्टेशन तक ड्रॉप कर देते हैं।'

मैं अपने जीवन में पहली बार पुलिस की गाड़ी में बैठी। पाँच मिनट में उन्होंने मुझे क्लार्क स्ट्रीट सबवे स्टॉप पर उतार दिया। मैंने अपना मेट्रोकार्ड स्वाइप किया और 2 नंबर ट्रेन पकड़ी। एक लाश की तरह मैं घर पहुँची। अंदर घुसने के बाद मैं सोफे पर बैठ गई। बुके और रिंग अब भी मेरे हाथ में थे। मैंने उन्हें फर्श पर फेंक दिया और घर फोन लगाया।

'आई मिस यू, मॉम।' मैंने कहा।

माँ ने मेरी आवाज़ सुनकर भाँप लिया कि मैं भीतर से टूटी हुई हूँ।

'क्या हुआ, बेटा?'

'कुछ नहीं।'

‘बताओ क्या हुआ?’

‘कुछ नहीं, बस घर की याद आ रही है।’

‘हम भी तुम्हें बहुत मिस करते हैं।’

‘आई लव यू, मॉम।’

‘लव यू टू, बेटा। बहुत रात हो गई है, अब सो जाओ।’

‘गुड नाइट, मॉम।’ मैं सोफे पर ही पसरकर सो गई।

‘हे, वाट्सअप, डीलमेकर! अंदर आ जाओ, ’ जॉन ने कहा। मैंने उसके ऑफिस के दरवाज़े पर दस्तक दी थी।

‘तो, जोनाथन ने बताया मुझे। पर्सनल रीज़न्स’

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी। मैं अपना इस्तीफा मेल कर चुकी थी।

मैंने बहुत कोशिश की थी कि सबकुछ पहले जैसा हो जाए, लेकिन न्यूयॉर्क शहर मुझे ऐसा करने नहीं दे रहा था। हर गली-कूचा मुझे उसकी याद दिलाता था। चूँकि देबू एडवरटाइज़िंग फील्ड में काम करता था, इसलिए हर एडवरटाइज़िंग होर्डिंग को देखकर मेरा दिल बैठ जाता। हर रेस्तरां मेनू मुझे पुरानी यादों में ले जाता। घर की हर चीज़ जैसे काटने को दौड़ती। मेरा कोई फ्यूचर प्लान नहीं था, लेकिन मैं जल्दी-से-जल्दी यह शहर जरूर छोड़ना चाहती थी।

मेरा गला रूँध गया। ‘क्या मुझे थोड़ा पानी मिल सकता है?’ मैंने कहा।

‘श्योर।’ जॉन ने कहा।

मैंने एक गिलास पानी लिया, एक घूँट पिया, लेकिन आँसू की एक बूंद फिर भी मेरे गालों पर लुढ़क ही आई। मैंने अपना चेहरा छुपाने के लिए गिलास उठा लिया, लेकिन कोई फायदा नहीं। मैं रोने लगी। पानी की कुछ बूँदें छलककर टेबल पर गिर पड़ीं।

‘आई एम सॉरी।’ मैंने कहा।

‘इट्स ओके।’ जॉन ने कहा। उसने टिशू का एक बॉक्स मेरे आगे बढ़ा दिया। अगर कोई इंडियन बॉस होता तो अभी तक पाँच बार पूछ चुका होता कि क्या हुआ है? लेकिन अमेरिका में वे तब तक आपके जीवन में दखल नहीं देते हैं, जब तक कि आप खुद ही ऐसा ना चाहें।

‘सुनो, मैं तुम्हें यह तो नहीं कहूँगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए। लेकिन क्या तुम्हें पता है, हम तुम्हारी कितनी कद्र करते हैं?’

‘हाँ।’ मैंने नज़रें चुराते हुए कहा।

‘तो तुम्हें यहाँ रोकने के लिए हम क्या कर सकते हैं? यदि तुम्हें लंबी छुट्टी वगैरह चाहिए तो बताओ।’

मैंने सिर हिला दिया।

‘व्हाट नेक्स्ट?’

‘नो आइडिया। मैं बस न्यूयॉर्क छोड़ना चाहती हूँ। शायद मैं घर चली जाऊँगी।’

‘क्या तुम मुझे बताना चाहोगी कि आखिर प्रॉब्लम क्या है?’

मैं चुप रही।

‘ठीक है। तुम कहीं और जाना चाहोगी?’

‘न्यूयॉर्क को छोड़कर कहीं भी।’

जॉन ने सिर हिला दिया और अपनी चेयर पर पीछे झुक गया।

‘एक रिलेशनशिप खत्म हो गई। मुझे नहीं मालूम था कि मैं इसमें इतनी अटैच्ड हो गई हूँ। और अब हर चीज़ मुझे हर्ट कर रही है।’

‘हम्म्म।’

शायद जॉन सोच रहा था कि उनकी सबसे ब्राइट एसोसिएट इतनी बेवकूफ कैसे हो सकती है कि एक लड़के के चक्कर में इस तरह का जॉब छोड़ने को तैयार हो जाएगी।

‘शायद आप सोच रहे होंगे कि मेरा दिमाग ठिकाने पर नहीं है। एक रिलेशन को लेकर ऐसे जॉब को छोड़ना। एक ऐसे लड़के के लिए, जो अब मेरे साथ नहीं है।’

‘मैं लोगों को जज नहीं कहता हूँ। हाँ, मैं इतना जरूर जानता हूँ कि तुम्हारा दिमाग अपने ठिकाने पर ही है।

‘थैंक्स जॉन। एनीवे, मैं तुम्हें थैंक्स करना चाहती हूँ। यह एक यादगार सफर रहा...’

‘वेट। कैसा हो अगर तुम्हें जॉब नहीं छोड़ना पड़े और हम तुम्हारा तबादला कर दें?’

‘तबादला?’

‘हाँ, ग्रुप में ही किसी दूसरे ऑफिस में।’

‘कहाँ?’

‘तुम्हारी आखिरी डील वो चाइना वाली थी ना?’

‘हाँ, लक्सविजन वाली।’

‘हमें एक ऐसे इंसान की ज़रूरत थी, जो उस डील को मॉनिटर कर सके। तुम हांगकांग से ऐसा कर सकती हो। फिर तुम वहाँ जाकर नई डील्स भी कर सकती हो। एशिया दिन-ब-दिन आगे बढ़ रहा है।’

‘हांगकांग?’

‘न्यूयॉर्क से इससे ज़्यादा दूर कोई और जगह नहीं हो सकती।’ उसने कहा और मुस्करा दिया।

‘आपका मतलब है कि हांगकांग के डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप में मेरा ट्रांसफर किया जा सकता है?’

‘मैं कुछ कॉल्स करता हूँ। देखते हैं कि तुम्हारे लिए कोई गुंजाइश बन पाती है या नहीं।’ जॉन ने विनम्रता से कहा। वह जानता था कि उसने अगर कह दिया तो यह होना ही है।

‘लेकिन मैं हांगकांग के बारे में कुछ नहीं जानती। फिर मैं पहले ही अपना इस्तीफा मेल कर चुकी हूँ।’

‘और मैं पहले ही उसे डिलीट कर चुका हूँ।’

हम दोनों मुस्करा दिए।

‘थैंक यू, जॉन। थैंक यू सो मच।’

‘मैं नील को फोन लगाऊँगा। वो वहाँ पर हमारा पार्टनर है। तुम तो उसे जानती हो।’

‘ज़्यादा नहीं।’

‘स्मार्ट बंदा है। मैं उससे बात करता हूँ, देखते हैं, क्या किया जा सकता है। तुम कितनी जल्दी वहाँ पहुँच सकती हो?’

‘अगली फ्लाइट कब है?’

17

‘जेएफके, प्लीज़।’ मैंने कैब ड्राइवर से कहा।

मैं एक येलो कैब में बैठकर एयरपोर्ट पहुँची। शाम के पाँच बजे रहे थे। मैं अपने रूम की चाबियाँ ट्रायबेका अपार्टमेंट को सौंप चुकी थी।

मेरा नया जॉब ऑफर नील के साथ एक ब्रीफ कॉल के बाद ही आ गया था। यही मेरा इंटरव्यू भी था। चूँकि रिकमेंडेशन जॉन की थी, इसलिए नील ने कहा कि इंटरव्यू एक फॉर्मेलिटी है, इसे ‘वेलकम टू हांगकांग’ कॉल ही समझा जाए। ह्यूमन रिसोर्सेस ने मुझे नया ऑफर भेज दिया। हांगकांग के हाई रेंट्स को देखते हुए उन्होंने मेरी बेस सैलेरी में 60000 डॉलर्स के हाउसिंग अलाउंस का भी इज़ाफा कर दिया।

मैं तो जॉब छोड़कर जीरो सैलेरी के साथ दिल्ली जाने का फैसला कर चुकी थी। शायद मैं माँ का कहना मानकर शादी के लिए तैयार हो जाती। तब मैं अपने होने वाले पतिदेवों के लिए तश्तरी में चाय और मिठाई सर्व कर रही होती। लेकिन इसके बजाय मेरे हाथ में गोल्डमान साक्स एशिया पैसिफिक रीलोकेशन ग्रुप का वेलकम ब्रोशर था। मेरी ज़िंदगी में प्यार भले ही नहीं था, लेकिन अंकल गोल्डमान जरूर मेरा ख्याल रखने के लिए मेरे साथ थे। ब्रोशर कह रहा था कि जब तक मुझे नया अर्पाटमेंट नहीं मिल जाता, मैं हांगकांग के शांगरीला होटल में ठहरूँगी।

कैब ट्वीड कोर्टहाउस के पास से होकर गुज़री। यही जगह मैनहटन को ब्रुकलिन ब्रिज से जोड़ती है। दूर से मुझे फाइनेंशियल डिस्ट्रिक्ट के स्काईस्क्रैपर्स नज़र आ रहे थे। हालाँकि मैं जल्दी-से-जल्दी इस शहर से दूर चली जाना चाहती थी, इसके बावजूद मेरा दिल उदास था। मुझे इस शहर से लगाव भी तो था। मेरे पहले जॉब, पहले बॉयफ्रेंड, पहले इंडिपेंडेंट घर और पहले ब्रेकअप का शहर।

‘क्या आप यहाँ रुकेंगे, प्लीज़?’ ब्रिज आते ही मैंने कैब ड्राइवर से कहा।

ड्राइवर ने कैब की गति धीमी कर दी।

‘मैं इस पुल को पैदल पार करना चाहती हूँ। तुम मुझे दूसरे छोर पर मिलो।’

‘पूरा पुल? लेकिन उसमें तो आधा घंटा लग जाएगा।’

‘मेरे पास समय है। क्या मुझे आपका नंबर मिल सकता है?’

उसने मुझे अपना बिज़नेस कार्ड दिया।

‘मैं अपना मीटर ऑन रखूंगा।’ उसने च्युइगंगम चबाते हुए कहा।

‘श्योर। मैं तुम्हें दूसरी तरफ पहुँचकर फोन लगाती हूँ।’

मैं टैक्सी से निकली और ब्रिज के पैडेस्ट्रियन वॉकवे की सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। ब्रुकलिन ब्रिज न्यूयॉर्क का सबसे पुराना केबल-सस्पेंशन पुल है। 1883 में यह बनकर तैयार हुआ।

ईस्ट रिवर पर तना यह पुल मैनहटन और ब्रुकलिन को जोड़ता है। कोई एक मील लंबे इस ब्रिज पर बीच में पैदल चलने वालों के लिए वॉक-वे है, ऑटोमोबाइल लेन्स से ऊपर।

यदि आपने न्यूयॉर्क में फिल्माई गई फिल्में देखी हैं, तो आपने ब्रुकलिन ब्रिज को भी देखा होगा। मैं पैदल चलने लगी। शाम का नारंगी आसमान और दूसरी तरफ मैनहटन की स्काईलाइन इस शहर की अच्छी आखिरी याद साबित होने जा रही थी।

और तभी, दर्द ने मेरे दिल को घेर लिया। मैंने खुद से कहा था कि मुझे देबू के बारे में नहीं सोचना है। लेकिन प्यार की यही दिक्कत है। यह आपको अपने पर काबू नहीं करने देता। एक याद से कई यादों के सिरे खुल जाते हैं। मैं इस शहर में अपनी आखिरी चहलकदमी शांति से पूरी कर लेना चाहती थी। लेकिन ऐसी तकदीर कहाँ। सामने ब्रुकलिन नज़र आ रहा था। क्या वह घर पहुँच चुका होगा? क्या टैटू वाली लड़की भी घर पर होगी? उसके एक रूममेट ने अविनाश को बताया था कि वह एक मैक्सिकन फास्टफूड चेन चिपोटले में वेट्रेस थी।

मैं पुल के बीचोबीच पहुँच चुकी थी। मैंने न्यूयॉर्क की एक आखिरी तस्वीर लेने के लिए अपना फोन निकाला। तस्वीर लेने के बाद मैंने अपना वाट्सअप खोला और ना जाने क्यों, उसमें देबू की प्रोफाइल चेक की। वह ऑनलाइन था। मैंने गहरी साँस ली और एक 'हाय' मैसेज लिखकर भेज दिया। उसने मैसेज देख लिया, लेकिन जवाब नहीं दिया।

मैंने अगला मैसेज लिखा: 'मैं न्यूयॉर्क छोड़कर जा रही हूँ।'

पता है, दुनिया में सबसे ज़्यादा खीझ पैदा करने वाली चीज़ क्या होती है? जब हम चैट में 'टाइपिंग' देखते हैं यानी कोई जवाब लिख रहा है और फिर कुछ देर बाद वह 'टाइपिंग' गायब हो जाता है।

'गुड।' आखिरकार उसका जवाब आया। यह उस लड़की के लिए उसका जवाब था, जिसके साथ वह दो साल तक साथ रहा था!

'ऑन वे टु द एयरपोर्ट।' मैंने एक और मैसेज लिखा।

इस बार जवाब में थंब-अप स्माइली आई! ये स्टुपिड स्माइलीज़ भगवान जाने किसने बनाई हैं!

'मैं हांगकांग जा रही हूँ।'

'ग्रेट! वहाँ तुम और पैसा कमा पाओगी!'

रियली! क्या उसे यह बात कहने की ज़रूरत थी? लेकिन मैंने इसे भी इग्नोर कर दिया।

'मैं हमेशा के लिए न्यूयॉर्क से जा रही हूँ।' मैं चाहती थी कि जाने के पहले कम-से-कम एक अच्छी बात तो वह मुझसे कहे।

उसने एक मिनट तक जवाब नहीं दिया। समय हाथ से निकल रहा था। इसलिए मैंने एक और मैसेज भेजा: 'जस्ट वांटेड टु लेट यू नो कि अब इसके बाद मैं कभी तुम्हें तंग नहीं

करूँगी।'

'थैंक यू। यह हम दोनों के लिए अच्छा होगा। तुम अपना मकसद हासिल कर लोगी और मैं भी अपने लिए कोई ऐसी लड़की ढूँढ पाऊँगा, जो मेरी केयर कर सके।'

उसकी इस बात ने मुझे हर्ट किया। मैंने फोन को कसकर जकड़ लिया, ताकि और कोई मैसेज ना लिखूँ। मैं अपने को जितना ज़लील कर सकती थी, कर चुकी थी। अब और नहीं। मैंने गहरी साँस ली और अपने फोन को ईस्ट रिवर में फेंक दिया। मेरे आसपास चल रहे टूरिस्ट लोग देखते ही रह गए कि कोई एक अच्छे-खासे आई-फोन को नदी में कैसे फेंक सकता है। मैं चाहती थी तो उसका अकाउंट भी डिलीट कर सकती थी। लेकिन उसके बावजूद हर दूसरे मिनट अपना फोन चेक करने की मेरी आदत कायम ही रहती। नहीं, मुझे अपमानित करने वाली उस मशीन के लिए यही सही था कि उसे नदी में फेंक दिया जाए। जिन लोगों के पास इमोशनल सेल्फ-कंट्रोल नहीं होता, उन्हें ऐसे ही कदम उठाने चाहिए।

लेकिन तभी मेरे दिमाग में एक सवाल कौंधा: फोन के बिना अब मैं अपने कैब ड्राइवर को कैसे ढूँढूंगी?

लेकिन मैंने एक टूरिस्ट के फोन की मदद से टैक्सी को ढूँढ ही लिया। हम बीस मिनट में ही जेएफके एयरपोर्ट पहुँच चुके थे।

'टर्मिनल 7 प्लीज़, कैथे पैसिफिक, ' मैंने ड्राइवर से कहा।

मैंने चेक-इन किया और बोर्डिंग के लिए कैथे पैसिफिक लाउंज में बैठ गई। मैं खुश थी कि मैंने अपना फोन फेंक दिया, नहीं तो मैं इस वक्त देबू से बात करने की कोशिश कर रही होती। मैं सोचने लगी कि उसने मुझे किस तरह के जवाब दिए। वह कह सकता था: 'ऑल द बेस्ट, बेबी। मुझे अफसोस है कि यह इस तरह से खत्म हो रहा है।' या फिर वह कह सकता था: 'लेट्स बी इन टच। मैं आज भी तुम्हारी केयर करता हूँ।' लेकिन क्या मैं इतनी बुरी थी? इतनी कि मुझसे पीछा छुड़ाकर वह खुशी महसूस कर रहा था?

इन्हीं खयालों में डूबी मैं कैथे पैसिफिक प्लेन में सवार हो गई। बैंक की कृपा से मुझे एक प्लस बिज़नेस-क्लास सीट मिली थी। ऐसा लग रहा था कि दुनिया में केवल मेरी बैंक ही ऐसी थी, जो मेरी केयर करती थी।

एक प्यारी-सी चाइनीज एयरहोस्टेस मेरे पास आई और मुझे एक गिलास शैम्पेन ऑफर की। मैंने लेने से इनकार कर दिया। आखिर यह कोई जश्न मनाने का मौका नहीं था। मैं खिड़की से बाहर देखने लगी। सोलह घंटों की लंबी फ्लाइट के लिए प्लेन तैयारी कर रहा था। मेरी आखों में आँसू आ गए। इस शहर में रहना भी उदास कर देने वाला था और उसे

छोड़कर जाना भी। प्लेन ने टेक-ऑफ किया। मैं रोती रही और प्लेन की खिड़की से नीचे दिख रहा न्यूयॉर्क लगातार छोटा होता गया।

फ्लाइट अटेंडेंट ने मेरे आँसुओं को देख लिया। वह मेरे पास गर्म टॉवेल और टिशू लेकर आई। मैंने टॉवेल से अपना चेहरा पोंछ लिया। उसकी गर्माहट से मुझे अच्छा महसूस हुआ।

'थैंक यू।' मैंने कहा।

'क्या आप कुछ खाना चाहेंगी, मैम?' उसने कहा।

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।

'जस्ट द स्टार्टर? हमारे पास ज़ायकेदार कैरट-जिंजर सूप भी है।'

मैंने हामी भर दी। उसने मेरी ट्रे टेबल बाहर निकाली और उस पर एक सफेद कपड़ा बिछा दिया। फिर उसने एक और क्लॉथ नैपकिन निकाला और उसे मेरी गोद में रख दिया। वह मेरे लिए फूड ट्रे ले आई, जिसमें ताज़ा सलाद, सूप और ब्राउन ब्रेड थे। मैंने जल्दी से वह सब खत्म कर दिया। इसके बाद उसने डेजर्ट में रैस्पबेरी पुडिंग ऑफर की। जब मैंने वह भी खा लिया तो वह मेरे लिए गर्म पिपरमिंट चाय ले आई। मुझे अपनी यह खातिरदारी अच्छी लग रही थी।

'क्या मर्दों को इसी तरह की बीवियाँ चाहिए?'

'आप सोना चाहेंगी?'

मैंने हामी भर दी। उसने मेरी सीट को एडजस्ट किया और उसे एक फ्लैट बेड में बदल दिया। फिर उसने उस पर सफेद शीट बिछाई और उस पर तकिया रख दिया। जैसे ही मैं लेटी, उसने मुझ पर एक चादर डाल दी। केवल देबू को ही एक खातिरदारी करने वाली की ज़रूरत नहीं थी, मुझे भी ऐसे ही किसी इंसान की ज़रूरत महसूस हो रही थी। आखिर औरतों को बीवियाँ क्यों नहीं मिल सकतीं?

मैंने आँख के कोने में ठहरे आँसू को पोंछ दिया। मेरी अंगुली पर थोड़ा-सा काजल लग गया। मैं लेग-रेज़ मशीन पर बैठ गई। देबू मेरी तरफ देखता रहा, मानो माफी माँग रहा हो।

'मैं कुछ भी भूली नहीं हूँ, देबू। लेकिन इसके बावजूद मैं नहीं चाहती कि मुझे वह सब फिर से याद दिलाया जाए।'

'आई एम सॉरी, बेबी।' उसने कहा और मेरी कोहनी को छू लिया। मैंने उसके हाथ को परे हटा दिया और जाने के लिए उठ खड़ी हुई।

'मुझे जाना होगा। और मुझे बेबी कहना बंद कर दो।'

उसने आगे बढ़कर मेरा रास्ता रोक लिया।

'क्या?'

'प्लीज़, मेरी बात तो सुनो।'

'तुम चाहते क्या हो? वहाँ सैकड़ों लोग मेरा इंतज़ार कर रहे है।'

मेरा फोन घनघनाया।

'देखो, मेरी बहन का फोन है।'

'उसे कह दो कि तुम दस मिनट में आ रही हो।'

'किसलिए?' मैंने कहा और फोन उठा लिया: 'हाँ दीदी, मैं वॉशरूम में आई थी। बस पाँच मिनट में पहुँच रही हूँ। किसी को भेजने की ज़रूरत नहीं, मैं खुद ही आ जाऊँगी।'

मैंने फोन रख दिया। देबू मुझे ताक रहा था।

'क्या?'

'मैंने अपनी ज़िंदगी की सबसे बड़ी भूल कर दी।'

'अब इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।' मैंने कह तो दिया, लेकिन अंदर-ही-अंदर मुझे अच्छा लग रहा था। आखिरकार उसे पछतावा तो हुआ।

'तुम मेरी ज़िंदगी में आई सबसे खूबसूरत इंसान थीं। सीरियसली।' देबू ने कहा।

'क्यों? उस गोरी चिक से बात नहीं बनी?'

'कौन?'

'वही, जो उस रात तुम्हारे साथ थी, जब मैं...'

'नहीं, हमने कोशिश की, लेकिन हमारे बीच कोई इंटेलेक्चुअल मैच नहीं था।'

'ओह, तो अब तुम लड़कियों के इंटेलेक्ट की भी परवाह करने लगे हो।'

'बिलकुल। मैंने हमेशा की है। इसीलिए मैंने तुम्हें पसंद भी किया था।'

'और इसीलिए तुमने मुझे डंप भी कर दिया था!'

'मैं कह रहा हूँ ना कि मैंने एक बहुत बड़ी भूल कर दी है।'

‘तुमने कहा था कि मेरा जॉब मुझे सख़्त बना देगा। और तुमने क्या-क्या कहा था कि तुमने अपने मन में अपने बच्चों की माँ की एक कल्पना कर रखी है। और तुम यह भी चाहते थे कि मैं अपना जॉब छोड़ दूँ।’

‘आई एम सॉरी। मैं थोड़ा इनसिक्योर हो गया था।’

‘ओह, रियली? अब जाकर तुम्हें समझ आ रहा है। वैसे, तुम थोड़े नहीं, बहुत ज़्यादा इनसिक्योर हो गए थे।’

मेरी तेज़ आवाज़ सुनकर एक बॉडी बिल्डरनुमा गोरे ने हमारी ओर देखा।

‘तुम्हें अंदाज़ा भी है, मैं तुम्हें कितना चाहती थी?’ मैंने कहा।

वह सिर झुकाए सुनता रहा।

‘मैं अपना जॉब तक छोड़ने के लिए तैयार हो गई थी, ताकि तुम खुश रहो। मैं ब्रुकलिन में तुम्हें यह बताने के लिए आई थी कि मैं रिज़ाइन करने जा रही हूँ। मैं तुम्हें उस रात प्रपोज़ करना चाहती थी। मैंने तो एक रिंग भी खरीद ली थी।’

‘क्या सच?’

‘लेकिन अब इन बातों का कोई तुक नहीं है। मेरी फैमिली ऊपर है। मैं जा रही हूँ। और तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि गोवा से जितनी जल्दी जा सकते हो, चले जाओ।’

उसने मेरा हाथ थाम लिया, जिसे मैंने तुरंत छुड़ा लिया।

‘क्या कर रहे हो! मेरे वुड-बी, इन-लॉज़ इसी होटल में हैं।’

‘जानता हूँ। मैं केवल...’ और फिर, कुछ ऐसा हुआ, जो इससे पहले कभी नहीं हुआ था। वह रोने लगा।

‘सीन क्रिएट मत करो।’ मैंने कहा, लेकिन उसे इस तरह रोता देखकर मेरा भी गला भर आया। वह मेरे सामने घुटनों के बल बैठ गया।

‘प्लीज़, बेबी। आई बेग यू। मैं न्यूयॉर्क से यहाँ तक आया हूँ।’

मैंने आसपास देखा कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है। फिर मैंने उसे कंधो से पकड़कर उठाते हुए कहा: ‘गेट अप, प्लीज़।’

मैंने उसे एक हैंड टॉवेल दिया। उसने उससे अपना चेहरा पोंछ लिया।

‘विक्टिम बनने की कोशिश मत करो। तुमने मेरे साथ जो किया, उसे याद करो। तुम तो मेरे फोन तक नहीं उठाते थे। मेरे मैसेजस पर रूखे जवाब दिया करते थे।’

उसने सिर हिलाकर हामी भरी।

‘तुम एक, तुम एक...’ मैं सही शब्द की तलाश करने लगी।

‘एक ऐसहोल थे!’ उसने वाक्य पूरा कर दिया।

‘गुड। तो अब तुम यह सब कर रहे हो, लेकिन तुमने तब जो किया था, उसका क्या। और आखिरी दिन भी, जब मैं न्यूयॉर्क से जा रही थी, तुमने मुझे एक थंब्स-अप भेज दिया था।’

‘लेकिन मैंने दस मिनट बाद ‘आई विल मिस यू’ मैसेज भी तो भेजा था। तुमने जवाब ही नहीं दिया।’

‘तुमने ऐसा मैसेज किया था?’

‘हाँ, लेकिन तुमने जवाब ही नहीं दिया।’

‘मैंने फोन नदी में फेंक दिया था।’

‘क्या?’

‘जो भी हो, अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा।’

‘क्यों नहीं? तुम्हारे बाद मैंने कई लोगों से रिश्ता जोड़ने की कोशिश की। कई लड़कियों को डेट किया। लेकिन किसी के साथ भी वैसा जुड़ाव महसूस नहीं कर पाया, जैसा तुम्हारे साथ था। कोई भी तुम्हारी तरह कंप्लीट नहीं था। तुम स्मार्ट, केयरिंग और हम्बल थीं। तुम्हारे साथ रहना बहुत अच्छा लगता था। तुम हमारे छोटे-से अपार्टमेंट को कितनी अच्छी तरह से सँवारकर रखती थीं। मुझे आज भी वह सरप्राइज़ पार्टी याद है, जो तुमने मुझे दी थी। कौन लड़की ऐसा करती है?’

मुझे इतना गुस्सा आया कि मन हुआ, अभी उसे एक तमाचा जड़ दूँ। मेरे हाथ तन गए।

‘क्या? तुम मुझे तमाचा जड़ना चाहती हो? डू इट।’

मैंने आस-पास देखा और उसे एक ज़ोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया।

‘आऊ! तुमने सचमुच मुझे मार दिया!’

तमाचा इतना ज़ोरदार था कि मेरी अंगुलियाँ झनझना गईं।

‘तुम ये सारी बातें अब मुझे बोल रहे हो? पहले तुम यह नहीं बोल सकते थे? मैंने तुम्हारी तरक्की पर तुम्हें सरप्राइज पार्टी दी थी, लेकिन मुझे बोनस मिलने पर तुमने कैसे रिएक्ट किया था?’

‘लाइक अ डिक!’

‘एग्जैक्टली! तब तुम्हारा फेमिनिज्म़ कहाँ चला गया था?’

‘मैंने कहा ना मैं इनसिक्योर हो गया था। तुम मुझसे तीन गुना ज़्यादा कमाने लगी थीं।’

‘तो क्या हुआ? मैं बैंक में काम कर रही थी, जहाँ पैसा ज़्यादा मिलता है। लेकिन तुमने अपना पैशन चुना था: एडवरटाइज़िंग। दोनों में कंपेयर करने की क्या ज़रूरत है?’

मेरा फोन फिर बजा। इस बार माँ का फोन था।

‘बाय, देबू।’

‘बस दो मिनट, प्लीज़।’

मैंने फोन काट दिया।

‘क्या है?’

‘मैंने तुम्हारी कीमत नहीं समझी, उसके लिए सॉरी। तुम्हें खोने के बाद ही मैं समझ पाया कि तुम क्या थीं? जैसे कि पैसेंजर का वह गाना: ‘लेट हर गो।’

मैं उसे बताना चाहती थी कि मैं यह गाना सुनकर कितना रोई थी, लेकिन नहीं बताया। मैंने गहरी साँस ली। डिनर पर मुझे शांत नज़र आना था, जैसी कि एक अच्छी भारतीय बहू भजन सुनने के बाद दिखती है।

‘वेल, टू बैड। और कुछ? नहीं तो वापसी का टिकट कटा लो।’ मैंने कहा।

‘मेरे पास एक प्लान है।’

‘प्लान!’

‘हाँ, दूल्हा बदल लो।’

‘क्या!!’

‘मैं समझ सकता हूँ कि तुम्हारी पूरी फैमिली यहाँ पर है और शादी को रोका नहीं जा सकता। लेकिन मैं तैयार हूँ। मैं तुमसे यहीं गोवा में शादी करना चाहता हूँ। मैं कोलकाता से अपने पैरेंट्स को बुला लूँगा, शायद कुछ करीबी रिश्तेदारों को भी...’

मैंने उसे बीच में ही रोक दिया।

‘रुको-रुको। क्या कहा तुमने? हमारी शादी? यहीं पर?’

‘खुद से पूछो, राधिका। मैं तुम्हारा पहला प्यार हूँ। हाँ ये सच है कि मुझसे भूल हुई। लेकिन मैं उस गलती को सुधारना चाहता हूँ। मैं तुम्हें इस दुनिया में सबसे ज़्यादा चाहता हूँ। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ। तुम्हारे पैरेंट्स यह सुनकर घबरा जाएँगे, लेकिन उन्हें यह सुनकर राहत मिलेगी कि शादी कैंसल नहीं हो रही है। जहाँ तक लड़के वालों का सवाल है तो वो लोग अपसेट ज़रूर होंगे, लेकिन मैं संभाल लूँगा।’

‘तुमने वाकई यह सब सोच रखा था?’

‘इतनी लंबी फ्लाइट में मैं बैठा-बैठा सोच ही रहा था। मैं तुम्हें किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहता था।’

‘लेकिन तुमसे ये किसने कह दिया कि मैं तुमसे शादी करना चाहती हूँ?’

‘क्योंकि मैं जानता हूँ कि दिल की गहराइयों से तुम आज भी मुझे चाहती हो। मैं तुम्हें बहुत खुश रखूँगा, राधिका। तुम जो चाहो, सो करो। लेकिन बस मेरे साथ रहो।’

मैं फिर से बैठ गई और चेहरे को हथेलियों से ढाँक लिया। मेरे साथ यह नहीं हो सकता! यह ज़रूर कोई बुरा सपना है। लेकिन वह सपना नहीं था और देबू साक्षात मेरे सामने मौजूद था।

‘तुम बस हाँ बोलो और बाकी सब मैं संभाल लूँगा।’

‘ये कोई मज़ाक नहीं है। मेरी पूरी फैमिली, ब्रजेश की पूरी फैमिली यहाँ पर मौजूद है।’

‘तुम जिससे शादी कर रही हो, उसका नाम ब्रजेश है?’

‘हाँ।’

‘लेकिन मैं यहाँ केवल तुम्हारे लिए आया हूँ। हम फिर से पुराने दिनों में लौट सकते हैं। याद है हमारा वो छोटा-सा अपार्टमेंट?’

‘बिलकुल याद है।’ मैंने कहा। मेरी आवाज़ कोमल पड़ती जा रही थी।

मेरा फोन फिर बजा।

‘अब तो ये लोग मेरे लिए सर्च पार्टी भेज देंगे।’

‘मैं तुम्हारा इंतजार करूँगा। तुम इस बारे में सोचकर मुझे जवाब दोगी’

‘पता नहीं। मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है। अभी मैं जा रही हूँ।’

‘मैं सड़क के दूसरी तरफ वाले रिसोर्ट मे हूँ। यहाँ पर कोई रूम खाली नहीं था।’

‘पता है।’ मैंने कहा और मन-ही-मन इसके लिए शुक्र मनाया।

चौथा दिन

‘तुम्हें यहाँ कैसा लग रहा है?’ ब्रजेश ने मेरी तरफ मुस्कराते हुए पूछा। हम सुबह-सुबह सैंड बीच पर टहलने आए थे। पिछली रात उसने जब मेरे साथ मॉर्निंग वॉक पर चलने को कहा था तो उसका कहना था कि वह रिलेटिव्ज के उठने से पहले घूमने निकल जाना चाहता था।

‘स्लीपी।’ मैंने कहा और जम्हाई ली। सुबह के 6.30 बज रहे थे।

‘आई एम सॉरी। मुझे तुम्हें इतनी जल्दी नहीं बुलाना चाहिए था।’

‘नहीं, इट्स फाइन। लोगों के जागने के बाद तो अफ़रातफ़री ही मच जाती है।’

मैंने पिंक लैगिंग और व्हाइट टॉप पहना था। उसने ग्रे ट्रैकसूट पहना था। हम दोनों नंगे पैर थे और लहरें हमारे पैरों से टकरा रही थीं।

‘तुम्हारी नींद पूरी नहीं हुई?’

‘चार घंटे, ठीक है।’ मैंने कहा, अलबत्ता नींद की कमी के कारण चीज़ों पर तुरंत प्रतिक्रिया देने में मुझे दिक्कत आ रही थी। देबू पूरी रात मुझे मैसेज भेजता रहा था।

‘भजन बहुत अच्छे हुए थे। यह वाकई एक ज़बर्दस्त आइडिया था।’ उसने कहा।

‘एक्चुअली, यह मेरी मॉम का आइडिया था।’

‘हाँ, लेकिन उसके कारण यह पूरा इवेंट और प्योर लगने लगा है।’

ज़ाहिर है, इसलिए भी, क्योंकि इस शादी में ही दुल्हन जिम में जाकर अपने एक्स-बॉयफ्रेंड से मिलकर भागने की प्लानिंग बना रही थी!

‘आज मेहंदी है ना?’ ब्रजेश ने कहा।

‘हाँ, लेकिन इसमें आपके करने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं है।’

‘नहीं, उन्होंने मेरे बारे में भी प्लान कर रखा है। मुझे हल्दी लगाई जाएगी।’

'बलि पर चढ़ाए जाने से पहले की सजावट?'

हम दोनों हँस पड़े।

उसने मेरा हाथ थाम लिया। मैंने विरोध नहीं किया। करती भी तो कैसे? हमारी शादी जो हो रही थी। मैंने भी उसका हाथ थाम लिया। शायद मुझे सपोर्ट की ज़रूरत थी, ताकि अपने बारे में फैसला ले सकूँ।

'तुम खुश हो ना?'

मैंने उसकी तरफ देखा। उसकी मुस्कराहट बच्चों जैसी थी। मेरा हाथ थामकर वह बहुत रोमांचित हो गया था।

'हाँ, मैं खुश हूँ, ब्रजेश।' हम लड़कियाँ इसी तरह अपनी फीलिंग्स को लेकर झूठ बोलती रहती हैं। कितनी आसानी से हम यह सब सीख जाती हैं!

'तो मैंने तुम्हें मेनलो पार्क के बारे में बताया था, राइट? मैं सोच रहा था कि हम वहाँ पर या गोल्डमान ऑफिस के नज़दीक कहीं रहने की कोई जगह तलाश सकते हैं। तब, कम-से-कम, हम में से कोई ज़रूरत होने पर जल्दी घर पहुँच सकेगा।'

'अच्छा आइडिया है।' मैंने अनमनेपन से कहा।

'हालाँकि अगर मेरी स्टार्ट-अप वाली बात बन गई तो फिर मुझे मेनलो में होने की कोई ज़रूरत ही नहीं होगी।'

'मुझे यकीन है बात बन जाएगी।'

उसने कंधे उचका दिए। सुबह की रोशनी हमारे चेहरों पर पड़ रही थी। मैं शादी से पहले रेगुलर डाइट और एक्सरसाइज़ की मदद से शेप में बने रहने की कोशिश कर रही थी। मैं सोच रही थी कि वर्कआउट के टाइट कपड़ों में कहीं मोटी ना लग रही होऊँ।

'यू आर ब्यूटीफुल, ' ब्रजेश ने जैसे मेरा मन पढ़ते हुए कहा।

जाने क्यों मैं हँस पड़ी। वैसे भी मैं कॉम्प्लिमेंट्स को लेकर सहज नहीं हो पाती।

'क्या मैंने कुछ गलत कह दिया?'

'अरे नहीं। थैंक यू।'

'मैंने इससे पहले यह किसी लड़की से नहीं कहा।'

मैंने उसकी ओर देखा। वह किसी मासूम स्कूली बच्चे जैसा लग रहा था। फिर भले ही वह दुनिया के सबसे जटिल कंप्यूटरों पर काम क्यों ना करता हो।

हम चुपचाप चलते रहे। कुछ मिनट बाद मैंने अपना फोन चेक किया। देबू का मैसेज था: 'गुड मॉर्निंग, ब्यूटीफुल।'

'हू इज़ इट?'

'हूँ, कोई नहीं। दीदी जाग गई हैं और मुझे खोज रही हैं।'

'रियली?'

'हाँ, लेट्स गो बैक।'

‘मैं सोच रहा था हम बाहर ब्रेकफास्ट कर पाते। किसी बीच शैक पर, जहाँ सिर्फ हम दोनों हों।’

मेरा फोन फिर घनघनाया। देबू का एक और मैसेज था: ‘आई लव यू।’

मैंने ब्रजेश का हाथ छोड़ दिया। मैं एक हाथ में अपने होने वाले पतिदेव का हाथ थामकर दूसरे वाले से अपने एक्स बॉयफ्रेंड के लव मैसेजेस नहीं चेक कर सकती थी।

‘नहीं, हमें लौट जाना चाहिए।’

‘कुछ हुआ क्या?’

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया। उसके बाद ब्रजेश ने भी कुछ नहीं कहा। हम होटल की ओर चलने लगे। मैं उससे थोड़ी दूरी बनाकर चल रही थी और फोन पर आने वाले किसी भी मैसेज को इग्नोर कर रही थी।

हम होटल पहुँचे। एलीवेटर में सवार होने से पहले मैं ब्रजेश की ओर मुड़ी और उससे कहा: ‘सॉरी, ब्रजेश। मैं जानती हूँ कि तुम पूरी कोशिश कर रहे हो कि हम दोनों एक दूसरे को अच्छी तरह जान लें, और मैं भी इसमें तुम्हारे साथ हूँ। लेकिन अभी यह मुमकिन होता लग नहीं रहा। मेरे दिमाग में बहुत सारी चीज़े चल रही हैं।

वह मुस्करा दिया।

‘शादी के बाद हमारे पास इसके लिए बहुत समय होगा।’

‘तुम बहुत स्वीट हो।’

वह शरमा गया। ओह, अगर मैं इस आदमी की पीठ में छुरा घोंपकर किसी और के साथ भाग जाऊँ तो यह बहुत ही बुरा होगा। ब्रजेश एक बुरा आदमी क्यों नहीं है, जैसा कि फिल्मों में दिखाया जाता है?

मैंने उसे गुडबाय किया।

‘मेहंदी में मिलते है।’

‘वहाँ लड़कों का आना अलॉउ नहीं है, मिस्टर।’

वह मुस्करा दिया। मैंने उसे बदले में एक संजीदा-सी फ़ेक स्माइल दी। थैंकफुली इतने में एलीवेटर का दरवाज बंद हो गया। मैंने राहत की साँस ली। ‘हे ईश्वर, मेरी रक्षा करो।’ मैंने मन-ही-मन खुद से कहा।

19

‘अपना फोन परे रखो, राधिका दीदी। नहीं तो मेहंदी कैसे लग पाएगी?’ मेरी आठ साल की कज़िन स्वीटी ने कहा।

फंक्शन रूम में चार मेहंदीवालों ने स्टॉल लगा रखे थे। सूरज ने एक बैंगल स्टॉल का भी बंदोबस्त करवाया था। मेहंदी लगवाती और चूड़ियाँ पहनती औरतों के कारण वह रूम गॉसिप का स्टॉक एक्सचेंज बन गया था। वेटर्स मिनी समोसा और जलेबियों के साथ गर्म मसाला टी परोस रहे थे।

पूरन सिंह नाम का एक मेहंदीवाला मुझे मेहंदी लगा रहा था। उसका कहना था कि वह एक आर्टिस्ट है और दुल्हनों को मेहंदी लगाने में उसे महारत हासिल है।

‘आपने इससे पहले इतनी अच्छी मेहंदी वाली कोई और दुल्हन नहीं देखी होगी’ पूरन ने कहा।

‘मैं एक हाथ से भी फोन चला सकती हूँ, देखो।’ मैंने स्वीटी से कहा।

‘लेकिन आप किसे मैसेज कर रही है ब्रजेश भैया?’ मेरी दूसरी कज़िन ज्योति ने पूछा। सभी हँस पड़े।

‘आप अपनी फर्स्ट नाइट को लेकर एक्साइटेड हो ना?’ स्वीटी ने कहा।

‘मेरी सिस्टर इनोसेंट है, प्लीज़ उसे मत बिगाड़ो। ‘अदिति दीदी ने कहा। उन्हें लगता था कि मैं मर्दों के बारे में कुछ भी नहीं जानती हूँ। गलती मेरी ही थी, मैंने ही उन्हें अपने बारे में कुछ बताया नहीं था। वैसे भी वे उसे समझ नहीं पातीं। मेरी माँ और अदिति दीदी के लिए रिलेशनशिप का एक ही मतलब था: जल्दी-से-जल्दी शादी कर लेना।

अदिति दीदी की बेस्ट फ्रेंड सलोनी ने कहा: ‘तुम्हें पता है फर्स्ट नाइट पर क्या होगा? तुम्हें कोई एक्सपीरियंस है?’

वेल, एक आदमी के साथ दो साल तक रेगुलर सेक्स का एक्सपीरियंस है मुझे। मैंने मन-ही-मन सोचा, लेकिन ऊपर से सिर हिलाकर मना कर दिया।

‘चलो, मैं तुम्हें बताती हूँ।’ सलोनी दीदी ने कहा और अपना मुँह मेरे करीब ले आईं।

‘जस्ट ड्राइव हिम क्रेज़ी। उसके कपड़े उतारकर फेंक देना और उसे मदहोश बना देना।’ उन्होंने फुसफुसाकर कहा। शायद वे सोच रही होंगी कि वो कोई बहुत ही हिम्मत वाली बात कह रही हैं। यहाँ पर मुझसे एम्बैरेस होने की उम्मीद की जा रही थी। तो मैं झूठमूठ में शरमा गई। मैंने अपना चेहरा सलोनी दीदी के कंधो में छुपा लिया। पता नहीं मैंने वैसा क्यों किया? वहाँ मौजूद लोगों का मन बहलाने के लिए? या उन्हें यह यकीन दिलाने के लिए कि मैं वाकई इनोसेंट हूँ?

जैसे ही मुझे अकेलापन मिला, मैंने अपना फोन चेक किया।

‘बेबी, मैं वेट कर रहा हूँ।’ देबू का मैसेज था।

‘जानती हूँ।’

‘इतना भी मुश्किल नहीं है। बस उन लोगों को बता दो कि तुम्हारी ज़िंदगी में कोई और है।’

‘किसको बताऊँ।’

‘अपनी माँ को, बहन को, किसी को भी।’

‘क्या यह एक अच्छा आइडिया है, देबू? मैं कंफ्यूंज़्ड हूँ।’

‘इट्स लव, बेबी। प्यार कंफ्यूंज़िग ही होता है। पहले मैं भी कंफ्यूज़ था, लेकिन अब श्योर हो गया हूँ कि तुम्हें मिसेज राधिका सेन बनना है।’

‘मैडम इतना हिलिए मत, ’ मेहंदी वाले ने कहा, क्योंकि मैं तेज़ी से मैसेज लिखती जा रही थी।

‘मुझे नहीं लगता मैं अपना सरनेम चेंज करूँगी।’

‘तो मत करना।’

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। उसने एक मिनट बार फिर मैसेज भेजा। ‘तो क्या इसे मैं तुम्हारी हाँ मानूँ?’

‘पता नहीं। मैं अभी मेहंदी लगवा रही हूँ।’

‘बेबी, बस एक बार हाँ बोल दो।’

मैंने फोन एक तरफ रख दिया।

‘मैं पिछले बीस साल से मेहंदी लगा रहा हूँ लेकिन आपके जैसे खूबसूरत हाथ किसी के नहीं देखे।’ पूरन ने कहा।

‘तुम यह बात हर दुल्हन को कहते हो ना?’

उसने मेरी तरफ देखा और पान के दाग लगे अपने दाँत दिखाते हुए मुस्करा दिया।

‘हाँ ये तो है।’

मैंने भी स्माइल कर दी। फोन फिर घनघनाया।

‘आपका बायाँ हाथ हो गया है। अब दूसरे हाथ की बारी।’

मैंने हामी भर दी लेकिन इस बार देबू का मैसेज नहीं था। यह किसी अननोन इंटरनेशनल नंबर से आया था, जो ‘+852’ से शुरू हो रहा था। यह तो हांगकांग का कोड था।

‘हाय, इट्स नील।’ मैसेज कह रहा था।

‘मैडम, अपना दूसरा हाथ दीजिए। और इस वाले हाथ को ज़्यादा हिलाइए मत, मेहंदी आभी ताज़ा है।’

‘एक मिनट रुको।’

‘हाय नील।’ मैंने जवाब लिख भेजा।

‘मैंने सुना तुम्हारी शादी हो रही है, गोवा में?’

‘हाँ।’

‘कूल। ऑफिस के लोगों ने मुझे बताया।’

‘क्या चल रहा है?’

‘श्रीलंका में हूँ, एक डील के सिलसिले में।’

‘ओके।’

‘क्या मैं तुम्हें कॉल कर सकता हूँ?’

‘राधिका, अपनी मेहंदी पर फ़ोकस करो नहीं तो मैं फिर से तुम्हारा फोन किडनैप कर लूँगी।’ अदिति दीदी ने कहा।

‘बस दस सेकेंड।’ मैंने कहा।

‘अभी मैं बहुत बिज़ी हूँ।’ मैंने लिखा और मैसेज भेज दिया। फिर मैंने फोन एक तरफ एक कुशन पर रख दिया। पूरन ने मेरा दायाँ हाथ थाम लिया और मेहंदी लगाने लगा। उसने मेरे बाएँ हाथ पर एक बारीक फ्लोरल पैटर्न बनाने में दो घंटे लिए थे, इतना ही समय वह दूसरे हाथ पर भी लेने वाला था।

मेरे फोन की स्क्रीन चमकी। एक और मैसेज आया था।

‘इट्स अर्जेंट।’ नील ने कहा।

मैं जवाब नहीं दे सकती थी। मेरे हाथ खाली नहीं थे।

उसने कॉल लगाया, मैंने अपनी पिंकी फिगंर से फोन काट दिया।

‘लिसन, प्लीज़ मुझसे दो मिनट बात कर लो।’ उसका एक और मैसेज आया।

लेकिन मैं उसको कैसे बताती कि मैं यह नहीं कर सकती थी। उसके मैसेजेस एक के बाद एक आते रहे।

‘राधिका जी, हिलिए नहीं।’ पूरन ने कहा।

नील के मैसेज जारी रहे:

‘मेरे पास तुम्हें बताने के लिए बहुत कुछ है।’

‘मैं जल्दी ही तुम्हारे पास पहुँचना चाहता हूँ।’

‘क्या तुम एक बार रिप्लाई नहीं कर सकतीं?’

मैं रिप्लाई नहीं कर सकती, मैं मन-ही-मन ज़ोरों से चिल्लाई! मैसेजेस आते रहे।

‘तुम्हें पता है, यह चैट पर नहीं कहा जा सकता।’

‘यहाँ तक कि फोन पर भी नहीं।’

‘कुछ चीज़े केवल आमने-सामने ही कही जा सकती हैं।’

‘तो शायद मुझे वही करना चाहिए।’

‘हाँ।’

‘ओके देन, तुम मेरे मैसेज देख तो रही हो, लेकिन रिप्लाई नहीं कर रही हो।’

‘ठीक है, अब आमने-सामने ही बात की जाएगी।’

मैं असहाय-सी बैठी यह सब देख रही थी।

‘भैया, क्या आप जल्दी नहीं कर सकते?’ मैंने पूरन से कहा।

‘ये शादी की मेहंदी है। इसमें जल्दी कैसे की जा सकती है? दूसरे हाथ में जैसी मेहंदी लगी है, वैसी ही इस पर भी लगानी होगी।’

‘डैम! इससे पहले कि वह कुछ करे, मुझे उसे जवाब देना था। मैं पहले ही मुसीबत में फँसी हुई थी।

‘लीजिए, हो गया!’ पूरन ने दो घंटे बाद कहा।

‘बहुत-बहुत शुक्रिया, आपका। क्या अब मैं जा सकती हूँ?’

‘लेकिन मेरा स्पेशल गिफ्ट?’

मैंने अपनी बहन की ओर इशारा किया। उन्होंने उसे 2000 रुपए की टिप दी। वह मुस्कराया और हाथ जोड़कर धन्यवाद दिया। ‘चार घंटे तक हाथ मत धोइएगा। इस मेहंदी का रंग हनीमून के बाद तक कायम रहेगा।’

‘चार घंटे!!’ मैंने कहा।

मैंने अपनी कज़िन्स से कहा कि मुझे आराम करना है और अपने रूम की ओर दौड़ गई। अदिति दीदी मेरे पीछे-पीछे चली आईं।

‘चलो, मैं तुम्हारी मदद करती हूँ।’ अदिति दीदी ने कहा और मेरी सलवार की डोरी खोल दी।

‘मैं तुम्हारे साथ बाथरूम चल रही हूँ।’ उन्होंने कहा।

‘फ़क इट! मैं अपने हाथ धो रही हूँ। ’

‘अरे रुको!’

मैं दौड़कर बाथरूम में गई और वॉशबेसिन में रनिंग वॉटर के नीचे अपने हाथ रख दिए। मेहंदी का रंग अभी गहरा नारंगी ही हुआ था, गहरा कत्थई नहीं। लेकिन मुझे अपने हाथों की ज़रूरत थी। मुझे नील को जवाब देना ही था, नहीं तो मेरी ज़िंदगी में एक नया भूचाल आ जाता।

‘हे सॉरी, मैं पहले जवाब नहीं दे पाई।’ मैंने जल्दी-जल्दी लिखा।

‘इट्स ओके, ’ नील ने तुरंत जवाब दिया।

‘क्या बात है?’

उसने फोन लगाया। मैंने बाथरूम में ही फोन उठा लिया।

‘हाय।’ मैंने कहा।

‘कितने दिनों बाद मैंने तुम्हारी आवाज़ सुनी है।’

‘क्या बात है, नील?’

‘तुम कैसी हो?’

‘क्या तुम जल्दी बताओगे, प्लीज़? क्या बात है?’

‘मुझे तुमसे एक ज़रूरी बात कहना है।’

‘क्या?’

‘मैंने कहा ना, आमने-सामने ही बता सकता हूँ।’

‘लेकिन यह पॉसिबल नहीं है। मुझे अभी बताओ।’

‘तुम गोवा में हो, राइट? कौन-से रिसोर्ट में?’

‘नील, यहाँ पर कोई दो सौ लोग हैं। क्या तुम बाद में नहीं बता सकते?’

‘कौन-सा रिसोर्ट? या मैं तुम्हारे ऑफिस फोन लगाकर पता लगाऊँ?’

‘तुम्हें जो भी बोलना हो, अभी बोल दो। मेरी शादी हो रही है और तुम भी एक डील के सीलसिले में आए हो।’

‘हाँ, दीक्षणी श्रीलंका के किसी सुदूर कोने में। यहाँ से तो फ्लाइट भी नहीं मिलतीं। या रुको, मुझे अपने कंप्यूटर पर चेक कर लेने दो।’

अदिति दीदी ने बाथरूम के दरवाजे पर नॉक किया।

‘सीरियसली, नील मुझे जाना होगा। बाय।’

‘ओके, बाय। कांग्रेच्यूलेशंस।’

‘ओह वेल। वॉटेवर। बाय नाऊ।’

मैं बाथरूम से बाहर आई।

‘क्या! तुमने अपनी मेहंदी धो ली?’

‘लेकिन मेहंदी पहले ही रंग दिखा चुकी थी।’

‘ये तुम्हारी वेडिंग मेहंदी थी। क्या तुम कुछ घंटे रुक नहीं सकती थीं?’

‘सॉरी दीदी, मैं आपके जैसी नाइस गर्ल नहीं हूँ ना।’

‘अरे, तुम मुझ पर क्यों निशाना साध रही हो? और ये तुम अपने वर्कआउट के कपड़े क्यों पहन रही हो?’

‘सॉरी फॉर बीइंग रूड, दीदी। लेकिन मुझे ताज़ी हवा की दरकार है। मैं बीच पर वॉक करने जा रही हूँ।’

‘किसके साथ?’

‘अकेले।’

‘क्यों? मैं भी तुम्हारे साथ आ रही हूँ।’

‘नहीं दीदी। मैं कुछ देर अकेली रहना चाहती हूँ। क्या मुझे एक घंटे की मोहलत मिलेगी?’

अदिति दीदी आई और मेरे गालों पर हाथ रखते हुए पूछा: ‘क्या बात है?’

‘कुछ नहीं। मैं बस शादी की तैयारियों से बहुत थक गई हूँ। मुझे एक घंटे का आराम चाहिए।’

उन्होंने मुझे हग किया।

‘ठीक है, जाओ। यहाँ पर मैं संभाल लूँगी।’

मैं समुद्री रेत पर टहल रही थी। मैरियट होटल मेरी नज़रों से ओझल हो चुका था। मैंने देखा कि फोन में ब्रजेश का मैसेज था, लेकिन मैंने उसे नहीं खोलना ही बेहतर समझा।

मेरे दिमाग में चंद सवाल घुमड़ रहे थे। नील को इस बारे में कैसे पता चला? वह श्रीलंका में क्या कर रहा है? शायद और पैसे कमाने की जुगत। लेकिन उसने मुझे फोन क्यों लगाया? उसने मुझे बताया क्यों नहीं कि वह क्या चाहता है? इतना सस्पेंस किस बात का है?

‘राधिका।’ पीछे से एक आवाज़ आई, जिसने मुझे चौंका दिया।

‘देबू! क्या तुम मेरा पीछा कर रहे हो?’

‘नहीं। मैं उस जगह ठहरा हूँ।’ उसने हाँफते हुए दूर नज़र आ रही एक होटल बिल्डिंग की ओर इशारा किया।

‘मेरा पीछा मत करो!’

‘मैं नहीं कर रहा हूँ।’

‘ओह रियली?’

‘मैं बस तुम्हारे जवाब का इंतज़ार कर रहा हूँ। मैं पूरा दिन बीच पर घूमता रहता हूँ। अभी तुम्हें अकेला देखा तो तुम्हारे पास चला आया।’

मैंने आसपास देखा।

‘मैं नहीं चाहती कि कोई हमें यहाँ देख ले।’

‘उस तरफ एक शैक है, जहाँ हमें कोई नहीं खोज सकता। वहाँ चलकर बातें करें?’

‘नो देबू।’

‘प्लीज़।’

मैंने समय देखा और कहा: ‘केवल दस मिनट।’

हम मीरामार बीच पर किंग्स शैक पर गए और सी-फेसिगं चेयर्स पर बैठ गए। उसने बीयर बुलवाई। मैंने एक गिलास पानी पिया।

‘तो तुम्हारा दिन कैसा रहा?’

मैंने उसे अपने हाथ मे लगी मेहंदी दिखाई।

‘दैट्स प्रिटी!’

‘थैंक्स। और तुमने क्या किया?’

उसने अपनी टी-शर्ट की बाईं बाँह उठाकर दो इचं का एक टैटू दिखाया। इसमें लिखा था: ‘राधिका।’

‘व्हाट द हेल, देबू’

‘मेरे पास करने को कोई काम नहीं था, तो यह करवा लिया। वैसे यह मुझे बहुत पहले कर लेना चाहिए था।

‘यहाँ मैं किसी से शादी कर रही हूँ और उधर तुम मेरे नाम का टैटू गुदवा रहे हो। तुम पागल तो नहीं हो गए हो?’

‘आई लव यू, राधिका। इसे चाहो तो पागलपन कह लो, या कुछ और।’

बात केवल इतनी भर नहीं थी कि देबू ने वैसा कहा। बात यह थी कि जिस तरह से उसने कहा, वह किसी पत्थरदिल लड़की को भी पिघलने को मजबूर कर सकता था। उसने अपना एक हाथ अपने सीने पर रखा था और मेरी ओर कातर नज़रों से देख रहा था। उसने मेरा हाथ थामने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने इनकार किया तो फिर उसे पीछे खींच लिया।

‘प्लीज़ बेबी, वन मोर चांस।’

‘मुझे जाना है।’ मैंने कहा और वेटर से कहा कि बिल ले आए।

‘मैंने एक प्लान बनाया है। तुम अपनी शादी से ठीक एक दिन पहले अपनी फैमिली को न्यूज़ ब्रेक करोगी। और मैं अपने सभी रिश्तेदारों को यहाँ बुला लूँगा। मेरे पैरेंट्स तुम्हारे पैरेंट्स से बात करेंगे। डोंट वरी। तुम केवल लड़के वालों को हैंडल करना।

‘मैं?’

‘हाँ, उन्हें रिएक्ट करने का ज़्यादा टाइम ही मत देना। बस इतना भर कहना कि तुम यह नहीं कर सकतीं और वे चले जाएँगे। शादी होने तक तुम्हें उनको मेरे बारे में बताने की ज़रूरत नहीं है।

मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

‘बेबी, ये सुनने में क्रेज़ी ज़रूर लगता है, लेकिन इसके अलावा कोई और रास्ता ही नहीं है। तुम्हारे रिश्तेदार जरूर कुछ बातें कहेंगे, लेकिन कम से कम वे यह तो नहीं कहेंगे कि शादी कैंसल हो गई। जहाँ तक लड़के वालों का सवाल है तो उनकी किसे परवाह? पलक झपकते ही हम न्यूयॉर्क पहुँच चुके होंगे।

‘क्या?’

‘तुम क्या न्यूयॉर्क मे अपना ट्रांसफर नहीं करवाओगी? और यदि तुम लंदन में ही रहना चाहती हो तो मैं वहाँ आकर रहने को भी तैयार हूँ। तुम जो बोलोगी मैं वहीं करूंगा।’

‘देबू, तुम्हें पता भी है तुम क्या बोल रहे हो? ओके, अभी मैं जा रही हूँ।’

मैं उठ खड़ी हुई और बाहर जाने लगी। वह मेरे पीछे आया और मेरे कानों में फुसफुसाकर कहा: ‘मुझ पर भरोसा रखो, बेबी।’

मेरा फोन बजा। ब्रजेश का फोन था। मैं उससे बात करने के लिए थोड़ा अलग हो गई।

‘हे, ’ मैंने कहा।

‘मैंने तुम्हें एक मैसेज भेज था।’

‘सॉरी, मैं देख नहीं पाई।’

‘तुम अभी कहाँ हो?’

‘मैं... मैं बस यहीं आसपास ही हूँ।’

‘एक और सनसेट वॉक? कल की तरह?’

देबू बिल पे करने चला गया और दूर से मुझे देखकर मुस्कराता रहा।

‘नहीं, ’ मेरा वॉक करने का मन नहीं है। लेकिन मुझे ड्रिंक की ज़रूर दरकार है।’

‘मैरियट के ओपन एयर लाउंज में...’

‘नहीं, मैरियट से दूर कहीं।’

‘क्या मैं कार बुलवाऊँ?’

‘मुझे ताजी हवा चाहिए। लेकिन मैं ड्राईवर के साथ नहीं जाना चाहती। क्या तुम कहीं से बाइक अरेंज कर सकते हो?’

‘यू मीन, रेंट पर कोई एक्टिवा?’

‘हाँ। तुम्हें चलानी आती है?’

‘वेल, मैंने कॉलेज के दिनों में चलाई थी।’

‘गुड। तो पंद्रह मिनट के भीतर मुझे मैरियट के बाहर मिलो।’

मैंने फोन रख दिया।

‘सब ठीक तो है, बेबी?’ देबू ने कहा।

‘मैं ब्रजेश के साथ घूमने जा रही हूँ।’

‘ओह।’

‘मैं यह तुम्हें हर्ट करने के लिए नहीं कर रही।’

‘तुम मुझे हर्ट कर सकती हो। मैंने भी तुम्हें चोट पहुँचाई थी। लेकिन यह हमारे फ्यूचर का सवाल है। तुम एक ऐसे इंसान के साथ नहीं जी सकती, ’ जिसे तुम प्यार नहीं करतीं।’

‘देबू, इन बातों से मेरा सिर चकरा रहा है। मैं खुली हवा में कुछ देर साँस लेना चाहती हूँ।’

‘श्योर बेबी। टेक योर टाइम।’

‘थैंक्स। और अब मेरे करीब मत आना। मैं जा रही हूँ, तुम यहाँ से पाँच मिनट बाद निकलना।’

उसने हामी भरी। अपनी बाँहें फैला दीं और एक हग माँगने लगा। मैंने आसपास देखा और उसे हग कर लिया। लेकिन वह मुझे छोड़ने को ही तैयार नहीं हो रहा था।

‘तुम्हें बाँहों में लेकर कितना अच्छा लग रहा है, बेबी।’ उसने कहा।

‘इट्स इनफ। अब मुझे जाने दो, प्लीज़। ‘मैंने सॉफ्ट आवाज़ में कहा।

'संभलकर, ' मैंने कहा। एक्टिवा सड़क पर दचके खा रही थी। हम मैरियट ड्राइव-वे से बाहर आ चुके थे।

' मैंने पाँच साल से ऐसी कोई गाड़ी नहीं चलाई है।' ब्रजेश ने कहा। मैं सोच रही थी कि मुझे उसकी कमर में हाथ डालना चाहिए या नहीं। तीन दिन बाद मैं उसकी वाइफ बनने जा रही थी, इसलिए ऐसा किया तो जा सकता था। लेकिन मैं नहीं चाहती थी कि वह यह मान ले कि मेरा दिल जीतना बहुत आसान है।

हम चावल के खेतों के बीच एक संकरी सड़क से जा रहे थे। वह तेज़ गाड़ी चला रहा था। हवा के कारण मेरे बाल मेरे चेहरे पर बिखर गए थे। 'मुझे अच्छा लग रहा है।' मैंने कहा।

'ग्रेट आइडिया, राधिका। रिलेटिव्ज़ को डंप करो और अपने लिए कुछ पल चुरा लो।'

'लेकिन हम जा कहाँ रहे हैं?' मैंने कहा।

'अंजुना। जब हम कॉलेज ट्रिप पर यहाँ आए थे, तो वहीं गए थे।'

तीस मिनट बाद हम चट्टानों से भरे अंजुना बीच पर पहुँच चुके थे। गाड़ी पार्क करने के बाद हम पाँच मिनट पैदल चले और कर्लीज़ नाम के एक शैक में पहुँचे। हम आरामकुर्सियों पर आमने- सामने बैठ गए। अरब सागर हमें घेरे हुए था। मैंने अपनी स्नीकर निकाल दीं और रेतीले फर्श पर पैर टिका दिए।

'बीयर?' ब्रजेश ने कहा।

'श्योर।' मैंने कहा। उसने एक वेटर से दो किंगफिशर लाने को कहा। दो टेबल दूर एक और कपल बैठा था। शायद उनकी हाल ही में शादी हुई थी और वे यहाँ हनीमून मनाने आए थे। उन्होंने एक-दूसरे के हाथ थाम रखे थे, फिर भी वे कुछ अजीब लग रहे थे। अरेंज्ड मैरिज, शायद। मैंने ब्रजेश की ओर देखा। इस वीकेंड तक हम भी मैरिड कपल हो जाएँगे।

'तुमने अपने घर के लोगों को क्या बताया?' ब्रजेश ने पूछा।

'यही कि मैं तुम्हारे साथ वॉक पर जा रही हूँ।'

'वे नहीं जानते कि तुम अंजुना में हो?'

'नहीं। माँ को पता चल जाएगा तो आफत आ जाएगी।'

मैं अपनी बीयर की चुस्की लेती रही। सूरज डूब रहा था। एक नौजवान गिटार बजाते हुए गाना गा रहा था। उसके म्यूज़िक के कारण गोवा का यह सनसेट और खूबसूरत हो गया था। सिंगर जस्टिन बीबर का गाना 'सॉरी' गा रहा था : 'इट इज़ टू लेट नाक टू से सॉरी? येह, आई नो दैट आई लेट यू डाउन, इज़ इट टू लेट तो से आएम सॉरी नाऊ?'

इस गीत ने मुझे देबू की याद दिला दी। वह न्यूयॉर्क से यहाँ तक आया था। हाँ, उसने बहुत बड़ी भूल की थी, लेकिन गलतियाँ किससे नहीं होतीं? तीन गुना पैसा कमाने वाली गर्लफ्रेंड के साथ अधिकतर मर्द ऐसे ही रिएक्ट करते है लेकिन अब वह मेरे साथ ज़िंदगी बिताना चाहता है। क्या उसे एक और मौका नहीं मिलना चाहिए?

'तुम खोई-खोई-सी लग रही हो। क्या मैं इतना बोरिंग हूँ?' ब्रजेश ने कहा।

मैंने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। फिर मैंने खुद को मन-ही-मन कोसा कि यहाँ पर मैं देबू के बारे में सोच रही थी। आखिर मैं उसके पक्ष में दलीलें क्यों दे रही थी? मिनी-मी ने मुझ पर चिल्लाते हुए कहा : 'जो इंसान अभी तुम्हारे साथ है, उस पर फ़ोकस करो!'

'नहीं, तुम बोरिंग नहीं हो। लेकिन यह बहुत खूबसूरत जगह है। थैंक्स, ब्रजेश।'

मुझे उसका नाम बिलकुल पसंद नहीं था। यह कितना अनफैशनेबल नाम था? मिलिए मेरे हसबैंड देबाशीष सेन के बजाय यह कहना कि मिलिए मेरे हसबेंड ब्रजेश गुलाटी से!

'हम यहाँ पर मैकेनिकल इंजीनियरिंग कॉलेज ट्रिप पर आए थे।'

'इंजीनियरिंग फील्ड ट्रिप के लिए गोवा में?'

'वेल, हमने कॉलेज अथॉरिटीज़ को कंविंस कर दिया था कि गोवा में काफी इंडस्ट्रीज़ है।'

'जैसे कि बीयर उगलने वाली मशीनें।'

वह हँस दिया।

मैंने बीयर की चुस्की ली।

'तो क्या एनआईटी में यही होता है? इंडस्ट्री विज़िट के नाम पर गोवा की सैर?'

'हमारे कुछ क्लासमेट्स भिलाई स्टील प्लांट गए थे। वे आज तक हमसे नफरत करते हैं।'

इस बार हम दोनों सा थ हँसे। वह बहुत दिलचस्प इंसान भले ना हो, लेकिन इंजीनियरिंग कॉलेज की कहानियाँ उसे ज़्यादा दिलचस्प बना देती थीं।

'लगता है कॉलेज के दिनों में तुमने खूब मस्ती की है।'

'मैं इतना बोरिंग नहीं, जितना तुम समझती हो।'

' मैंने तो तुम्हें कभी बोरिंग नहीं कहा।'

'एक्चुअली, मैं बोरिंग ही हूँ। खासतौर पर तब, जब लड़कियों से बात करने का सवाल हो। ऐसे मैं अपने दोस्तों के साथ खूब मौज-मस्ती करता हूँ।'

'ओहो, तो तुम्हें लड़के ज़्यादा पसंद हैं!' मैंने आँख मारते हुए कहा।

'नहीं...नहीं... मेरा मतलब था कि...' वह शरमा गया। मैं हँस दी।

'मैं तुम्हें छेड़ रही हूँ।'

'जानता हूँ।'

'तुम्हें लगता है कि औरतें अलग होती है?'

उसने कंधे उचका दिए।

‘औरतें मर्दों जैसी तो नहीं ही होती हैं ना।’

‘वेल, कुछ मायनों में नहीं। फिर भी बहुत सारे मायनों में।’

मैं कोशिश कर रही थी कि उससे ज़्यादा नज़रें ना मिलाऊँ। मैं सोच रही थी कि जेंडर इक्वलिटी के बारे में वह क्या सोचता होगा।

‘ब्रजेश, तुम जानते हो फेमिनिस्ट क्या होती है?’

‘कुछ-कुछ। लेकिन एग्ज़ैक्टली वह क्या होती है?

‘तुमने कभी इससे पहले यह शब्द नहीं सुना?’

‘बिलकुल सुना है। मैं इसके बारे में जानता भी हूँ। इक्वल राइट्स फॉर वीमन, राइट? यही है ना इसकी परिभाषा?’

‘फ़ेमिनिज़्म एक मूवमेंट है, जो महिलाओं के लिए समान राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, निजी और सामाजिक आधिकारों के बारे में बात करता है, उन आधिकारों को तय करता है और उन्हें हासिल करने की कोशिश करता है। और एक फेमिनिस्ट वह है, जो इस आदोलन में यकीन रखता है।’

‘वॉव।’

‘व्हाट वॉव?’

‘जिस तरह से तुमने यह परिभाषा समझाई। इट्स कूल।’

‘थैंक्स, लेकिन क्या तुम फ़ेमिनिस्ट हो?’

‘इस बारे में कभी सोचा नहीं। कभी ऐसी कोई स्थिति ही नहीं बनी। फिर भी, आई गेस, मैं एक फ़ेमिनिस्ट हूँ।’

‘तुम हो?’

‘मेरा मानना है कि सभी मनुष्यों को समान आधिकार होने चाहिए। यह आदमी बनाम औरत की बात नहीं है, यह इंसान बनाम इंसान की बात है। फ़ेमिनिस्ट एक गलत शब्द है। इसे ह्यूमनिस्ट होना चाहिए। ऐसे में सही सवाल यह होना चाहिए कि क्या तुम हयूमनिस्ट हो? और इसका जवाब यह होना चाहिए कि सभी को ह्यूमनिस्ट होना चाहिए।’

‘सही है।’

‘क्या तुम एक फ़ेमिनिस्ट हो, राधिका?’

‘क्या मतलब? मैं एक औरत हूँ।’

‘लेकिन हर औरत फ़ेमिनिस्ट नहीं होती।’

‘रियली?’

‘जो माँएँ अपने बेटों को बेटियों से ज़्यादा महत्व देती हैं, क्या वे फ़ेमिनिस्ट होती हैं?’

‘नहीं।’

‘जो औरतें दूसरी कामकाजी औरतों को एक अच्छी माँ नहीं मानतीं, क्या वे फ़ेमिनिस्ट होती है?’

‘नहीं। मैं तुम्हारा प्वॉइंट समझ रही हूँ। हाँ, मैं खुद को एक फ़ेमिनिस्ट मानती हूँ।’

‘क्या मैं कुछ कह सकता हूँ?’

‘श्योर।’

‘मुझे नहीं लगता किसी को भी खुद को फ़ेमिनिस्ट कहने की ज़रूरत है। यदि आप एक ईमानदार इंसान हैं और सभी के लिए समान अवसर चाहते हैं, तो यह एक शुरुआत है।’

मैंने उसकी ओर देखा और मुस्करा दी।

वेटर हमारे लिए एक और राउंड बीयर ले आया। सूर्य डूब चुका था और अंधेरा छा गया था।

‘तुमने गोवा की अपनी फील्ड ट्रिप में और क्या किया था?’

‘ऐसी चीज़ें, जो तुम नहीं जानना चाहोगी।’

‘ओह रियली? जैसे?’

‘कुछ नहीं।’

‘बताओ ना।’

‘ओके, बीच पर गोरी लड़कियों को निहारना।’

‘यू मीन, लड़कियों को वैसी नज़रों से देखना?’

‘बिलकुल नहीं। मैं इसे एक स्टडीड ऑब्जर्वेशन कहना बेहतर समझूँगा।’

मैं हँस दी।

‘इंजीनियर लोग सिक होते हैं।’ मैंने कहा।

‘सच है। फिर वे लोग स्मोक भी करते हैं।’

‘क्या? चिलम?’

उसने सिर हिला दिया।

‘तुमने गोवा में गांजा पिया था?’

‘हाँ। वो तुम्हें यहीं अंजुना में मिल जाएगा। शैक के पीछे कुछ शॉप्स थीं। मुझे मालूम नहीं, अभी वे हैं या नहीं हैं।’

‘मिस्टर ब्रजेश गुलाटी, यू हैव अ पास्ट!’

वह हँस दिया।

हम क्लास में टॉप करने और फिर अमेरिका जाने की ही फ़िराक में रहते थे, लेकिन थोड़ी - बहुत मस्ती भी कर लिया करते थे।

‘हम ट्राय करें?’

‘तुम गांजा पीना चाहती हो? अभी?’ उसने हैरत से कहा।

‘हाँ। क्या एक अच्छी हिंदुस्तानी दुल्हन को अपनी शादी से तीन दिन पहले स्मोक नहीं करना चाहिए?’

‘नहीं, नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है।’

‘क्या यह बहुत ज़्यादा फ़ेमिनिज़्म नहीं हो जाएगा?’

‘नहीं राधिका, वो बात नहीं है। लेकिन यहाँ हमारे रिश्तेदार है।’

‘अंजुना में तो कोई नहीं है ना? देखते हैं तुम मेरे लिए कुछ गांजा ला पाते हो या नहीं।’

‘ठीक है, मुझे पंद्रह मिनट का वक्त दो।’

‘यहाँ चट्टानों के पीछे चले आओ। यहाँ हमें कोई नहीं देखेगा।’ ब्रजेश ने कहा, जबकि मैं चिलम में सुट्टा मार रही थी।

हम कर्लीज़ को छोड़कर अंजुना बीच के एक सुदूर कोने पर चले आए थे। ब्रजेश ने तीन चिलम तैयार कर रखी थीं। हमने पहली शुरू की।

‘तुमने पहले यह किया है?’

‘नहीं, लेकिन मैं हमेशा से ट्राय करना चाहती थी।’

‘आहिस्ता आहिस्ता।’

हर सुट्टे के बाद मेरा दिमाग और रिलैक्स होता जा रहा था और मेरे सेंसेस सुन्न पड़ते जा रहे थे। अब ब्रजेश भी अजनबी नहीं लग रहा था।’

‘वॉव, यह मुझे मेरे कॉलेज के दिनों की याद दिला रहा है।’

‘लेकिन तुम्हारे पैरेंट्स ने कभी नहीं सोचा होगा कि उन्हें इस तरह की बहू मिल रही है।’

वह हँस दिया : ‘वैसे किस तरह की बहू?’

‘अरे वही, जो अपनी शादी से पहले बीच पर चिलम फूँकती है।’

‘यदि उनका बेटा ऐसा कर सकता है, तो बहू क्यों नहीं कर सकती?’

‘यही तो है फ़ेमिनिज़्म, ’ मैंने कहा और उससे हाई-फाईव किया।

‘हर चीज़ पर ऐसा हाई-फाई लेबल लगाना जरूरी नहीं होता। फिर यह तो सीधा लॉजिक है। अगर मैं कर सकता हूँ, तो तुम भी कर सकती हो।’

‘यू आर स्वीट।’

‘जब कोई लड़की किसी लड़के के प्रति आकर्षित हो जाती है, लेकिन वह उसे सीधे नहीं कहना चाहती, तब वह उसे स्वीट ही कहती है ना?’

‘मिस्टर फ़ेसबुक, तुम स्मार्ट हो।’

'वेल, कम - से - कम इस मामले में शायद मैं अच्छा हूँ। मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी मिस्टर स्वीट बनकर ही गुज़ारी है।'

'स्वीट इज़ गुड।' मैंने आखिरी सुट्टा मारते हुए कहा।

वह मुस्करा दिया : 'अब चलें? हमें देर हो रही है।'

'हाँ। और वे चिलमें बचाकर रखना। हमें मैरियट में उनकी ज़रूरत होगी।'

हम एक्टिवा पर सवार होकर फिर लौट चले। इस बार मैंने उसकी कमर पर हाथ रख दिया। शायद यह बीयर और चिलम का असर था, लेकिन मुझे अजीब नहीं लगा। हम उन्हीं रास्तों से होकर लौट रहे थे, लेकिन अभी वे अंधेरे में डूबे हुए थे। एक चौराहे पर हमने रास्ता कंफर्म करने के लिए गाड़ी रोकी।

'यहाँ से हमें दाएँ जाना चाहिए, है ना?' मैने उसके कंधे पर अपनी ठोढ़ी टिकाते हुए कहा।

'हाँ।'

हम मुड़ रहे थे कि चेप्वॉइंट पर हमें दो पुलिस वाले दिखाई दिए। उन्होंने हमें रोक लिया।

'लाइसेंस?' उनमें से एक ने कहा।

ब्रजेश नीचे उतरा और अपना पर्स टटोलने लगा। लेकिन उसे कुछ मिला नहीं। 'ओह, शायद वह होटल में रह गया है।' उसने कहा।

'क्या?' पुलिस वाले ने कहा।

'मेरे पास कैलिफोर्निया का लाइसेंस है। मैं अमेरिका से हूँ। लाइसेंस होटल में रह गया है। सॉरी।'

पुलिस वालों ने एक दूसरे की ओर देखा।

'तुम्हें जुर्माना भरना होगा।' एक पुलिस वाले ने चालान बुक निकालते हुए कहा।

दूसरा मुझसे बोला : 'मैडम, यह गलत है। आपको लाइसेंस के बिना ड्राइव नहीं करना चाहिए।'

'हम लोग टूरिस्ट हैं। सॉरी।'

हमें चार सौ रुपए का चालान कटवाना पड़ा। ब्रजेश ने हज़ार रुपए का नोट दिया। पुलिस वालों ने चेंज लौटाए। जब ब्रजेश पर्स फिर से अपनी जेब में रख रहा था तो एक छोटी - सी चीज नीचे गिरी।

'आपका कुछ गिर गया है।' एक पुलिस वाले ने कहा। फिर उसे उठाकर सूंघा। फिर अपने साथी को दे दिया।

'क्या आप दोनों साइड में होंगे और एक्टिवा की चाबी हमें देंगे?'

'क्या बात है?' मैंने कहा।

‘यह गांजा है और यह यहाँ पर गैरकानूनी है। आप दोनों को पुलिस थाने चलना होगा।’

Downloaded from Ebookz.in

21

‘अंजुना पुलिस स्टेशन, मॉम। बगीचे के सामने। ड्राइवर पता बता देगा। प्लीज़, डैड के साथ यहाँ आ जाइए। किसी और को कुछ मत बताइए।’

‘तुम पुलिस थाने में क्या कर रही हो?’ माँ ने बदहवास होते हुए कहा।

‘चिल्लाओ मत माँ। मैं यहाँ ब्रजेश के साथ हूँ।’

‘ब्रजेश? तुम दोनों पुलिस थाने में कैसे पहुँच गए?’

‘आप यहाँ आएँ तो मैं आपको बताऊँ। और डैड को भी साथ में लाइएगा।’

‘और ब्रजेश के पैरेंट्स?’

‘उसने उन्हें अलग से कॉल किया है। वे भी आ रहे हैं।’

‘हे भगवान, ये हो क्या रहा है? तुम ठीक तो हो ना?’

‘येस मॉम, ब्रजेश के पास लाइसेंस नहीं था।’

‘लाइसेंस? क्यों?’

‘हम एक्टिवा पर घूमने गए थे।’

‘एक्टिवा? लेकिन हमने इतनी सारी कारें हायर की हैं।’

‘मॉम, आप बस यहाँ आ जाइए।’

मैंने फोन रख दिया। ब्रजेश मेरे सामने बैठा था। सब-इंस्पेक्टर सैम्युअल डिसूजा हमारे सामने थे।

‘ये गांजा आपको कहाँ मिला?’

‘यह अंजुना की गली-गली में बिकता है। मुझे पूरा यकीन है कि आपको यह मालूम है।’ ब्रजेश ने कहा।

‘तुम ये कहना चाह रहे हो कि हम सबकुछ जानते हुए भी कुछ नहीं करते?’

‘नो सर, सॉरी।’ मैंने कहा।

मैंने ब्रजेश को कोहनी मारकर कहा कि वह चुप रहे।

‘आपकी शादी कब है?’

‘शुक्रवार को।’

‘दो दिन बाद। और इसी तरह से आप अपनी मैरिड लाइफ की शुरुआत करना चाहते हैं? ड्रग्स लेकर?’

‘ये ड्रग्स नहीं है, सर। यह माइल्ड हर्बल चीज़ है। और कैलिफोर्निया में तो यह कानूनी भी है।’ ब्रजेश ने कहा।

सब-इंस्पेक्टर ने हमें घूरकर देखा। ‘क्या ये कैलिफोर्निया है?’ उसने कहा।

‘नहीं सर,’ ब्रजेश ने सिर झुकाए जवाब दिया।

‘ये कौन सी जगह है?’

‘गोवा, सर।’

‘लोग यहाँ पर क्या करने आते हैं?’ सब इंस्पेक्टर ने कहा।

‘पार्टी करने, सर।’ ब्रजेश ने सॉफ्ट आवाज़ में कहा।

‘नहीं।’ सब-इंस्पेक्टर ने चिल्लाकर जवाब दिया। ‘लोग यहाँ पर अच्छी, साफ और शांतिपूर्ण छुट्टियाँ बिताने आते हैं। यह सब नॉनसेंस करने नहीं।’

‘यस, सर।’ ब्रजेश ने जैसे माफी माँगते हुए कहा।

मैंने अपने मुँह को ज़ोरों से भींच लिया ताकि मैं हँस ना दूँ, फिर भी एक हल्की-सी खिलखिलाहट निकल ही गई। इंस्पेक्टर ने मेरी ओर देखा।

‘आपको यह सब मज़ाक लग रहा है?’

‘नो, सर।’ मैंने सपाट तरीके से जवाब दिया।

इतने में ब्रजेश और मेरे पैरेंट्स थाने में आए। उन्होंने हमें सब -इंस्पेक्टर के सामने बैठे देखा।

‘क्या हुआ इंस्पेक्टर?’ मेरे पिता ने कहा।

‘क्या आप ही इनके माता-पिता हैं? देखिए, आपके बच्चे क्या गुल खिला रहे थे!’ सब इंस्पेक्टर ने कहा।

‘यू आर टू मच, राधिका,’ मेरी माँ ने कहा। मैं अपने पैरेंट्स के साथ कार में बैठी थी। ब्रजेश अपने पैरेंट्स के साथ एक दूसरी कार में था। हमारे माता-पिता को शायद यही बेहतर लगा होगा कि इन शरारती बच्चों को अलग- अलग कर दिया जाए।

‘आई एम सॉरी, मॉम।’ मैंने सातवीं बार कहा, ‘एंड थैंक यू डैड।’

पूरा मामला डैड ने ही सुलझाया था। उन्होंने गोवा में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का अपना कोई कॉन्टैक्ट ढूँढ निकाला, जो राज्य के पुलिस कमिश्नर को जानता था। कुछ फोन लगे, कुछ माफियाँ माँगी गईं और पूरे पुलिस स्टेशन को शादी का न्योता दिया गया, तब जाकर हमें बख्शा गया।

‘तुम दोनों एक नई ज़िंदगी शुरू करने जा रहे हो। तुम्हारे बच्चे होंगे। क्या इसी तरह से मैच्योर लोग बर्ताव करते हैं?’ सब-इंस्पेक्टर ने जाते-जाते हमें नसीहत दे डाली थी। मेरे पिता कार की फ्रंट सीट में चुपचाप बैठे थे और माँ ही बोले जा रही थी।

‘मैंने कभी नहीं सुना कि कोई लड़की अपनी शादी से पहले ड्रिंकिगं और स्मोकिंग करती हो।’

मैं चुपचाप सुनती रही, वे बोलती रहीं।

‘यदि हमारे रिश्तेदारों को पता चल गया तो वे क्या सोचेंगे? यही कि लड़की आउट ऑफ कंट्रोल है।’

मैं रिएक्ट करना चाहती थी, लेकिन मौके को देखकर कुछ नहीं बोलीं। लेकिन माँ बोलती रहीं।

‘और गुलाटीज़ क्या सोचेंगे? उन्हें आज अपने फैसले पर अफसोस हो रहा होगा।’

‘ओके मॉम, बहुत हुआ।’

‘क्या बहुत हुआ? बीयर पीना, चरस-गांजा लेना, ये क्या लड़कियों के काम हैं?’

‘उनके बेटे ने भी यही किया।’

‘तो?’

‘वोट डू यू मीन, तो? आप ये क्यों नहीं कह रही है कि वे अपने बेटे के किए को लेकर भी शर्मिंदा होंगे?’

‘वो लड़का है। उसे करने दो। तुम क्यों वैसा करोगी? क्या यही तुम्हारी सो-कॉल्ड इक्वैलिटी है?’

‘मॉम, आप चुप होने का क्या लेंगी?’

उन्होंने मेरे हाथ जोड़ लिए।

‘मैं चुप हो जाऊँगी। लेकिन तुम्हें भी तौर-तरीके सीखने होंगे। क्या तुम अपनी शादी तक खुद को कंट्रोल नहीं कर सकतीं?’

‘और उसके बाद? फिर मैं आपका सिरदर्द नहीं रह जाऊंगी?’

उन्होंने मुझे घूरकर देखा। मैंने नज़रें फेर लीं।

होटल आ गया। हम सभी कार से बाहर निकले।

‘सॉरी डैड।’ मैंने कहा।

‘मैं तुम पर भरोसा करता हूँ कि तुम सही कदम उठाओगी। हमें शर्मिंदा मत करो, बेटा।’

◆

आधी रात हो चुकी थी और मैं अपने बिस्तर पर बैठी थी। मेरे पास अदिति दीदी लेटी हुई थीं।

‘चरस? गांजा? तुमने ब्रजेश के साथ बैठकर चिलम फूँकी?’

‘हमने एक ही चिलम का बारी बारी से इस्तेमाल किया था, फिर भी मुसीबत में फँस गए।’

‘लेकिन तुम्हें वह सब मिला कैसे?’

‘उसका बंदोबस्त ब्रजेश ने किया था।’

उसने मेरी ओर हैरत भरी नज़रों से देखा।

'मैं तो समझती थी कि तुम दोनों अच्छे बच्चे हो।'

'इतने भी अच्छे नहीं हैं, दीदी।'

'मुझे तुम पर नाज़ है, छोटी बहना।'

दरवाज़े पर दो दस्तक सुनाई दीं। हम दोनों ने एक - दूसरे की ओर आश्चर्य से देखा।

'रुको।' दीदी ने कहा और दरवाज़े के की - होल से बाहर झाँककर देखा। 'कौन है?' उन्होंने ज़ोर से कहा।

'ओह सॉरी, एक्सक्यूज मी, रॉन्ग रूम।' मैंने एक हल्की -सी आवाज़ सुनी।

दीदी लौट आई।

'कौन था?'

'पता नहीं। कोई आदमी था सूट पहने हुए। खैर, और बताओ पुलिस थाने में क्या - क्या हुआ। यह बहुत मज़ेदार है।'

◆

'वन - टू - थ्री - फोर। कम ऑन, स्टार्ट।' कोरियोग्राफर मिक्की ने म्यूज़िक चालू करते ही चिल्लाकर कहा। 'लंडन ठुमकदा' गाना गूँजने लगा। मेरी पाँच आंटियाँ जोर - शोर से प्रैक्टिस कर रही थीं।

'मेरे मूव्ज़ को फॉलो करो।' उसने कहा।

मिक्की का शरीर छरहरा था। ब्लैक टी -शर्ट और टाइट्स पहने वह मेरी मोटी -ताजी पंजाबी आंटियों के सामने एक कीड़े जैसा लग रहा था। आंटियों ने मूव करना शुरू किया तो उनके वजन से कामचलाऊ स्टेज थरथराने लगा।

'इतनी जोर से पैर मत पटको। ग्रेसफुली करो।' मिक्की ने कहा।

मैं फंक्शन रूम के एक और कोने में अपनी कज़िन्स के साथ प्रैक्टिस कर रही थी। मिक्की का असिस्टेंट विक्रम हमें मूव्ज़ सिखा रहा था।

'फास्टर, फास्टर, गाने की बीट के साथ मैच करो।' मिक्की स्टेज पर तालियाँ बजाते हुए कह रहा था।

वहीं इधर विक्रम ने मेरे ग्रुप से कहा : 'लेडीज़, मैं आपको एक बात बताऊँगा, फिर आपको फॉलो करना होगा।'

विक्रम ने 'डीजे वाले बाबू 'गाना बजाया। इस रैप सॉन्ग की धुन पर थरकने के लिए बहुत लटके - झटके खाने की ज़रूरत थी।

धड़ाम! स्टेज से ज़ोरों की आवाज़ आई। सभी उस तरफ दौड़े। रिचा मामी गिर पड़ी थीं और सभी लोग उन्हें घेरे हुए थे। एक सौ दस किलो का पंजाबी बदन फर्श पर पड़ा था,

सलवार कमीज में लिपटा हुआ।

‘इस इडियट कोरियोग्राफर को किसने रख लिया? इतनी कठिन स्टेप्स सिखा रहा है।’ उन्होंने कराहते हुए कहा।

‘सॉरी मैडम, सॉरी।’ मिक्की ने कहा।

‘व्हॉट सॉरी?’ कमला बुआ ने कहा। ‘तुम्हें यह तो देखना चाहिए ना कि कौन इंसान कौन - सी स्टेप कर सकता है।’

‘यस, मैडम।’

होटल स्टाफ फर्स्ट - एड किट ले आया और उनके पैर पर पेन - रिलीवर का स्प्रे कर दिया। दो वेटरों ने उठने में उनकी मदद की।

‘एक ब्रेक ले लें?’ कमला बुआ ने कहा।

‘लेकिन मैडम आज रात संगीत है।’ मिक्की ने कहा।

‘हमने अभी नाश्ता भी नहीं किया। ऐसे भूखे पेट नाचेंगे तो कमज़ोरी नहीं आ जाएगी?’ रिचा मामी ने कहा।

वे सही थीं। पंजाबियों को कैलोरीज़ की दरकार होती है, हर घंटे!

मेरी कजिन्स और मैं ब्रेकफास्ट बुफे एरिया में खिड़की के पास वाली टेबल पर बैठे थे। उनमें से कुछ तो यहाँ भी अपनी स्टेप्स की रिहर्सल कर रही थीं। मैं ब्रेकफास्ट काउंटर पर गई और एक प्लेट उठा ली।

‘क्या मुझे एक होल - व्हीट टोस्ट मिलेगा, प्लीज?’ मैंने एक वेटर से कहा।

‘क्या तुम होल - कीट टोस्ट को पीनट बटर और हनी के साथ लेना चाहोगी?’ मेरे पीछे से एक आवाज़ आई।

मैंने मुड़कर देखा और जो मुझे नज़र आया, उससे मेरी आँखें लगभग बाहर निकलकर गिर पड़ी थीं!

‘नील?’ मैंने जोर से कहा।

‘हाय।’ वह वैसा-का-वैसा ही लग रहा था। हमेशा की तरह कातिलाना और हैंडसम। उसने अपने बालों को जेल कर रखा था और थोडी खिचड़ी दाढ़ी उगा रखी थी। काला सूट और सफेद कमीज़। दोनों ही कलफदार।

‘नील?’ मैंने इस बार फुसफुसाकर कहा। ‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’

‘मैंने कहा था ना, मुझे तुमसे आमने सामने बात करनी है। कल रात को मैं तुम्हारे रूम पर भी आया था। लेकिन किसी लेडी ने जवाब दिया तो चला गया।’

‘वो मेरी दीदी थीं। और अपनी आवाज़ धीमी रखो। तुम यहाँ इतनी जल्दी पहुँचे कैसे? तुम तो श्रीलंका में किसी कॉपर माइन पर थे ना?’

‘एक चार्टर्ड फ्लाइट ली और बस आ गया। खैर। क्या हम बात कर सकते हैं?’

‘तुम यहाँ पर एक चार्टर्ड प्लेन से आए?’ मैंने कहा।

वेटर व्हीट-टोस्ट ले आया।

‘मुझे जाना होगा।’ मैंने कहा।

‘जानता हूँ।’

‘तुम यहाँ नहीं आ सकते। ये हमारा प्राइवेट फैमिली डाइनिंग एरिया है।’

‘यह भी जानता हूँ।’

‘नील, मेरी तरफ देखो।’

आखिरकार उसने मेरी तरफ देखा। मैं उन आँखों को कैसे भूल सकती थी। वे आँखें, और उनके अलावा और भी बहुत कुछ।

हांगकांग

2 साल पहले

Downloaded from Ebookz.in

22

'ये है तुम्हारी डेस्क।' डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप में सेक्रेटरी बियान्सा ने कहा। 'बाहर देखो, यहाँ से तुम हांगकांग हार्बर का व्यू भी देख सकती हो।'

मुझे खुद को नए माहौल में एडजस्ट करने में थोड़ा समय लगा। हांगकांग में गोल्डमान साक्स का ऑफिस सेंट्रल में च्यांग कॉन्ग सेंटर स्कायस्क्रैपर में था। 60 से 68वें फ्लोर तक। हमारी टीम 67वें फ्लोर पर थी। यहाँ से हांगकांग की स्काईलाइन के साथ ही उत्तर दिशा में हार्बर भी देखा जा सकता था। दक्षिण में पीक देखी जा सकती थी : हांगकांग द्वीप की ग्रीन हिल की चोटी।

हांगकांग पहले अंग्रेज़ों का उपनिवेश था। अब वह चीन के नियंत्रण में है। 1997 में अंग्रेज़ यहाँ से रवाना हो गए, लेकिन अपने पीछे दुनिया के सबसे आ धुनिक और विकसित शहरों में से एक छोड़ गए। हांगकांग द्वीप, कोउलून प्रायद्वीप और न्यू टेरीटरीज़ को मिलाकर बने इस महानगर में 70 लाख से ज़्यादा लोग रहते हैं और यह दुनिया के सबसे व्यस्त ग्लोबल फाइनेंशियल सेंटरों में से एक है। कभी नहीं सोने वाला यह चमचमाता शहर किसी भी भारतीय को पहली नज़र में हैरान कर सकता है।

'हाउस-हंटिंग में मदद के लिए कंपनी का एक ब्रोकर आपको कॉल करेगा, ' बियान्सा ने कहा। 'और ये रहे कुछ ज़रूरी काटैक्ट्स। नील आपसे नौ बजे अपने ऑफिस में मिलेंगे।'

मैंने अपने कंप्यूटर में लॉग-इन किया। अपनी डेस्क पर स्टेशनरी जमाई। अपने क्यूबिकल की दीवारों पर कुछ फैमिली पिक्चर्स लगाईं। नौ बजे मैं नील के ऑफिस की ओर चल दी।

'आह राधिका, कम राइट इन।' नील ने कहा।

उसने एक सफेद कमीज़, सिल्वर कफलिंक्स और नीली टाई पहन रखी थी। मैंने उसे दो साल पहले हुई उस एसोसिएट ट्रेनिंग के बाद से नहीं देखा था। उसका रूम सूर्य की रोशनी से जगमगा रहा था, जिससे उसकी त्वचा दमक रही थी।

उसने मुझे एक फर्म हैंडशेक दिया।

'मुझे अपने ग्रुप का एक हिस्सा बनाने के लिए शुक्रिया।'

'यह तो हमारे लिए खुशी की बात है। नॉर्मली हमें न्यूयॉर्क से हाई परफॉर्मर्स मिलते नहीं हैं। आपका यहाँ सब बंदोबस्त ठीक रहा है?'

'मैं ठीक हूँ। मैं वीकेंड पर ही यहाँ पहुँची हूँ।'

'तुम कहाँ ठहरी हो?'

'शांगरीला।'

‘नाइस। हे, तुमने नाश्ता किया? एक कॉफी के लिए ब्रेकआउट एरिया में चलना चाहोगी?’

‘श्योर।’

हम एलीवेटर से नीचे 61वें फ्लोर पर गए। गोल्डमान का ब्रेकआउट एरिया किसी कैफे से कम नहीं था। स्टाफ के लोग यहाँ अकसर कुछ वक्त का ब्रेक लेकर कुछ खाने-पीने आया करते थे।

नील और मैं काउंटर पर्सन के पास गए। नील ने मुझसे पूछा : ‘तुम क्या लेना चाहोगी?’

‘होल-व्हीट टोस्ट, विद पीनट बटर एंड हनी।’ मैंने कहा।

‘टोस्ट? और क्या?’ काउंटर पर्सन ने कहा।

‘पीनट बटर एंड हनी, ’ मैंने कहा।

‘हूँ?’ उसने कहा।

‘फा सांग जोएंग मात म्गोई, ’ नील ने कहा। वह मुस्करा दी और सिर हिला दिया।

‘थैंक्स, ’ मैंने कहा।

‘नो इश्यूज। वैसे मैं कैंटनीज बोलता नहीं हूँ, लेकिन इसके कुछ शब्द सीख लेने में कुछ बुराई नहीं है।’ नील ने कहा। उसने अपने लिए ब्लैक कॉफी और बैगल बुलवाए।

हमने एक विंडो-फेसिंग टेबल पर बैठकर नाश्ता किया। उसने मुझे संक्षेप में ग्रुप के बारे में बताया।

‘यहाँ पर हम प्रोफेशनल्स है। हमारा ग्रुप न्यूयॉर्क जितना बड़ा नहीं है। फिर भी हम किसी भी दूसरे गोल्डमान ऑफिस की तुलना में ज़्यादा तेज़ी से तरक्की कर रहे हैं।’

मैं ध्यान से सुनती रही।

‘तुम जोश एंग और पीटर वू के साथ काम करोगी। वे चीन और कोरिया का काम देखते हैं। समय-समय पर कुछ स्पेशल डील्स में भी तुम्हारी मदद ली जा सकती है।’

‘लुकिंग फॉरवर्ड टू इट।’ मैंने कहा।

‘गुड। हर सुबह 8 बजे हमारी एक मॉर्निंग टीम मीटिंग होती है। वहीं पर सब लोग अपनी डील्स के बारे में बात करते हैं।’

‘ओके।’

‘मैं चाहता हूँ कि तुम खुलकर अपनी बातें कहो। मैं सवाल पूछने वालों लोगों को इनकरेज करता हूँ।

‘ऑफ कोर्स।’

‘जब चाहो मेरे ऑफिस में आ जाया करो। जोश तुम्हारा इमिजिएट बॉस है, लेकिन हम यहाँ पर फॉर्मल रोल्स में भरोसा नहीं करते। तुम्हारे होंठों पर कुछ पीनट बटर लगा है।’

‘ओह रियली?’ मैंने कहा और एक टिशू से अपने होंठों को पोंछ लिया। ‘आई एम सॉरी।’

‘इधर नहीं, दूसरी तरफ।’

मेरा चेहरा लाल हो गया। नील मुस्करा दिया। मुस्कराने पर वह और हैंडसम लगता था।

‘वेलकम टू हांगकांग।’ उसने कहा।

◆

‘एक बैंक ऑफ ईस्ट एशिया डिस्ट्रेस्ड डेट ऑक्शन होने जा रही है। वहाँ पचास लोन्स हैं, जिन्हें पोर्टफोलियो के रूप में बेचा जा रहा है। बिड्स दो हफ्ते में होंगी।’ जोश ने मॉर्निंग मीटिंग में कहा।

‘दो हफ्ते? यह तो बहुत टाइट है।’ पीटर ने कहा।

सभी बैंक एक समय के बाद बैड लोन्स का हिसाब लगाती हैं। कभी-कभी बैंकों को लगता है कि कर्ज़दारों का पीछा करने से बेहतर है कि डिस्काउंट पर उन लोन्स को बेच दिया जाए। इसमें तेज़ी लाने के लिए वे ऐसे लोन्स को एक पोर्टफोलियो के रूप में या एक बन्च में बेचते हैं। दूसरे शब्दों में इससे उनकी पूरी गंदगी एक बार में साफ हो जाती है। लेकिन हमारे जैसे बिडर्स के लिए इसका मतलब होता है बहुत सारा काम, ताकि हम यह आकलन कर सकें कि हमें क्या परोसा जा रहा है।

‘हम इसे रहने देते हैं। लोग दूसरी डील्स में बिज़ी हैं, राइट?’ नील ने कहा।

‘एक्चूअली, मैं यह काम देख सकती हूँ।’ मैंने कहा। सभी की आँखें मेरी तरफ घूम गईं।

‘वहाँ पर पचास कंपनियाँ है। तुम्हें उन सभी की फाइलें देखनी होंगी। यू श्योर?’ जोश ने अपने अमेरिकी चीनी घालमेल वाले एक्सेंट में कहा।

‘हमारे पास दो हफ्तों का समय है। मैं वीकेंड्स में भी काम कर सकती हूँ।’

‘मैं भी दो दिन की मदद कर सकता हूँ।’ पीटर ने कहा।

‘मैं भी।’ साइमन ने कहा। ग्रुप में शामिल एक ताईवानी एनालायिस्ट।

नील कांफ्रेंस रूम टेबल को अंगुलियों से बजाता रहा।

‘लेट्स डू इट।’ आखिरकार उसने कहा और उठ खड़ा हुआ।

अगले दो हफ्तों तक मेरा क्यूबिकल ही मेरा ठिकाना बना रहा। बक्से भर-भरकर दस्तावेज़ों को मुझे रिव्यू करना था। मैं अपने होटल में केवल सोने, शॉवर लेने और चेंज करने जाती थी। एक शुक्रवार की रात को तो मैंने वह भी नहीं किया। मैं पूरी रात काम करती रही और शनिवार की सुबह का सूरज उगते ऑफिस की खिड़की से देखा।

‘राधिका, तुम यहाँ क्या कर रही हो?’ नील की आवाज़ ने मुझको चौंका दिया।

मैंने मुड़कर देखा। वर्कआउट के कपड़ों में वह अलग नज़र आ रहा था। उसने एक ब्लैक अंडर आर्मर टी-शर्ट पहनी थी और इस ब्रांड ने मुझे देबू की याद दिला दी।

‘गुड मॉर्निंग, नील।’ मैंने कहा। ‘मैं बिड को फाइनल ही कर रही हूँ। मंडे मॉर्निंग तक हो जाएगा।’

‘तुम्हारी आँखों के नीचे डार्क सर्कल्स बन गए हैं। तुम रात को घर गई भी थीं या नहीं?’

मैं मुस्करा दी और सिर हिलाकर मना कर दिया।

‘दिस इज़ टू मच, राधिका। तुम्हें बैलेंस मेंटेन करना होगा।’

उसने मेरे क्यूबिकल के दरवाज़े पर अपना हाथ रखा हुआ था। मैं उसके बाईसेप्स देख सकती थी।

‘गोइंग टु दर जिम?’ मैंने पूछा।

‘नहीं, मैं माउंटेन हाइक पर जा रहा हूँ। मैं अपना वर्कआउट आउटडोर में करना प्रिफर करता हूँ।’

‘यह तो बहुत मज़ेदार जान पड़ता है।’

‘यस, आधे से भी ज़्यादा हांगकांग जितने कंट्री पाक्र्स हैं, जहाँ बहुत खूबसूरत हाइक्स हैं।’

‘मैंने सुना है।’

‘आई होप कि तुम थोड़ा हांगकांग भी घूमोगी और केवल ऑफिस में काम ही नहीं करती रहोगी।’

‘घूम लूँगी। पहले यह वाला काम निपट जाए।’ मैंने कहा। मुझे जोर की जम्हाई आई तो मैंने मुँह बंद कर लिया।

‘राधिका, तुम्हें घर जाना चाहिए।’

‘जल्द ही जाऊँगी। लेकिन तुम इतनी जल्दी ऑफिस कैसे?’

‘मैं अपना मोबाइल फोन यहाँ भूल गया था। तो उसे लेने आया हूँ।’

वह अपने ऑफिस में गया और कुछ मिनटों बाद लौटा।

‘तुम अभी तक यहीं हो?’

मैं मुस्करा दी।

‘बस बीस मिनट और।’

‘ठीक है। मैं जा रहा हूँ। गुड वर्क, राधिका।’

‘थैंक्स। बाय। नील, हैव अ नाइस हाइक।’

‘राधिका, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।’

‘हाँ।’

‘एक कॉन्फिडेंशियल डील है।। कुछ डिस्ट्रेस्ड कंपनियाँ नहीं चाहतीं कि दुनिया को पता चले कि वे इस हालत में है। ऐसी ही एक कंपनी फिलीपींस में है। केवल गोल्डमान साक्स एशिया के हेड और मैं इस बारे में जानते है। मैं इसके बारे में मॉर्निंग मीटिंग में भी बात नहीं करना चाहता। मैं इस डील के लिए एक एसोसिएट चाहता हूँ। तुम यह करोगी?’

‘श्योर। टाइमिंग क्या है?’

‘तुम पहले यह काम खत्म करो, फिर मैं तुम्हें ब्रीफ करता हूँ। हमें कंपनी के लोगों से भी मिलना होगा।’

‘श्योर। किस सेक्टर की कंपनी है?’

‘मैं जल्द ही बताऊँगा। अभी बाय। और जल्दी-से-जल्दी घर पहुँचकर आराम करो।’ उसने कहा।

◆

व्हाट ए हेल! देबू ने मुझे फ़ेसबुक पर अनफ्रेंड कर दिया था। हांगकांग में पहली बार मैंने अपना काम जल्दी खत्म कर लिया था और शाम 5 बजे होटल लौट आई थी। टीम को पोर्टफोलियो पर मेरा फाइनल प्रज़ेंटेशन अच्छा लगा था। हमने लोन्स के लिए प्रति डॉलर चौदह सेंट की बिड सबमिट की थी। मैं थककर चूर थी और लंबी नींद लेना चाहती थी। लेकिन मैंने यह भूल कर दी थी कि अपना लैपटॉप खोलकर फ़ेसबुक में लॉग इन कर लिया। इसके बाद बेवकूफों की तरह मैं देबू की प्रोफाइल खोजने लगी, लेकिन मुझे वह अपनी लिस्ट में कहीं नज़र नहीं आया। उसने मुझे अनफ्रेंड कर दिया था, लेकिन इसकी वजह मुझे समझ नहीं आई। हाँ, हमारा ब्रेक अप हुआ था, लेकिन यह मतलब तो नहीं कि लोग एक-दूसरे की ज़िंदगी से गायब ही हो जाएँ।

मेरे पास उसका फोन नंबर भी नहीं था। मैंने उसके पिछले तमाम ईमेल्स भी हटा दिए थे। मैंने सोचा कि अविनाश को फोन लगाकर उससे देबू का नंबर लूँ, फिर रहने दिया। मैंने टीवी चला दिया। अधिकतर चैनल्स चाइनीज़ थीं। एक चैनल पर एक सोप ओपेरा आ रहा था, जिसमें एक लड़की रो रही थी। पता नहीं क्यों, लेकिन मैं भी उसके साथ रोने लगी। मैंने अपना तकिया कसकर पकड़ लिया और रोती रही। मैं हांगकांग आने के बाद से ही खुद को रोके हुए थी और मैंने खुद को काम में खपा दिया था। लेकिन काम का बोझ खत्म होते ही मैं जैसे फिर से वहीं लौट आई थी, जहाँ से मैं चली थी।

मैंने मिनी-बार खोला और उसमें व्हिस्की और वोदका की छोटी-छोटी बोतलें पाईं। मैं चार बोतलें पी गई और बिस्तर पर जाकर लेट गई। जल्द ही मैं गहरी नींद में डूबी हुई थी, जो कि हफ्तों से मुझ पर बकाया था। फोन की घंटी से मेरी नींद खुली। मेरा सिर जोरों से दर्द कर रहा था। मैंने एक आँख खोली और कॉलर का नाम देखा। नील का फोन था।

डैम, डैम, डैम! मैंने लाइट जलाई, दौड़कर बाथरूम में गई, चेहरे पर पानी छिड़का और इसके बाद ही कॉल अटैंड किया।

'हैलो।' मैंने कहा।

'सॉरी, तुम सो रही थीं?'

मैंने घड़ी देखी। अभी शाम के साढ़े आठ ही बजे थे।

'नहीं-नहीं, बस एक झपकी ले रही थी। सॉरी, आज मै ऑफिस से घर जल्दी आ गई थी।'

'यू डिजर्व्ड दर रेस्ट। सॉरी कि तुम्हें जगा दिया।'

'हाँ, मुझे इसकी ज़रूरत थी।' मैं बोल गई। फिर मन-ही-मन कहा कि राधिका, फ़ोकस करके बोले। अभी लाइन पर गोल्डमान साक्स का एक पार्टनर है।

'मैंने बस यह कहने के लिए फोन लगाया कि क्या तुम कल सुबह साढ़े सात बजे ऑफिस आ सकती हो।'

'हाँ-हाँ श्योर।'

'मैं तुम्हें फिलीपींस डील के बारे में ब्रीफ कर सकता हूँ। बेहतर यही होगा कि हम सबके आने से पहले इस बारे में बात कर लें।'

'ऑफ कोर्स, ' मैंने कहा।

◆

'एल कासा सीप्लेन एंड रिसोर्ट्स।' मैंने उस ब्रोशर के कवर पर पढ़ा, जो नील ने मुझको दिया था।

उसने अपनी ब्लैक कॉफी का एक घूँट लिया और कप को एक तरफ रख दिया।

'तुम फिलीपींस के बारे में ज़्यादा जानती हो?'

'यह साउथ ईस्ट एशियन देशों का हिस्सा है, राइट?'

'हाँ, सात हज़ार से भी ज़्यादा द्वीपों वाला देश। मनीला इसकी राजधानी है।'

'ओके, ' मैने अपनी नोटबुक में दर्ज करते हुए कहा।

'कंपनी का नाम तुमने पढ़ लिया। इन्होंने ज़रूरत से ज़्यादा कर्ज़ ले लिया था। एक साइक्लोन आया, जिससे उनका बिज़नेस ठप हो गया। यही कारण है कि आज उनकी फाइल हमारी डेस्क पर है।'

मैं नोट्स लेती रही।

'पलावन फिलीपींस के दक्षिण में है। अकसर, दुनिया के सबसे खूबसूरत आइलैंड्स में इसकी गिनती की जाती है। पलावन के पास छोटे-छोटे, सुपर-एक्सक्यूसिव और

प्राइवेटली ओन्ड आइलैंड्स हैं। एल कासा दस रिसोर्ट संचालित करता है और वे सभी इन प्राइवेट मिनी आइलैंड्स पर हैं।'

मैंने ब्रोशर के पन्ने पलटकर देखा। उसमें बूटीक ट्रॉपिकल आइलैंड रिसोर्ट्स की बेहद खूबसूरत हवाई तस्वीरें थीं। ब्रोशर बता रहा था कि किसी भी एल कासा रिसोर्ट में दस से ज़्यादा कमरे नहीं थे। इन रूम्स का किराया था एक हज़ार डॉलर्स पर नाइट!

नील ने मुस्कराते हुए कहा : 'यहाँ पर एक्स्ट्रा रिच फॉरेन टूरिस्ट्स ही आते हैं। यहां रूम लेना लोकल्स के बूते की बात नहीं है।'

'और वहाँ पहुँचा कैसे जा सकता है?'

'मनीला से पलावन तक फ्लाइट। उसके बाद कंपनी के सी-प्लेन की मदद से रिसोर्ट्स तक।'

'यानी इन रिसोर्ट्स को चलाना बहुत महंगा सौदा है।'

'हाँ और इसीलिए ज़ब उनका बिज़नेस डाउन होता है, तो उनके लिए हालात बेहद मुश्किल हो जाते हैं।'

नील ने मुझे बताया कि टायफून हैयान ने गए साल फिलीपींस में तबाही मचाई थी। इसमें हज़ारों लोग मारे गए थे। फिलीपींस अभी तक उससे उबरा नहीं था। टूरिस्ट्स भी वहाँ जाने से कतराने लगे थे। इस सबका असर एल कासा पर पड़ा है।

'इसके ओनर का नाम मार्कोस सेरेनो है। पचास साल उम्र। फर्स्ट जनरेशन, लिकर बैरॉन! बहुत सख्तजान बिज़नेसमैन, कम्युनिटी में उनकी बहुत इज़्ज़त है। एल कासा उनके लिए पैशन प्रोज़ेक्ट है, इसलिए वे नहीं चाहते कि दुनिया को उसकी बदहाली के बारे में पता चले।

'तुम्हारे पास उनके फाइनेंशियल हैं?'

नील ने पाँच इंच मोटा एक डॉक्यूमेंट मुझे थमा दिया।

'इसमें सब लिखा है। सभी बैंक पल्ला छुड़ाना चाहती हैं, जबकि मार्कोस उनका सहयोग करना चाहते हैं, तब तक, जब तक कि उनकी साख कायम रहती है।'

'समझ गई।' मैंने कहा। 'में एक बार ध्यान से यह पूरा मामला समझ लूंगी।'

'गुड। और अगले हफ्तो पलावन जाकर मार्कोस से मिलकर आते हैं।'

23

‘ऑरेंज ज्यूस या शैम्पेन?’ कैथे पैसिफिक की एक फ्लाइट अटेंडेंट ने पूछा। उसने एक ट्रे में नील को ड्रिंक्स ऑफर की थीं।

‘ऑरेंज ज्यूस, प्लीज़। अभी शैम्पेन का समय नहीं हुआ।’ नील ने कहा।

मैंने भी ज्यूस ही लिया। हम मनीला की मॉर्निंग फ्लाइट के बिज़नेस-क्लास कैबिन में एक-दूसरे के पास बैठे थे। यह मेरी पहली बिज़नेस ट्रिप थी, जिसमें मैं एक दूसरे देश की यात्रा कर रही थी।

‘तो तुमने एल कासा के बारे में क्या सोचा?’ नील ने कहा।

‘ओह वेट, ’ मैंने कहा और अपना लैपटॉप बैग खोल लिया। फिर मैंने अपने फाइनेंशियल मॉडल के प्रिंटआउट निकाल लिए।

‘इसे अभी अपने पास रखो। तुम तो मुझे यह बताओ कि तुम्हारी गट फीलिंग क्या है?’

‘मेरी गट फीलिंग?’ मैं इस सवाल से चौंकी। मैं केवल एक एसोसिएट ही तो थी। एक पार्टनर को मेरे जैसी एक एसोसिएट की गट फीलिंग से सरोकार क्यों होना चाहिए? मेरा काम तो केवल फाइनेंशियल मॉडल बनाना भर था।

मैंने कुछ समय सोचने का समय लिया, फिर कहा :

‘कुछ मायनों में एल कासा एक रेयर एसेट है, इसलिए वह बहुत वैल्यूबल भी है। दूसरे मायनों में वह एक मुसीबत भी है, क्योंकि उसके खरीदार इने-गिने ही हैं। साथ ही मुझको नहीं लगता कि फिलीपींस के कानून बहुत इंवेस्टर-फ्रेंडली होंगे।’

‘गुड! तुम जिस तरह से अनेक डाइमेंशनों में सोच पाती हो, मुझे वह पसंद है।’

‘थैंक्स।’ मैंने इससे कुछ-कुछ एम्बैरेस होते हुए कहा और अपनी शीट्स जमाने लगी।

‘तो हमें इस मामले में क्या करना चाहिए?’

‘हमें इसके लिए एक खरीदार तलाशना चाहिए।’

‘मतलब?’

‘मतलब यह कि हम बड़ी होटल चेन्स से बात करें। इसे एक हाई-एंड ग्लोबल ब्रांड की दरकार है। नहीं तो लोग वहाँ नहीं जाएँगे।’

‘हम्म्म।’ नील ने कहा।

‘मैं अमन रिसोर्ट्स, फोर सीज़न्स के बारे में सोच रही हूँ। उस कैटेगरी में कुछ।’ मैंने कहा।

‘तुम स्मार्ट हो।’

‘नहीं तो, ’ मैंने एक बेवकूफ मूर्ख की तरह कहा।

‘क्या नहीं तो?’

‘मेरा मतलब है, क्या मैं आपको फाइनेंशियल मॉडल दिखा सकती हूँ?’

‘श्योर।’

अगले एक घंटे तक मैं उसे आँकड़ो का खेल समझाती रही। कंपनी ने पचास मिलियन डॉलर का कर्ज़ा ले लिया था और आधा ही चुका पाई थी।

‘दैट्स गुड। मुझे लगता है कि हम अच्छी तरह जान चुके हैं कि वहाँ की क्या कहानी है।’ उसने कहा।

फ्लाइट अटेंडेंट ने नाश्ता सर्व किया।

‘मैं एक और सिनैरियो बना सकती थी...’ मैंने कहा तो नील ने मुझे टोक दिया।

‘इनफ। क्या तुम हमेशा काम के बारे में ही सोचती रहती हो?’

‘नहीं, मैं तो...’

‘नाश्ते का मज़ा लो।’

‘श्योर।’ मैंने फोर्क से एक स्ट्रॉबेरी खाते हुए कहा।

‘तुम्हें हांगकांग कैसा लगा?’

‘एफिशियंट।’

‘और तुम्हें कोई अपार्टमेंट मिला?’

‘हाँ, ओल्ड पीक रोड पर। मैं अगले हफ्ते वहाँ रहने जा रही हूँ।’

‘वह एक अच्छा एरिया है।’

ओल्ड पीक एरिया में वन-एंड-अ-हाफ बेडरूम अपार्टमेंट का किराया 6 हज़ार डॉलर्स प्रतिमाह था।

‘और तुम कहाँ रहते हो?’ मैंने पूछा।

‘रिपल्स बे पर। साउथ साइड में। तुम्हें कभी मेरे घर आना चाहिए। मैं कभी-कभी टीम डिनर्स अपने घर पर ही करवाता हूँ।’

‘श्योर।’

‘कुसुम तुमसे मिलकर बहुत खुश होगी।’

‘कुसुम?’

‘मेरी वाइफ। मेरे दो बच्चे भी हैं, सिया और आर्यन। सात और तीन साल के।’

ऑफ कोर्स, इतने शानदार मर्द को भी शादीशुदा होना था!

‘ओह, हाऊ नाइस।’ मैंने ऊपर से कहा।

‘और तुम?’

‘वेल, मैं तो मैरिड नहीं हूँ।’ मैंने कहा और मुस्करा दी।

‘ज़ाहिर है। लेकिन तुम्हारी फैमिली कहा है?’

‘दिल्ली में। मॉम, डैड और एक बड़ी बहन।’

‘ग्रेट। तुम अपने पैरेंट्स के क्लोज़ हो?’

मैं जवाब देने से पहले कुछ देर सोचती रही।

‘कुछ मायनों में। डैड अकसर चुप रहना पसंद करते हैं। मैं मॉम के क्लोज़ जरूर हूँ, लेकिन हम लड़ाई भी बहुत करते हैं।’

नील हँस दिया।

‘रियली? किस बात पर लड़ाई?’

‘छोटी-मोटी बातों पर। अकसर तो इसी बात पर कि मॉम मेरी शादी को लेकर चिंतित हैं।’

‘ओह, अभी तो तुम यंग हो। इतनी जल्दी शादी क्यों?’

‘यही तो। लेकिन वे भी तो यह बात समझें।’

‘टिपिकल इंडियन पैरेंट्स, राइट?’

मैंने सिर हिलाकर हामी भर दी।

‘तुम कब से इंडिया से बाहर रह रहे हो?’ मैंने पूछा।

‘बारह साल की उम्र से। उसके बाद मेरी परवरिश लंदन में हुई। अंडरग्रैड ऑक्सफोर्ड में। एमबीए हार्वर्ड से। मैं कुसुम से वहीं पर मिला था।’

‘ओह, कॉलेज स्वीटहार्ट्स।’

‘हाँ, तुम ऐसा कह सकती हो।’ उसने कहा और हँस दिया।

कैप्टन फ्लाइट लैंडिंग के इंस्ट्रक्शंस देने लगा। हमारा प्लेन मनीला के ऊपर मंडरा रहा था।

‘तुमने न्यूयॉर्क क्यों छोड़ा था?’

‘पर्सनल रीज़न्स।’

‘ओह, आई एम सॉरी।’

‘मेरा ब्रेक-अप हुआ था। एक बैड ब्रेक-अप।’

‘रियली।’

‘हाँ। क्यों?’

‘तुमने केवल एक लड़के से हुए झगड़े के बाद न्यूयॉर्क छोड़ दिया?’

‘इससे भी बुरा। एक ऐसे लड़के के लिए, जो मुझे नहीं चाहता था।’

नील अपनी सीटबेल्ट खोलने लगा। वह कोई उपयुक्त जवाब तलाश रहा था।

‘वेल, एनीवे। वेलकम टु फिलीपींस।’ उसने कहा।

हमारी फ्लाइट लैंड कर चुकी थी।

‘मैंने एल कासा को बनाने में सालों लगा दिए। पता नहीं मैंने ऐसा क्यों किया। शायद मैं दुनिया को दिखाना चाहता था कि मेरा देश कितना खूबसूरत है।’ मार्कोस ने कहा।

हम पलावन में एल कासा ऑफिस में बैठे थे। एल कासा के ओनर और सीईओ मार्कोस सेरेनो हवाइयन शर्ट पहने हमारे सामने बैठे थे।

हमने मनीला से पलावन तक एक शॉर्ट फ्लाइट ली थी और एयरपोर्ट से सीधे मीटिंग में चले आए थे। रास्ते में मैंने एक उनींदे समुद्रतटीय शहर को पाम के पेड़ों से भरा देखा।

‘आपका देश स्टनिंग है। एयरपोर्ट से यहाँ तक की जर्नी में ही मैंने यह जान लिया।’ नील ने मार्कोस से कहा।

‘यह तो कुछ नहीं है। रिसोर्ट देखने के बाद तुम बोलना। वैसे भी आज रात आप मेरे एक रिसोर्ट में ही ठहरेंगे।’

‘लेकिन हम तो पहले ही मनीला में एक होटल बुक करा चुके हैं। कल हमारी हांगकांग की फ्लाइट है।’

मार्कोस ने इनकार कर दिया।

‘मनीला में क्या रखा है। भीड़भाड़ और पोल्यूशन। आप मेरे रिसोर्ट पर ही रुकेंगे।’

‘लेकिन...’ नील ने कहा, लेकिन मार्कोस ने बीच में ही टोक दिया।

‘आई इनसिस्ट। मेरे सी-प्लेन्स आपको वहाँ ले जाएँगे।’

‘श्योर।’ नील ने कहा। वैसे भी हम रिसोर्ट्स की क्वालिटी एक बार देख लेना चाहते थे। मार्कोस ने अपनी सेक्रेटरी को एल कासा पेंगालूशियन आइलैंड पर दो रूम का बंदोबस्त करने को कहा।

‘चलो, अब काम की बातें कर ली जाएँ।’ मार्कोस ने कहा।

‘मेरी कलीग राधिका ने कुछ नंबर्स पर काम किया है।’ नील ने कहा।

मैंने फाइनेंशियल मॉडल की कॉपीज़ आगे बढ़ा दीं।

‘मैंने हर रिसोर्ट की कीमत समझने की कोशिश की है।’ मैंने कहा। अगले दस मिनटों तक मैं उसे अपने अनुमानों और प्रोजेक्शंस से परिचित कराती रही।

‘अब क्या?’ मार्कोस ने कहा।

मैंने नील की ओर देखा।

‘हमें एक नया खरीददार चाहिए। लेकिन कोई भी एक ऐसी कंपनी खरीदने को राज़ी नहीं होगा जिस पर 50 मिलियन डॉलर का कर्ज़ा हो। हमें पहले बैंक्स को एक डिस्काउंट पर सेटल करना होगा।’

‘दे विल सेटल।’ मार्कोस ने कहा।

‘लेकिन हम चाहते हैं कि वे लो-प्राइज़ पर सेटल हों। हमें बैंक्स के सामने एक बदहाल तस्वीर पेश करनी होगी। हमें कहना होगा कि बिज़नेस की हालत खस्ता है और उसका कुछ नहीं हो सकता। तुम्हें भी इसमें मदद करती होगी।’ मैने कहा।

‘रियली?’

‘यस। तभी तो वे हमें सस्ती दरों पर लोन्स बेचेंगे। फिर हम नए खरीददारों को ढूँढेंगे। हमारे प्रॉफिट में से हम तुम्हें बीस प्रतिशत का हिस्सा देंगे।’ मैंने कहा।

मार्कोस की आँखें चौड़ी हो गई। उसने नील की ओर देखा।

‘शी इज़ गुड।’ उसने कहा।

‘ओनली माय बेस्ट पीपुल फॉर यू। कोई और इश्यूज़, मार्कोस?’ नील ने कहा। मार्कोस मेरी तरफ मुड़ा।

‘क्या नए बायर्स वर्कर्स को नौकरी से निकाल देंगे?’

‘यह तो उन्हीं पर डिपेंड करता है।’ मैंने कहा।

‘लेकिन मैं ऐसा नहीं चाहता, वे मेरे लोग हैं।’

मैंने नील की ओर देखा। यह एक पेंच था। अगर हम नए खरीददार के सामने नो-लेऑफ्स पस की शर्त रख देते तो कंपनी की वैल्यू गिर जाती।

‘पाँच साल तक किसी को नौकरी से नहीं निकाला जाएगा। ओके?’ नील ने कहा।

‘फाइन। हम ऐसा कर सकते हैं। लेकिन अगर ऐसा है, तो क्या हम यह मान लें कि यह डील फाइनल है?’ मैंने कहा।

‘यह लड़की बहुत तेज़ है।’ मार्कोस ने नील से कहा और खिलखिलाकर हँस दिया।

‘हमारे ग्रुप वाले जल्द-से-जल्द डील तय करने में यकीन रखते है।’ नील ने कहा।

मार्कोस ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

‘लेट्स डु इट।’ मार्कोस ने कहा।

हमने हाथ मिलाया। हमारे बीच एक इन-प्रिंसिपल डील हो चुकी थी।

‘मैं आपको कल टर्म शीट भेज दूँगी।’

‘क्या यह हमेशा ही काम को लेकर इतनी ऑब्सेस्ड रहती है?’ मार्कोस ने कहा।’ कोई अर्जेंसी नहीं है। कुछ दिनों में इत्मीनान से भेज देना। यह फिलीपींस है। यहाँ पर काम से ज़्यादा ज़िंदगी का मोल है।’

लेकिन मेरी ज़िंदगी में तो काम के सिवा कुछ और नहीं है, मैंने मन-ही-मन सोचा।

‘मेरी बीयर ट्राय करके देखिए। फिलीपींस में उससे उम्दा बीयर कोई दूसरी नहीं है।’ मार्कोस ने अपनी डेस्क के पीछे रखा फ्रिज खोलते हुए कहा।

◆

‘ओके, ये थोड़ा डरावना है।’ मैंने सीट बेल्ट बाँधते हुए कहा। नील और मैं एक फोर-सीटर एल कासा सी-प्लेन में बैठे थे। सीट छोटी थीं। हमारे सिर प्लेन की छत से लगभग टकरा

रहे थे। पायलट ने थंब-अप साइन दिया, यानी कि अब वह टेक-ऑफ करने जा रहा था। टर्बोप्रॉप की आवाज़ के कारण कुछ भी कहना-सुनना मुश्किल साबित हो रहा था।

'तुम ठीक हो ना?' नील ने चिल्लाते हुए पूछा।

मैंने सिर हिलाकर पलकें झपका दीं। वह हँस दिया।

'गहरी साँसें लो।' उसने कहा।

मैंने ऐसा ही किया। प्लेन ने टेक-ऑफ किया। मैं खिड़की से बाहर देख रही थी। नीला समुद्र, सफेद बीचेज़ और हरे दरख्तों के फैलाव को देखकर मैं अपना सारा डर भूल गई।

'वॉव।' मैंने इससे खूबसूरत नज़ारे पहले कभी नहीं देखे थे।

'यह वाकई बहुत शानदार है।' नील ने कहा।

पंद्रह मिनट बाद प्लेन पेंगालूशियन आइलैंड पर मंडरा रहा था। आधे से भी कम किलोमीटर लंबा और केवल दो सौ मीटर चौड़ा चावल के दाने के आकार वाला यह आइलैंड ऊपर से बहुत ही छोटा नज़र आ रहा था। उसके दक्षिणी छोर पर कुछ हट्स नज़र आईं।

'वो रहा रिसोर्ट।' पायलट ने कहा। 'बाकी पूरा आइलैंड जैसे अनछुआ है। ऑल नेचुरल।'

प्लेन की लैंडिंग के समय मैंने अपनी दोनों आँखें बंद कर लीं। जब मैंने उन्हें खोला तो पाया कि नील और पायलट दोनों मेरी तरफ देखकर हँस रहे हैं।

'आई एम सॉरी। यह जितना खूबसूरत है, उतना ही डरावना भी है।'

हम प्लेन से बाहर निकल आए और रेत पर चलने लगे। दो पोर्टरों ने हमारे बैग्स ले लिए। रिसोर्ट मैनेजर ने हमारा स्वागत किया।

'वेलकम टु एल खासा पेंगालूशियन। आई एम कार्लोस, द रिसोर्ट मैनेजर।'

उसने हमें हमारे कमरे दिखाए। हर कमरा नीले पानी के लगून पर बने एक छोटे कॉटेज की तरह था।

'अगर आप बालकनी में बैठें तो आपको नीचे पानी में तैरती मछलियाँ नज़र आएँगी।' कार्लोस ने कहा।

मैंने अपना सामान लग्जरियस रूम में रख दिया, जिसमें वुडन फ्लोर और खपरैलों वाली छत थी। रिसेप्शन एरिया में नील कार्लोस से बात कर रहा था।

'यह जगह तो कमाल की है।' नील ने कहा।

'थैंक यू, सर।' कार्लोस ने कहा।

मैं भी बातचीत में शामिल हो गई।

'कार्लोस, क्या मैं आपसे बाद में बात कर सकती हूँ? रिसोर्ट के बारे में कुछ बिज़नेस-रिलेटेड क्वेशचंस।'

'श्योर। मिस्टर सेरेनो ने मुझे बताया था।'

नील मुस्करा दिया। कार्लोस हमें लॉबी एरिया में छोड़कर चला गया।

‘यह मेरी अब तक की बेस्ट डील है। देखो ना कितनी खूबसूरत जगह है।’ मैंने कहा।

‘हाँ, मुझे खुशी है कि हम यहाँ आए। मुझे भी अंदाज़ा नहीं था कि यह इतनी कमाल की जगह होगी।’

‘हमें इसके लिए खरीददार मिल जाएँगे ना?’

‘हे भगवान, आसपास का नज़ारा देखो। खरीददारों की चिंता बादर में कर लेना।’ नील ने कहा।

‘सॉरी।’ मैंने कहा।

हम लॉबी से बाहर निकल आए। हमारे सामने समुद्र था। समुद्र के बीचे में उभरी हुई चट्टानों के कारण नज़ारा और अद्भुत हो गया था।

‘शाम के लिए तुम्हारा प्लान क्या है?’ नील ने पूछा।

‘मुझे टर्म शीट बनानी है।’

‘ओह, कम ऑन। उसे ऑफिस में बना लेना। डिनर से पहले आइलैंड का एक चक्कर लगाएँ?’

‘श्योर।’ मैंने कहा।

नील और मैं आइलैंड को घेरे रखने वाले दो किलोमीटर लंबे ट्रैल पर चल रहे थे। यहाँ के चप्पे-चप्पे से खूबसूरती झलक रही थी। यदि भगवान ने स्वर्ग को डिज़ाइन करने के लिए किसी आर्किटेक्ट की मदद ली होती तो वह ऐसा ही कुछ बनाता।

नील ने वर्कआउट क्लॉथ्स पहन रखे थे और वह इनमें और हैंडसम लग रहा था। मैंने एक सफेद टी-शर्ट और ग्रे ट्रैकपैंट्स पहने थे।

‘उस दिन हाइक। आज वॉक। तुम वाकई फिटनेस को लेकर कॉन्शियस रहते हो।’

‘कोशिश करता हूँ। मेरी उम्र में पहुँचकर फिट रहना आसान नहीं होता।’

‘लेकिन तुम सचमुच बहुत फिट लगते हो।’

‘थैंक यू। लेकिन अब मैं बूढ़ा गया हूँ। पैंतालीस साल!’

‘यह कोई इतनी भी उम्र नहीं है।’

वह हँस दिया।

‘रियली? और तुम्हारी उम्र क्या है? सॉरी, मुझे पूछना तो नहीं चाहिए।’

‘मैं पच्चीस की हूँ। वेल, एक महीने बाद छब्बीस की हो जाऊँगी।’

‘तुम तो बहुत ही यंग हो। और इसके बावजूद तुम कितनी बिग डील्स काम कर रही हो।’

‘मैं लकी हूँ।’

‘ऐसा मत बोलो। तुम इसके लायक हो। तुम मेहनती हो। मेहनत से ही लक बनता है।’

मैं उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

‘लेकिन तुम मुझसे बीस साल छोटी हो, यह सोचकर मैं खुद को और ओल्ड महसूस करने लगा हूँ।’

‘तुम पैंतालीस की उम्र में गोल्डमान साक्स में पार्टनर बन गए हो। इसके लिए बहुत यंग एज है। फिर तुम दिखते भी हैंडसम हो।’

राधिका, तुम्हें यह कहने की क्या ज़रूरत थी? तुम अभी डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप के एशिया हेड के साथ हो। अपने पर कंट्रोल करो।

‘थैंक यू। आजकल मुझे यह ज़्यादा सुनने को मिलता नहीं।’

हम पूरे आइलैंड का चक्कर काटकर रिसोर्ट पर लौट आए थे।

‘एक घंटे बाद डिनर? मैं एक शॉवर लेने जा रहा हूँ। रेस्तरां में मिलते हैं।’

‘श्योर।’

‘शैम्पेन, सर। कर्टसी, मिस्टर मार्कोस सेरेनो।’ कार्लोस ने हमारे सामने डोम पेरीन्योन की एक बॉटल रखते हुए कहा। हम रिसोर्ट में एक ओपन-एयर रेस्तरां में बैठे थे। अंधेरा हो चुका था और समुद्र के साफ पानी में तारे झलक रहे थे। रेस्तरां में केवल छह टेबलें थीं और सभी पर अनेक कैंडल्स जल रही थीं।

केवल हमारी टेबल ही ऑक्यूपाइड थी।

‘क्या तुम कुछ शैम्पेन लेना चाहोगी?’

‘यस, प्लीज़।’

नील किसी जेंटलमैन की तरह उठा और मेरे गिलास में शैम्पेन उड़ेल दी।

‘शुक्रिया।’

‘यू आर वेलकम।’ हमने अपने-अपने गिलास टोस्ट के लिए उठाए।

‘टु मेनी मोर डील्स।’ उसने कहा।

‘खासतौर पर वे, जिनमें प्राइवेट आइलैंड एसेट्स शामिल हों।’ मैंने कहा।

हम दोनों हँस पड़े।

वेटर्स हमारे लिए कई तरह के सी-फूड लाया। खाना बहुत ताज़ा और लज़ीज़ था। एक वेटर हमारे लिए हार्ट शेप्ड रेड वेलवेट केक ले आया।

‘फॉर द लवली कपल, ’ उसने फिलिपिनो एक्सेंट में कहा।

‘ओह, एक्चुअली, हम...’ मैंने कहा। नील ने मुझे बीच में टोक दिया।

‘थैंक यू फॉर ए केक। लेकिन उसका हार्ट-शेप्ड होना जरूरी नहीं था, क्योंकि हम कपल नहीं हैं।’

वेटर ने हम दोनों को हैरत से देखा।

‘हम यहाँ पर बिज़नेस ट्रिप पर आए हैं।’ मैने कहा। वेटर और कंफ्यूज़ हो गया। आखिर पेंगालूशियन आइलैंड पर कौन काम करने आता है?

नील मुस्करा दिया।

‘थैंक्स फॉर द केक।’ उसने फिर कहा। वेटर चला गया। हम दोनों हँस दिए।

‘ओके, यह थोड़ा अजीब था।’ मैंने कहा।

‘बिलकुल। मैंने यह एक्सपेक्ट नहीं किया था। हालाँकि, मुझे सुनकर अच्छा लगा था।’ नील ने कहा।

‘रियली? क्यों?’ मैंने जान-बूझकर नादान बनने की कोशिश करते हुए कहा।

‘वेल, मेरी एज के बावजूद उसने सोचा कि तुम मेरे साथ हो सकती हो। देट्स अ कॉम्प्लिमेंट!’

‘वेल, यह तो सच है। तुम जो रनिंग वगैरह करते हो, उसका असर है।’

हमने गिलास टकराए। अब मैं नील के साथ बहुत कंफर्टेबल हो गई थी।

‘तुम्हें यहाँ अपनी वाइफ के साथ आना चाहिए।’

‘हूँ? हाँ, कुसुम को यहाँ अच्छा लगेगा।’

‘तो तुम दोनों कॉलेज में मिले थे। तो क्या लव एट फर्स्ट साइट वाला मामला था?’

‘हाँ, ऐसा कह सकते हैं। हम दोनों एक ही क्लास में थे। वह अमेरिका में ही जन्मी और पली-बढ़ी थी। मैं यूके में रहा था। हम दोनों देसी होने के बावजूद वेस्टर्नाइज़ थे। तो इसलिए हमारी पटरी बैठ गई।’

‘हाऊ वंडरफुल।’

‘हाँ।’ उसने कहा और फिर खामोश हो गया। उसने एक बड़ा सिप लिया और फिर बोलने लगा।

‘हाऊ अबाउट यू? इतना प्यार किया कि अमेरिका ही छोड़ना पड़ा।’

‘अब फिर नहीं। यह प्यार-व्यार मेरे लिए है ही नहीं।’ मैंने चाकू से हार्ट-शेप्ड केक को काटते हुए कहा।

‘यह सिम्बोलिक है। तुम्हारे खून से लथपथ दिल में एक चाकू।’

मैं हँस दी।

‘हाँ, कुछ-कुछ ऐसा ही हुआ था। यूज़्ड टिशू की तरह इस्तेमाल के बाद फेंक देना। टीवी चैनल की तरह स्विच कर देना।’ मैंने कहा।

‘ओह, आई एम सॉरी। हालाँकि मैं थोड़ा सरप्राइज़्ड हूँ।’

‘सरप्राइज़्ड?’

‘तुम्हें कौन डेट कर रहा था? ब्रैड पिट?’

मैं हँस दी।

‘नॉट रियली? जस्ट अ रेगुलर गाय। मैडिसन एवेन्यू मे जॉब करने वाला। क्यों?’

‘आखिर कोई लड़का तुम्हें छोड़ कैसे सकता है?’

उसके शब्द मुझे अपने घावों पर मरहम की तरह लगे। मैं रो देती, लेकिन अपने बॉस के सामने रोने वाली लड़कियों लूज़र कहलाती हैं।

‘मुझमें ऐसा क्या खास है?’

‘तुम मज़ाक कर रही हो? तुम स्मार्ट हो, सक्सेसफुल हो, यंग हो, हार्ड वर्किंग हो, फनी हो, और खैर तुम्हारा सीनियर होने के नाते मुझे यह नहीं कहना चाहिए, मगर...’

‘मगर क्या?’

‘वेल, तुम खूबसूरत हो। इन फैक्ट, बहुत खूबसूरत।’

वॉव, क्या अभी-अभी नील गुप्ता ने मेरी खूबसूरती की तारीफ की थी? या क्या वह वाकई सच बोल रहा था?

मुझे लगा जैसे किसी ने मेरी नसों में बहुत सारा सेल्फ-एस्टीम इंजेक्ट कर दिया हो।

‘तुम यह सब केवल मुझे अच्छा महसूस कराने के लिए कह रहे हो ना, ’ मैंने कहा, जबकि मैं कहना चाहती थी कि प्लीज़, मेरी और तारीफ करो ना।

‘नहीं, मैं ऐसा क्यों करूँगा? आई मीन इट। तुम प्रोफ़ेशनली और पर्सनली मुझे आज तक मिले सबसे अमेज़िंग इंसानों में से हो।’

नील ने मेरी आँखों में झाँककर देखा। एक लम्हे की खामोशी हमारे बीच पसरी रही, जिसमें लहरों के टूटने की आवाज़ सुनाई देती रही। नील जैसे कूल इंसान ने मुझे अट्रैक्टिव पाया था। यह मेरे लिए बहुत था। लेकिन इसके बावजूद मैंने क्या जवाब दिया?

‘अगर मैं मार्कोस को कल शाम तक टर्म शीट भेज दूँ तो चलेगा?’ मैंने कहा।

एक महीने बाद

‘होल-व्हीट टोस्ट। फा सांग जोएंग मात।’ मैंने कहा। आखिरकार मैंने गोल्डमान कैफे पर ब्रेकफास्ट बुलवाना सीख लिया था। सुबह के साढ़े सात बज रहे थे और नील और मैं सबसे पहले आने वालों में थे। नील ने अपनी ब्लैक कॉफी और ओट्स बॉउल लिया। फिलीपींस विज़िट के एक महीने बाद हम टर्म शीट पर साइन करवा चुके थे। हम बैंक्स के साथ समझौते पर भी पहुँच चुके थे।

‘मैं तुम्हें डिटेल्स तो नहीं बता सकता, लेकिन मेरे पास एक गुड न्यूज़ है।’ नील ने कहा।

‘हमें खरीददार मिल गया है?’ मैंने उत्साह से पूछा।

‘श्श!’ नील ने कहा और अपने होंठों पर अंगुली रख दी। ‘यस। हम जल्द ही मार्कोस से मिलने जाएँगे और डील फिनिश कर लेंगे।’

‘कूल। एक हाथ से लोन्स टेक ओवर करना और दूसरे हाथ से कंपनी बेच देना।’

‘इसे ही कहते हैं बेस्ट डील एवर।’ नील ने कहा। हमने एक दूसरे को थंब-अप दिया। उसने डील-क्लोज़िंग डॉक्यूमेंट्स पढ़े।

‘लुक्स गुड। फिंगर्स क्रॉस्ड। जल्द ही खरीददार भी हमारे साथ होंगे।’

मैंने डॉक्यूमेंट्स लैपटॉप बैग में रख लिए। हमारी डेली कैफे मीटिंग के ये आखिरी के चंद मिनट्स मेरे लिए दिन का सबसे अच्छा हिस्सा बन गए थे। इसी दौरान नील और मैं काम के अलावा दूसरी चीज़ों के बारे में बात करते थे।

‘तुम्हारा नया अपार्टमेंट कैसा है?’ नील ने कहा।

‘बहुत ही अच्छा। 30वें फ्लोर पर होने से आसपास का व्यू बहुत अच्छा है। मैं अभी घर को सजा ही रही हूँ।’

‘चेक आउट आईकेईए, उनके पास घर के लिए बहुत अच्छा सामान रहता है। अच्छी डिज़ाइन्स, अच्छा प्राइस।’ नील ने कहा।

‘श्योर। मैं देखूँगी उसे। मुझे एक जिम भी ज्वॉइन करना है।’

‘तुमने कभी योगा ट्राय किया है?’

मैंने सिर हिला दिया। ‘शायद स्कूल में, जब योगा करना कम्पल्सरी था।’

नील हँस दिया।

‘चेक आउट प्योर योगा। उनका स्टूडियो बहुत ज़बर्दस्त है। मैं कभी-कभी जाता हूँ वहाँ।’

‘ओके। मेरा बर्थडे अगले हफ्ते आ रहा है। शायद मैं उसकी मेंबरशिप लेकर अपने को ट्रीट करूँ।’

‘ओह ग्रेट। हैप्पी बर्थडे इन एडवांस।’

‘थैंक्स। तो तुम योगा भी करते हो? इतना सब कैसे कर लेते हो?’

‘जब हम खुद से प्यार करते हैं, तो खुद का खयाल भी अच्छी तरह से रखते हैं, राइट?’

◆

कुल छब्बीस पिंक रोज़ेस थे मेरी डेस्क पर रखे उस बुके में, जो लाल फीते से लिपटा हुआ था। बुके अरमानी फियोरी से आया था। इस ब्रांड के बुके दो सौ डॉलर से कम के नहीं होते। बुके में एक छोटा सा सफेद लिफ़ाफ़ा था, जिसमें एक कार्ड रखा था। इस पर लिखा था : ‘हैप्पी बर्थडे : फ्रॉम द टीम।’

मैं हैरान थी। मेरे ग्रुप को खडूस किस्म का माना जाता था और वह इस तरह की बातों के लिए नहीं जाना जाता था। बियान्सा मेरे क्यूबिकल के पास से होकर गुज़री तो उसने भी मुझे बर्थडे विश किया। मैंने उसे विशेज और बुके के लिए थैंक्यू कहा। इससे खूबसूरत बुके मैंने कभी नहीं देखा था।

बियान्सा ने कहा : ‘यू आर वेलकम। जनरली हम ऐसा नहीं करते। शायद तुम नई थीं इसलिए। या शायद नील यही चाहते थे।’

‘नील?’

‘हाँ, यह पूरा आइडिया नील का ही है।’

टीम मीटिंग में मैंने सबको थैंक्स कहा।

‘ये फूल एक्सेप्शंस हैं।’ जोश ने कहा।

‘जनरली हम एक-दूसरे को गिफ्ट में बैड लोन डॉक्यूमेंट्स ही देते हैं।’ साइमन ने कहा। सभी हँस पड़े। मैंने नील की ओर देखा। वह मुझे देखकर मुस्करा दिया।

'मेट्रोपोलिटन बैंक ऑफ टोक्यो की ओर से एक टीम आई है। वे पोटेंशियल को-इंवेस्टमेंट्स के लिए मिलना चाहते हैं।' उसने कहा। वह यह साफ कर देना चाहता था कि अब बर्थडे और बुके पर और बात नहीं की जाएगी।

◆

'ये हैं तनाका-सान, ये हैं शिन-सान और मैं हूँ सुगिमुरा।' अराई सुगिमुरा ने अपनी टीम का परिचय देते हुए कहा। वे मेट्रोपोलिटन बैंक ऑफ टोक्यो के डिस्ट्रेस्ड ग्रुप के प्रमुख थे। जापान में सान शब्द सम्मानसूचक होता है, जैसे कि हिंदी में श्री।

'ला-धि-का-सान, ' अराई ने कहा। 'क्या मैंने आपका नाम ठीक से पुकारा है?'

'इट्स फाइन।' मैंने कहा और मुस्करा दी। जापानी बैंकर्स ने बैठने से पहले झुककर हमारा अभिवादन किया। बियान्सा ने हमसे पूछा कि हमें कुछ चाहिए तो नहीं। सभी चायनीज़ टी पर राज़ी हो गए।

'यह हमारे लिए सम्मान की बात है कि आप लोग यहाँ आए।' नील ने कहा। 'हम साथ-साथ बिज़नेस कैसे कर सकते हैं?'

'गुप्ता-सान, यह हमारे लिए भी खुशी का मौका है। गोल्डमान साक्स एक बहुत सम्माननीय बैंक है और मार्केट में आपके ग्रुप की बहुत अच्छी रेपुटेशन है।'

'थैंक्यू। यह सब मेरी टीम के कारण है।' नील ने कहा।

'तो आप किस तरह की डील्स के बारे में सोच रहे हैं? कोई पोल्ट-फोलियो?'

जापानी लोग र का उच्चारण ठीक से नहीं कर पाते हैं और अकसर र को ल बोलते हैं।

'राधिका ने हाल ही में एक डील की है, वे इस बारे में अच्छे से बता पाएँगी।'

'ला-धिका-सान?' अराई ने कहा।

'जी हाँ, मैं आपको बैंक ऑफ ईस्ट एशिया ऑक्शन के बारे में बता सकती हूँ..' मैंने बोलना शुरू किया, लेकिन अराई की हँसी ने मुझे रोक दिया।

'एक्सक्यूज़ मी?' मैंने कहा। मैं सोचने लगी कि मैंने कहीं कुछ गलत तो नहीं कह दिया।

'सॉली। मुझे तो लगा था कि ला-धिका-सान आपकी सेक्लेटली हैं।' अराई हँसता रहा। उसके साथी अपने बॉस का साथ देने के लिए खीसें निपोरने लगे।

'ये यंग लेडी हमारी सबसे अच्छी डिस्ट्रेस्ड डेट एनालायिस्ट में से है, ' नील ने कहा।

'येस येस, ऑफ कोल्स। बाय द वे, मुझे तो वो जोक याद आ रहा है, जिसमें कहा जाता है कि अगर कोई लेडी ना कहे तो उसका मतलब हां है शायद। और अगर वो हाँ कहे तो उसका मतलब है कि वह एक लेडी ही नहीं है।'

उसके कलीग्स को यह जोक बहुत पसंद आया और वे ज़ोरों से ठहाके लगाने लगे। पीटर, जोश, नील और मैं एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

'अराई-सान, शायद यह जोक आपको मज़ेदार लगा हो, लेकिन सच कहूँ तो यह मुझे अनकंफर्टेबल बना रहा है।' नील ने कहा।

'सॉली। आप कंटिन्यू कीजिए।'

मैंने गहरी साँस ली और अपनी बात जारी रखी : 'तो मैं कह रही थी।'

नील उठ खड़ा हुआ।

'एक्चुअली, नो।' नील ने कहा। 'दिस वोन्ट वर्क आउट।'

'क्या?' अराई ने कहा।

'सॉरी अराई-सान। हम आपके साथ बिज़नेस नहीं कर पाएँगे।'

'हमारे पास इनवेस्ट करने के लिए बिलियन डॉलर्स हैं। इसका बड़ा हिस्सा गोल्डमान साक्स को फीस के रूप में मिलेगा।' अराई ने हैरत के साथ कहा।

'मैं समझता हूँ, लेकिन...'

'एक्चुअली, इट्स ओके, नील।' मैंने कहा। 'अराई-सान, मैं आपको पोर्टफोलियो के बारे में बता रही थी...'

नील ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। 'अराई-सान, तनाका-सान, शिन-सान, यहाँ आने के लिए शुक्रिया। मुझे यकीन है आपको अच्छे पार्टनर मिल जाएँगे। वैसे भी हमारे पास पहले ही बहुत काम है।' नील ने कहा। जोश और पीटर उठ खड़े हुए। वे हैरान थे। जापानी बैंकर्स एक-दूसरे की ओर देख रहे थे।

'जोश आपको बाहर का रास्ता दिखा देंगे।' नील ने कहा और रूम से बाहर चला गया।

◆

'हे, राधिका। अंदर आ जाओ।' नील ने कहा।

मैं उसके ऑफिस गई थी। उसने पिंक शर्ट और लाल हर्मीज टाई पहन रखी थी। शर्ट के कारण उसका चेहरा भी कुछ-कुछ गुलाबी लग रहा था।

'बाय द वे, हैप्पी बर्थडे।' उसने कहा।

'थैंक यू फॉर द फ्लॉवर्स।'

'वे टीम की तरफ से थे।'

'बियान्सा ने मुझे बताया कि यह आइडिया तुम्हारा था।'

'ओह, उसने ऐसा कहा। तब तो वह कॉन्फिडेंशियलिटी का मतलब नहीं समझती।' नील ने कहा।

वह अपने कफ्स से खेलता रहा। वह ऐसा तब करता था, जब या तो वह बहुत नर्वस हो या बहुत एक्साइटेड।

'नील, तुमने वह जापानियों वाली डील कैंसल कर दी?'

'वेल, हम ऐसे लोगों के साथ काम नहीं कर सकते। उन्होंने तुम्हें कितना अनकंफर्टेबल बना दिया था।'

'हाँ मुझे थोड़ा बुरा ज़रूर लगा था, लेकिन एकाध कमेंट से ज़्यादा फर्क नहीं पड़ता है।'

'इट्स नॉट ओके, राधिका।' नील ने इतनी जोर से कहा कि बियान्सा ने भी सुन लिया।

'लेकिन हम उनके साथ बिज़नेस कर सकते थे।'

'तो?'

मैंने उसकी ओर देखा। हमारी नज़रें मिलीं। एक पार्टनर और एक एसोसिएट को जितनी देर तक एक-दूसरे को देखना चाहिए, उससे पलभर ज़्यादा को हमारी नज़रें मिली रहीं।

'लिसन राधिका, मैं किसी को भी तुम्हें इस तरह से ट्रीट करने की इजाज़त नहीं दे सकता। मेरा मतलब है मैं अपनी टीम के किसी भी मेंबर के साथ ऐसा बर्ताव बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

'ऑल राइट। लेकिन आई वाज़ फाइन।'

'नो, डोंट बी फाइन। कोई भी बिज़नेस इस लायक नहीं है।'

मैंने उसकी ओर देखा।

'थैंक्स।' मैंने दबी हुई आवाज़ में कहा।

'यू आर वेलकम। तो तुम्हारा बर्थडे प्लान्स क्या हैं?'

'आज रात मुझे हमारे प्रोस्पेक्टिव एल कासा बायर्स से मिलना है।'

'हे भगवान, तुम्हारा क्या किया जाए?'

'इट्स नॉट दैट बैड। साइमन ने ड्रिंक्स ऑर्गेनाइज़ की है। गोल्डमान के कुछ एसोसिएट्स भी आ रहे हैं।'

'नाइस। हैव फन।' उसने कहा।

में सोचने लगी कि मुझे उसे इनवाइट करना चाहिए या नहीं। उसने मेरा मन पढ़ लिया। इसलिए बोला : 'मैं भी आता, लेकिन मेरे आने पर बाकी लोग कंफर्टेबल नहीं हो पाएँगे।'

'आई अंडरस्टैंड। नो इश्यूज़।'

'हैप्पी बर्थडे अगेन, राधिका।' उसने कहा।

मैं अपनी डेस्क पर लौट आई। मैंने उस छब्बीस गुलाबों में से एक की पंखुड़ियाँ छुईं। मेरा फोन बजा। इंडिया से कॉल था। मैने फोन उठाया।

‘हे सिस्टर, ’ अदिति दीदी ने कहा, ‘हैप्पी बर्थडे। आज मैं घर आई हूँ और हम तुम्हें मिस कर रहे हैं।’

25

एक महीने बाद

‘हियर यू गो, होल-व्हीट टोस्ट, विद पीनट बटर एंड हनी।’ नील ने कहा और मेरा ब्रेकफास्ट मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने थंब-अप के इशारे से उसे शुक्रिया कहा। मैं एक कॉन्फ्रेंस कॉल पर थी। मैं अब वाइस-प्रेसिडेंट बन गई थी। दो हफ्ते पहले मुझे मेरा प्रमोशन मिल गया था। सुबह के सात बज रहे थे और हम गोल्डमान कैफे में बैठे थे। एल कासा के लिए ग्रीनवुड हॉस्पिटैलिटी नाम से एक संभावित खरीददार हमें मिला था। यह एक अमेरिकी कंपनी थी, जिसके दुनियाभर में पचास बुटीक होटल्स थे। कॉल पर न्यूयॉर्क के मर्जर्स डिपार्टमेंट के एमडी मैडॉक्स डीन, ग्रीनवुड के मालिक फिलिप्पे ग्रीनवुड, नील और मैं थे।

‘फिलिप्पे, डॉक्यूमेंट्स पुख्ता हैं। मेरे खयाल से हमें जल्द ही डील क्लोज़ कर लेनी चाहिए।’ नील ने कहा।

‘आई डोंट माइंड, लेकिन 50 मिलियन की कीमत बहुत ज़्यादा है। 40 के बारे में क्या खयाल है?’

नील ने मेरी ओर देखा। मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।

‘बहुत कम है।’ नील ने कहा।

‘ठीक है, फिर 45 पर फाइनल कर दो।’ ग्रीनवुड ने कहा।

नील ने फिर मेरी ओर देखा।

मैंने हाँ कर दिया।

‘डन!’ नील ने कहा।

‘दिस इज़ फैंटास्टिक! वी हैव अ डील।’ मैडॉक्स ने कहा।

‘सुपर। हम अगले हफ्ते फिलीपींस जाएँगे और एल कासा के साथ इसे क्लोज़ कर देंगे।’ नील ने कहा।

कॉल खत्म हो गया।

‘कॉन्ग्रैच्यूलेशंस।’ मैने कहा।

‘फाइनल प्रॉफिट कितना होगा?’

‘20 मिलियन, नेट, हमारे लिए।’

नील और मैंने हाई-फाइव किया।

◆

'तुम लोगों ने यह किया कैसे?' मार्कोस ने डॉक्यूमेंट्स के पन्ने पलटते हुए कहा। उसकी मुस्कराहट छुपाए नहीं छुप रही थी। उसका दिवालिया पिट चुका था, कंपनी बंद होने वाली थी और मास ले-ऑफ्स की हालत बन गई थी। लेकिन अब उसे सेटलमेंट फीस के रूप में 5 मिलियन डॉलर्स मिल रहे थे। साथ ही एक ग्लोबल खरीददार भी उसके रिसोर्ट्स को जीवित रखने को तैयार हो गया था।

'मार्कोस, हम यही करते हैं। हम डील्स क्लोज़ कर देते हैं।' नील ने कहा।

'वंडरफुल। आपको इस बार यहाँ बहुत दिन के लिए रुकना होगा। आप चाहें तो हर रात एक नए आइलैंड पर बिता सकते हैं।'

'काश। लेकिन हांगकांग में बहुत काम है। हमें कल निकलना होगा।'

'तो आप इस बार भी उसी जगह जाना चाहेंगे? पेंगालूशियन?'

'हाँ।' नील ने कहा।

'आपने मेरे लोगों की नौकरी बचाई। इसके लिए बहुत शुक्रिया।'

मैंने मार्कोस के दस्तख़त वाले सभी डॉक्यूमेंट्स कलेक्ट कर लिए। नील ने मार्कोस से हाथ मिलाया।

'आपके साथ बिज़नेस करना बहुत सुखद अनुभव रहा है।' नील ने कहा।

◆

मैं पेंगालूशियन आइलैंड रिसोर्ट के आईने के सामने खड़ी थी और खुद को हर एंगल से देख रही थी। मैं सोच रही थी कि कहीं मेरे ब्लैक शॉर्ट्स और मेरी पिंक स्पोर्ट्स ब्रा के ऊपर व्हाइट गंजी कहीं ज़्यादा दिख तो नहीं रहे थे। नील ने कहा था कि डील-क्लोज़िंग सेलिब्रेशन डिनर से पहले थोड़ी दौड़ लगाई जाए। 'नई कैलोरी लेने से पहले थोड़ी कैलोरी जला ली जाए।' उसने कहा था।

'इट्स फाइन, बी कूल अबाउट इट।' मैंने आईने में खुद को आखिरी बार देखते हुए कहा। मेरे शॉर्ट्स कुछ ज़्यादा ही छोटे थे। और गंजी भी बहुत छोटी थी।

मैं नील से रिसेप्शन एरिया में मिली। उसने नीली वर्कआउट टी-शर्ट और ब्लैक साइकिलिंग शॉर्ट्स पहन रखे थे। उसने ब्लू मिरर-टेंटेड रेबैन्स भी पहन रखे थे।

'वॉव, तुम तो पूरी ही बदल गई हो।' उसने कहा। चूँकि उसने सनग्लासेस पहन रखे थे, इसलिए पता नहीं चल पा रहा था कि वह मुझे निहार रहा था या नहीं। लेकिन शायद मैं चाहती थी कि वह मुझे देखे।

'मैंने एक अरसे से दौड़ नहीं लगाई है।'

'हम केवल जॉगिंग करेंगे। आइलैंड के तीन राउंड लगाएँ?'

'दो, प्लीज़।'

वह हँस दिया।

'ओके, लेट्स गो।' उसने कहा।

हम उस छोटे-से आइलैंड का चक्कर काटते रहे। अपनी पिछली ट्रिप पर हम इस रूट पर चल चुके थे। लेकिन इस बार सब कुछ और भी खूबसूरत लग रहा था। सूरज की चमकीली रोशनी के बावजूद ठंडी हवा चल रही थी, जिससे तापमान नियंत्रित था। हम पानी से दूर बीच पर जॉग कर रहे थे। नील जानबूझकर धीरे दौड़ रहा था, ताकि मुझसे बहुत आगे ना निकल जाए। वह मेरे आगे-आगे दौड़ रहा था। मैने उसकी मज़बूत टांगों को देखा। वह बहुत ग्रेसफुल तरीके से दौड़ रहा था, जबकि मैं हाँफने लगी थी। मैं तो पहले राउंड के बाद ही बैठ जाना चाहती थी, लेकिन नील ने मुझे ऐसा नहीं करने दिया।

'इनफ।' मैने अपना पेट थामते हुए कहा।

'कम ऑन, तुम बहुत अच्छा कर रही थीं।'

दूसरे राउंड में वह मेरे पीछे रहा। मैं अपनी आँखों के कोने से उसे बार-बार पीछे देखती रही। पता नहीं, उसने मेरी टांगों को नोटिस किया या नहीं। लेकिन यह संभव नहीं था कि उन पर ध्यान ना जाए। खासतौर पर इसलिए भी, क्योंकि दौड़ने के कारण शॉर्ट्स और ऊपर चढ़ जा रहे थे।

'मैं और नहीं दौड़ सकती।' मैंने हाँफते हुए कहा।

'यदि मैं थोड़ा और दौड़ लूँ तो चलेगा ना?'

'श्योर।'

'दो एक घंटे बाद डिनर के लिए मिलते हैं।' उसने कहा और जल्द ही दौड़ते हुए मेरी आँखों से ओझल हो गया।

मैं अपने रूम में आई और शॉवर लिया। अपना सूटकेस खोला और उसमें से फ्लोरल प्रिंट वाली व्हाइट फ्लोइंग ड्रेस निकाली। किसी आइलैंड रिसोर्ट डिनर के लिए वह परफेक्ट लग रही थी। उसमें डीप नेकलाइन थी। उसे कवर करने के लिए मैंने एक नेकलेस पहना। मेकअप किया और आँखों पर स्मोकी इफेक्ट दिया। परफ्यूम और लिप ग्लॉस लगाया। मुझे महसूस हुआ कि न्यूयॉर्क के बाद मैं पहली बार सज-सँवर रही थी। उसके बाद मैंने अपने को आईने में देखा। क्या उसे मैं अच्छी लगूँगी? मेरे दिमाग में यह सवाल तैर गया। मेरे भीतर की मिनी-मी ने मुझे डपटते हुए कहा : वह भले ही तुमसे दोस्ताना व्यवहार कर रहा हो, लेकिन वह एक पार्टनर है और मैरिड भी। समझीं?

Downloaded from Ebookz.in

26

मैं नील से पहले रेस्तरां पहुँच गई। सनसेट देखते हुए मैंने शैम्पेन पी। वह बीस मिनट बाद आया।

‘सॉरी, मुझे देर हो गई। मैं थोड़ा ज़्यादा दौड़ लिया।’

उसने व्हाइट टी-शर्ट और शॉर्ट्स पहने थे।

‘इट्स ओके।’ मैंने कहा। उसने कुर्सी खींची और मेरे सामने बैठ गया।

‘वॉव।’ उसने मुझे देखते हुए कहा।

‘क्या?’

‘तुम कुछ अलग लग रही हो।’

‘अच्छी अलग या बुरी अलग?’

‘यू लुक स्टनिंग, एक्चुअली। तुम पर यह ड्रेस बहुत अच्छी लग रही है।’

‘थैंक यू, नील। दैट्स स्वीट ऑफ यू।’ अब मैं कॉम्प्लिमेंट्स को रिसीव करना सीख गई थी।

उसने अपनी सैंडल्स निकाल दीं ताकि उसके पैर रेत को छू सकें। मैंने भी अपनी हील्स निकाल दीं।

‘मेरी ड्रिंक कहाँ है?’ नील ने वेटर को इशारा करते हुए कहा। वेटर ने उसके लिए शैम्पेन उड़ेल दी।

‘तो, दौड़ने के बाद तुम कैसा महसूस कर रही हो?’

‘गुड। लेकिन मुझे अपना स्टैमिना बढ़ाने की ज़रूरत है। मुझसे ज़्यादा उम्र के लोग मुझसे ज़्यादा दौड़ रहे हैं।’

नील खिलखिलाकर हँस दिया। वेटर मेनू च्वॉइसेस ले आया। मैंने वेजीटेरियन ऑप्शन चुना। नील ने सी-फूड और साल्मन चुना।

‘टु एल कासा, एशिया में तुम्हारी पहली बिग डील।’ नील ने अपना ग्लास उठाते हुए कहा।

‘टु ग्रीनवुड, एल कासा के नए मालिक।’ मैंने उसके ग्लास से अपना ग्लास छुआते हुए कहा।

‘क्या रिसोर्ट है, है ना?’ नील ने आसपास के खूबसूरत नज़ारे के लिए इशारा करते हुए कहा।

‘मैं अपनी ज़िंदगी में इससे खूबसूरत जगह पर कभी नहीं आई।’

‘मैं भी। और वह भी इतने ब्यूटीफुल माइंड के साथ।’

‘हाँ, मेरे पास केवल ब्यूटीफुल माइंड ही तो है।’

‘बिलकुल नहीं। लेकिन यह ठीक नहीं होगा कि मैं बाकी चीज़ों पर कमेंट करूँ। प्रोटोकॉल।’

‘हमें एक बात साफ कर लेनी चाहिए।’

‘क्या?’

‘हम दोस्त हैं या कलीग हैं या तुम मेरे सुपर-सीनियर बॉस हो?’

‘यह तो बहुत मुश्किल सवाल है।’

‘सचमुच?’

‘फैक्ट तो यही है कि मैं ग्रुप का हेड हूँ और तुम एसोसिएट हो और अब ऑलमोस्ट वीपी बन चुकी हो। चीयर्स।’

‘तो हम क्या हुए। कलीग्स?’

‘वेल नहीं। मुझे लगता है कि इतनी ब्रेकफास्ट मीटिंग्स के बाद हम एक-दूसरे को जानने लगे है। इन फैक्ट।’ वह कहते-कहते रुक गया।

‘इन फैक्ट क्या?’

‘इन फैक्ट, यह डील पूरी होने के बाद मैं हमारी ब्रेकफास्ट चैट्स को बहुत मिस करूँगा। हमारी ओटमील और पीनट-बटर-टोस्ट बातचीते।’

‘तुम हनी को भूल रहे हो।’

वह हँस दिया।

‘मैं भी मिस करूँगी।’

‘वेल, लाइफ गोज़ ऑन। नया दिन, नई डील।’

‘वेट। तो क्या हम फ्रेंड्स नहीं हैं?’

‘क्या हम हो सकते हैं?’

‘क्यों नहीं?’

‘बहुत वजहें हैं। मैं तुम्हारा सीनियर हूँ। तुमसे बीस साल बड़ा हूँ। मैरिड हूँ। मेरे दो बच्चे हैं। जबकि तुम यंग और सिंगल हो। स्मार्ट और अट्रैक्टिव हो।’

’अट्रैक्टिव?’ मैंने कहा और मुस्करा दी।

‘येस, ऑफ कोर्स। तुम सचमुच अट्रैक्टिव हो, राधिका। मैं केवल फैक्चुअल बात कर रहा हूँ।’

‘थैंक यू। तुम भी बहुत कूल हो।’

‘ये क्या है? बैंकर्स की आपसी तारीफों के पुल वाली सोसायटी?’

हम दोनों हँस दिए। वेटर ने हमारे शैम्पेन ग्लासेस भर दिए।

‘हम फ्रेंड्स हैं। मैं अब तुम्हें जूनियर की तरह नहीं देखता।’

‘लेकिन याद रखना मैं अपने फ्रेंड्स के साथ बहुत कैज़ुअल हो जाती हूँ। यदि मैं लाइन क्रॉस करूँ तो मुझे बता देना। आखिर तुम मेरे सीनियर हो।’

‘लेकिन मैं टिपिकल सीनियर नहीं हूँ। तुम मेरे सामने खुलकर बात कर सकती हो।’

‘सचमुच?’

‘हाँ।’

‘ओके तो ये बताओ कि तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो। एज अ पर्सन। बी फ्रैंक।’

वह मुस्करा दिया।

‘तुम स्मार्ट हो, ऑफ कोर्स। लेकिन तुम सिम्पल भी हो और कुछ-कुछ खोई-खोई-सी लगती हो। मैं अपनी ज़िंदगी में तुम्हारी जितनी अट्रैक्टिव लड़कियों से कम ही मिला हूँ। शायद तुम्हारे साथ सेल्फ-एस्टीम वाली प्रॉब्लम भी है। तुम सेंसेटिव हो, लेकिन तुमने अपने को बंद कर लिया है। शायद न्यूयॉर्क में जो कुछ हुआ, उसके बाद।’

‘वॉव।’

‘कुछ ज़्यादा फ्रैंक तो नहीं हो गया?’

‘शायद हाँ, बट नॉट बैड। ऐसा लगता है कि तुम मेरे बनाए फाइनेंशियल मॉडल्स के बजाय मुझे ज़्यादा ऑब्ज़र्व करते रहे हो।’

‘ओह, लेकिन तुम्हारा काम अव्वल दर्जे का है। तुम एक दिन पार्टनर बनोगी। राधिका मेहता, पार्टनर, गोल्डमान साक्स।’

बैकग्राउंड में एक फ्रेंच गीत बजने लगा। उसके बोल तो मैं समझ नहीं पा रही थी, लेकिन वह अच्छा लग रहा था।

‘पार्टनर राधिका। लेकिन अकेली, विदआउट लव। बहुत सारी डील्स को तमगों की तरह पहने हुए।’

‘व्हाट नॉनसेंस! राधिका, विद अ लॉट ऑफ लव।’

‘जो भी हो। लगता तो नहीं। यह कौन-सा गीत है?’

‘ला वी एन रोज। बहुत मशहूर फ्रेंच गाना है। बट सीरियसली, तुम यही सोचती हो कि तुम्हें प्यार नहीं मिलेगा?’

‘हाँ, शायद यह मेरा सबसे बड़ा डर है।’

‘तुम न्यूयॉर्क के बारे में बताना चाहोगी?’

वेटर शैम्पेन की एक और बोतल ले आया। डिनर के दौरान मैंने उसे अपनी पूरी कहानी सुनाई। वह पूरे ध्यान से सुनता रहा।

‘और बस, इतना ही। मैंने ईस्ट नदी में अपना फ़ोन फेंक दिया और हांगकांग आ गई।’

‘लेकिन तुम चाहतीं तो केवल सिम कार्ड फेंक सकती थीं और फ़ोन को फिर से फैक्टरी सेटिंग्स पर कर सकती थीं।’

मैंने नील की ओर देखा और पता नहीं क्यों हम दोनों ज़ोरों से हँस पड़े।

‘इट्स ओके। लाइफ में ये सब होता रहता है। अकसर यह अच्छे के लिए ही होता है।’

‘मोर शैम्पेन, सर?’ वेटर ने पूछा।

‘एक्चुअली नो। मैं...’ नील कह रहा था, लेकिन मैंने बीच में ही टोक दिया।

‘एक्चुअली येस। हम एक और बॉटल लेंगे।’

‘रियली?’ वेटर के जाने के बाद नील ने पूछा।

‘वेल, मैंने तुम्हें अपने बारे में बहुत कुछ बता दिया। लेकिन अभी तुम्हारी कहानी बाकी है। उसी के लिए एक ड्रिंक की ज़रूरत होगी।’

‘ठीक है, तो हो जाए। लेकिन तुम मेरे बारे में क्या सोचती हो, ऐज़ अ पर्सन?’

‘वेल, तुम एक पहेली की तरह हो।’

‘पहेली?’

‘हाँ, मिस्टीरियस। तुम स्मार्ट हो। ओवरअचीवर हो। फिट, गुड लुकिंग, चार्मिंग। लेकिन...’

‘लेकिन क्या?’

‘मुझे नहीं लगता कि तुम खुश हो। तुम्हारे पास सबकुछ है, जो कोई भी चाह सकता है, फिर भी तुम खुश नहीं लगते।’

‘मैं खुश हूँ। देखो मुझे। मैं एक आइलैंड की सैर करने आया हूँ और इसके लिए मुझे मोटी तनख्वाह दी जाती है।’

‘हाँ, ऐसा है और तुम्हें बहुत अच्छी तनख्वाह भी मिलती है, लेकिन खुश होने के लिए इतना ही तो काफी नहीं है।’

उसने कोई जवाब नहीं दिया। मेरी तरफ कुछ खोजती हुई आखों से देखा।

‘तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मैं खुश नहीं हूँ?’

‘मुझे लगता है तुम एक मास्क पहनते हो। एक परफेक्ट मास्क। एक हार्ड-वर्किंग फैमिली मैन, जो अपनी डाइट कंट्रोल करता है, रेगुलर एक्सरसाइज़ करता है। यह सब बहुत परफेक्ट है, तुम्हारी परफेक्टली इस्तरी की गई कमीज़ की तरह, जिसमें एक सलवट तक नहीं।’

उसने मेरी ओर हैरत से देखा।

‘क्या मैंने अपनी लाइन क्रॉस कर दी?’

उसने सिर हिलाकर इनकार कर दिया।

‘नहीं, नहीं। इट्स ओके। लेकिन तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?’

‘तुम कभी अपनी फैमिली के बारे में बात नहीं करते।’

‘करता तो हूँ। मैंने तुम्हारा बताया, कुसुम मेरी वाइफ है, दो बच्चे हैं।’

‘फैक्चुअल बातें।’

‘मतलब?’

‘यह डाटा की तरह है, जिसमें कोई फीलिंग नहीं।’

‘ओके। वॉव। तो तुम मेरे बारे में यह सोचती हो?’

‘आई एम सॉरी, अगर मैंने कुछ गलत कह दिया हो तो।’

‘नो, इट्स कूल।’ उसने कहा और मुस्करा दिया।

वेटर ने हमारी डिनर प्लेट हटा दीं। फिर वह हमारे लिए डेजर्ट ले आया : मैगो विद स्टिकी राइस।

‘तुम्हारी वाइफ तुम्हारी इन तमाम कामयाबियों से खुश है?’

‘हाँ, ’ नील ने जैसे बहुत कोशिश करते हुए कहा। ‘वह खुश है। हम बीस सालों से साथ हैं। उसने मेरी पूरी जर्नी देखी है।’

‘बीस साल? वॉव, यानी जब तुम लोग मिले, तब मैं केवल पाँच साल की थी।’

‘ओह, अब तुम मुझे ओल्ड महसूस करा रही हो।’

‘इतने समय से मैरिड होना कैसा लगता है?’

‘इट्स नाइस। हम एक ज़िंदगी साथ मिलकर बनाते हैं। उसमें बहुत सारी यादें होती हैं। आप इस दुनिया में कुछ नए प्राणियों को लेकर आते है।’

‘हूँ, ये तो खूबसूरत है।’

‘और इसके बावजूद, जब आप किसी इंसान के साथ इतने लंबे समय तक रहते है, तो चीज़ें वैसी ही नहीं रह जातीं। दिक्कतें सामने आती हैं। बहुत सारी दिक्कतें। बहुत-बहुत सारी दिक्कतें।’

‘ओके, वेल अगर तुम्हारा मन हो तो ही इस बारे में बात करो।’

‘मैं तुम्हें बोर नहीं करूँगा। मेरे पास ऐसी कोई एक्साइटिंग स्टोरी नहीं है, जिसमें ब्रुकलिन ब्रिज से आईफोन नीचे पानी में फेंक दिए जाते हैं। मेरे पास बस स्टुपिड घरेलू कहानियाँ हैं।’

‘हे, वो बहुत पुराना फ़ोन था। मैं वैसे भी एक नया फोन लेने वाली थी।’

हम दोनों हँस दिए।

‘यू आर फनी।’

‘मैंने आज बहुत खा लिया।’

‘मैंने भी। चलो, एक वॉक कर आते हैं।’

‘एक और वॉक? यू आर मिस्टर हाइपरएक्टिव, ऐसा लगता है।’

वह हँस दिया। उसने एक फ्लैशलाइट उठाई, जो हर टेबल पर रखी थी। मैंने दो ग्लास और शैम्पेन की आधी भरी बोतल उठा ली।

‘क्या?’

‘हम इसे भी साथ ले सकते हैं।’

हम उसी रास्ते पर एक बार फिर चल पड़े, जहाँ हम चंद घटे पहले चल रहे थे, लेकिन इस बार नंगे पैर। अंधेरे में आइलैंड जैसे पूरा ही बदल गया था। हम समुद्र के किनारे-किनारे

चलते रहे। पानी हमारे पैरों को छू जा रहा था। हम फ्लैशलाइट की मदद से आगे बढ़ते चले जा रहे थे। केवल लहरों के टूटने की आवाज़ आ रही थी। कुछ देर बाद मैंने ही खामोशी तोड़ी।

'तुम थक गए होगे। पाँच राउंड दौड़े थे।'

'थोड़ा-बहुत।'

हम आइलैंड के उत्तरी छोर पर पहुँच गए थे। लहरें यहाँ मद्धम हो गई थीं और शोर नहीं कर रही थीं। दूर फिशिंग बोट्स नज़र आ रही थीं। आसपास के आइलैंड्स के मछुआरे रात को मछलियाँ पकड़ने निकले थे।

'हम थोड़ी देर बैठ सकते हैं?' मैंने कहा।

'श्योर।'

हम ठंडी रेत पर चुपचाप बैठ गए। उसने फ्लैशलाइट बंद कर दी। चाँदनी में हम केवल एक-दूसरे की शक्लें देख पा रहे थे। मैंने हमारे लिए एक-एक ग्लास शैम्पेन बनाई। उसने एक घूँट पिया। मैंने आकाश की ओर सिर उठाकर देखा। आकाश तारों से भरा था।

'वॉव, जरा ऊपर तारों की बारात तो देखो।' मैंने कहा।

उसने भी सिर उठाकर देखा।

'हांगकांग से उलट यहाँ कोई पॉल्यूशन नहीं है। और ना ही शहरी रोशनियाँ।'

'हाँ, मुझे कभी हांगकांग में तारे नज़र नहीं आए।'

'तुम तारों को पहचान सकती हो?'

मैंने सिर हिला दिया। उसने आकाश में सात तारों के एक समूह की ओर इशारा करते हुए कहा : 'देखो, वह उर्सा मेजर है। इसे ग्रेट बियर भी कहते हैं।'

मैं उसकी अंगुली को देखते रही। वह बोलता रहा।

'और वो रहा नॉर्थ स्टार।'

'तुम्हें यह कैसे पता?'

'मेरे पास एक टेलीस्कोप हुआ करता था ज़रा सोचो, सदियों पहले जब नाविक समुद्री यात्राओं पर निकलते थे तो इन तारों का ही सहारा लेते थे।

उनके पास कोई जीपीएस नहीं था।'

'अनबिलीवेबल।' मैंने कहा।

मेरी गर्दन दर्द करने लगी थी, इसलिए मैं रेत पर पीठ के बल लेट गई। अब मैं सीधे आकाश के तारों को देख पा रही थी। नील भी पास लेट गया।

'तुम्हारी राशि क्या है?'

'मेरा बर्थडे अभी कुछ दिन पहले ही गया है।'

'तब तो वह जैमिनी हुई। वे रहे जैमिनी ट्विन्स।'

'और तुम्हारी राशि?'

‘टॉरस। देखो, वहाँ पर।’

‘वॉव।’

फिर हम चुप हो गए। मुझे इस खामोशी और तनहाई में अच्छा रहा था। शायद इसमें शैम्पेन की भी कोई भूमिका रही हो। मुझे नील की साँसें सुनाई दे रही थीं। मैंने अपने पैर फैलाए। मेरी पिंडलियाँ नील के पैरों से टकरा गईं। उसने मेरी तरफ देखा।

‘आई एम सॉरी।’

‘इट्स फाइन।’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। हमने एक-दूसरे की ओर देखा और मुस्करा दिए। इसे गर्ल्स इंट्यूशन कह लें या कुछ और, लेकिन मुझे लगा कि कुछ होने वाला है। मैं चाहती तो मुँह फेर सकती थी, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। शायद मैं भी चाहती थी कि कुछ हो।

वह आगे बढ़ा और अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिए। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। मेरे हाथ उसे रोकने के लिए आगे बढ़े, लेकिन बीच में ही रुक गए, क्योंकि वह एक बहुत खूबसूरत किस था। वह मुझे देर तक चूमता रहा और लहरें मेरे पैरों पर आकर टकराती रहीं। उसने मुझे और करीब करने के लिए अपनी बाँहें उठाईं। नील गुप्ता, पार्टनर, उम्र में मुझसे बीस साल बड़ा मर्द और मेरे बॉस का भी बॉस, मुझे कसकर पकड़े हुआ था और चूम रहा था। मैंने कोई विरोध नहीं किया। शायद मुझे करना चाहिए था, लेकिन जब कुछ इतना अच्छा लग रहा हो, तब उसका विरोध करना बहुत मुश्किल हो जाता है। मैंने उसके चेहरे पर अपना हाथ रख दिया। वही चेहरा, जिसे मैं पिछले कई महीनों से रोज़ देख रही थी, लेकिन कभी छुआ नहीं था। मैं उससे जुड़ाव महसूस कर रही थी। मुझे लगा कि यह आइलैंड शायद इसीलिए बना था कि हम यहाँ आकर प्यार कर सकें।

एक तेज़ लहर आई और हमें कमर तक भिगो गई।

वह मुझे चूमता रहा। हर गुज़रते लम्हे के साथ उसकी इंटेंसिटी बढ़ती गई। उसकी अंगुलियाँ मेरी गर्दन से नीचे उतरने लगीं। मेरे रौंगटे खड़े हो गए। अगर उसका किस ऐसा था तो...? उसका दूसरा हाथ मेरी जांघों पर गया और मेरा दिल ज़ोरो से धड़कने लगा।

क्या मुझे उसको रोकना चाहिए? मैंने अपना हाथ उसकी कमर पर रख दिया, लेकिन कोई विरोध नहीं किया। एक और ज़ोरदार लहर आई और इस बार उसने मेरे पूरे कपड़ों को गीला कर दिया।

क्या मैं सच में यह करने जा रही थी? मेरे दिमाग ने बहुत दबी हुई आवाज़ में मुझसे आखिरी बार पूछा, जबकि मैं तो कराहने लगी थी। इस रात दिमाग की सुनने की किसको परवाह थी? मेरा हाथ उसकी कमीज़ के भीतर चला गया। मैंने उसकी सख्त छाती को छुआ और अपनी अंगुली से उसके लेफ्ट निप्पल को सहलाने लगी। उसने एक्साइटमेंट में मेरे निचले होंठ को लगभग चबा डाला।

हम बैठ गए। उसने अपनी कमीज़ उतार दी। फिर उसने मेरी ड्रेस निकाल दी। हम फिर लेट गए। उसने मेरी नाभि को चूमा। मैंने उसके सिर को अपने हाथों में थाम लिया।

'नील।' मैंने फुसफुसाते हुए कहा, लेकिन उसने कुछ नहीं सुना। उसका मुँह और अंगुलियाँ मुझे टटोलते रहे। उसके हाथ मेरे ब्रा पर गए। इत्मीनान से उसने मुझे उठाया और एक झटके में मेरी ब्रा को खोल दिया। मेरी ब्रेस्ट्स ने ठंडी हवा को महसूस किया। उसने पलभर रुककर मेरे ब्रेस्ट्स निहारे, चांदनी रात में जितना भी वह देख सकता था।

उसने अपनी अंगुली के पोर से मेरे एक निप्पल को छुआ। दूसरे हाथ में मेरे ब्रेस्ट को थाम लिया। मैं जैसे पिघलती चली जा रही थी। जब मेरे हाथों ने उसके शॉर्ट्स को छुआ तो मुझे पता चला गया कि वह कितना एक्साइटेड हो गया था। उसका मुँह मेरे ब्रेस्ट्स पर था।

मैंने अपने हिप को थोड़ा-सा उठाया और उसने मेरी अंडरवियर निकाल दी। अब हम दोनों उस रेतीले किनारे पर पूरी तरह से बिना कपड़ो के थे। वह मुझ पर झुका और मेरी इनर-थाईज को चूमने लगा। फिर उसकी जीभ उस जगह पर गई और उसने मुझे बहुत प्यार से वहाँ चूमा। मैं एक्साइटमेंट में जैसे उछल ही पड़ी।

उसके हर किस की तरह यह भी बहुत हल्का और स्लो था। लेकिन अब मैं थरथराने लगी थी। धीरे-धीरे उसकी जीभ ने रफ्तार पकड़ी। अब मेरे लिए बर्दाश्त करना कठिन होता जा रहा था। मेरी पीठ धनुष की तरह तन गई। देबू ने भी नीचे जाकर वहाँ मुझे प्यार किया था, लेकिन इस बार अलग ही बात थी। यदि देबू फ्रेंच फ्राइज़ था तो यह सिक्स-कोर्स मील था। यदि देबू बीयर था तो यह शैम्पेन थी। यदि देबू नाव था तो यह लग्ज़री क्रूज था। नील अपनी जीभ से जादू कर रहा था। मैने अपनी अंगुलियाँ उसके सिर में गड़ा दीं।

मुझे अपने भीतर ऑर्गेज्म उमड़ता हुआ महसूस हुआ और उसे भी। मैंने उसके चेहरे को अपनी जाँघों के बीच में थाम लिया। मुझे बहुत इंटेंस ऑर्गेज्म हुआ। वह उठा और अपने चेहरे को मेरे करीब ले आया। उसने मेरी टांगों को आहिस्ता से अलग किया और मेरे भीतर दाखिल हो गया। वह धीरे-धीरे मूव कर रहा था। उसके स्ट्रोक्स गहरे लेकिन कोमलता से भरे थे। मुझे फिर अपने भीतर सनसनी महसूस हुई और मुझे दोबारा ऑर्गेज्म हुआ। इस बार पहले से भी ज़ोर से। मेरा पूरा शरीर काँप रहा था। मैंने अपनी औखें बंद कर लीं और ऐसा लगा जैसे तीस सेकेंड के लिए सबकुछ ब्लैकआउट हो गया है। यह एक ऑर्गेज्म दस के बराबर था।

वह मुझसे बाहर निकल आया। वह अपना चेहरा मेरे चेहरे के करीब लाया और प्यार से मेरे गाल पर काटा।

'तुम ठीक हो?' उसने कोमल स्वर में पूछा।

'यह... यह कुछ ख़ास था। तुमने यह सब कैसे किया?'

वह मुस्करा दिया। मैने हाथों से अपना चेहरा छुपा लिया। उसने आहिस्ता से मेरे हाथों को हटाया और मेरी आखों में देखने लगा।

वह फिर मुझमें दाखिल हूआ। इस बार मैं अपने भीतर उसे और बड़ा महसूस कर रही थी। मैंने उसके कंधों को थाम लिया और हम प्यार करते रहे। लहरें समय-समय पर हमसे आकर टकराती रहीं। हम तब तक चूमते रहे, जब तक कि वह मुझ पर ढेर नहीं हो गया।

आखिरकार उसने मेरी आँखों में देखा और मुस्करा दिया। वह मेरी पलकों से खेलने लगा और मुझे अपनी बाँहों में ले लिया। हम एक-दूसरे की ओर मुँह किए लेटे थे।

'यह वाकई बहुत ख़ास था।'

'मैं जानती हूँ।'

सितारे हमारे ऊपर टिमटिमाते रहे। थकान मुझ पर हावी होने लगी थी। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं।

27

दिन की रोशनी में हमें सबकुछ साफ-साफ दिखने लगता है, हमारी गलतियाँ भी। सुबह होने पर मैंने औखें खोलीं। मैं यह समझने की कोशिश कर रही थी कि अभी मैं कहाँ हूँ। मेरा मुँह सूख रहा था और सिर में दर्द था। नील मेरे पास सोया हुआ था।

'नो वे, ' मैंने मन-ही-मन बुड़बुडाते हुए कहा। 'नो वे, राधिका। नो वे।

मेरे कपड़े पास ही में पडे हुए थे। मैंने उन्हें जितनी जल्दी हो सकता था, पहन लिया। फिर मै उठ खड़ी हुई और सोचने लगी कि क्या मुझे नील को जगाना चाहिए। फिर मैंने सोचा कि ऐसा नहीं करना चाहिए। मैंने ग्लासेस और खाली बोतलें उठाई, जिनकी वजह से पिछली रात का वह हादसा हुआ था, और पैदल चलने लगी। सूरज चढ़ता जा रहा था। मैं नील को फ़ेस नहीं करना चाहती थी। इन फैक्ट, मैं आज के बाद कभी उसे फ़ेस नहीं करना चाहती थी।

अपने रूम में आकर मैं बेड पर लेट गई और छत को ताकने लगी।

'फ़क' मैंने ज़ोर से चिल्लाकर कहा। 'ये तुमने क्या कर डाला, राधिका?'

मैं बिना हिले डुले वहाँ लेटी रही। मेरे दिमाग में बहुत सारी बातें घूम रही थीं। ये मैंने क्या कर दिया। मैं गोल्डमान साक्स के पार्टनर के साथ सोई। मैं एक ऐसे मर्द के साथ सोई, जो मुझसे बीस साल बड़ा था! मुझे याद आया कि नील मेरे पापा से दस साल ही छोटा था।

राधिका, तुम यह कैसे कर सकती हो? मिनी-मी अपनी गुफा में से उछलकर बाहर आ चुकी थी और उसने मुझ पर पूरी तरह से काबू कर लिया था।

तुम्हारे साथ कुछ गड़बड़ है। तुम एक ब्लड़ी यूज़लेस लिटिल इडियट हो।

मेरा हैप्पी मूड जाने कहाँ गायब हो गया था। कल तक मैं कितनी खुश थी। मैंने एक बिग डील फाइनल की थी। मेरा प्रमोशन होने वाला था। मैं देबू को भी लगभग पूरी तरह भूल चुकी थी। मैं अपने बारे में अच्छा महसूस कर रही थी। अब वह सब कचरा हो गया! मैं बिस्तर में सिमटी-सी रोने लगी। मिनी-मी मुझ पर हावी होती चली गई।

ही इज़ फ़किगं मैरिड। उसके दो बच्चे हैं। बीवी है। वे सभी हांगकांग में उसका इंतज़ार कर रहे होंगे, जहाँ तुम रहती हो।

यह सच है। और मैं यह सब जानती थी। तो फिर कल रात वह सब करते हुए मैं क्या सोच रही थी? और अगर नहीं सोच रही थी, तो क्यों नहीं सोच रही थी?

लाइफ फिलीपींस का कोई प्राइवेट आइलैंड नहीं है, मिनी-मी ने मुझ पर चिल्लाते हुए कहा। मुझे पता है, पता है मुझे, मैंने मिनी-मी का सामना करने की कोशिश की।

इसी कारण देबू ने तुम्हें छोड़ दिया था। तुम एक स्लटी बिच हो। समथिंग इज़ सीरियसली रॉन्ग विद यू!

मैं सुबक-सुबककर रो रही थी। पता नहीं क्यों, लेकिन मैं रोए चली जा रही थी। मैंने अपनी सीमा लांघ दी थी। लांघना तो क्या, मैंने उस सीमा के ऊपर से कूदकर मीलों लंबी छलांग लगा दी थी!

तुम्हारी ज़िंदगी में एक ही चीज़ अच्छी हो रही थी, तुम्हारा कैरियर। अब तुमने उसके भी बारह बजा दिए है, मिनी - मी कहती रही।

इसी में खासा समय बीत गया। फिर मुझे महसूस हुआ कि मुझे एक घंटे में तैयार होकर सी-प्लेन पकड़ना है। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उसको कैसे फ़ेस करूँगी। मैं इसके लिए तैयार नहीं हो पा रही थी। क्या यह मुमकिन है कि हम अलग-अलग फ्लाइट से जाएँ? या फिर क्या यह हो सकता है कि मैं जाकर समुद्र में डूब मरूँ?

फिर मैं सोचने लगी कि नील कहाँ है। क्या होगा अगर वह अभी तक उठा नहीं हो तो? क्या मुझे उसे कॉल करना चाहिए?

तभी मुझे दरवाज़े पर एक दस्तक सुनाई दी। मैं सिहर गई। मैंने दरवाज़ा खोला, लेकिन वहाँ पर होटल स्टाफ का एक बंदा खड़ा था।

'मैडम, आपकी जूतियाँ। आप कल रात इन्हें रेस्तरां में भूल आई थीं।'

'ओह, श्योर। थैंक्स।' मैंने कहा।

'मैंने सर के जूते भी लौटा दिए हैं।'

'बहुत अच्छा किया। क्या वे अपने रूम में थे?'

'हाँ। और उन्होंने मुझसे कहा कि आपसे कहूँ कि आधे घंटे बाद उनसे सी-प्लेन रिसेप्शन एरिया मे मिलें।'

'श्योर।' मैने राहत की साँस लेते हुए कहा। मुझे अभी तो उसे फ़ेस नहीं करना पड़ेगा। मैंने शॉवर लिया और एक चारकोल-ग्रे सूट पहन लिया। वह बहुत फॉर्मल था। जिस जगह पर मैं थी, उसके हिसाब से बहुत मिसफिट था, लेकिन मेरी मनोदशा के हिसाब से वह बिलकुल दुरुस्त था। जैसे कि वह मुझे इस फॉर्मल सूट में देखेगा तो चीज़ें फिर से पहले जैसी हो जाएँगी।

'हे, गुड मॉर्निंग।' उसने मुस्कराते हुए कहा। मेरी तरह उसने भी सनग्लासेस पहन रखे थे। कम-से-कम इस तरह हम आई कॉन्टैक्ट को तो अवॉइड कर ही सकते थे।

'हाय।' मैंने कहा।

'ऑल सेट? पेंगालूशियन को गुडबाय करने का टाइम आ गया है।' उसने कैज़ुअल अंदाज़ में कहा। उसे देखकर लग रहा था मानो कुछ हुआ ही ना हो, जबकि मेरे भीतर उथलपुथल मची हुई थी।

हम प्लेन में बैठे। टेक ऑफ हुआ। इस बार मैंने नीचे दिखाई दे रहे खूबसूरत नज़ारे से आँख चुरा ली। मेरे दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। मैं सोच रही थी कि वह इतना शांत और कैज़ुअल क्यों है। क्या उसके लिए यह सब कोई मायने नहीं रखता?

मैंने उससे विपरीत दिशा में खिड़की से बाहर देखा, लेकिन मेरे दिमाग पर वही छाया हुआ था।

क्या यह उसके लिए एक रेगुलर चीज़ है? क्या वह दूसरी लड़कियों के साथ भी ऐसा करता रहा है? ओह, तो क्या मैं उसके लिए केवल जीतने की एक चीज़ थी?

सी-प्लेन ने लैंड किया। हम बाहर निकले और पलावन एयरपोर्ट तक जाने के लिए एक कार की। उसने मेरी ओर देखा। मैं दूसरी तरफ देखती रही। एयरपोर्ट आया। हमने हांगकांग की अपनी फ्लाइट पकड़ी। पूरे रास्ते हमने लगभग कोई बात नहीं की। मैंने अपना लैपटॉप खोला और यह दिखावा करने लगी मानो मैं कोई काम कर रही हूँ। उसने भी ऐसा ही किया। मैं खुद को मन-ही-मन कोसती रही। कितनी बड़ी बेवकूफ हूँ मैं। वह घर जाएगा, एक और बॉक्स पर टिक करेगा, एक और शिकार की गिनती करेगा और हँसने लगेगा। वह मेरे बारे मे क्या सोचेगा? वह इंडियन एसोसिएट चिक? चेक। बीन देयर, डन डैट, देसी बेब! डैम इट, राधिका। स्टुपिड, स्टुपिड, स्टुपिड!

हमने हांगकांग में लैंड किया। वहाँ से एयरपोर्ट कार पिक-अप प्वॉइंट पहुँचे। बियान्सा ने हमारे लिए दो कार बुक करा रखी थीं। मैं अपनी कार में बैठने के लिए आगे बड़ी।

'राधिका।' नील ने कहा।

'हाँ।'

'मैं जानता हूँ कि अभी शायद तुम्हारे दिमाग में ढेरों बातें होंगी। मेरे साथ भी ऐसा ही है।'

'कौन-सी बातें? एक्सक्यूज़ मी?'

'कल रात के बारे में।'

मैंने अपने कंधे उचका दिए : 'उस बारे में ज़्यादा सोचने का समय नहीं मिला।'

'वेल, जबकि मैं दिनभर उसी बारे में सोचता रहा।'

गुड, मिस्टर। तो कम-से-कम तुम्हारे लिए उसके कुछ मायने थे। गो ऑन। मैंने उसकी तरफ देखते हुए मन-ही-मन सोचा।

'हालाँकि मैं अभी चीज़ों को समझने की कोशिश ही कर रहा हूँ, लेकिन मैं तुमसे यह जरूर कहना चाहता हूँ कि कल की रात मेरे लिए बहुत खास थी। मैंने वैसा इससे पहले कभी महसूस नहीं किया।'

'ओह।' मैंने कहा। मैंने इसकी उम्मीद नहीं की थी। 'ओह, ओके, वेल।' मैं उसकी तरफ भावहीन चेहरे से देखती रही।

'हाँ, वह अमेजिंग, वंडरफुल, टचिंग था, और भी बहुत कुछ।'

'दैट्स इंट्रेस्टिंग।'

'इंट्रेस्टिंग?'

‘अब मुझे चलना चाहिए। सी यू लेटर।’ मैंने कहा। ड्राइवर ने मेरी कार का दरवाज़ा खोला।

‘श्योर।’ उसने कहा और मुझे वेव किया। उसे मेरी बेरुखी देखकर मायूसी हो रही थी। कार एयरपोर्ट टर्मिनल से बाहर की ओर चल दी। वह देर तक मेरी कार की तरफ ही देखता रहा।

अगर मैं यह दिखावा करूँ कि वो सब कभी हुआ ही नहीं था, तो शायद उसका यह मतलब हो कि वैसा सच में नहीं हुआ था।

28

दो हफ्ते बाद

‘ओके, इनफ़। जो कुछ हुआ था, हमें उस पर डिस्कस करना होगा।’ नील ने कहा।

‘क्यों?’ मैंने कहा। नील ने मुझे अपने ऑफिस में बुलाया था। हम एक-दूसरे के सामने बैठे थे।

‘क्योंकि यह ठीक नहीं है। तुम फिलीपींस से लौटने के बाद से ही मुझे अवॉइड कर रही हो।’

मैंने नीचे देखते हुए कहा : ‘इसमें बात करने जैसा क्या है? जो हुआ, वह गलत था।’

‘वेल। बताओ कि गलत क्या होता है?’

‘वह गलत था, नील। और तुम यह जानते हो।’ मैंने ऊपर देखते हुए कहा।

‘ओके, हो सकता है वह थोड़ा गलत हो। लेकिन मुझे वह सही लगा था।’

‘रियली?’

‘बिलकुल। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगा?’

‘इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता है। मैं तुम्हारे लिए काम करती हूँ। तुम मैरिड हो। दो बच्चों के पिता हो।’

‘ये तमाम बातें मुझे भी मालूम हैं।’

‘तो फिर यह सब क्यों? उसे एक बार की गलती मानकर भूल जाते हैं और आगे बढ़ जाते हैं।’

वह बेचैनी के साथ उठ खड़ा हुआ और हार्बर की तरफ खुलने वाली खिड़की की ओर चला गया।

‘लेकिन मैं उसे एक गलती नहीं मानता। आखिर कोई अपनी ज़िंदगी के सबसे स्पेशल एक्सपीरियंस को गलती कैसे बोल सकता है?’

यह आदमी बातें बनाना जानता है, इससे होशियार रहना। मैने मन-ही-मन कहा।

‘तुम इसे जो चाहे कह तो। लेकिन प्वॉइंट यही है कि वह सही नहीं था। और वह सब अब फिर नहीं होगा। कभी नहीं।’

नील अपनी सीट पर लौट आया और मेरे सामने बैठ गया।

‘ओके ओके, काम डाउन। मैं समझ गया।’

‘हमें काम पर फ़ोकस करना चाहिए।’

‘फाइन। वी कूल देन?’

‘यस।’

'तो अगर मुझे किसी और डील में तुम्हारी मदद लेना पड़ी तो?'

'ऑफ कोर्स। यू आर द बॉस।'

'और अगर तुम्हें कहीं मेरे साथ जाना पड़ा तो?'

'मैं ही क्यों?'

'ग्रीनवुड कोरिया मे कुछ और डिस्ट्रेस्ड होटल्स खरीदना चाहता है। वे चाहते हैं कि हम कुछ ऑप्शंस पर सोचें। उन्हें तुम्हारा काम पसंद आया है। तो...'

'जो तुम कहो।'

'यदि तुम यह नहीं करना चाहो, तो मैं उन्हें कह दूँगा कि तुम अवेलेबल नहीं हो।'

'तो क्या मैं अपने क्लाइंट्स को खो दूँ?'

'बिलकुल नहीं। सो, यू आर ऑन। टारगेट कंपनी सिओल में है। हम जल्द ही वहाँ जाएँगे।'

'मुझे एक सोफा चाहिए। एक टू–सीटर, प्लीज़।' मैंने कहा।

'आपको एक सिंपल सोफा चाहिए या सोफा बेड?' सेल्सपर्सन ने कहा।

मैं वीकेंड पर एक स्वीडिश फर्नीचर स्टोर में आई थी। 20 हज़ार स्क्वेयर फीट का यह आईकेईए स्टोर कॉजवे बे पर मौजूद है।

'सोफा बेड।' मैंने कहा। सेल्सपर्सन मुझे संबंधित एरिया में ले गई।

'क्या आपकी कोई कलर प्रिफरेंस है?'

'नॉट रियली। वो जो चारकोल ग्रे कलर वाला है, उसके बारे में क्या?'

'ओह, वह तो हमारा बेस्टसेलर है। कंफर्टेबल और मिनिमलिस्ट।'

मैंने सोफे पर बैठकर देखा।

'गुड। मुझे यह पसंद है।'

'हाय!' किसी ने दूर से मुझे कहा।

मैंने उस तरफ देखा। 'नील!'

वह सोफा सेक्शन के दूसरे कॉर्नर पर खड़ा था।

'हाय।' उसने एक बार फिर कहा। मैं चलकर उसके पास जा चुकी थी। 'तुम्हें यहाँ देखकर अच्छा लगा। हम यहाँ कुछ ईज़ी चेयर्स लेने आए हैं। हियर, मीट कुसुम। कुसुम, मीट राधिका, मेरे ऑफिस से।'

कोई चालीस साल की एक इंडियन महिला उसके पास खड़ी थी। तीन साल का एक लड़का उसकी अंगुली थामे हुए था। सात साल की एक लड़की एक सोफे पर बैठी अपने

आईफोन से खेल रही थी। और एक छब्बीस साल की लड़की यानी मैं ठीक उसी समय सोच रही थी कि काश धरती फट जाए और मैं उसमें समा जाऊँ।

'राधिका, सो नाइस टु मीट यू।' कुसुम ने अमेरिकन एक्सेंट में कहा और अपना हाथ बड़ा दिया।

'ओह, ओके।' मैंने हाथ मिलाते हुए कहा। 'आई मीन, हाय कुसुम।'

'दिस इज़ आर्यन। आर्यन, राधिका दीदी को हाय बोलो।' नील ने कहा। आर्यन ने अपना छोटा-सा हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने उससे हाथ मिलाया। मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा।

'और ये हैं सिया। सिया, से हाय टु दीदी।' नील ने कहा। सिया ने स्क्रीन से नज़र उठाए बिना मेरा अभिवादन कर दिया।

'नॉट डन, सिया।' कुसुम ने सख्त आवाज़ में कहा। 'क्या इसी तरह से लोगों को विश करते हैं?'

सिया ने फोन एक तरफ रखा और धीरे-धीरे चलते हुए मेरे पास आई।

'हैलो दीदी, हाऊ आर यू।' उसने रटे-रटाए तरीके से बोल दिया।

'आई एम फाइन। थैंक यू।'

'दैट्स बेटर, सिया। मुझे बैड बिहेवियर पसंद नहीं है।' कुसुम ने कहा।

मुझे लगा सबसे ज़्यादा बैड बिहेवियर तो मैं ही कर रही थी। मैं कुसुम से ऑई कॉन्टैक्ट टालती रही। लेकिन मैंने कनखियों से देखा कि वह दुबली-पतली लेकिन सीधे तनकर खड़ी होने वाली महिला थी।

'सॉरी, राधिका। मैं उसे प्रशिक्षित क्षत कर रही हूँ। लेकिन वह तो जैसे अपने फोन की एडिक्ट हो चुकी है।'

'इट्स ओके।'

'नील ने तुम्हारे बारे में बताया था। तुम हांगकांग में अभी-अभी आई हो ना?'

'हाँ, छह महीने पहले।' मैंने कहा। मैं सोचने लगी कि नील ने मेरे बारे में और क्या क्या बताया होगा।

'हम बहुत दिनों से सोच रहे थे कि टीम को घर पर बुलाएँ। लेकिन अभी तक तारीख ही तय नहीं कर पाए।' कुसुम ने कहा।

'कोई बात नहीं।' मैं कम-से-कम बोलने की कोशिश कर रही थी, ताकि बातचीत जल्द-से-जल्द ख़त्म हो जाए।

'तुम कहाँ रहती हो?'

'ओल्ड पीक रोड।'

'हम रिपल्स बे में रहते हैं। कभी घर आना। तुम्हें घर के इंडियन खाने की याद तो आती होगी ना?'

ओह प्लीज़, प्लीज़, डोंट बी नाइस टु मी, मैं कहना चाहती थी।

‘क्या तुम यहाँ अकेली आई हो?’

हाँ, मैं अकेली ही हूँ। इसीलिए तो एक रात के लिए आपके पतिदेव को उधार ले लिया था।

‘हाँ। संडे था, तो सोचा कि घर के लिए कुछ खरीददारी कर ली जाए।’

‘बाय द वे, तुम्हारी ड्रेस बहुत अच्छी है।’

वह एक भली महिला जान पड़ती थी। उसने मेरी सिंपल-सी ड्रेस की तारीफ की, जबकि वह खुद एक डिजाइनर ड्रेस पहने हुए थी। उसकी अच्छाई के कारण मैं और बुरा महसूस करने लगी थी।

‘यह तो बस यूँ ही है।’ मैंने कहा।

‘और तुम्हारा फिगर भी इसके लिए फिट है।’ उसने कहा। वह भी फिट ही लग रही थी। मैंने उसके चेहरे की तरफ देखा। वह खूबसूरत थी। गोरा रंग। कुछ उभरी हुई चीकबोन्स। चालीस की उम्र में ऐसी दिखने के लिए मैं कुछ भी कर सकती थी। लेकिन मैंने देखा कि उसकी छातियाँ उभरी हुई नहीं थीं। मेरे बूब्स इससे बेहतर हैं, मैंने मन-ही-मन सोचा।

‘थैंक्स।’ मैंने कहा।

‘तुम्हारा कोई लंच प्लान है? हम बाहर एक फडू कोर्ट में जा रहे थे। फील फ्री टु ज्वॉइन अस।’

मैंने नील की तरफ देखा और मन-ही-मन सोचा कि क्या गोल्डमान साक्स का यह महान पार्टनर मुझे इस मुसीबत से बचा सकता है।

‘यस, ज्वॉइन अस। अगर तुम आओगी तो हमें अच्छा लगेगा। लेकिन अगर तुम्हारा मन ना हो तो रहने दो।’

मैंने घूरकर उसकी ओर देखा।

‘और कुछ नहीं तो सैलेड ही ले लेना।’ कुसुम ने कहा।

‘ओह, ओके।’ मैंने हार मानते हुए कहा।

अब ये क्या है? हम दोनों ये मेल-मिलाप क्यों कर रही थीं? वाइफ और मिस्ट्रेस? फ़क, क्या मैंने अभी-अभी अपने आपको एक मिस्ट्रेस कहकर पुकारा? नहीं, मैं मिस्ट्रेस नहीं हूँ। मैं वाइस प्रेसिडेंट हूँ।

◆

‘मॉम, मुझे नूडल्स के साथ फ्रेंच फ्राईज़ चाहिए।’ सिया ने कहा।

'नहीं, इसके बजाय तुम्हें कुछ वेजी लेना चाहिए।' कुसुम ने कहा। सिया ने मुँह बनाया। कुसुम ने उसे घूरकर देखा। सिया चुपचाप खाने लगी। आर्यन घर से लाया खाना खा रहा था। नील ने चिकन रैप बुलवाया, कुसुम ने क्विनोआ सलाद। मैंने फ्राईड राइस चुने, हालाँकि मैं बहुत धीरे-धीरे खा रही थी।

'तुम्हें हांगकांग पसंद आया?' कुसुम ने कहा।

'हाँ। कॉम्पैक्ट। कंविनियंट। गुड।'

'यहाँ तुमने कुछ दोस्त बनाए?'

'वेल, ऑफिस में ही ज़्यादातर।'

'ये गोल्डमान वाले सच में इतना काम कराते हैं कि बाहर की लाइफ के लिए समय ही नहीं बचता।'

'ये सही नहीं है।' नील ने कहा। 'मैं तो समय पर घर लौट जाता हूँ।'

'तुम पार्टनर हो। इन बेचारे एसोसिएट्स और वीपी को तो बहुत सारा काम करना होता है।'

नील ने कंधे उचका दिए।

'मैं भी जेपी मोर्गन में आठ साल काम कर चुकी हूँ। मुझे सच्चाई मालूम है।'

'ओह, आप भी बैकिंग में थीं?' मैंने कहा। नील ने मुझे यह नहीं बताया था। वास्तव में नील ने मुझे कुसुम के बारे में कुछ भी नहीं बताया था।

'हाँ, मैं इक्विटी सेल्स में थी। लेकिन मैं थक गई थी। हालाँकि इन दोनों बच्चों की देखभाल में मैं आज पहले से भी ज़्यादा बिज़ी रहती हूँ। तब कभी-कभी खयाल आता है कि काश मैं ऑफिस में कुछ वक्त बिताने जा पाती।'

'हम ऑफिस में वक्त बिताने नहीं काम करने जाते हैं।' नील ने कहा।'

'हाँ, जो भी हो। तुम्हें कम-से-कम वीकेंड्स तो मिल जाते है। एक माँ को वे भी नहीं मिलते। काम कभी खत्म ही नहीं होता। ओह, याद आया, मुझे एक कॉल लगाना था..' कुसुम ने अपना लुई विटन हैंडबैग खोला।'

'सिया, मेरा फोन कहाँ है?'

'मॉमी, आपके मना करने के बाद मैंने उसे वहीं रख दिया था।'

'ओह नो, मैं उसे आईकेईए में भूल आई हूँ, सोफे पर। मैं दो मिनट में आई।'

'मैं भी साथ चलूँ?' नील ने कहा।

'कैसे? बच्चे यहाँ हैं, वे खाना खा रहे हैं। तुम यहीं रहो। मैं दस मिनट में आई।'

कुसुम चली गई। पीछे रह गए हम, मैं नील और उनके बच्चे। वह मेरी ज़िंदगी का सबसे असहज कर देने वाला खाना था। मैं नील से बात तक नहीं कर पा रही थी। आखिरकार सिया समझ सकती थी।

'वेजिटेबल्स भी खाओ, सिया।' नील ने कहा।

लेकिन सिया ने उसकी बात नहीं मानी। तब नील खुद उसकी तरफ गया और उसे चम्मच से खिलाने लगा। मैं चुपचाप अपना राइस खाती रही। आर्यन पास्ता खा रहा था और उसने अपने पूरे चेहरे पर रेड सॉस लगा लिया था। नील सिया को खिला रहा था और चाहकर भी उसे साफ नहीं कर सकता था।

'डू यू माइंड?' नील ने कहा। मैं उसका इशारा समझ गई और एक टिशू से उसका चेहरा पोंछ दिया।

'धीरे-धीरे खाओ, आर्यन। ओके?' मैंने कहा।

'आप मुझे खिलाएँगी?' उसने कहा।

'क्या?'

'आप मुझे खाना खिलाएँगी?'

नील मुस्करा दिया। इसमें मुस्कराने वाली कौन-सी बात है, मैंने सोचा। आर्यन मेरी गोदर में कूद गया और मुझे अपना फोर्क थमा दिया। मैं एक हाथ से उसे खिलाती रही और दूसरे से उसका मुँह पोंछती रही।

'मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम लोग मिल जाओगे।'

'वेल, मुझे भी कहाँ खयाल था।'

सिया ने हम दोनों की तरफ देखा। हम समझ गए कि अब आगे बात नहीं करनी है।

'आप भी डैडी के ऑफिस जाती हो?' सिया ने पूछा।

'हाँ। और तुम कौन-सी क्लास में हो?'

'ग्रेड थ्री।'

'तुम्हारा फेवरेट सब्जेक्ट क्या है?'

'मैथ।'

'राधिका दीदी मैथ्स में बहुत अच्छी हैं।' नील ने मेरी तरफ देख मुस्कराते हुए कहा।

'क्या आप बहुत स्मार्ट हैं?'

'कुछ-कुछ।'

आर्यन को लगा कि अब उस पर कम ध्यान दिया जा रहा है, तो वह उठने लगा।

'नहीं, तुम अपना लंच फिनिश करो, आर्यन।' मैंने कहा। जाने कैसे आज मैंने अपने आपको नील के बच्चों को खाना खिलाते हुए पाया था। यह थोड़ा अजीब जरूर था, फिर भी नील को उसके बच्चों की केयर करते हुए देखकर वह मुझे और रीयल लगने लगा। पता नहीं, नील मुझे आर्यन को खाना खिलाते देखकर क्या सोच रहा होगा।

'मिल गया।' कुसुम ने भीतर आते हुए कहा। उसने मुझे आर्यन के साथ देखा।

'ओह माय गॉड! आई एम सो सॉरी। आर्यन, तुम अपने आप से भी खाना खा सकते थे।'

कुसुम ने फोर्क के लिए हाथ बढ़ाया। मैंने उसे दे दिया। वह अपना हक मुझसे वापस ले रही थी। वह अपनी फैमिली मुझसे वापस ले रही थी। आर्यन अपनी माँ के पास चला गया। मेरी गोद खाली हो गई। तब मुझे लगा कि मुझे भी यह सब चाहिए। अपना परिवार और अपने बच्चे।

‘दीदी को थैंक यू बोलो।’ कुसुम ने कहा।

लेकिन आर्यन ने आगे बढ़कर मुझे गाल पर चूम लिया। मैं भी उसे बदले में प्यार करना चाहती थी, लेकिन किया नहीं। आख़िर ऐसा कैसे मुमकिन था? वह किसी और की फैमिली थी।

‘अब मुझे चलना चाहिए।’ मैंने कहा।

‘ओह, लेकिन तुमने तो ठीक से लंच भी नहीं किया।’ कुसुम ने कहा।

‘नहीं, मैंने काफी खा लिया। आपका बहुत शुक्रिया।’

‘रियली? लेकिन हमने तो ठीक से बात भी नहीं की?’

‘आई एम श्योर कि हम जल्द ही मिलेंगे।’

‘ऑफ कोर्स।’ नील ने बीच में दखल देते हुए कहा।

‘बाय, सिया। बाय, आर्यन।’ मैंने कहा और फूड कोर्ट से बाहर निकल गई।

29

'आज नहीं, मॉम, प्लीज़। ये शादी का राग किसी और दिन छेड़ना।' मैंने कहा।

'क्यों? आज संडे है। एक यही तो दिन होता है, जब तुम रिलैक्स होती हो और ठीक से बात कर पाती हो।'

'लेकिन आज मैं रिलैक्स नहीं हूँ।' मैंने लैपटॉप खोला और फ़ेसबुक में लॉग इन कर लिया।

'तुम काम कर रही हो?'

'नहीं।'

'तो? घर पर ही हो ना? तुमने वो सोफा बेड ले लिया?'

'नहीं। मैं गई थी आज दोपहर उसे लेने के लिए। एक पसंद भी कर लिया था। लेकिन खरीदने का मौका ही नहीं मिला।'

'क्यों?'

'रहने दो, मॉम। मैंने कहा ना, आज का दिन ठीक नहीं है।'

'लेकिन अगर तुम्हारे पास सोफा बेड नहीं होगा तो हम वहाँ कैसे आएँगे?'

'मैं ले लूंगी।'

'तुम इतनी इरिटेटेड क्यों हो?'

'क्योंकि मुझे मालूम है आप क्या कहने जा रही है।'

'क्या?'

'अपनी प्रोफाइल रजिस्टर करो। कुछ लड़कों की तलाश करो। मॉम, आप शादी को लेकर इतनी चिंतित क्यों है?'

मैंने फ़ेसबुक पर देबू को सर्च किया। उसने अपनी प्रोफाइल प्राइवेट रखी थी। जाने क्यों मैं उसकी प्रोफाइल पिक्चर देखना चाहती थी। शायद वह फिर से सिंगल था।

'अच्छा सुनो, एक प्रपोज़ल आया है।'

'देखा, मैंने कहा था ना?'

'इस फैमिली की दिल्ली के बीचोबीच छह केमिस्ट शॉप्स है। एक तो एम्स के सामने ही है। तुम्हें पता है वे कितना बिज़नेस करती है?'

'मॉम, आप चाहती है कि मेरा हसबैंड दवाइयों की दुकान में बैठने वाला हो?'

'वह यह सारा बिज़नेस मैनेज करता है, दुकान में बैठकर क्रोसिन नहीं बेचता है।'

'उसकी क्वालिफिकेशन क्या है'

'उसने बी-फार्मा किया है और कॉरसपोंडेस से एमबीए करने की सोच रहा है।'

'कॉरसपोंडेस?'

‘आजकल तो ऑनलाइन भी किया जा सकता है।’

‘मॉम, बाय।’

‘बंगाली बाज़ार में उनकी एक कोठी है। लड़के के अपने फ्लोर पर चार बेडरूम हैं।’

‘आई डोंट केयर। मैं किसी रीयल एस्टेट की तलाश नहीं कर रही हूँ।’

‘उससे एक बार बात तो करके देखो।’

‘क्यों, मॉम? मैं विदेश में काम कर रही हूँ। इसे छोड़कर मैं इंडिया क्यों आना चाहूँगी?’

‘तो तुम्हें एनआरआई लड़का चाहिए?’

‘मुझे कुछ नहीं चाहिए। प्लीज़, लीव मी अलोन।’

‘तुम्हें हुआ क्या है?’

‘मुझे जाना है, बाय।’

मैंने फोन रख दिया। मेरे सामने फ़ेसबुक पेज खुला था। अविनाश अब भी देबू की लिस्ट में था। मैंने उसे फोन लगाया।

‘हे, राधिका। कितना समय हो गया!’ उसने कहा।

‘हाँ, और क्या चल रहा है?’

‘अभी तो उठा ही हूँ। यहाँ पर संडे की सुबह है। हांगकांग में काम कैसा चल रहा है?’

‘सब ठीक है। हे अविनाश! क्या मैं तुम मेरा एक फ़ेवर करोगे?’

‘श्योर।’

‘प्रॉमिस कि तुम मुझे जज नहीं करोगे या किसी को बताओगे नहीं।’

‘श्योर।’

‘मैं फ़ेसबुक पर देबू की प्रोफाइल चेक करना चाहती हूँ।’

‘रियली?’

‘देखो, तुम मुझे जज करने लगे।’

‘नो, नो। वेट। मैं तुम्हें जज नहीं कर रहा हूँ। लेकिन तुम मुझसे क्या चाहती हो?’

‘मैं तुम्हें फ़ेसटाइम करूँगी। तुम अपना फ़ोन कैमरा कंप्यूटर स्क्रीन की ओर लेकर जाओ और देबू की प्रोफाइल लोड करो।’

वह हँस दिया। ‘यह तो बहुत इनोवेटिव है।’

‘बहुत दु:साहसी भी है।’

‘हे, दैट्स फाइन। मुझे फ़ेसटाइम करो।’

मैंने उसे एक वीडियो कॉल दिया।

‘हियर वी गो, देबाशीष सेन, ’ अविनाश ने कहा। मैं उसकी कंप्यूटर स्क्रीन को अपने फोन पर देख सकती थी। उसने देबू की प्रोफाइल पिक्चर पर ज़ूम-इन किया। वह सेंट्रल पार्क में लाल बालों वाली एक लड़की के साथ खड़ा मुस्करा रहा था। मेरा दिल बैठ गया।

वह मेरे बाद दो और रिलेशनशिप में रह चुका था। और मैं अपने बॉस के साथ सोने के बाद उसके बच्चों को खाना खिला रही थी।

'उसकी आखिरी पोस्ट एक कलीग की बर्थडे पार्टी पर थी। तुम उस तस्वीर को देखना चाहोगी?'

'यस, श्योर।'

देबू एक रेस्तरां की टेबल पर कोरोना बीयर की बॉटल लिए बैठा था। वह लड़की उसके बगल में बैठी हुई थी। वे दोनों खुश नज़र आ रहे थे। उनकी टेबल पर रखी शराब भी खुश लग रही थी। एक मैं ही खुश नहीं थी।

'तुम और देखना चाहोगी?' अविनाश ने कहा।

'थैंक्स, अविनाश। दैट्स इनफ।'

मैंने कॉल खत्म किया और अपने बेड पर जाकर बैठ गई। आधी रात हो रही थी। मैंने अपने रात के कपड़े पहन लिए। अपनी ड्रेस को लॉन्ड्री बैग में रखते समय मेरी नज़र मेरी आस्तीन पर रेड पास्ता सॉस के एक दाग पर गई। अचानक मुझे बहुत अकेलापन महसूस होने लगा। नील घर पर बच्चों के साथ खेल रहा होगा। कुसुम नील को प्यार कर रही होगी। लेकिन मैं यह सब क्यो सोच रही थी?

मेरा फोन घनघनाया। नील का वॉट्सएप मैसेज था : 'आज के लिए सॉरी। होप तुम अभी तक उससे रिकवर कर चुकी होगी।'

ओके, तो वह अभी अपनी बीवी के साथ बिस्तर में नहीं था। इसके बजाय वह मुझे मैसेज लिख रहा था।

'यह तुम्हारी गलती नहीं थी।'

'लेकिन अजीब बात है कि मुझे अच्छा लगा तुम मेरे बच्चों से मिली।'

'रियली?'

'हाँ। वे मेरी ज़िंदगी का बहुत अहम हिस्सा है। आज उन्हें तुमसे शेयर करना अच्छा लगा।'

'दैट्स स्वीट ऑफ यू टु से। तुम्हारे बच्चे बहुत प्यारे हैं।'

'थैंक्स। और उन्होंने तुम्हें पसंद किया। आर्यन तो बार–बार तुम्हारा नाम ले रहा है।'

मैंने एक स्माइली बनाकर भेज दी।

'आजकल तुम मुझसे बात भी नहीं करती हो।'

'व्हाट्स द प्वॉइंट?'

'हम बात करेंगे, तभी तो पता चलेगा कि बात करने का प्वॉइंट क्या है।'

'इट्स फाइन। कहने को कुछ है भी नहीं। गलतियाँ हो जाती हैं।'

'उसे बार-बार गलती मत कहो, प्लीज़।'

'फाइन।'

‘क्या हम एक-दूसरे को अवॉइड करने के बजाय बैठकर बात कर सकते हैं’

‘पता नहीं। नील, अभी मेरा मूड ठीक नहीं है।’

‘क्या मैं तुम्हारी ज़िंदगी का थोड़ा-सा हिस्सा साझा कर सकता हूँ?’

‘हम बाद में बात करेंगे।’

‘हम अगले हफ्ते सिओल जा रहे हैं। क्या वहाँ हम बात कर सकते हैं?’

‘श्योर।’

‘थैंक यू। बस मुझे अवॉइड मत करो।’

‘मैं तो वीकेंड्स पर भी तुमसे कहीं-न-कहीं टकरा जाती हूँ तो अवॉइड कैसे करूँगी?’

‘यू आर फनी। एनीवे, गुड नाइट।’

‘गुड नाइट। बाय द वे, कुसुम बहुत स्वीट है।’

‘थैंक्स। उसे भी तुम अच्छी लगीं।’

‘क्योंकि वो अभी मुझे जानती नहीं है।’

‘ऐसा मत कहो।’

मैंने स्माइली बनाकर भेज दी।

‘कुसम अच्छी है। मैं यह कभी नहीं कहूँगा कि वो बुरी है, लेकिन हम दोनों के बीच कोई कनेक्शन नहीं है। जितना तुम्हारे और मेरे बीच में है, उसका दसवां हिस्सा भी नहीं। एक्चुअली, बिलकुल भी नहीं।’

मैंने मैसेज पढ़ लिया, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

‘क्या?’ उसने दूसरा मैसेज भेजा।

‘तुम मुझसे क्या सुनना चाहते हो? यह कि जाकर किसी काउंसलर से मिलो? अपनी शादीशुदा ज़िंदगी को बेहतर बनाओ? क्या?’

‘कुछ नहीं। मैं तुम्हें अपनी तरफ से फ़ैक्ट्स बता रहा हूँ। मैं बस यही चाहता हूँ कि तुम भी अपनी कुछ फ़ीलिंग्स को एडमिट करो।’

‘क्यों? तुम मेरी फ़ीलिंग्स क्यों जानना चाहते हो?’

‘क्योंकि भले ही यह पूरी तरह से गलत हो, लेकिन सच्चाई यही है कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। गुड नाइट।’ नील ने जवाब दिया।

◆

सिओल में हमने बात नहीं की। हमने सेक्स किया। क्रेज़ी, क्रेज़ी सेक्स। और ऐसा ही हमने दूसरी बिज़नेस ट्रिप्स पर भी किया। हर बार हमारी नजदीकियाँ बढ़ती चली गईं। यह गलत तो था, लेकिन यह मेरे अकेलेपन को दूर कर देता था। मैं नील को अपनी ज़िंदगी में चाहती थी। मैं चाहती थी कि कोई मुझे स्पेशल फ़ील कराए और मुझसे प्यार करे। शायद मैंने भी

उसे कुछ दिया था। शायद मेरे साथ वह भी अपने को और ज़िंदा और जवान महसूस करता था।

लेकिन जैसे-जैसे हमारी बिज़नेस ट्रिप्स बढ़ती गईं, हमारी गिल्ट ट्रिप्स भी बढ़ती गईं। उसने कहा कि वह और कुसुम बहुत सारी बातों पर असहमत थे, बच्चों की परवरिश से लेकर उसके काम तक। लेकिन मैंने उसे वैसा ही स्वीकार किया था, जैसा कि वह था। उसके साथ बिताई गई हर रात के बाद मैं उसके और करीब आती चली गई। लेकिन इसके बावजूद मैंने उसे कभी 'आई लव यू' नहीं कहा, जबकि वह हर बार मुझसे मिलने पर यही कहता।

ग्रीनवुड कोरिया में और डिस्ट्रेस्ड होटल्स खोजना चाहता था और हमें इससे कोई ऐतराज़ नहीं था। क्योंकि इसका मतलब था सिओल की ज़्यादा-से-ज़्यादा यात्राएँ और नील के साथ बिताई जाने वाली ज़्यादा-से-ज़्यादा रातें!

30

तीन महीने बाद

'कौन है?' मैंने कहा। मेरे घर की डोरबेल बजी थी और मैं नाइटक्लॉथ्स में ही दरवाज़े पर चली गई थी। मैं हांगकांग में अपने घर में फिल्मफेयर अवार्ड्स देख रही थी, जिसमें फिल्म 'क्वीन' एक के बाद दूसरे पुरस्कार जीते चली जा रही थी। डोरबेल फिर बजी।

मैंने दरवाज़ा खोला।

'नील?' मैंने कहा। रात के 11 बज रहे थे।

'सॉरी, मैं तुम्हें डिस्टर्ब नहीं करना चाहता था।'

नील और मेरे बीच कुछ अनस्पोकन रूल्स थे। वह कभी मेरे अपार्टमेंट में नहीं आया था। और ना ही मैं कभी उसके घर गई थी। हम हांगकांग में भी कहीं साथ नहीं गए थे। इस शहर से दूर बिज़नेस ट्रिप्स में कायम होने वाली नज़दीकियाँ कम बुरी मालूम होती थीं।

'क्या बात है?'

'क्या मैं आज रात यहाँ रुक सकता हूँ?'

'क्यों? हमने ऐसा पहले कभी नहीं किया।'

'मेरी कुसुम से लड़ाई हुई है।'

'कुछ खास?'

'बात कुछ ज़्यादा ही बिगड़ गई। मैंने उसे कह दिया कि मैं एक बिज़नेस ट्रिप पर जा रहा हूँ और वहाँ से चला आया। मैंने सोचा था कि किसी होटल में रुक जाऊँगा, लेकिन...' उसने कहा और मेरी ओर देखा।

लेकिन क्या? तुमने सोचा कि होटल में पैसे देकर अकेले क्यो रहा जाए, जब यहाँ मुफ्त में घर और सेक्स दोनों मिल रहा है? मैंने मन-ही-मन सोचा।

'यस, ऑफ कोर्स। तुम यहाँ रह सकते हो। कम इन।' मैने कहा।

'थैंक्स।'

'हंग्री?'

उसने सिर हिला दिया। उसने मुझे अपनी बाँहों में ले लिया और चूमने लगा। लेकिन मैंने कोई रिस्पॉन्स नहीं दिया।

'मैं तुम्हारे लिए क्या हूँ, नील? एक स्ट्रेस बॉल? कि जब तुम तनाव में होओ तो आओ और मेरे साथ खेलकर मन बहला लो?'

'नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है, राधिका।' उसने शॉक्ड आवाज़ में कहा।

‘तो फिर तुम यहाँ पर क्यों आए हो? क्या हमने यह तय नहीं किया था कि हम हांगकांग में कुछ नहीं करेंगे?’

‘क्या हमने ऐसा कुछ तय किया था? आई मीन, इससे फ़र्क ही क्या पड़ता है?’

‘मुझे फ़र्क पड़ता है। बिज़नेस ट्रिप्स पर मैं खुद को कम गलत महसूस करती हूँ। लेकिन यहाँ पर..’

‘क्या?’

‘यहाँ मुझे मालूम नहीं हो सकता कि तुम कब आ जाओगे और कब नहीं। आज तुम्हारा अपनी बीवी से झगड़ा हुआ तो तुम यहाँ आ गए। कल वो तुम्हारे लिए कुकीज़ बनाएगी तो फिर तुम वापस लौट जाओगे। तुम दोनों के बीच मैं क्या हुई? मिस स्टैंडबाय?’

‘मैं बस वहाँ से दूर चला जाना चाहता था, खुली हवा में। मैंने सोचा कि तुमसे बेहतर मैं और किसके पास आ सकता हूँ। आई एम सॉरी अगर...’

‘इट्स फाइन टुनाइट। लेकिन मैं हांगकांग के बाहर ही प्रिफर करती हूँ। उससे मेरा दिमाग ठिकाने रहता है।’

‘आर यू ओके, राधिका?’

‘लेट्स गो टु बेड।’

◆

हम बिस्तर में लेटे थे। मैंने बत्तियाँ बुझा दी थीं। उसने अपना एक हाथ मुझ पर रख दिया। मैंने कोई रिस्पॉन्स नहीं दिया।

‘मैं जानता हूँ तुम क्या सोच रही हो।’

‘क्या?’

‘कि यह एक बूटी कॉल है।’

‘शायद हाँ। शायद इसीलिए तुम यहाँ हो।’

‘मैं बस तुम्हारे साथ होना चाहता हूँ। चलो आज रात कुछ नहीं करते तुम बस मेरे पास रहो।’

‘रियली?’

‘हाँ, क्यों?’

‘तुम एक मर्द हो। हमारा अफेयर चल रहा है। यदि हम सेक्स नहीं करें तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी?’

‘बिलकुल नहीं होगी।’

‘यदि तुम चाहो तो हम कर सकते हैं।’

‘नहीं, आज नहीं। आज मैं केवल तुम्हारे पास होना चाहता हूँ। गुड नाइट, आई लव यू।’

‘गुड नाइट।’ मैंने माइल्ड शॉक के साथ कहा।

वह मेरी बाँहों में सो गया। वह मुझसे बीस साल बड़ा था, इसके बावजूद मुझे ऐसा लगा कि कोई बच्चा मेरे पास सो रहा है। शायद वह मेरी केयर करता था। शायद हम जो कर रहे हों, वह गलत हो, लेकिन उसमें से कुछ अच्छा निकलकर सामने आ जाए।

‘आई लव यू, नील गुप्ता।’ मैंने उसके कानों में फुसफुसाते हुए कहा।

‘मैंने सुन लिया।’

‘यू आर सो बैड।’ मैंने उसके कंधों पर मुक्का मारते हुए कहा। वह आँखें बंद किए हुए ही हँस दिया।

‘जोश तुम्हारा सीनियर है। ऐसे में यही ठीक होगा कि वह बोनस डे पर तुम्हें तुम्हारे नंबर्स बताए।’ नील ने कहा।

जोश नील के ऑफिस में बैठा था। मैं उसके पास एक सीट पर बैठी थी।

’श्योर।’ मैंने कहा। नील और मैं काम के दौरान बहुत प्रोफेशनल थे।

जोश ने मुझे मेरे परफॉर्मेंस रिव्यू की एक समरी दी। मेरे साथियों ने मुझे साढ़े चार की रेटिंग दी थी।

‘ये तो बहुत अच्छी रेटिंग है।’ नील ने कहा। मैं सोच रही थी कि नील ने मुझे कितनी रेटिंग दी होगी।

‘थैंक्स।’ मैंने कहा।

‘और बॉटमलाइन यह है कि इस साल के लिए तुम्हारा बोनस है साढ़े तीन लाख डॉलर्स!’

मेरे दिल की धड़कने जैसे रुक-सी गई।

‘वॉव।’

जोश मुस्करा दिया।

‘इससे तो यही पता चलता है कि तुम्हें यह सुनकर अच्छा लगा है।’

‘थैंक्स।’ मैंने कहा। मेरी टोटल बेस सैलरी और बोनस मिलाकर आधा मिलियन डॉलर तक आ गए थे।

‘यू डिज़र्व इट! तुम्हारी डील्स कंपनी के लिए बहुत फ़ायदेमंद साबित हुई हैं।’ नील ने कहा और मुस्करा दिया।

मैं अपनी डेस्क पर लौट आई और मॉम को फोन लगाया। नंबर सुनकर उनका सिर चकरा गया, खासतौर पर तब, जब मैंने रुपयों में उसे कन्वर्ट करके बताया। पापा भी झटका खा गए।

'हाँ-हाँ, ये सब लीगल ही है, डैड। आप क्या बात कर रहे हैं? गोल्डमान साक्स एक रेपुटेड फर्म है।'

'लेकिन तीन करोड़ रुपए सालाना आमदनी!'

'ये आपकी लिटिल गर्ल का कारनामा है।'

वे हँस दिए।

'आप लोग गुडगाँव मे नए घर में रहने जाना चाहेंगे? स्विमिंग पूल और जिम वाले अपार्टमेंट्स?'

'नो बेटा, हम यहीं ठीक हैं।'

'अगर आपको कोई चीज़ चाहिए, कोई भी चीज़, तो बस मुझे बता दीजिए।'

'बस तुम जल्दी हमसे मिलने यहाँ आ जाओ।'

'मैं आऊँगी। लव यू।'

शाम छह बजे जोश अपना काम खत्म करके चला गया। मैंने नील के दरवाज़े पर दस्तक दी।

'हे, अंदर आ जाओ।' उसने कहा।

मैं उसके सामने जाकर बैठ गई।

'तुम्हें जितना बोनस मिला, उससे खुश हो ना?'

'हाँ, मैं बस एक चीज़ को लेकर श्योर होना चाहती थी।'

'क्या?'

'इसमें से कितना बोनस मेरे काम के लिए है और कितना हमारे बीच जो चल रहा है उसके लिए?'

'आर यू किडिंग मी, राधिका? यह सब तुम्हारे अच्छे काम के कारण है। तुम तो जानती ही हो तुम्हारी डील्स पर कितना प्रॉफिट हुआ है।'

'हाँ, फिर भी मैं श्योर होना चाहती थी।'

'आई डोंट बिलीव इट।' उसने सिर हिलाते हुए कहा।

'क्या?'

'तुम्हें यह बोनस इसलिए दिया गया, क्योंकि तुम्हारा काम अच्छा था। एक्चुअली, तुम इससे भी ज़्यादा की हकदार थीं। लेकिन फर्स्ट-ईयर वीपी को कितना पैसा दिया जा सकता है, इसको लेकर लिमिटेशंस हैं। मैं न्यूयॉर्क में बात करके इस लिमिट को बढ़ना सकता था।'

'प्लीज़, ऐसा कुछ मत करना।'

‘वेल, मैंने ऐसा किया तो नहीं, लेकिन तुम जो कह रही हो, वह मुझे हर्ट कर रहा है। तुम्हारा प्यार पाने के लिए मुझे तुम्हें ज़्यादा सैलरी देने की ज़रूरत नहीं है।’

‘ओके। थैंक्स देन।’

‘इस तरह की बातें सोचना बंद कर दो। मैं शादी के एक रिश्ते में फँसा हुआ हूँ, लेकिन काश कि चीज़ें दूसरी तरह से होतीं। मै तुम्हें प्यार करता हूँ, इसीलिए मैं तुम्हारे साथ हूँ। मुझे तुम पर गर्व है। तुम यह सब डिज़र्व करती हो।’

‘आई एम सॉरी।’

‘इट्स फाइन।’

‘और तुम्हारा बोनस कैसा रहा?’

‘वो मैं तुम्हें नहीं बता सकता।’ उसने मुस्कराते हुए कहा।

‘आप और भी बहुत कुछ चीज़ें नहीं कर सकते थे, मिस्टर, फिर भी आपने कीं।’

‘तीन।’

‘तीन क्या?’

‘तीन मिलियन डॉलर्स! ’

‘तीस लाख डॉलर्स! ‘मेरा सिर चकरा गया।

‘इसीलिए मैं तुम्हें नहीं बता रहा था, क्योंकि सुनने में यह बहुत ज़्यादा लगता है।’

‘यह बहुत ज़्यादा है ही! यू मीन, तुम्हें बोनस में तीन फ़किंग मिलियन डॉलर्स मिले!!’

जीवन में कभी-कभी ऐसा भी होता है कि आपको साढ़े तीन लाख डॉलर का बोनस मिले और थोड़ी देर बाद ही वह बहुत कम मालूम होने लगे।

‘मैंने कहा था ना कि तुम और भी डिज़र्व करती हो। थोड़े और बड़े सपने देखो, गर्ल!’ नील ने आँख मारते हुए कहा।

‘तुमने इतना पैसा कमा लिया। तुम वाइस प्रेसिडेंट बन गई। तुम्हें अपने कैरियर में और क्या हासिल करना है?’

‘मॉम, बात केवल कैरियर की नहीं है। मैं अभी तैयार नहीं हूँ।’

मैंने अपने पैरेंट्स को सरप्राइज़ कर दिया था। चाइनीज़ न्यू ईयर पर हांगकांग में चार दिनों का वीकेंड था और मैं इंडिया आ गई थी। अदिति दीदी भी तब अपने ससुराल से आई हुई थीं। हम सभी इंडिया गेट घूमने गए। वहीं पर मॉम ने हमेशा की तरह अपना प्रिय विषय छेड़ दिया।

‘तुम तो कभी भी पूरी तरह से तैयार नहीं होओगी। तुम कुछ ज़्यादा ही कामयाब हो गई हो और तुम्हारे लिए एक उपयुक्त लड़का ढूँढना पहले ही बहुत कठिन हो गया है।’

‘यह क्या चीज़ होती है : कुछ ज़्यादा ही कामयाब?’

‘यह लड़कियों के लिए होती है। क्या किया जाए?’

‘मॉम, आप फिर वह सब शुरू मत कीजिए, मैं यहाँ केवल चार दिनों लिए आई हूँ।’

‘क्या फायदा? कुछ लोगों से बात करके तो देखो।’

‘नहीं मॉम, मैं अभी नहीं चाहती।’

‘तुम्हारी ज़िंदगी में कोई है?’

हाँ, मेरी ज़िंदगी में कोई है और वह तुमसे केवल पाँच साल ही छोटा है, मॉम। मैंने मन-ही-मन कहा।

‘नहीं तो।’

‘नहीं तो का मतलब?’

‘नहीं तो का मतलब नहीं।’

‘तो तुम्हें अपनी जीवन में किसी पुरुष की ज़रूरत नहीं है, जो कि हर औरत को होती है।’

‘मुझे तो नहीं लगता।’

‘उम्र भी कोई चीज़ होती है बेटा। उस उम्र के बाद फिर अच्छे मैच नहीं मिलते। तुम पहले ही छब्बीस की हो गई हो।’

‘मैं क्या कार मॉडल हूँ, जिसकी कीमत वक्त के साथ घटती जाएगी?’

‘तुमसे तो बात करना ही बेकार है।’

मॉम अगले आधे घटे तक मुँह फुलाए रहीं यानी आधे घंटे की शांति।

आख़िरकार मैंने कहा : ‘आप चाहती क्या हैं, मॉम?’

‘तुम कहती हो कि तुम तैयार नहीं हो। लेकिन मुझे एक टाइम-प्रेम तो दो।’

‘पता नहीं। तीन साल, या शायद चार।’

‘तब तक तुम तीस की हो जाओगी। तब तुम्हारे लिए अच्छा लड़का कैसे मिलेगा?’

‘तब तक मैं और कामयाब बैंकर भी बन जाऊँगी।’

‘उसी बात का तो डर है।’

मैंने नज़रें तरेरकर उन्हें देखा। ‘तब तक मेरे पास खूब पैसा होगा। उसी की मदद से अपने लिए एक हसबैंड भी ढुँढ लूंगी और अपनी नई ज़िंदगी भी शुरू कर लूंगी।’

‘मैं केवल एक साल इंतजार करूँगी। उसके बार तुम्हे मुझे को-ऑपरेट करना होगा।’

‘केवल एक साल?’

‘लड़का ढूँढना शुरू करने के बाद एक अच्छा लड़का खोजने में ही एक साल लग जाएगा। उसके बाद एक साल शादी में चला जाएगा, क्योंकि एनआरआई लोगों के साथ टाइम की अपनी दिक्कतें होती हैं। यह पूरा तीन साल का प्रोसेस है। तब तक तुम 29 की हो जाओगी। ऑलरेडी लेट।’

‘ठीक है, एक साल। लेकिन अब मुझ पर ज़ोर मत देना। मेरे लिए कोई ऐसा लड़का ढूँढना, जो सेंसिबल हो। जिसमें क्लास हो।’

‘मैं कौन-सा तुम्हारे लिए कोई झुग्गी-झोपड़ी वाला ढूँढने जा रही हूँ। मैं भी कोई जेंटलमैन ही ढूँढूँगी।’ जेंटलमैन शब्द सुनते ही मै मन-ही-मन मुस्करा दी और मुझे नील का खयाल आया। वह सही मायनों मे एक जेंटलमैन ही था, मेरे साथ उसका जो अफेयर चल रहा था, उसको अगर हटा दें तो।

Downloaded from Ebookz.in

31

ड्रैगन-1, रेस्तरां, सेंट्रल हांगकांग

नील और मैं पॉश ड्रैगन-1 रेस्तरां में चीनी डंपलिंग्स डिमसम खाने आए थे। मैं अपनी चॉपस्टिक की मदद से स्पिनच डंपलिंग्स खाने की कोशिश कर रही थी।

'तो, मॉम ने मुझे एक साल की मोहलत दी है।'

'तो तुम शादी करने जा रही हो? फिर हमारा क्या होगा?'

'नील, मेरी ज़िंदगी का क्या होगा? डू यू केयर?' मैंने सख़्त लहज़े में कहा। हमारी आँखें मिलीं।

'ऑफ कोर्स, आई केयर। लेकिन 'मैं' के बजाय 'हम' ज़्यादा इंपोर्टेंट नहीं है?'

'कोई फ्यूचर होगा, तभी तो हम होंगे। हमारा कोई फ्यूचर नहीं है।'

'पता नहीं। हमने कभी डिस्कस ही नहीं किया।'

'और ये किसकी गलती है?'

'लेकिन इससे पहले इस टॉपिक पर कभी बात ही नहीं हुई।'

'कौन-सा टॉपिक, नील?'

'हमारा। हमारे फ्यूचर का।'

'यह यूज़लेस है।'

'नहीं, ये स्पेशल है।'

'वेल, पिछले डेढ़ साल में हमने इतना ही किया है कि ऑफिस में कलीग्स बनकर रहें और बिज़नेस ट्रिप्स के दौरान एक-दूसरे के साथ सोएँ। और अब तो मेरे घर पर भी।'

'क्या तुम थोड़ा आवाज़ नीचे रखकर बात करोगी, प्लीज़?'

नील की इस बात ने मेरा पारा और चढ़ा दिया।

'देखो, यहाँ पर भी, इस ड्रैगन-1 में भी हम कलीग्स ही हैं। मैं यहाँ ज़ोर से बोल नहीं सकती। तुम्हारा हाथ नहीं थाम सकती। भले ही रात को तुम मेरे साथ चाहे जो करो।'

नील ने आसपास देखा। सबसे करीब के कस्टमर हमसे तीन टेबल दूर बैठे थे।

'अगर तुम बात करना चाहती हो, तो हम बात कर सकते हैं। किसी भी चीज़ के बारे में। लेकिन मुझे नहीं मालूम, तुम्हारा पारा इतना क्यों चढ़ा हुआ है।'

'तुम कैसे बात करोगे? तुम्हारा क्या जा रहा है? ऑफिस में तो बॉस हो। घर में पति और दो बच्चों के बाप। साथ में एक यंग चिक, जिसके साथ तुम जब चाहे सो सकते हो। तुम्हें किस बात की चिंता होने लगी?'

'इसी बात की।'

‘क्या?’

‘कि तुम्हें वह सब पसंद नहीं है, जबकि मुझे ऐसा नहीं लगता था।’

‘तुम्हें ऐसा क्यों लगा कि मुझे वह सब पसंद है।’

‘पता नहीं। जब हम प्यार करते हैं, बात करते है, या साथ में काम करते हैं, तो क्या वह सब बहुत ख़ास नहीं होता?’

‘लाइफ में इसके अलावा भी बहुत कुछ होता है, नील।’

सच कहूँ तो खुद मुझे नहीं मालूम था कि मैं इतना नाराज क्यों हो रही थी। शायद मॉम के एक साल के अल्टीमेटम ने मुझे बेचैन कर दिया था।

‘तुम्हें पता है, प्रॉब्लम क्या है नील? मैं हम दोनों के बारे में किसी से डिस्कस तक नहीं कर सकती।’

फिर मैं उठी और वॉशरूम चली गई। वहाँ से मुँह धोकर मैं लौटी। नील ने मुझे चिंता भरी नज़रों से देखा।

‘सॉरी।’ मैंने कहा। पता नहीं क्यों।

‘सॉरी की कोई बात नहीं। ये तुम्हारी फीलिंग्स है। इन्हें शेयर करने के लिए शुक्रिया।’

वेजीटेबल डंपलिंग्स की मेरी प्लेट ठंडी हो गई थी। एक वेटर ने उसे हटा दिया। नील और मै चुपचाप खाते रहे।

‘आई लव यू।’ नील ने कहा।

‘तो?’ मैंने कंधे उचकाते हुए कहा।’ इससे क्या फ़र्क पड़ता है?’

‘तुम चाहती क्या हो, राधिका?’

मैं चुप रहाँ।

‘फ्यूचर? मैं तुमसे बीस साल बड़ा हूँ।’

‘तुमने तो कहा था कि प्यार में उम्र के कोई मायने नहीं होते।’

‘मैं मैरिड हूँ। मेरे बच्चे हैं। इतनी ज़िम्मेदारियाँ हैं।’

‘एक्ज़ैक्टली! तो मैं यहाँ पर तुम्हारे साथ क्या कर रही हूँ?’

‘हमारे बीच में जो भी है, क्या तुम उससे खुश नहीं हो?’

‘यदि तुम मेरी जगह होते तो क्या तुम खुश होते?’

‘हमारे पास काम है, प्यार है, एक्साइटमेंट है। हमारे पास जो नहीं है, वह है एक मैरिड कपल की ऊबाऊ ज़िंदगी।’

‘तुम्हारी बात सुनकर तो ऐसा लगता है जैसे शादी कोई बहुत बुरी चीज़ हो। तुम मैरिड हो। पूरी दुनिया शादी करती है।’

‘तुम खुद शादी करना चाहती हो या केवल अपनी मॉम के दबाव के कारण परेशान हो रही हो?’

‘मैं बिलकुल शादी करना चाहती हूँ। मुझे भी अपना परिवार, अपने बच्चे चाहिए।’

‘रियली?’

‘रियली का क्या मतलब? बिलकुल, मैं चाहती हूँ।’

‘रियली, राधिका?’ नील ने मेरी तरफ कुछ इस तरह से देखते हुए कहा, मानो मैंने आइसिस में शामिल होने की बात कर दी हो। ‘मैं तो समझता था कि तुम कैरियर माइंडेड हो।’

‘एक्सक्यूज़ मी? इसका क्या मतलब है?’

‘नथिंग। बाद में बात करते हैं।’ नील ने कहा और वेटर को बिल लाने को बोल दिया।

‘नहीं, नील। आज रात नहीं।’ मैंने कहा।

हम बेड में लेटे थे। उसने मेरी गर्दन पर चूमा। यह सेक्स का सिगनल था। मैंने उसे दूर धकेल दिया।

‘नहीं, नील। मैं थकी हुई हूँ।’

वह इस हफ्ते में लगातार चौथी बार मेरे पास आया था। पता नहीं वह घर पर क्या बोलकर आता था। लेकिन सच कहूँ तो मुझे इसकी परवाह नहीं थी।

उसने अपने नाइटसूट के बटन लगा लिए।

‘तुमने मुझे चौथी बार मना किया है।’ वह सही था। हमने इस पुरे हफ्ते सेक्स नहीं किया था।

‘मैं थकी हुई हूँ।’

‘क्या बात है? मुझसे कोई गलती हुई?’

‘नहीं गलती मुझसे हुई है। आख़िरकार मैं अपने आपको इस पचड़े मे कैसे डाल सकती हूँ?’

‘हम एक-दूसरे को चाहते हैं, राधिका।’

मैंने नाइट लैंप जला दिया और उसका मुँह मेरी तरफ कर दिया।

‘रियली, नील?’

‘क्या?’

‘मैं एक मैरिड आदमी के साथ इनवॉल्व हो गई। वन नाइट स्टैंड नहीं, बल्कि एक लंबा अफेयर। मैंने अपने को एक ऐसे रिश्ते में जाने दिया, जिसमें कोई फ्यूचर नहीं था।’

‘मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जा रहा हूँ।’

‘लेकिन तुम हालात मे बदलाव लाने के लिए क्या करने जा रहे हो?’

‘बदलाव करने की क्या ज़रूरत है? सबकुछ परफेक्ट है।’

‘और अगर कुसुम को इस बारे में पता चल गया तो?’

‘उसे पता नहीं चलेगा। तुम इन दिनों कुछ ज़्यादा ही परेशान हो रही हो। खासतौर पर दिल्ली से आने के बाद से। कहीं ये तुम्हारे वो वाले दिन तो नहीं चल रहे है?’

‘शायद यह अच्छा ही हुआ। यह ज़रूरी था कि मेरी आँखें खुले।’

‘तुम चीज़ों को साफ तरह से नहीं देख पा रही हो। रेस्तरां में तुमने जो बोला, वह भी यही बताता है।’

‘मैंने वहाँ पर कहा था कि मैं शादी करना चाहती हूँ, अपने बच्चे, अपना परिवार चाहती हूँ। इसमें चीज़ों को साफ तरह से नहीं देखने वाली क्या बात है?’

‘तुम ऑफिस में एक स्टार हो। तुम खुद को इन सब घरेलू मामलों में क्यों उलझाना चाहती हो? वह सब तो कोई भी औरत कर सकती है।’

‘कोई भी कर सकती है, लेकिन मैं नहीं कर सकती?’

‘मैंने यह तो नहीं कहा।’

‘तो?’

‘तुम स्पेशल हो। तुम एमडी बन सकती हो, पार्टनर बन सकती हो।’

‘हाँ, बिलकुल बन सकती हूँ। लेकिन इसके साथ ही मेरा अपना परिवार भी हो सकता है।’

‘राधिका, तुमने उस दिन कुसुम को देखा ना और अब तुम मेरे साथ यह कर रही हो।’

मैं गुस्से से उठकर बैठ गई।

‘यह तुम्हारे बारे में नहीं है, मिस्टर नील गुप्ता। ये मेरे बारे में है। मेरी ज़रूरतों के बारे में। तुम्हें यह समझ आ रहा है या नहीं मिस्टर-आई-एम-सो-स्मार्ट गोल्डमान साक्स पार्टनर?’

‘तुम जो कहना चाहती हो, कहो। लेकिन मैंने कभी तुम्हारे बारे में यह नहीं सोचा था कि तुम माँ वगैरह बनने में दिलचस्पी लोगी।’

अब मेरे गुस्से का कोई पारावार नहीं रहा। मेरा शरीर गुस्से से काँपने लगा। नील को भी लगा कि उसने कुछ गलत कह दिया है।

‘ओके, वह मेरे मुँह से निकल गया।’

‘गेट आउट।’ मैंने धीमी आवाज़ में कहा।

वह अपनी जगह से नहीं हिला।

‘प्लीज़, लीव माय अपार्टमेंट, नील। गेट आउट नाऊ।’

‘कम हियर, मैं तुम्हे अच्छा फ़ील कराता हूँ, उसने आगे झुकते हुए कहा। वह मुझे किस करना चाहता था।

चटाक! मैंने उसे ज़ोर का थप्पड जड दिया। मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि वह कौन था।

‘तुम्हारी वह बात कहने की हिम्मत कैसे हुई?’ मैंने कहा।

‘आई एम सॉरी।’

‘जस्ट लीव। नहीं तो मैं कल पूरे गोल्डमान ग्रुप को हमारे रिश्ते के बारे में ई-मेल भेज दूँगी।’

वह चुपचाप उठा। कपड़े पहने, अपना लैपटॉप बैग उठाया और चला गया।

मैं बिस्तर में सिमटकर रोने लगी। मैं रातभर रोती रही। मैंने अपना सिर तकिये में छुपा लिया, जिसमें से अभी तक नील के परफ्यूम की खुशबू आ रही थी।

नील को लगता था कि मै माँ बनने के काबिल नहीं हूँ। मैं इस आदमी से भला कैसे प्यार कर सकती थी? लेकिन क्या मुझे पहले से अंदाज़ा नहीं लगा लेना चाहिए था कि एक-ना-एक दिन यह होगा?

मेरे पेट में दर्द हुआ। मैं बाथरूम गई तो मैने पाया कि नील सही था। यह महीने के वो वाले दिन ही थे। इस तमाम ड्रामे के बीच मुझे पीरियड्स के पहले दिन को भी झेलना था! क्या अब भी आपको लगता है कि लड़की होना आसान है?

‘ये क्या है?’ नील ने हैरत से कहा।

उसने एक लेटर मेरी ओर बढ़ा दिया। लेटर यह था:

जोश एंग,

डिस्ट्रेस्ड डेट ग्रुप

गोल्डमान साक्स

डियर जोश,

मैं ग्रुप के वाइस प्रेसिडेंट पद से इस्तीफा देना चाहती हूँ। इस वंडरफुल एक्सपीरियंस के लिए बहुत शुक्रिया।

राधिका मेहता।

‘यह तुम्हारे पास बहुत जल्दी पहुँच गया।’

‘ज़ाहिर है, इस पर मुझे ही साइन करना है।’

‘तो क्या साइन करने की मेहरबानी करेंगे, सर?’

‘विल यू स्टॉप इट, प्लीज़?’

‘फाइन। व्हाटेवर।’

‘यह तुम्हारा कैरियर है।’ नील ने कुछ देर बाद कहा।

‘मैं जानती हूँ।’

‘तो फिर?’

‘मेरे पास कोई और च्वॉइस नहीं है। मेरा कैरियर तुमसे जुड़ा हुआ है। अगर मुझे तुमको छोड़ना हो तो कैरियर को भी छोड़ना होगा।’

‘तो मुझे मत छोड़ो।’

‘और फिर क्या करूँ? तुम्हारी मिस्ट्रेस बनकर रहूँ?’

‘व्हाट रबिश! तुम मिस्ट्रेस नहीं हो। तुम अपना पैसा खुद कमाती हो।’

‘इसीलिए मैं अपने आपको एक मिस्ट्रेस से भी बदतर पाती हूँ। खैर, क्या हम जल्दी करें?’

‘तुम कहीं नहीं जा रही हो।’

‘मैं फ़ैसला कर चुकी हूँ। जैसा कि तुम देख सकते हो, मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं है, तुम्हारे पास बहुत कुछ है। तो मैं ही जा रही हूँ।’

‘मैंने कल जो कहा, उसके लिए सॉरी।’

‘बात केवल कल की नहीं है। यह पूरा रिश्ता ही गलत है। और अगर मुझमें ज़रा भी सेल्फ-रिस्पेक्ट है, तो मुझे इसे ख़त्म कर देना चाहिए।’

नील ने मुझे गौर से देखा। मैं खिड़की से बाहर देख रही थी। हांगकांग हार्बर नज़र आ रहा था।

‘तुम मुझे ब्लडी गिल्टी फ़ील कराती हो।’

‘तुम्हें ब्लडी गिल्टी फ़ील करना ही चाहिए।’

‘हमने यह मिलकर किया था। तुम्हें किसी ने फोर्स नहीं किया था।’

‘मुझे मालूम है। मैं भी गिल्टी फ़ील करती हूँ और तुम्हें भी करना चाहिए।’

‘मुझे दो घंटे का समय दो।’

‘क्या?’

‘दो घंटे बाद लौटकर आओ।’

मैंने कंधे उचकाए और वहाँ से अपने क्यूबिकल में चली आई।

दो घंटे बाद मेरी डेस्क का फोन बजा। मैं नील के ऑफिस में गई।

◆

‘तुम चाहो तो मुझे छोड़ दो, लेकिन जॉब मत छोड़ो। तुम चाहो तो ट्रांसफर ले सकती हो। न्यूयॉर्क, लंदन, कहीं भी।’ नील ने कहा।

‘मैं...’

‘तुम्हें कहीं भी जॉब मिल जाएगा, फिर भी ग्रुप छोड़कर मत जाओ। अगर तुम चली गई तो मैं अपने आपको कभी माफ नहीं कर पाऊंगा।’

‘तो क्या यह सब केवल इसलिए कि तुम अपने आपको माफ कर पाओ?’

उसने सिर झुका लिया। फिर उठा, खिड़की पर जाकर खडा हो गया।

‘ठीक है, मैं लंदन चली जाती हूँ। लेकिन वह नए जॉब की तरह होना चाहिए। मैं अब तुम्हें अपनी ज़िंदगी में नहीं चाहती।’

‘क्या मतलब?’

‘कॉमन डील्स करना। टच में रहना। यह सब नहीं। क्लीयर?’

‘लेकिन हम कैसे...’

‘नील, मैं सीरियस हूँ। अगर मैंने इसकी रिपोर्ट कर दी तो तुम मुसीबत में आ जाओगे। बॉस तुम हो, मैं नहीं।’

‘तुम मुझे धमका रही हो?’

‘मैं इतना ही कह रही हूँ कि मैं सीरियस हूँ। मै अब तुम्हें अपनी ज़िंदगी में नहीं चाहती, इसीलिए यहाँ से जा रही हूँ।’

‘ठीक है।’ नील ने भारी आवाज़ में कहा और अपनी सीट पर आकर बैठ गया।

‘क्या अब मैं जा सकती हूँ?’

‘राधिका?’

‘यस?’

‘आई एम सॉरी।’

‘किस बात के लिए।’

‘तुम्हें मायूस करने के लिए।’

मैं जाने के लिए उठ खड़ी हुई।

‘नहीं, तुमने नहीं, मैने ही खुद को मायूस किया है, नील।’

हांगकांग में बिताए दिनों को याद करके मेरा गला रूँध गया। मेरे हाथ में नाश्ते की प्लेट काँपने लगी। नील ने मेरी ओर देखा। मेरे नाते-रिश्तेदार डायनिंग रूम में आने लगे थे। मैंने एक गिलास पानी पिया।

‘क्या हम कुछ देर प्राइवेट में बात कर सकते हैं, प्लीज़?’नील ने कहा।

‘कैसे, नील? तुम देख सकते हो, ये मेरी वेडिंग है।’

‘यहाँ पर मैंने एक रूम लिया है। वहाँ कुछ देर के लिए आ जाओ प्लीज़।’

‘लेकिन तुम्हें रूम मिला कैसे? यहाँ तो सारे रूम भर चुके थे।’

‘यह ज़रूरी नहीं है। केवल पंद्रह मिनट के लिए।’

‘लेकिन तुम्हें रूम मिला कैसे?’ मैं इस वक्त लॉबी मैनेजर पर चीखना चाहती थी।

‘मैंने प्रेसिडेंशियल स्यूट ले लिया है। उनके पास एक वही खाली था। क्या अब तुम वहाँ आओगी? रूम नंबर 101?’

ज़ाहिर है, मिस्टर पार्टनर एक प्रेसिडेंशियल स्यूट लेना अफोर्ड कर सकते थे। दूर से मेरे कज़िन्स ने हाथ हिलाते हुए मुझे बुलाया।

‘मुझे अपने कज़िन्स के साथ ब्रेकफास्ट करने जाना है। आधे घंटे में मिलते हैं।’ मैंने कहा।

◆

‘तुमने तो कहा था कि तुम मुझे अकेला छोड़ दोगे।’ मैने 3000 स्क्वेयर फीट के उस आलीशान प्रेसिडेंशियल स्यूट में दाखिल होते हुए कहा। मैं स्यूट के लिविंग रूम में एक सोफे पर बैठ गई। उसने कोई जवाब नहीं दिया और रूम में एक कोने में रखी इलेक्ट्रिक केटल में पानी भर दिया।

’चाय लोगी?’

‘नील, मेरे पास टाइम नहीं है। तुमने कहा था कि तुम मुझे फिर परेशान नहीं करोगे।’

‘क्या मैंने इस दौरान कभी तुम्हें परेशान किया? तुम ग्रीन टी लेना चाहोगी?’

‘तुम मुझे क्या कहना चाहते हो?’

‘कैन यू रिलैक्स? तुम चाहो तो यह भी पूछ सकती हो कि नील, तुम कैसे हो।’

‘नील, मेरे पास इस सबके लिए टाइम नहीं है।’

‘मैं केवल बात करने की कोशिश कर रहा हूँ। अगर मैं चाय बनाते-बनाते बात कर रहा हूँ, तो उसमें क्या बुराई है?’

‘श्योर।’

‘हमने एक साल से बात नहीं की है। लंदन कैसा लगा? तुम्हें तो पता है कि मेरी परवरिश लंदन में हुई थी?’

‘जानती हूँ।’

‘तो कैसा लगा वहाँ?’

मैं उसकी तरफ देखती रहाँ।

‘क्या?’

‘मैं यहाँ पर लंदन के बारे में बात करने नहीं आई हूँ।’

‘मुझे एक मिनट तो दो। में अगले रूम से कुछ लेकर आ रहा हूँ।’

मैंने हामी भर दी। वह बेडरूम में चला गया। मैने खिड़की से बाहर देखा। डबल-ग्लेज्ड ग्लास के बाहर समुद्र बहुत खामोश लग रहा था। नील ने लंदन का नाम क्या लिया, वहाँ की यादें मेरे ज़ेहन में उमड़ आई।

लंदन

एक साल पहले

Downloaded from Ebookz.in

33

लंदन में गोल्डमान साक्स का ऑफिस ओल्ड टेलीग्राफ बिल्डिंग में, 133 फ्लीट स्ट्रीट पर पीटरबोर्ग कोर्ट में था। ग्रुप सेक्रेटरी पैट्रिशिया मुझे अपने नए क्यूबिकल में ले गई। लंदन ऑफिस के लोगों का ब्रिटिश एक्सेंट मुझे नील की याद दिलाता था। नील मेरी आदत बन चुका था। या बेहतर होगा अगर कहूँ, एक लत, एक एडिक्शन। मेरा दिल दूसरी बार टूटा था और मैंने पाया कि अनुभव इसमें हमारी मदद नहीं करता। हर बार दिल के टूटने पर वैसी ही तकलीफ होती है, जैसी पहली बार हुई थी। इस बार बस इतना ही सुकून था कि ब्रेकअप की पहल मैंने की थी।

मैं उसकी आवाज़ को मिस कर रही थी। उसकी आँखों को, उसके स्पर्श को। मैं उस सबको मिस कर रही थी, जो वह मेरे साथ बिस्तर में करता था। तो क्या हुआ, अगर वह मैरिड है? वह मुझे प्यार करता है और प्यार से बढ़कर क्या?

हमारा दिमाग हमारे साथ इसी तरह के खेल करता है। जब हम कुछ करना चाहते है, तो हमारा दिमाग उसे जस्टिफाई करने के लिए अनेक कारण खोज लाता है। लिहाज़ा मैंने नील से बात करने के लिए अपनी डेस्क पर रखा इंटर्नल फोन उठाया।

लेकिन तभी मेरे सेलफोन से आई आवाज़ ने मेरा ध्यान भटका दिया। मॉम का वाट्सएप मैसेज आया था।

'तुमने प्रोफाइल चेक की?'

'बस, वही कर रही हूँ।'

मैंने शादी डॉट कॉम खोला। उसकी स्क्रीन पर हैप्पी कपल्स के चेहरे दिखाई दे रहे थे। बताया जा रहा था कि किस तरह से एक कपल की मुलाकात इस साइट पर हुई और तीन महीने बाद ही उन्होंने शादी कर ली। अब उनका बच्चा होने वाला है। क्या अपने प्यार को पाना इतना सरल होता है?

मैंने अकाउंट में लॉग-इन किया था, जो मुझे मॉम ने सेट करके दिया था। पेज पर मेरी प्रोफाइल की समरी खुली। उन्होंने मेरी इंडिया गेट वाली तस्वीर इस्तेमाल की थी, जो मैंने दिल्ली की अपनी पिछली यात्रा के दौरान खिंचवाई थी। फोटो में मेरे चेहरे पर छाया गिर रही थी और मेरी आँखें अधमुँदी थीं। मेरी इससे बेकार कोई और तस्वीर नहीं हो सकती थी।

मैंने अपनी प्रोफाइल पढ़ी:

'हाय, मैं एक यगं, स्लिम, गोरी, पंजाबी खत्री लड़की हूँ। उम्र 26 साल। हाइट 5 फीट 4 इंच। मैं अभी लंदन मे काम कर रही हूँ, लेकिन अपने हसबैंड के साथ कहीं भी मूव

करने को तैयार हूँ। मैं फैमिली-माइंडेड हूँ और ज्वॉइंट फैमिली में रहने से भी मुझे कोई हर्ज़ नहीं है।

मेरा हाथ अपने फोन पर गया कि मॉम को फोन लगाऊँ और उन्हें खूब खरी-खोटी सुनाऊँ। लेकिन मैंने खुद को रोका और आगे पढ़ने लगी:

मैं नॉर्थ इंडियन खाना बहुत अच्छी तरह से बना लेती हूँ। मेरी एक बड़ी बहन है, जो पहले ही शादी करके सेटल हो चुकी है। मेरे पैरेंट्स की और कोई लायबिलिटीज़ नहीं हैं। मेरे पिता स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से एक बहुत अच्छी पोज़िशन से रिटायर हुए हैं और मेरी माँ एक हाउसवाइफ हैं। हम वेल-ऑफ हैं और एक हाई-स्टेटस वेडिंग भी कर सकते हैं।

मेरी भौंहे तन गईं। मैंने अगला सेक्शन पढ़ा:

मैं एक अच्छी पंजाबी फैमिली से एक वेल-क्वालिफाइड, वेल-सेटल्ड स्यूटेबल मैच की तलाश कर रही हूँ। कोई ऐसा, जो मेरी फैमिली का भी ख्याल रख सके और बड़ों का सम्मान कर सके। यदि इंट्रेस्टेड हों तो प्लीज़ अपने डिटेल्स के साथ रिस्पॉन्ड कीजिए, जिसमें होरोस्कोप और जन्म की दिनांक और समय भी होने चाहिए। रिगार्ड्स, राधिका मेहता।

'सीरियसली? मॉम, सीरियसली?' मैंने ज़ोर से चिल्लाकर कहा। मैंने तत्काल शादी.कॉम विंडो को बंद कर दिया। मुझे मॉम को फोन लगाना था, लेकिन ऑफिस से मैं ऐसा कर नहीं सकती थी। इसलिए मैंने अपना लैपटॉप बंद किया और बाहर आ गई।

मैं फ्लीटस्ट्रीट पहुँची, जहा जापान से प्रेरित एक फास्ट-फूड चेन इत्सु पर वेजीटेबल्स और ब्राउन राइस पोत्सु पॉट ऑर्डर किया। खाते-खाते मैंने मॉम को फोन लगाया। एक हाथ में फोर्क और दूसरे में फोन लिए मैं मॉम पर टूट पड़ी।

'मॉम, आप क्या कर रही हैं?'

'क्या?'

मैंने अपने लैपटॉप की स्क्रीन पर अपनी प्रोफाइल खोली।

'मैंने अपनी प्रोफाइल देखी।'

'अच्छी लगी?'

'मॉम, आर यू सीरियस? ये सब क्या है?'

'क्या? मैंने वही लिखा, जिस पर सबसे अच्छा रिस्पॉन्स मिलेगा। पड़ोस में रहने वाली शर्मा आंटी ने मेरी मदद की।

'इट्स हॉरिबल, मॉम। रियली, ये आपने किसके बारे में लिखा है? ये मेरे बारे में तो नहीं है।'

'क्या कह रही हो? ये तुम्हारे बारे में ही है। क्या तुम्हारी हाइट 5 फीट 4 इंच नहीं है?'

'सबसे पहले तो यही कि मेरी फोटो बहुत गंदी लगाई है।'

'मेरे पास यही थी। जब तुम यहाँ आई थीं तो हमें एक पोर्टफोलियो करवा लेना चाहिए था। तुम अपने पास से कोई फोटो भेज दो। फोटो इंडियन क्लॉथ्स में होनी चाहिए।'

'क्यों?'

'तो क्या तुम ऑफिस सूट में अपना फोटो भेजोगी? तुम शादी करना चाहती हो या जॉब के लिए अप्लाई करना?'

'यही मेरी असल पहचान है।'

'स्टॉप इट, राधिका। क्या फोटो को लेकर ही प्रॉब्लम है?'

'सत्रह सौ छत्तीस प्रॉब्लम्स हैं! ये क्या होता है, मैं गोरी हूँ? मेरा रंग गोरा नहीं गेहुँआ है।'

'अगर तुम गेहुँआ लिखोगी तो लोग समझेंगे कि लड़की साँवली है।'

'ओह रियली? और अगर कोई लिखे कि लड़की साँवली है, तब?'

'तब उसका मतलब होगा कि लड़की काली है। जैसे अफ्रीकन नीग्रो होते हैं, वैसी। खैर, ये रंग वगैरा की माइनर बातें हैं।'

'मैं आपको बताती हूँ कि मेजर बातें क्या हैं। ये क्या होता है कि मैं अपने हसबैंड के साथ कहीं भी जाने के लिए तैयार हूँ? ये किसने कहा? इट डिपेंड्स, राइट? यह भी हो सकता है कि उसको मूव करना पड़े। दूसरी बात, इसका क्या मतलब है कि मेरे पैरेंट्स की कोई और लायबिलिटीज़ नहीं हैं? और ये हाई-स्टेटस वेडिंग क्या होती है? और, केवल पंजाबी फैमिली ही क्यों? और ये क्या होता है कि लड़का हमारा खयाल रखे? और ये होरोस्कोप की क्या ज़रूरत है? मॉम, रियली मुझे समझ नहीं आ रहा है कि क्या कहूँ।'

मैं साँस लेने के लिए रुकी। मेरे सामने की टेबल पर बैठे कस्टमर ने मुझे पानी का एक ग्लास दिया। मैंने उसे थैंक्स का इशारा किया और एक घूँट पानी पिया।

'तुम बहुत बोल चुकी हो। पैरेंट्स के लिए कोई रिस्पेक्ट तुममें नहीं बची है।'

'सवाल रिस्पेक्ट का नहीं है। लेकिन यह सब इतना गलत है। मैं इसका हिस्सा नहीं बनना चाहती।'

'तुम स्ट्रेटेजी नहीं समझती हो।'

'स्ट्रेटेजी?'

'हाँ। हम अच्छे लड़कों को डराकर उन्हें अपने से दूर नहीं करना चाहते।'

'किससे डर?'

‘जब वे एक इंडिपेंडेंट-माइंडेड, क्वालिफाइड, कामयाब लड़की देखते हैं, तो वे डर जाते हैं।’

‘व्हाट नॉनसेंस!’

‘यही सच है। ये नियम मैंने नहीं बनाए, बेटा।’

‘इसी से याद आया। आपने क्या लिखा है, मैं अभी लंदन में काम कर रही हूँ? नहीं, मैं गोल्डमान साक्स में वाइस प्रेसिडेंट हूँ और साल में आधा मिलियन डॉलर कमाती हूँ।’

‘एक्ज़ैक्टली। यही तो स्ट्रेटेजी है।’

‘क्या?’

‘कभी-कभी अपनी अचीवमेंट्स बताने के बजाय उन्हें छुपाना भी पड़ता है। अगर तुम लड़का होती तो हम तुम्हारी सैलेरी को सबसे पहले मेंशन करते। लेकिन तुम लड़की हो, इसलिए हमें केयरफुल होना पड़ेगा।’

मैंने सिर पीट लिया। शायद नील की बात सही थी कि मैं इस सबके लिए नहीं बनी हूँ।

‘आर यू देयर? मैं वहाँ आ रही हूँ।’

‘कहाँ?’

‘लंदन। हम कुछ वक्त साथ बिताएँगे और वहीं पर इस सबके बारे में बातें करेंगे।’

◆

‘बहुत हुआ, मॉम।’ मैंने कहा। मॉम ने मेरी प्लेट में एक और परांठा रख दिया था।

‘तुम चेल्सी में क्यों रहती हो? साउथॉल में कितने इंडियंस हैं।’ उन्होंने कहा।

‘आपने बाहर का पार्क व्यू देखा है? कितना सुंदर है वो?’

‘लेकिन यहाँ अचार और चटनी कहाँ मिलता होगा। साउथॉल में यह सब मिलता है।’

‘यहाँ पर भी मिलता है। नहीं मिलते हैं तो आपके हाथ के बने परांठे। आप यहीं पर रह जाइए।’ मैंने दूसरा परांठा खाते हुए कहा।

‘देखा, तुम्हें भी घरेलू माहौल की याद तो आती ही है। भला ये भी कोई लाइफ हुई। सुबह दौड़ते-भागते ऑफिस जाओ। देर रात को खाली घर में लौटो।’

‘मॉम, मेरा पास वो जॉब है, जिसके लिए दुनिया के लोग तरसते हैं।’

‘और मेरे पास वह जॉब है, जो कोई नहीं करना चाहता, फिर भी मैं खुशी-खुशी करती हूँ : अपने परिवार की देखभाल।’ मॉम ने मुझे एक ग्लास लस्सी देते हुए कहा।

‘चलो, अब मुझे रिस्पॉन्सेस बताओ। तुमने मुझे पूरे हफ्ते वेट कराया है।’ मॉम ने कहा।

मैंने मैट्रिमोनियल वेबसाइट पर अपनी प्रोफाइल मोडिफाइड की थी। उसमें से बेकार की चीज़ें हटाते हुए यह जोड़ दिया था कि ‘दुनिया की टॉप इंवेस्टमेंट बैंक्स में से एक में मेरा

एक सक्सेसफुल कैरियर है।' साथ ही मैंने यह भी कहा था कि मुझे एक सिक्योर और ईज़ी-गोइंग हसबैंड चाहिए।

मैंने लैपटॉप खोला और लॉग इन किया।

'पचास रिस्पॉन्स, वेरी गुड। खोलो उन्हें।' मॉम ने एक्साइट होते हुए कहा।

'खोल रही हूँ। बी पेशेंट।'

पहली क्वेरी किसी मोहित आहूजा की थी, जो दिल्ली की किसी बिज़नेस फैमिली से था। उनके तीन रेस्तरां थे। उन्हीं में से एक को मोहित मैनेज करता था।

'नहीं।' मैंने इनकार कर दिया।

'क्यों?'

'मैं किसी ऐसे इंसान के साथ नहीं रह सकती, जो फैमिली रेस्तरां चलाता हो।'

'इसमें क्या गलत है?'

'मॉम, क्वालिफिकेशंस तो देखिए। किसी रैंडम यूनिवर्सिटी से बीए। बिलकुल नहीं। नेक्स्ट।'

हम अगले कुछ घंटों तक रिस्पॉन्सेस देखते रहे।

'यह देखने में कितना बुरा है। मैं सुबह उठकर ऐसे किसी का चेहरा नहीं देखना चाहती।' एक कैंडिडेट को देखकर मैंने कहा।

मॉम ने कहा : 'दुनिया में बुरा दिखने वाला कोई आदमी नहीं होता।'

लेकिन मैं लुक्स के आधार पर ही कुछ को रिजेक्ट कर चुकी थी। बाकियों को इसलिए रिजेक्ट किया, क्योंकि वे इंडिया में जॉब करते थे और मुझसे बहुत ही कम पैसा कमाते थे।

'नहीं मॉम, यह भी नहीं। यह बुलंदशहर में रहता है। ज्वॉइंट फैमिली। फैमिली बिज़नेस। नो, नो, नो।'

जब मैंने एक इंसान को केवल इसलिए रिजेक्ट कर दिया, क्योंकि मुझे उसकी प्रिंटेड हवाइयन शर्ट पसंद नहीं आई थी, तो मॉम ने कहा कि मैं चीज़ों को प्रॉपरली नहीं ले रही हूँ।

'लेकिन मुझे नफ़रत है इस तरह के शर्ट से। कोई भी ऐसी शर्ट कैसे पहन सकता है?'

'वह एक डॉक्टर है और मैं उसको शॉर्टलिस्ट कर रही हूँ। तुम शादी करने के बाद उसके कपड़े बदल देना।'

इसी में शाम के चार बज गए। हम दस संभावित दूल्हों की शॉर्टलिस्ट बना चुके थे।

'मैं थक गई हूँ। कॉफी पीने चलें?'

'बिलकुल।'

हम अर्ल्स कोर्ट ट्यूब स्टेशन के पास प्रेट-ए-मैंगर कैफे की ओर बढ़ चले।

34

'हाय, कैन यू सी मी?' मैंने कहा। मैं डायनिंग टेबल पर अपने लैपटॉप के सामने बैठी थी।

मेरा राज बख्शी से एक स्काइप कॉल फिक्स हुआ था। राज बोस्टन, अमेरिका में डॉक्टर था।

'यस, लेकिन थोड़ा अंधेरा है। क्या आप एक और लाइट जला सकती हैं?' राज ने कहा। वह तीस साल का था, उसकी पतली मूँछें थीं और उसने लाइट ब्लू शर्ट पहन रखा था।

इससे पहले कि मैं जवाब देती, मॉम ने अपार्टमेंट की सारी लाइटें जला दीं।

'मॉम, आप यहाँ क्या कर रही हैं?' मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

'हाँ, अब बेहतर है।' राज ने कहा।

'वन सेकेंड, राज।' मैंने कहा और उसे म्यूट कर दिया। फिर मैंने लैपटॉप को झुका दिया।

'क्या हुआ? उसे इंतज़ार मत कराओ। बातें करो।'

'मॉम, अगर यह होगा तो यह मेरे हिसाब से होगा। आप मुझे कम-से-कम बात करने का मौका तो दीजिए।'

मॉम ने मुँह बनाया और बाहर चली गईं।

'हाय।' मैंने कहा।

'हेलो, वहाँ पर तो बहुत देर हो गई होगी?'

'हाँ, यहाँ अभी आधी रात है।'

'सॉरी, मैं काम से अभी लौटा हूँ।'

'तुम डॉक्टर हो, राइट?'

'हाँ। और तुम क्या करती हो? तुम्हारी प्रोफाइल में बैकिंग लिखा है।'

'मैं गोल्डमान साक्स में वाइस प्रेसिडेंट हूँ।

'ओह।'

'सो यस।' मैंने कहा। मैं समझ नहीं पा रही थी कि अब क्या बोलूँ। 'आप किस तरह के डॉक्टर हैं?'

'बोस्टन सिटी हॉस्पिटल में जनरल प्रैक्टिशनर। डुइंग माय रेसीडेंसी।'

'मैं कभी डॉक्टर नहीं बन सकती। मैं तो खून देखकर ही चकराकर गिर जाऊँ।'

'यह जीवन का एक हिस्सा है। लोग मर रहे हैं। किसी को तो उनके लिए आगे आना होगा।'

डॉ. बख्शी सीरियस टाइप के लगते हैं।

‘गोल्डमान साक्स में काम कैसा चल रहा है?’

‘गुड। हेक्टिक। लेकिन मुझे पसंद है।’

‘मैंने सुना है वे लोग बहुत अच्छा पे करते हैं।’

‘यह परफॉर्मेंस से तय होता है। लेकिन हाँ, वो लोग पैसा देने में कंजूसी नहीं करते।’

‘इफ यू डोंट माइंड, आप कितना कमा लेती हैं?’

क्या यह बहुत जल्दी नहीं हो गया? प्रोटोकॉल क्या है? क्या इस तरह की बातें पहले ही कॉल में पूछी जाती हैं?

‘क्या हमें अभी से एक-दूसरे को यह बता देना चाहिए?’

‘क्यों नहीं? इसमें छुपाने वाली बात क्या है? मुझे सालाना एक लाख डॉलर मिलते हैं। प्लस बेनेफिट्स। और तुम्हें?’

मेरा उसको बताने का मन नहीं हुआ। लेकिन मैं मर्दों के इगो को थोड़ा समझना जरूर चाहती थी।

‘हम इस बारे में बाद में भी बात कर सकते हैं। तो आप किस चीज़ के स्पेशलिस्ट बनना चाहते हैं?’

‘ऑफ्थैमॉलॉजिस्ट। आँख का डॉक्टर।’

मुझे भीतर-ही-भीतर यह लगने लगा था कि यहाँ बात नहीं बनने वाली है। इस तरह के कॉल को कैसे ख़त्म किया जाए?

‘तो आपकी सैलेरी कितनी है?’ उसने फिर पूछा।

‘वेल, अगर तुम जानना ही चाहते हो तो मैंने पिछले साल आधा मिलियन डॉलर्स कमाए थे।’

मुझे उसकी कुर्सी की चरमराहट की आवाज़ आई।

‘पाँच लाख डॉलर्स?’

‘हाँ, आखिर आधा मिलियन तो इतना ही होता है।’

‘ओके।’

कई बार मुझे लगता है कि बातचीत में इस ओके शब्द को बैन कर देना चाहिए। इसका कोई मतलब नहीं होता।

‘तो, तुम काम के अलावा और क्या करते हो?’

‘एक्सक्यूज़ मी, लेकिन मुझे जाना होगा।’

‘ओह रियली, क्या हुआ?

‘नथिंग। ओके, मैं तुम्हें बता देता हूँ। दिस इज़ नॉट गोइंग टु वर्क। तुम्हें बहुत सैलेरी मिलती है।’

‘सैलेरी कभी भी बहुत ज़्यादा नहीं लगती है।’

‘मेरा मतलब था मेरे मुकाबले बहुत ज़्यादा।

'ओह, तो क्या इस बात से तुम्हारी मर्दानगी को ठेस पहुँच रही है?'

उसने बिना कोई जवाब दिए फोन रख दिया। तो, पहला विकेट डाउन। मैंने मन-ही-मन कहा।

तीन हफ्ते में शॉर्टलिस्ट किए गए सभी दस नामों का सफाया हो चुका था।

'इस तरह से बात नहीं बनने वाली है, मॉम।'

हम डिशूम में आए थे, कावेंट गार्डन में मौजूद एक मॉडर्न इंडियन कैफे। हमने पाव भाजी और मसाला चाय ऑर्डर की थी।

'मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया था कि अपने कैरियर के बारे में ज़्यादा मेंशन मत करना।'

'मैं अपनी पहचान तो नहीं छुपा सकती हूँ ना।'

'तुम अपनी बहन जैसी क्यों नहीं हो सकती?'

'क्योंकि मैं उनके जैसी होना नहीं चाहती।'

हम घर लौट आए। मॉम ने एक और आइडिया निकाला। वे हमारी शादी.कॉम की मेंबरशिप को वीआईपी कैटेगरी में अपग्रेड करना चाहती थीं, जहाँ स्पेशल एजेंट्स हमारी मदद करते हैं।

'स्पेशल ज़रूरतों के लिए स्पेशल मदद।' मॉम ने कहा।

लेकिन शायद मैं ही स्पेशल थी। स्पेशियली फ़क्ड- अप! आश्चर्य नहीं कि मेरी मॉम को मेरे लिए दूल्हा ढूँढने के लिए स्पेशलिस्टों की एक फौज की ज़रूरत महसूस हो रही थी।

'मेरी एक बेटी देखते-ही-देखते सेटल हो गई। मैं दुआ करती हूँ कि दूसरी का भी कुछ हो जाए।' उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा।

'इसमें दुआ करने की क्या ज़रूरत है? क्या मैं कोई बीमारी हूँ?' मैंने उनकी तरफ देखे बिना कहा।

'तुम टची होना कब बंद करोगी? सच तो यही है कि अदिति की शादी चुटकियों में हो गई थी। वह तुमसे ज़्यादा गोरी है, लेकिन उसका एटिट्यूड भी तुमसे बेहतर है।'

'बेहतर एटिट्यूड से क्या मतलब? मुझे दब्बू होना चाहिए? घरेलू? आप यही चाहती हैं ना?'

'वेल, हाँ।'

'लेकिन मैं वैसी हूँ नहीं। तो शायद मैं सिंगल ही रहना पसंद करूँगी।'

'ऐसी अशुभ बातें मत बोलो।'

'इसमें कुछ भी अशुभ नहीं है।'

‘ये पैसा और नौकरी तुम्हारे सिर चढ गए हैं। तुम अब एक लड़की नहीं रह गई हो।’

‘क्या?’

‘रहने दो।’

‘जब मैं छोटी थी तो पापा मुझसे कहते थे कि बेटा जब तुम बड़ी हो जाओगी, तो तुम जो चाहो, वह कर सकोगी। पता नहीं लोग अपनी बेटियों को ऐसी बातें क्यों बोलते हैं। पहले वे उनसे कुछ अचीव करने को कहते हैं और जब वे अचीव कर लेती हैं तो उनसे क्या कहा जाता है? यह कि तुम अब एक लड़की नहीं रह गई हो।’

‘मुझे यह सब नहीं मालूम। मैंने कभी जॉब नहीं किया। लेकिन शायद औरतों के लिए काम नहीं करना ही बेहतर है।’

‘मॉम! मैंने चिल्लाकर कहा।

‘क्या है?’

‘मेरा जॉब मेरे लिए बहुत मायने रखता है। प्लीज़, उसकी इज़्ज़त करना सीखो।’

‘और तुम मेरी बेइज़्ज़ती करती रहो?’ मॉम ने कहा और रोने लगीं। जल्द ही उनका रोना मातम में बदल गया। शायद वे उन दस शॉर्टलिस्टेड दामादों के हाथ से चले जाने का मातम मना रही थीं।

मैंने आसपास देखा। टेबल पर मुझे एक टिशू बॉक्स दिखा। उसे मैंने उनकी ओर बढ़ा दिया। उन्होंने आँसू पोंछ लिए।

‘तुम्हें अंदाज़ा भी है तुम्हें पैदा करने में मुझे कितने दर्द का सामना करना पड़ा था?’

उसको लेबर पेन बोलते हैं मॉम और माँ बनने वाली हर औरत को होता है।

‘मैंने तो सुना है कि आप मुझे अबोर्ट करना चाहती थीं?’

‘किसने कहा तुम्हें यह?’

‘उसका कोई महत्त्व नहीं है। लेकिन क्या यह सच नहीं है कि डॉक्टर से गलती हो गई थी और उसने बोल दिया था कि लड़का होगा?’

‘वो एक अलग वक्त था। अदिति हो चुकी थी। तुम्हारी दादी अब एक लड़का चाहती थीं।’

‘आप भी तो चाहती थीं।’

‘हाँ।’

‘सॉरी मॉम, उसके बजाय मैं आ गई। आपके साथ धोखा हो गया।’

‘डोंट बी स्टुपिड, आई लव यू।’

उन्होंने मुझे बाँहो में भर लिया। थोड़े समय बाद मैंने भी उन्हें बाँहों में भर लिया।

‘तो फिर मैं जैसी हूँ, वैसी ही रहने दीजिए। जो भी हो, हर हाल में मेरा साथ दीजिए।’

‘डोंट वरी। हम कल और प्रोफाइल्स देखेंगे। तुम्हारा राजकुमार तुम्हें हर हाल में मिलेगा।’

35

तीन हफ्ते बाद

मॉम ने नज़र का चश्मा लगा रखा था। वे मेरे फोन पर शादी.कॉम एप्प पर तस्वीरें देख रही थीं।

'ये देखो। तुमने इसको एक्सेप्ट क्यों नहीं किया?'

'आप ही पढ़कर बता दो मॉम। क्या करता है वो?'

'फ़ेसबुक में काम करता है। लेकिन कोई फ़ेसबुक मे काम कैसे कर सकता है? क्या वह दिन भर फ़ेसबुकिंग करता है?'

'नहीं मॉम, फ़ेसबुक एक कंपनी है। क्या उम्र है?'

'अठाइस। हाइट 5 फीट 10 इंच। उसकी प्रोफाइल पढ़ूँ?'

'श्योर। उसी ने लिखी है?'

'नहीं। उसके पैरेंट्स ने।'

'तब तो शुरू होने से पहले ही दो प्वॉइंट्स कट गए।'

'स्टॉप इट। मैंने भी तो तुम्हारी प्रोफाइल लिखी थी।'

'जिसको मैं कभी भूल नहीं सकती। एनीवे। गो ऑन।'

मॉम पढ़ने लगी।

'हमारा बेटा एक इंटेलीजेंट, हम्बल और सिम्पल लड़का है, जो अपने लिए एक स्यूटेबल लाइफ पार्टनर की खोज कर रहा है। वह एक कैरियर वुमन को प्रिफर करता है, जो अमेरिका में रहने को तैयार हो। वह फ़ेसबुक में सिस्टम इंजीनियर के रूप में काम करता है और यहाँ वह पिछले पाँच साल से है। वह मेनलो पार्क, सैन फ्रांसिस्को में रहता है। उसने अपनी इंजीनियरिंग एनआईटी, नागपुर से कंप्यूटर साइंस में की है, जहाँ उसने टॉप किया था। उसने मास्टर्स बोस्टन, अमेरिका से किया है। वह हमारा इकलौता बेटा है। हम मुंबई में रहने वाली सिंपल पंजाबी फैमिली हैं और ओरिजिनली वेस्ट दिल्ली से हैं। हमें और कुछ नहीं चाहिए, सिवाय एक अच्छी लड़की के, जो हमारे परिवार की सदस्य बनने वाली है।

'नॉट बैड। अच्छा लिखा है। ओपन-माइंडेड और ऑनेस्ट। सैलेरी क्या है?' मैंने कहा।

'डेढ़ से पौने दो लाख अमेरिकी डॉलर, प्लस स्टॉक ऑप्शंस। चलेगा?'

'गुड। मुझे फोन दो।'

मैंने उसकी प्रोफाइल तस्वीर देखी। लंबा, पतला, चश्मा लगाने वाला आदमी ओवरकोट पहने सैन फ्रांसिस्को के गोल्डन गेट ब्रिज के सामने खड़ा था। दिखने में वह गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई जैसा लग रहा था। शायद गीक्स के अपने रोल मॉडल्स होते हैं।

‘हैंडसम है।’ मॉम ने कहा।

‘किसी ऐसे स्टूडेंट की तरह दिख रहा है, जो क्लास में दूसरे स्टूडेंट्स को चुप रहने को बोलता है।’

‘कुछ भी बोल देती हो।’

‘ मैंने उसका नाम पढ़ा : ब्रजेश गुलाटी।

‘छी, कित्ता गंदा नाम है। ना, मुझे ऐसे नाम वाले किसी आदमी से शादी नहीं करनी।’

मॉम ने मुझे घूरकर देखा।

‘तुम्हें किस तरह के नाम चाहिए : अमिताभ बच्चन? अक्षय कुमार?’

‘नहीं, ऐसा नहीं है। लेकिन उसका नाम कितना टिपिकल है।’

‘मुझे तो इस लड़के में एकभी गलत बात नहीं नज़र आती।’

‘बिलकुल। उसमें कुछ भी गलत नहीं है। उसमें कोई वॉव या थ्रिल फैक्टर ही नहीं है।’

‘तुम एक हसबैंड चुन रही हो, एम्यूज़मेंट पार्क राइड नहीं।’

‘ओके फाइन।’ मैंने एक पल सोचकर कहा और ‘एक्सेप्ट’ ऑप्शन दबा दिया। दस मिनट बाद मेरा फोन बजा। मैंने उठाकर देखा।

‘आई कांट बिलीव दिस। उसने मुझे स्काइप डिटेल्स के साथ ‘हाय’ मैसेज भेज दिया। मॉम, यह तो बहुत उतावला लग रहा है।’

‘यह एक अच्छा संकेत है। इसका मतलब है कि भगवान भी हम दोनों परिवारों को मिलाना चाहता है। उसके साथ एक कॉल फिक्स करो।’

मैंने एक मैसेज टाइप करके भेज दिया। ‘कल के लिए एक स्काइप कॉल फिक्स कर दिया है।’ मैंने मॉम से कहा।

◆

‘हाय।’ उसने भरसक चीयरफुल आवाज़ निकालते हुए कहा। दुनिया में इससे ऑकवर्ड मोमेंट कम ही होते हैं कि हम पहली बार किसी मैरिज कैंडिडेट से बात करें। मैं अपने लिविंग रूम में बैठी स्काइप पर ब्रजेश से मुख़ातिब थी।

‘गुड मॉर्निंग, ’ ब्रजेश ने कहा। ‘ओह सॉरी, गुड आफ्टरनून।’

‘सो, आई एम राधिका। आपने मेरी प्रोफाइल तो देख ही ली है।

‘हाँ और वो मुझे बेहद दिलचस्प लगी।’

‘रियली? कौन-सी बात दिलचस्प लगी?’

‘सबसे अच्छा तो मुझे यही लगा कि तुम्हारा एक अच्छा कैरियर है। हालाँकिं इंवेस्टमेंट बैंकिंग बहुत हेक्टिक होती है।’

‘हाँ, लेकिन अब मैं उसकी आदी हो चुकी हूँ।’

‘आई एम श्योर। और तुम्हारे इंट्रेस्ट्स क्या-क्या हैं?’

‘ट्रेवलिंग। म्यूज़िक। शहरों की खाक छानना। हाऊ अबाउट यू?’

‘मैं तो बस काम में ही लगा रहता हूँ। लेकिन मुझे क्रिकेट और बॉलीवुड फिल्में पसंद हैं।’

क्रिकेट और बॉलीवुड पसंद करने वाला एक इंडियन सॉफ्टवेयर गाय, इससे ज़्यादा स्टीरियोटाइप और क्या होगा?

शायद ब्रजेश ने मेरे विचारों को भाँप लिया, इसलिए उसने कहा : ‘हाँ, बहुत टिपिकल। क्रिकेट और बॉलीवुड। मैं एक बोरिंग किस्म का इंसान हूँ।’

स्काइप पर पहली बार किसी लड़के ने मेरे सामने अपनी एक कमज़ोरी मानी थी। वह बोरिंग था, लेकिन उन सुपर-बोरिंग लोगों में से एक नहीं, जिन्हें यह भी नहीं था कि वे बोरिंग हैं या नहीं।

मैं मुस्करा दी।

‘यदि मैं इस कॉल पर बात करते-करते सो जाती हूँ? तो शायद तुम्हारी बात सही मानी जाएगी।’

वह हँस दिया।

‘तुम्हारा सेंस ऑफ ह्यूमर अच्छा है।’ उसने कहा।

‘थैंक्स।’

‘एक्चुअली, मैं कुछ इंग्लिश मूवीज भी देखता हूँ, लेकिन अभी टेस्ट डेवलप नहीं हुआ। तुम कुछ फिल्मों के नाम सजेस्ट करोगी?’

‘श्योर।’ मैंने कहा।

वह एक लड़की के ह्यूमर की सराहना कर सकता है और उससे सजेशन भी माँग सकता है। नॉट बैड।

वह बोलता रहा।

‘मैं फेक-सोफिस्टिकेटेड होने का दिखावा तो नहीं कर सकता। मैं वेस्ट दिल्ली के नारायणा विहार में पला-बढ़ा और फिर बोरिवली में। तो मुझे ज़्यादा एक्सपोजर नहीं मिला। लेकिन अब मैं दुनिया के बारे में ज़्यादा जानना चाहता हूँ।’

‘एक मिनट। तुम नारायणा विहार में पले-बढ़े हो?’

‘हाँ, क्यों?’

‘मैं भी नारायणा से हूँ। एच ब्लॉक।’

‘क्या? मैं जी-ब्लॉक में था। जी-478। मेरे पैरेंट्स का आज भी वहाँ एक घर है। लेकिन वे मुंबई में रहने लगे हैं।’

मेरे बेडरूम का दरवाज़ा खुला और मॉम भीतर आईं।

'नारायणा?' उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा। उनके चेहरे से रोमांच झलक रहा था। शायद वे दरवाज़े पर कान लगाकर पूरी बातचीत सुन रही थीं। मैंने उन्हें दूर जाने को कहा और फिर ब्रजेश से बात करने लगी।

'ये तो बहुत कमाल की बात है। क्या तुम मॉडर्न स्टोर्स से शॉपिंग करते थे?'

'हाँ। और वो मोटू अंकल, जिनके पास कभी छुट्टे पैसे नहीं हुआ करते थे।' उसने कहा। हम दोनों हँस पड़े।

'एनीवेज, सो यस। मैं एक ऐसी लड़की चाहता था, जिसकी जड़ें इंडिया में हों, लेकिन जिसने दुनिया भी देख रखी हो। तुम न्यूयॉर्क, हांगकांग और अब लंदन में काम कर चुकी है। मुझे लगता है कि तुम मेरी ज़िंदगी के लिए एक एसेट साबित हो सकती हो।'

'मैं कभी-कभी काम के सिलसिले में न्यूयॉर्क जाती हूँ। कभी मिलते हैं।'

'लेट्स सी। अभी तो स्काइप ही बहुत है। जल्द ही फिर बात करते हैं।'

जैसे ही मैंने कॉल को डिसकनेक्ट किया, मॉम भीतर चली आईं।

'मॉम, ये ठीक नहीं है। आप मेरी बातें सुन रही थीं।'

'सॉरी, बेटा।' उन्होंने मेरा माथा चूमते हुए कहा। 'लेकिन ये बहुत ही नेक लड़का लगता है। और नारायणा? यह तो सीधे-सीधे साईं बाबा की कृपा है!'

Downloaded from Ebookz.in

36

एक महीने बाद
सेंट रेजीस होटल्स कैफे, न्यूयॉर्क

'राधिका, राइट?'

भीतर घुसते ही मैंने उसकी आवाज़ सुनी। मैंने मुड़कर देखा। उसने एक ब्लैक टर्टलनेक पहन रखी थी, शायद स्टीव जॉब्स की याद में।

'ब्रजेश?' मैंने कहा। हमने हाथ मिलाए।

'यस, आपको आमने-सामने देखकर अच्छा लगा।'

इस पुराने ढंग के लग्जरी कैफे में ऊँची छतें और कलोनियल-एरा का फर्नीचर था। एक कोने में एक सैक्सोफोन प्लेयर और एक पियानिस्ट म्यूजिक बजा रहे थे।

हमने चाय बुलवाई। वेटर चाय के साथ ही जैम, केक्स, सैंडविचेस, चॉकलेट्स भी ले आया।

'चाय पर मिलने का विचार बहुत ही अच्छा रहा। यहाँ सबकुछ कितना प्यारा है।' ब्रजेश ने कहा। उसने कुछ सैंडविचेस उठाए और अपनी प्लेट में रख लीं।

'ग्लैड यू लाइक इट।'

मैंने ऑफिस सूट पहन रखा था, क्योंकि यहाँ पर आने से पहले मैं जोनाथन और क्रैग से मिलने ऑफिस गई थी। मैंने यह सूट जान-बूझकर इसलिए पहना था, क्योंकि मॉम ने मुझे ऐसा करने से मना किया था। मैं चाहती थी कि ब्रजेश मुझे वैसे ही स्वीकार करे, जैसी मैं हूँ। और नहीं तो मुझे रिजेक्ट कर दे।

'तुम्हारी फ्लाइट कब है?'

'9.30 बजे। उसके लिए मुझे 7.30 बजे एयरपोर्ट के लिए निकल जाना होगा।'

हमारे पास कुल साढ़े चार घंटे का समय था, यह डिसाइड करने के लिए कि हम जीवनभर साथ रह सकते हैं या नहीं।

'तो कौन बात शुरू करेगा?' ब्रजेश ने कहा।

'आमतौर पर तो मैं ही करती हूँ।'

'ओह, यह तो अच्छा ही होगा। मुझे अपने बारे में कुछ बताओ।'

मैंने उसे बचपन से लेकर अभी तक की अपनी कहानी सुनाई। देबू और नील को छोड़कर मैंने सबकुछ बता दिया।

'तो मैं पिछले छह महीने से लंदन में हूँ। और अब पैरेंट्स चाहते हैं कि मैं सेटल डाउन हो जाऊँ।' मैंने अपनी बात पूरी करते हुए कहा।

‘सेटल डाउन? ये क्या बात हुई?’

‘हाँ, इंडिया में ऐसे ही बोला जाता है। सेटल हो जाओ। हिलो-डुलो मत। कोई रिस्क नहीं, कोई एक्साइटमेंट नहीं।’

वह हँस दिया।

‘हमारे पैरेंट्स सबसे ज़्यादा सिक्योरिटी की चिंता करते हैं।’

‘सच।’

‘मैं भी तो एक जॉब में सेटल डाउन हो गया हूँ।’

‘रियली? लेकिन फ़ेसबुक में काम करना तो बहुत मज़ेदार होगा ना?’

‘यही तो बात है। सभी को यही लगता है।’

‘तुम्हें अपना काम पसंद है?’

‘काम चैलेंजिंग है। लेकिन पैसा अच्छा मिलता है।’

‘फिर?’

‘कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि टेक्नोलॉजी की दुनिया में इतना कुछ हो रहा है। मैं अपना कोई काम क्यों नहीं शुरू करता।’

‘बिलकुल कर सकते हो।’

वह अपनी ज़िंदगी के बारे में बताने लगा। वह आईआईटी जाना चाहता था, लेकिन दो बार कोशिश करने के बावजूद कामयाब नहीं हो पाया। फिर उसने एनआईटी ज्वॉइन किया, क्लास में टॉप किया और फिर हायर एजुकेशन के लिए एमआईटी चला गया।

‘और फिर एक टिपिकल आईटी जॉब। यही मेरी कुल-जमा कहानी है।’

मैं मुस्करा दी। हमने चाय पी। वेटर बिल ले आया। 5.30 बजे थे और मेरे पास दो घंटे का समय और था।

‘चलो सेंट्रल पार्क में टहलते हैं।’ मैंने कहा।

हमने 59वीं स्ट्रीट से सेंट्रल पार्क में प्रवेश किया। हरी घास और हरे दरख्तों को देखकर हम भूल ही गए कि हम दुनिया के सबसे व्यस्त शहरों में से एक में हैं। मुझे देबू का खयाल आया। उसका ऑफिस यहाँ से एक मील से भी कम दूरी पर था।

‘आप खोई-खोई सी लग रही हैं। काम का दबाव?’

‘नहीं, बस यूँ ही। न्यूयॉर्क पुरानी यादें ताज़ा कर देता है।’

हम सेंट्रल पार्क ज़ू की ओर चल दिए।

‘अच्छी यादें या बुरी।’

‘दोनों ही। अच्छी ज़्यादा।’

हमने ज़ू के टिकट लिए, जहाँ हमने ग्रिजली भालुओं के बच्चों को देखा, जो छह हफ्ते पहले ही जन्मे थे।

‘सो क्यूट।’ मैंने कहा।

‘तुम्हें बच्चे पसंद हैं?’ ब्रजेश ने कहा। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। माँ बनने के सवाल पर ही मैं अपनी ज़िंदगी में आने वाले दो मर्दों को खो चुकी थी।

‘हूँ, बच्चे? हाँ मुझे बच्चे बहुत पसंद हैं। कभी सोचा नहीं था कि मुझे ऐसा लगेगा, लेकिन अब अकसर सोचती हूँ कि काश मेरे भी बच्चे होते।’

‘मैं भी।’

हम ज़ू से बाहर आए और उत्तर दिशा में चलने लगे।

रास्ते में बेथेल्डा फाउंटेन आया, द लेक के किनारे बना हुआ। हम उसकी सीढ़ियों पर बैठ गए और बत्तखों को देखने लगे। शाम होने लगी थी।

‘ब्रजेश, हमने इतनी सारी चीज़ों के बारे में बात की, लेकिन अपनी पास्ट रिलेशनशिप्स के बारे में नहीं।’

‘हूँ, हमें करना चाहिए या नहीं? हम अभी एक-दूसरे को इतनी अच्छी तरह से नहीं जानते।’

‘लेकिन ऐसी चीज़ें डिस्कस कर लेना ही बेहतर है।’

उसने मेरी आँखों में झाँकते हुए कहा : ‘केवल एक।’

‘ओह, स्पेशल वन।’

‘पता नहीं। वह बहुत पहले की बात है। जब मैं आईआईटी की तैयारियाँ कर रहा था। उसी के कारण मेरा ध्यान भटका और मैं कामयाब नहीं हो पाया। वह मेरी कोचिंग क्लास में थी।’

‘ओके। गर्लफ्रेंड?’

‘मैं उसे दो साल पसंद करता रहा। वो भी मुझे पसंद करती थी। लेकिन हमने अपनी फ़ीलिंग्स ज़ाहिर करने में काफी समय ले लिया। हम केवल दो महीने ही डेट कर पाए।’

‘मतलब?’

‘उसके पापा का सऊदी अरब में जॉब लग गया तो वो फैमिली के साथ वहाँ चली गई।’

‘आई एम सॉरी, ’ मैने कहा।

‘इट्स ओके। लेकिन वह बहुत पहले की बात है। हाऊ अबाउट यू?’

‘इंडिया में कुछ नहीं। लेकिन न्यूयॉर्क में एक रिलेशनशिप। और पता नहीं उसको क्या बोलूँ, लेकिन हांगकांग में भी कुछ। तो वन एंड अ हाफ रिलेशनशिप्स।’

‘ओह।’

‘हाँ। तुम्हें बताने के बाद अब मुझे हल्का लग रहा है।’

वह मुस्करा दिया।

‘लेकिन अब कुछ नहीं है। दोनों रिलेशनशिप्स बहुत पहले ही ख़त्म हो गईं।’

‘रिश्ते टूटने पर तकलीफ हुई होगी।’

‘हाँ बहुत। लेकिन अब मैं ठीक हूँ।’

उसने फिर कुछ नहीं पूछा।

‘तुम कुछ और पूछना चाहोगे?’

‘नॉट रियली।’

‘सो, क्या लगता है तुम्हें, हमारे बारे में?’ उसने कहा।

क्या वह मुझसे मेरा फैसला चाह रहा था? रेस्तरां में एक चाय और पार्क में एक चहलकदमी के बाद? क्या इसी तरह से अरेंज्ड मैरिज होती हैं?

‘ब्रजेश, मुझे तुमसे मिलकर अच्छा लगा। लेकिन ये फैसले इतने अहम होते हैं कि...’

‘ऑफ कोर्स। टेक योर टाइम। सोचकर बताना।’

‘आई विल। अब चलें?’

◆

तुम्हें इससे अच्छा लड़का दूसरा नहीं मिलेगा। फिर वह अमेरिका में रहता है, जहाँ तुम्हें बहुत आसानी से ट्रांसफर मिल जाएगा। अच्छा कमाता है। नेक है। इससे बेहतर और क्या होगा।’

मॉम, जो अब इंडिया मे थीं, फोन पर मुझसे बात कर रही थीं।

‘लेकिन मॉम।’

‘गुलाटीज़ दो बार फोन लगा चुके हैं।’

‘मुझे सोचने के लिए समय चाहिए।’

‘घोड़े पर बैठकर कोई राजकुमार नहीं आने वाला है। कम-से-कम शादी.कॉम के मार्फत तो नहीं।’

‘मुझे कोई राजकुमार चाहिए भी नहीं।’

‘तो ज़मीन पर उतरकर बात करो।’

मैं चुप रही।

मुझे वह अच्छा लगा था। मैं हाँ बोल सकती थी। वह ‘ओह माय गॉड, वॉव’ टाइप तो नहीं था, लेकिन ‘इसे ना कहने का कोई कारण नहीं है’ टाइप ज़रूर था।

‘इट्स ओके, मॉम। व्हाटेवर। यदि आपको वह पसंद है, तो मेरी भी हाँ समझो।’

‘रियली?’

‘हाँ।’

‘अदिति के पापा, कहाँ हो? मुबारक हो! उसने हाँ बोल दिया।’ वे चिल्लाते हुए भीतर गईं।

और इधर मेरा दिल बैठने लगा। मैं, राधिका मेहता, आख़िरकार शादी करने जा रही थी। मुबारक हो, राधिका मेहता!

37

‘हे! यू आर देयर।’ नील की आवाज़ सुनकर मैं हकीकत की दुनिया में लौट आई। उसने मेरे कंधे पर हा थ रख दिया।

‘चलो, बैठकर बातें करते हैं।’

मैंने उसका हाथ हटा दिया।

‘नील, मुझे जाना है।’

‘मुझे बस पाँच मिनट का समय दो। मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।’ उसके हाथ में एक बड़ा-सा लिफाफा था। हम सोफे पर बैठ गए।

‘प्लीज़, मेरी तरफ देखो।’

मैंने उसकी तरफ देखा। वही चमकदार आँखें और खूबसूरत चेहरा।

‘मैं तुमसे तीन चीज़ें कहना चाहता हूँ।’

‘सुन रही हूँ।’

‘लेकिन उससे पहले मैं तुम्हें एक एक्सट्रा बात यह कहना चाहता हूँ कि तुम इस सफेद सलवार-कमीज़ में बहुत अच्छी लग रही हो।’

‘ओह ये? वेल, थैंक्स। यह संगीत प्रैक्टिस के लिए है।’

‘ मैंने तुम्हें पहले कभी इंडियन क्लॉथ्स में नहीं देखा था।’

‘रियली?’ मैंने कहा। ज़ाहिर है, उसने मुझे कभी ऐसे नहीं देखा था। उसने या तो मुझे वर्क क्लॉथ्स में देखा था या बिना किसी क्लॉथ्स के।

‘इंडियन क्लॉथ्स तुम पर सूट करते हैं।’

‘तुम यहाँ पर यह कहने के लिए आए हो?’

‘नहीं-नहीं, ये तो बस एक ऑब्ज़र्वेशन है।’

‘तो फिर वह बात कहो, जिसके लिए तुम यहाँ आए हो।’

‘पहली बात, राधिका, आई एम रियली रियली सॉरी। जिस तरह से चीज़ें हमारे बीच खत्म हुईं। मैं बेवकूफ था। पूरी तरह से बेवकूफ।’

‘वेल, हम अलग हुए, मै लंदन चली गई। कहानी ख़त्म।’

‘हाँ, जबकि मैंने कभी सोचा भी नहीं कि यह कहानी दूसरी तरह से भी ख़त्म हो सकती है। दूसरे ऑप्श्ंस भी थे।’

‘अब उसके बारे मे बात करने से कोई फायदा नहीं, नील। वह बीते कल की बात हो गई है।’

‘वेल, फायदा हो या ना हो, लेकिन तुम्हारे जाने के बाद से मैंने तुम्हें हर दिन मिस किया है। मैं तुम्हारे क्यूबिकल के सामने से निकलने में भी कतराता रहा हूँ। हर चीज़, हर

ट्रिप मुझे तुम्हारी याद दिलाती है। जब भी टैक्सी ओल्ड पीक रोड से होकर गुज़रती है, मेरे दिल में दर्द उठने लगता है।'

'घर जाने के दूसरे रूट्स भी तो होंगे।'

उसने मेरी तरफ देखा। मैंने नज़रें फेरी नहीं।

'आई एम सॉरी, राधिका। आई लव्ड यू सो मच। तुम मेरी ज़िंदगी में आने वाली सबसे बड़ी खुशी थीं। और हमेशा रहोगी। तुम मेरे पास थीं, मुझे प्यार करती थीं और मैंने क्या किया? कुछ भी नहीं।'

मैं चुप रही।

' मैंने अपनी ज़िंदगी की सबसे बड़ी गलती कर दी है।'

मुझे लगा मैंने यही लाइन अभी-अभी कहीं सुनी है।

उसने वह भूरा लिफाफा टेबल पर रख दिया।

'नील, आई मिस्ड यू टू। लेकिन अब किसी बारे में कुछ नहीं हो सकता। तो, तुमने अभी तक बताया नहीं, तुम यहाँ पर क्यों आए हो?'

उसने लिफाफा उठाया। उसमें से ए-4 साइज की शीट्स का एक सेट निकाला। उसके पहले पन्ने पर एक स्टाम्प पेपर था।

'मैं कुसुम को छोड़ रहा हूँ। ये रहे उसके दस्तावेज़।'

मेरा सिर चकराने लगा। स्यूट की दीवारें जैसे घूमने लगीं। उसने मुझे पेपर्स थमा दिए। उसने और कुसुम ने हांगकांग की फैमिली कोर्ट में म्युचुअल कंसेंट डाइवोर्स के लिए अर्ज़ी दी थी। मेरे हाथ काँपने लगे।

'क्यों?' मैंने कहा।

'तुम मुझसे पूछ रही हो क्यों? तुम?'

'तुम्हारे पास एक परफेक्ट फैमिली थी।'

'यदि ऐसा होता तो जो हमारे बीच हुआ, वह सब क्यों होता?'

मैं चुप रही। उसकी आँखें नम हो गईं।

'और बच्चों का क्या होगा?'

'हम को-ऑपरेट करेंगे। शेयर कस्टडी।'

'कुसुम ने क्या कहा?'

'वो खुश तो नहीं है, ऑफ कोर्स। लेकिन वह जानती है कि हमारी शादी में कुछ मिसिंग था। हमारे बीच की दूरियाँ बहुत बढ़ गई थीं।'

'अब वो क्या करेगी?' मैंने कहा। मुझे नहीं पता मैं उसकी एक्स-वाइफ के लिए इतनी चिंता क्यों जता रही थी।

'वह कुछ-ना-कुछ कर लेगी। उसकी फाइनेंशियल कंडीशन अच्छी है। मैंने उसे अपनी तमाम संपत्ति का आधा हिस्सा दे दिया है। बदले में वह को-पैरेंटिंग और म्युचुअल कंसेंट के

लिए तैयार हो गई।'

मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मैं अपनी शादी के वैन्यू पर एक डाइवोर्स को डिस्कस कर रही थी। नील ने अपनी बात जारी रखी, 'मैं ज़्यादा डिटेल्स नहीं बताऊँगा, लेकिन प्वॉइंट यही है कि मेरी शादी टूट चुकी है। एक ना एक दिन तो यह होना ही था। काश यह थोड़ा पहले हो जाता।'

मैंने अपना फोन चेक किया। मेरी दो कज़िन्स के मिस्ड कॉल थे।

'आई होप कि तुम ठीक हो। लेकिन मुझे अभी जाना होगा। तुम्हें कुछ और कहना था?'

'हाँ। एयरपोर्ट पर एक छोटा-सा प्लेन इंतज़ार कर रहा है।'

'तुम्हारी चार्टर्ड फ्लाइट?'

'हाँ राधिका, ' उसने कहा और आगे बढ़कर मेरा हाथ थाम लिया। 'हमारी फ्लाइट।'

'क्या?'

'मैं जानता हूँ कि इससे सबकुछ गड़बड़झाला हो जाएगा। तुम्हारी पूरी फैमिली यहाँ पर है। बहुत खर्चा हुआ है। फिर भी मेरी बात सुनो।'

'क्या?'

'मैं एक चेक साइन कर दूँगा। जितना खर्चा हुआ है, उसकी भरपाई कर दूँगा। लेकिन तुम मेरे साथ आओ। हम दोनों साथ-साथ उड़ जाएँगे, जहाँ तुम बोलो वहाँ के लिए।

'नील, ये अच्छा मज़ाक है।'

'नहीं, यह सच है। मैंने कितना वक्त ज़ाया कर दिया। मैंने हमारे प्यार को किसी फाइनेंशियल डील की तरह ट्रीट किया। लेकिन यह इस तरह से नहीं होता है। हमें ये चीज़ें दिल से करनी होती हैं।'

'तुम चाहते हो कि मैं अपनी शादी छोड़कर तुम्हारे साथ भाग जाऊँ?'

'तुम अपनी फैमिली से बात भी कर सकती हो। मैं भी उनसे मिल सकता हूँ। हांगकांग पहुँचकर हम शादी कर लेंगे।'

'लेकिन हांगकांग जाना कौन चाहता है?'

कुछ देर की चुप्पी के बाद नील ने कहा : 'अगर हम वहाँ कुछ दिन रहें तो बेहतर होगा। मेरे बच्चे वहाँ हैं। लेकिन अगर तुम चाहो तो हम कहीं और भी रहने जा सकते हैं।'

मैंने नील की आँखों में झाँककर देखा। मैं उसे इतने करीब से तो जानती ही थी कि यह बता सकूँ कि वह झूठ नहीं बोल रहा था। मैं चुपचाप उसकी तरफ देखती रही।

'कुछ तो कहो।' उसने कहा।

'क्या कहूँ?' अभी मुझे ' चिट्टियाँ कलाइयाँ' पर डांस करने जाना है।'

'ये क्या है?'

'एक बॉलीवुड सांग। मेरी संगीत सेरेमनी के लिए।'

‘ये पंजाबी है ना? और इसका मतलब क्या है?’

‘गोरी कलाइयाँ वगैरा।’

‘ऑफ कोर्स, इट्स इंडिया। यहाँ गोरा होना बहुत ज़रूरी है। तो तुम इस पर डांस करोगी? वही सब ठुमका-वुमका?’

हम दोनों हँस दिए, पुराने दिनों की तरह।

‘देखो, मैं तुम्हें तुम्हारी शादी के जश्न से महरूम नहीं करूँगा। हम अभी हांगकांग में कोर्ट मैरिज करेंगे। फिर कुछ समय इंडियन स्टाइल में धूमधाम से शादी करेंगे। एक इंडिया में, दूसरी लंदन में।’

उसने अभी तक मेरा हाथ थामे रखा था। वह घुटनों के बल झुका और मेरा हाथ चूम लिया।

‘माय ब्यूटीफुल इंडियन प्रिंसेस, विल यू मैरी मी?’

मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। गोल्डमान की बहुतेरी लड़कियों का क्रश, जिस आदमी को मैंने प्यार किया, आज वह मेरे सामने घुटनों के बल बैठा था।

‘प्लीज़, प्रिंसेस। से यस।’

मेरा फोन बजा। मैंने कॉलर आईडी देखे बिना ही फोन उठा लिया।

‘बेबी, तुम कहाँ हो?’ देबू की आवाज़ सुनकर तो मैं जैसे उछल ही पड़ी।

‘हे, मैं तुम्हें बाद में लगाती हूँ।’

‘ओके सुनो, मैंने घर पर फोन लगाया था और...’

‘बाद में बात करते हैं।’ मैंने कहा और फोन रख दिया।

‘सब ठीक है ना?’ नील ने कहा। वह अब भी अपने घुटनों पर ही था। मैंने सिर हिला दिया।

‘राधिका मेहता, मैं तुमसे प्यार करता हूँ और हमेशा करता रहूँगा। तुम मुझसे शादी करोगी?’

मैंने अपना हाथ छुड़ाकर अपने सिर पर मार लिया।

‘फक नील। रियली फ़क!’

‘क्या हुआ?’

‘तुम्हें यह सब करने की फुरसत अब मिल रही है? तुम तब कहाँ थे, जब मैं बिस्तर में तुम्हारे बगल में लेटी चुपचाप रोती रहती थी?’

‘तुम रोती थीं? मैंने तो कभी तुम्हारा रोना नहीं सुना।’

‘ मैंने कहा मैं चुपचाप रोती थी। और तुमने कहा था कि मैं मैरिज टाइप नहीं हूँ। और क्या कहा था तुमने कि मैं माँ बनने के लिए नहीं बनी हूँ?’

‘मैं डर गया था। मैं नहीं चाहता था कि हमारा रिश्ता कभी खत्म हो। मैं समझ नहीं पा रहा था कि तुम्हें अपने से दूर जाने से कैसे रोकूँ?’

‘मैं उठ खड़ी हुई।

‘तो क्या अब तुम समझ गए हो? ये ऑप्शंस तुम्हें पहले क्यों नहीं सूझे? तब तो मैं तुम्हारे ऑफिस की एक यंग गर्ल थी, जिसके साथ तुम जब चाहे सो सकते थे।’

‘मैं समझ सकता हूँ कि तुम अपसेट हो। मैंने तुम्हारे साथ ठीक नहीं किया।’

‘मुझे इस्तीफा देना पड़ा। लेकिन तुम्हें इससे भी फर्क नहीं पड़ा। ज़्यादा से ज़्यादा तुमने इतना ही किया कि मेरा ट्रांसफर अरेंज करवा दिया।

‘तुमने ये सब बातें मुझे तब क्यों नहीं बोलीं?’

‘तुम्हारी फैमिली थी, मैं तुम्हें क्या बोलती? यह कि तुम अपने बीवी और बच्चों को छोड़ दो और मेरे पास आ जाओ?’

‘काश कि तुमने यह कहा होता।’

मैं स्यूट में टहलने लगी। नील अब भी घुटनों के बल बैठा था।

‘सोफे पर बैठ जाओ, नील। इतना ड्रमैटिक होने की ज़रूरत नहीं है।’

‘फाइन, ड्रमैटिक ना सही, प्रैग्मेटिक तो हुआ जा सकता है ना।’

‘दिस इज़ सो स्टुपिड, नील। मैं तुमसे इससे बेहतर की उम्मीद करती हूँ।’

‘मुझसे चीज़ों को समझने में देरी हो गई, तुम्हें इसी बात का गुस्सा है ना? ठीक है, चिल्लाओ मुझ पर।’

‘ये बात नहीं है।’

‘मैं तुम्हें रोज़ मिस करता था, लेकिन कभी तुम्हें कॉन्टैक्ट नहीं किया। लेकिन जब तुम्हारी शादी के बारे में सुना तो मुझे लगा कि अ भी नहीं तो कभी नहीं। तो मैं यहाँ चला आया। तुम्हें अपने साथ ले जाने के लिए।’

‘नील, जस्ट स्टॉप।’ मैंने कहा।

‘तुम्हारे जो मन में आए, मेरे साथ वही कर लो, लेकिन प्लीज़ मेरे साथ चलो।’

उसने मेरे कंधो को थाम लिया था। मुझे अपने चेहरे पर उसकी साँसें महसूस होने लगीं।

‘मुझे जाने दो, नील।’ मैंने कहा, लेकिन अपने को उसकी पकड़ से छुड़ाने की कोई कोशिश नहीं की।

उसने मुझे और कसकर पकड़ लिया।

‘ मैंने कहा मुझे जाने दो।’ मैंने कहा, लेकिन मेरी आवाज़ टूट गई। मैं रोने लगी।

‘रोओ नहीं, ’ उसने कहा। ‘इट्स ओके। मैं यहाँ हूँ। सब ठीक होगा।’

उसने मेरे सिर को अपने हाथों से पकड़ा और अपनी ओर खींच लिया, लेकिन मुझे किस करने की कोशिश नहीं की। उसने केवल मेरे कानों में फुसफुसाते हुए इतना ही कहा : ‘मैं इसी रूम में हूँ। पायलट इंतज़ार कर रहा है। तुम शांत हो जाओ। वापस जाओ और सोचो। मैं तुम्हारे जवाब का इंतजार करूँगा।’

मैंने सिर हिला दिया।

'मुझे जाना होगा, रियली।'

मैं दौड़कर होटल कॉरिडोर में पहुँची। मेरा दिमाग बहुत तेज़ काम कर रहा था। फंक्शन रूम के गेट पर मुझे देबू मिला।

'देबू, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' मैंने आसपास देखते हुए कहा।

'बेबी, मैंने तुम्हें कितने फोन लगाए, लेकिन तुमने उठाए ही नहीं।'

मैं उससे यहाँ पर बात नहीं कर सकती थी। कोई भी, कभी भी आ सकता था। मुझे पास में एक स्टाफ रूम दिखाई दिया। मैंने उसे खोला और देबू के साथ होटल के किचन एरिया में चली गई।

'तुम यहाँ पर ऐसे नहीं आ सकते।'

'मेरे पास और कोई च्वॉइस नहीं थी।'

'तो तुम सीधे अंदर चले आए।'

'मैं ऐसा दिखावा कर रहा था, जैसे मैं गेस्ट में से एक हूँ।'

'फिर कभी ऐसा मत करना।'

'सॉरी, हमारे पास केवल एक दिन का वक्त है, राधिका। मैंने अपने पैरेंट्स से बात कर ली है।'

'किस बारे में?'

'हमारे बारे में। हमारे रिश्ते के बारे में। और जिस सिचुएशन में हम अभी हैं, उसके बारे में।'

'देबू, मेरे दिमाग की अभी खिचड़ी बनी हुई है और यह कभी भी फूट सकता है।'

मेरा फोन बजा। मॉम का कॉल था। फोन उठाते हुए वे मुझ पर ज़ोर से चिल्लाईं।

'तुम पागल हो गई हो क्या? कहाँ गायब हो जाती हो तुम? तुम्हारी कज़िन्स तुम्हें पूरे होटल में ढूँढ रही हैं।'

'मैं होटल में ही हूँ।'

'कहाँ पर?'

'टॉयलेट में।'

'तुम्हें इतनी देर क्यों लग रही है? पेट तो नहीं खराब हो गया? अपना खयाल रखो। शादी के टाइम पर लूज़ मोशन नहीं होना चाहिए। तुम्हें दवाई तो नहीं चाहिए?'

'मॉम, मैं ठीक हूँ। बस दो मिनट में आ रही हूँ।'

मैंने फोन रखा और देबू की तरफ देखा।

‘सुना तुमने?’

‘आई एम सॉरी। मेरे पैरेंट्स ने भी बहुत विरोध किया, लेकिन मैंने उन्हें राज़ी कर लिया। वे लोग यहाँ आना चाहते हैं।’

‘प्लीज़, देबू।’

‘मुझे बस तुम्हारी हाँ चाहिए। मैं तुम्हारा पहला प्यार हूँ, राधिका। पहला और इकलौता। तुम तो इस आदमी को जानती तक नहीं, जिससे शादी करने जा रही हो।’

अब मेरे पास बहुत ऑप्शंस हैं, मैं उससे कहना चाहती थी।

‘तुम मुझसे क्या कहलवाना चाहते हो?’ इसके बजाय मैंने कहा।

‘यह शादी रोक दो। अपने पैरेंट्स से कह दो। अभी नहीं तो कभी नहीं।’

‘क्या सच? क्या वाकई ऐसा हो सकता है?’

‘हाँ। मैं तुम्हें अपनी ज़िंदगी के आखिरी दिन तक प्यार करूँगा।’

'राधिका मैडम, फ़ोकस करो। आपके पाँव बीट पर नहीं चल रहे हैं।' कोरियोग्राफर विजय ने कहा।

'ना तो मेरे पास असल ज़िंदगी में चिट्टियाँ कलाइयाँ हैं और ना ही मैं उस पर डांस कर सकती हूँ।'

मेरी छह कज़िन्स अभी तक हर मूव को अच्छी तरह सीख चुकी थीं। लेकिन मैं पाँच स्टेप्स से आगे नहीं बढ़ पा रही थी। मुझे गाने के बोल, विजय के इंस्ट्रक्शंस कुछ नहीं सुनाई दे रहे थे। मेरे दिमाग में केवल तीन शब्द गूँज रहे थे : देबू। नील। ब्रजेश! देबू। नील। ब्रजेश! देबू और नील की आवाज़ में मुझे आई 'लव यू' सुनाई दे रहा था। ब्रजेश की आवाज़ में मुझे फ्यूचर की तैयारियाँ सुनाई दे रही थीं। नील अपने चार्टर्ड प्लेन की बात कर रहा था। मंकी कैप पहने देबू के पैरेंट्स रोसोगुल्ला खाते हुए अपने बैग्स पैक कर रहे थे।

विजय ने सोलहवीं बार गाना रिप्ले किया। 'वन-टू-थ्री, राधिका मैडम, स्टार्ट।'

मैंने नाचने की कोशिश की, लेकिन मैं केवल इतना ही याद कर पा रही थी कि मैं और नील फिलीपींस के उस आइलैंड पर सेक्स कर रहे हैं। इसके बाद मुझे अपने अमेरिका वाले ट्राइबेका अपार्टमेंट का खयाल आया, जहाँ मैं देबू के साथ थी।

'मैडम, आप फिर बीट भूल रही हैं। हो क्या रहा है? कट, कट, रीस्टार्ट।'

तीन बार और कोशिशें की गईं। आखिरकार, विजय ने म्यूजिक बंद करवा दिया।

'ओनली राधिका मैम नाऊ। कज़िन्स, आप स्टेज से हट जाओ।' विजय ने कहा। वह हार नहीं मानने वाला था। उसने फिर से गाना बजवाया। मैं स्टेज के बीच में आ गई। पहले अंतरे में मुझे अपनी कलाइयाँ उठाकर अपने चेहरे के सामने लाना था और अपने आँखें मटकानी थीं। लेकिन मैं चुपचाप खड़ी रही। मुझे लग रहा था कि मेरे पैरों में जान नहीं है। मैं नीचे गिर पड़ी और रोने लगी। मैं इतनी ज़ोर से रो रही थी कि कोरियोग्राफर दौड़कर मेरे पास आया। उसे चिंता सता रही थी कि कहीं उसे अपनी नौकरी ना खोनी पड़े।

'सॉरी मैडम, आई एम सॉरी। हम यह गाना नहीं करेंगे। गाना बदल दूँ? रोमांटिक सॉन्ग? आशिकी 2? 'तुम ही हो'? इसमें कुछ नहीं करना होता है, बस उदास नज़र आते हुए इधर उधर चलते रहो। ईज़ी। ट्राय करें?'

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया। मेरी कज़िन्स दौड़ते हुए स्टेज पर आईं और मुझे घेर लिया।

'क्या हुआ दीदी?' स्वीटी ने कहा।

'कुछ नहीं। मैं कितनी बेकार हूँ, ये स्टुपिड स्टेप्स भी नहीं सीख पा रही हूँ।'

'दीदी, मैं सेंट्रल गर्ल बन जाऊं?' स्वीटी ने कहा।

‘तू कैसे सेंट्रल गर्ल बनेगी? तू दुल्हन है क्या?’ पिंकी ने कहा।

इतने में मॉम वहाँ आ गईं।

‘क्या हो रहा है?’ उन्होंने मुझसे कहा।

मैं उठ खड़ी हुई और उन्हें ज़ोर से गले लगा लिया। मैं फिर रोने लगी। उन्होंने मेरी पीठ पर थपकी दी।’

‘शांत हो जाओ, मेरी बिटिया। हर लड़की को एक-ना- एक दिन पैरेंट्स का घर छोड़ना ही होता है।’

मैं घर छोड़ने की बात पर रो रही थी? नेवर माइंड, मैं पिछले कई सालों से घर से बाहर ही रह रही थी।

‘अभी रहने दो। ये कुछ समय बाद फिर ट्राय कर लेगी, ’ मॉम ने कहा।

‘लेकिन, मैडम संगीत तो आज शाम को ही है, ’ विजय ने चिंतित स्वर में कहा।

‘बाद में।’ मॉम ने कहा और मैं उनके साथ अपने कमरे में आ गई।’ आराम कर लो। मैं यहीं पर हूँ।’

मैं बिस्तर पर लेट गई। मॉम मेरे पास बैठ गईं।

‘मॉम, मैं आपसे एक ज़रूरी बात करना चाहती हूँ।’

‘क्या? ओह, अदिति ने ब्यूटी पार्लर को फोन किया या नहीं? उनका स्टाफ आता ही होगा।’

मैंने उनके चेहरे की ओर देखा और सोचने लगी कि कहाँ से शुरू करूँ।

‘नथिंग, मॉम। ये थोड़ा पर्सनल है और पता नहीं कि मुझे... ’

‘ज़्यादा दर्द नहीं होता है।’ मॉम ने कहा।

‘क्या?’ मैंने हैरत से पूछा।

‘सेक्स। मैं जानती हूँ कि तुम उसको लेकर तनाव में होगी। लेकिन उसमें ज़्यादा दर्द नहीं होता।’

‘रियली, मॉम?’ मैंने कहा।

‘यस। देखो, मैं उन बैकवर्ड माँओं जैसी नहीं हूँ, जो इन मामलों पर अपनी बेटी से बात नहीं कर सकतीं। मैं तो फ्रैंकली बात करती हूँ। तुम यही कहना चाहती थीं, ना?’

‘हाँ यही।’

‘गुड। आराम करो। और चिट्टियाँ कलाइयाँ पर ही नाचना। मेरी बेटी की शादी में सैड सॉन्ग नहीं बजेंगे।’

सूरज और उसके डेकोरेटर्स की टीम ने कमाल का काम किया था। संगीत की शाम उन्होंने हॉल को हर दशक की बॉलीवुड फिल्मों के पोस्टर से सजाया था। सफेद लिली और लाल गुलाबों से बनाए गए स्ट्रीमर्स पूरे रूम में भरे हुए थे। रूम किसी बॉलीवुड आइटम नंबर के सेट जैसा लग रहा था। सब कुछ बहुत ओवर द टॉप था, जैसा कि पंजाबी शादियों में होता है। मेहमान इस सजावट की तारीफ कर रहे थे। मैंने एक प्याज़ी रंग का लहंगा और उस पर एक डायमंड सेट पहना था। मैंने अपने आपको आईने में देखा।

'दीदी, आप स्टनिंग लग रही हो।' स्वीटी ने कहा। एक घंटे के मेकअप सेशन के बाद अब मैं भी खुद को पहचान नहीं पा रही थी। एक पल को मेरी इच्छा हुई कि काश देबू और नील मुझे इस रूप में देखें। हाँ, मेरी शादी से एक दिन पहले मैं यही चाहती थी कि मुझे मेरे एक्स बॉयफ्रेंड देखें, जो इस समय ब्लूटूथ रेंज में मेरे पास ही थे।

अपने कमरे में एक घंटा झपकी लेने के बाद मैं डांस की प्रैक्टिस करने चली गई थी और खूब जमकर प्रैक्टिस की थी, उतनी ही मेहनत से, जितनी मैं किसी फायनेंशियल मॉडल पर करती।

ब्रजेश मेरे पास आया और बोला : 'यू लुक... वेरी नाइस।'

'थैंक्स।' मैंने कहा।

'एक्चुअली, केवल नाइस नहीं, बल्कि ब्यूटीफुल, स्टनिंग, बेसिकली ग्रेट।'

'तुम भी बहुत शार्प लग रहे हो।' उसने एक क्रीम शेरवानी पहन रखी थी। साथ ही उसने अपने सुंदर पिचाई नुमा चश्मों को निकालकर कॉन्टैक्ट लेंस लगा लिए थे।

'गुड ईवनिंग, लेडीज़ एंड जेंटलमैन, ' पंकज मामा ने स्टेज संभाल लिया। उनके एक हाथ में माइक और दूसरे में व्हिस्की का ग्लास था।

'वेलकम टु द मोस्ट ब्यूटीफुल वेडिंग संगीत ऑफ दर मोस्ट ब्यूटीफुल डॉटर ऑफ माय मोस्ट ब्यूटीफुल सिस्टर।' उन्होंने कहा। ज़ाहिर है कि उन्हें चढ़ चुकी थी।

सबसे पहले विजय के ट्रूप ने दो प्रोफेशनल परफॉर्मेंस दी। इसके बाद शाम का आकर्षण : हमारी आंटियों का डांस हुआ।

'अब दोनों ही तरफ मामियाँ और बुआएँ हैं, जो 'लंडन ठुमकदा' पर अपनी प्रस्तुति देंगी।' पंकज मामा ने अनाउंस किया। सबने ज़ोरदार तालियाँ बजाईं। आठ आंटियाँ स्टेज पर सवार हो गईं। एलईडी स्क्रीन बैकग्राउंड में लंदन की तस्वीर दिखा रही थी, जिसमें बिग बेन नज़र आ रही थी। हर आंटी ने इतना सोना पहन रखा था कि उसको बेचकर लदंन मे एक अपार्टमेंट का डाउन पेमेंट दिया जा सकता था।

गाना बजना शुरू हुआ। स्टेज पर रिक्टर स्केल नाइन का झटका लगा। पहले पद्रह सेकेंड तक आंटियों ने ओरिजिनल स्टेप्स करने की कोशिश की, उसके बाद वे सब फ्री-स्टाइल करने लगीं। दो आंटियाँ एक-दूसरे से टकरा गईं। किसी की चूड़ियाँ किसी के बालों

में जा फँसी। लेकिन डांस चलता रहा। अगर अंग्रेज़ लोग उनके लंदन शहर को दिया गया यह ट्रिब्यूट देख लेते तो वे हमें कभी गुलाम नहीं बनाते।

कोरियोग्राफर विजय का मुँह खुला-का-खुला रह गया। वह सोचने लगा कि कहीं उसने कोई गलत प्रोफेशन तो नहीं चुन लिया है। इससे पहले कभी उसके स्टूडेंट्स ने उसकी किसी लेसन की ऐसी बारह नहीं बजाई होगी।

ब्रजेश मेरे पास खड़ा हँस रहा था। मैं भी मुस्करा दी।

मैंने अपना फोन चेक किया। देबू और नील दोनों के एक-एक मैसेज थे। मैंने उन्हें खोलकर नहीं देखा। उल्टे अपना फोन अदिति दीदी के हैंडबैग में रख दिया।

'जल्द ही तुम्हारा टर्न आने वाला है।' दीदी ने कहा।

'दीदी, मेरा मन नहीं हो रहा है।'

'क्या? तुम्हारी कजिन्स पहले ही बैकस्टेज पर पहुँच गई हैं। वे जबसे गोवा आई हैं, तभी से इस पल का इंतज़ार कर रही हैं।'

'ऑल द् बेस्ट।' ब्रजेश ने कहा। अब मेरे बैकस्टेज में जाने का समय आ गया था।

'क्या तुम मेरे लिए एक ड्रिंक ला सकते हो, ब्रजेश?' मैंने कहा।

'हाँ, हाँ, क्यों नहीं। तुम्हें क्या चाहिए?'

'कुछ भी।'

'व्हिस्की'

'श्योर।'

वह गया और बार से ब्लैक लेबल का एक बड़ा पैग बनाकर लौटा। मैं उसे एक साँस में पी गई।

'टेक इट ईज़ी। डोंट बी टेंस। वह बस केवल एक डांस है।' उसने कहा।

'बात केवल डांस की नहीं है। हमें कुछ बात भी करनी है।'

पिंकी मुझे बुलाने आई तो मुझे जाना पड़ा।

'हम बाद में बात करेंगे।' मैंने कहा।

'क्या? श्योर। हे, रॉक इट!' ब्रजेश ने कहा।

रास्ते में मुझे मॉम ने रोका।

'तुम क्या कर रही थीं?'

'क्या?'

'मैं सब देख रही थी। तुमने ब्रजेश को ड्रिंक लाने को बोला और फिर किसी चीप लड़की की तरह उसके सामने पी भी गईं।'

'तो?' मैंने कहा। व्हिस्की पीने के बाद मेरा कॉन्फिडेंस बहुत हाई हो गया था। 'मैं डांस करने से पहले थोड़ा रिलैक्स होना चाहती थी।

'तुम्हारे पास दिमाग है या नहीं? तुम्हारे इन-लॉज़ तुम्हें देख रहे हैं। क्या सोचेंगे वो? यही कि उनकी बहू किसी जंगली बेवड़ी की तरह पीती है?'

'मॉम, जब मेरे होने वाले पतिदेव को ही कोई प्रॉब्लम नहीं हुई तो आप क्यूं चिंता कर रही हैं?'

मॉम ने मुझे एक डर्टी लुक दी। पिंकी ने मेरा हाथ थाम लिया।

'मैं तो कहूँगी मॉम कि आप भी टल्ली हो जाओ। आपको इसकी ज़रूरत है।' मैंने जाते-जाते कहा।

मैंने बेहतरीन डांस किया और अपने कोरियोग्राफर की नाक नहीं कटने दी। मुझे अपनी सभी स्टेप्स याद थीं। चिट्टियाँ कलाइयाँ को तो मैंने बेहतरीन अंदाज़ में किया। लोगों ने चीयर किया। गाना खत्म हुआ। मैंने और मेरी कज़िन्स ने अपनी परफॉर्मेंस एक ग्रुप हग के साथ खत्म की। तालियाँ गूँज उठीं। ब्रजेश सबसे जोर से तालियाँ बजा रहा था। शायद उसको उम्मीद नहीं थी कि उसकी इंवेस्टमेंट बैंकर दुल्हन स्टेजतोड़ू डांस भी कर सकती थी।

'क्या कमाल का डांस किया तुमने।' उसने कहा।

'ओह नो, ऐसा नहीं है। उस चार मिनट के गाने के पीछे चार घंटों की प्रैक्टिस थी।'

'मैं तो चार महीने की ट्रेनिंग में भी ऐसा नहीं कर पाता।'

ड्रिंक्स लेकर जा रहा एक वेटर हमारे पास से गुज़रा। मैंने व्हिस्की का एक ग्लास उठाया और ब्रजेश को दे दिया।

'पी जाओ।' मैंने कहा।

'आर यू श्योर? हमें बहुत सारे लोगों से मिलना है।'

'मुझे तुमसे कुछ कहना है। उसके लिए तुम्हें इसकी ज़रूरत होगी।'

'क्या?'

इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, फंक्शन रूम मे लाइट्स डिम हो गईं। डीजे बजने लगा। स्टेज को अब फ्री फॉर ऑल कर दिया था और बच्चे उस पर चढ़ाई कर चुके थे। इसके बाद उनसे बड़े लेकिन टीनएजर कज़िन्स आए, जिन्होंने उन्हें वहाँ से भगा दिया। सबसे आखिर में अंकल्स अपने साथ आंटियों को भी लेकर स्टेज पर आ गए।

मैंने और ब्रजेश ने भी कुछ गानों पर डांस किया। ब्रजेश को वाकई डांस करना नहीं आता था। तीन गानों के बाद मैंने ब्रजेश के कान में कहा : 'ब्रजेश, अब रुक जाओ। मुझे कुछ बात करनी है।'

39

डीजे के शोर से दूर आते ही मेरे कानों को राहत महसूस हुई। हम मैरियट गार्डन में चले आए, जो अभी रात के वक्त शांत था। दिसंबर की हवा में हल्की सर्दी थी और मैं अपने हाथों को रगड़ने लगी।

'हम कहाँ जा रहे हैं?' ब्रजेश ने कहा।

'लोगों की नज़रों से दूर।' मैंने कहा। हमें एक बेंच मिल गई, जिस पर हम बैठ गए। एक-दूसरे के पास, जबकि हमारे सामने समुद्र था।

'क्या कभी-कभी केवल साँसें लेते रहना ही खूबसूरत नहीं होता?' मैंने कहा।

'हाँ। लेकिन वे लोग हमें ढूँढने लगेंगे। जल्द ही एक सर्च पार्टी यहाँ पर आ धमकेगी।'

'सबकुछ बहुत क्रेज़ी हो गया है। '

'डोंट वरी। दो दिन में सभी मेहमान चले जाएँगे। फिर मैं और तुम ही रह जाएँगे।'

'हाँ।' मैं सोच रही थी कि कैसे अपनी बात शुरू करूँ।

'और जल्द ही हम बाली के लिए प्लेन में होंगे।'

'हाँ ब्रजेश, लेकिन...'

वह मुझे नज़रअंदाज़ कर एक्साइटेड तरीके से बोलता रहा। 'और बाली सैन फ्रांसिस्को लौट जाने के बाद वीकेंड में मुझे अपार्टमेंट्स ढूंढने हैं।'

'ब्रजेश, मैं यह नहीं कर सकती।'

'क्या? यह बहुत हेक्टिक जो जाएगा ना? ठीक है, हम अपार्टमेंट्स बाद देख लेंगे।'

'मैं अपार्टमेंट खोजने की बात नहीं कर रही हूँ।'

'फिर?'

'यह। यह सब जो हो रहा है। आई एम सॉरी, मैं यह नहीं कर सकती।'

'क्या? रिश्तेदार? हाँ, उन्होंने तो मेरी भी नाक में दम कर रखा है। पता नहीं हमें और कितनों के पैर छूने होंगे।'

मैंने उसका कंधा पकड़ा और उसे अपनी ओर कर लिया।

'ब्रजेश, मैं यह शादी नहीं कर सकती।'

'क्या? सॉरी, मैं समझा नहीं।'

'जो तुमने सुना, वही।'

उसने मेरी ओर देखा और हँस दिया।

'क्या?' मैंने कहा।

'तुम बहुत फनी और स्वीट हो।' उसने मेरे गाल खींचे।

'स्वीट?' मैंने कहा। उसे मंझधार में छोड़कर जाने में भला कौन-सी स्वीटनेस हो गई?

‘तुम नर्वस हो। और इसीलिए छोटे बच्चों की तरह बोल रही हो कि मैं यह नहीं कर सकती। यह स्वीट नहीं तो क्या है?’

‘ऐसा नहीं है...’

‘डर मुझे भी लग रहा है। मैं अकेला रहता हूँ। अब मेरे साथ कोई और भी रहने वाला होगा। यह मुझे थोड़ा अजीब लग रहा है। फिर यह सब इतनी जल्दी में हो रहा है।’

‘जल्दी में? हम कई महीनों से इसकी प्लानिंग कर रहे थे।’

‘तुमने हाँ कह दिया, मैंने हाँ कह दिया। क्योंकि हमें कोई-ना-कोई फैसला तो करना ही था।’

‘ब्रजेश, कैन यू प्लीज़ ट्रस्ट मी? मैं यह नहीं कर सकती।’

वह फिर मुस्करा दिया। उसने अपना एक हाथ मेरे कंधे पर रख दिया।

‘आज के बाद से तुम्हारे सारे डर मेरे हैं और मेरे तुम्हारे। तो चाहे तुम्हें डर लगे या कुछ और, मैं तुम्हारे साथ हूँ।’

मैं बेंच से उठी और उसके सामने खड़े हो गई।

‘ब्रजेश, मुझे नहीं लगता कि तुम मेरी बात समझ पा रहे हो। यह नर्वसनेस नहीं है। मुझे कुछ ज़रूरी फैसले लेने हैं और मेरे दिमाग में खलबली मची हुई है।’

‘मुझे वह सुनकर मायूसी हुई लेकिन।’

‘लेकिन क्या?’

‘अंदर कोई दो सौ लोग नाच रहे हैं, हमारे मिलने की खुशी मे। एक मूड स्विंग अब हमारे फैसले नहीं ले सकता।’

‘ये मूड स्विंग नहीं है, ब्रजेश?’

‘तो फिर क्या है? तुम मुझसे कुछ कहना चाहती हो?’

‘यह मेरा पास्ट है, जो आज भी मेरा पीछा कर रहा है।’

वह मेरी तरफ देखने लगा और सोचने लगा कि मैं क्या कहना चाह रही हूँ।

‘यह मेरा फ्यूचर भी है, जिसके बारे में मुझे तय करना है।’

ब्रजेश का फोन बजा। वह मुस्करा दिया।

‘ये लो, सर्च पार्टी शुरू हो गई।’ उसने कहा और फोन उठा लिया।’ हाँ डैड, मैं यहीं पर हूँ। बस थोड़ी देर खुली हवा में साँस लेने चला आया था। हाँ, राधिका भी मेरे साथ में है। हम केवल चैटिंग कर रहे हैं, डैड। ठीक है, हम आ रहे हैं।’

उसने फोन रखा और मेरी तरफ देखा।

‘बड़े-बुजुर्ग लोग जा रहे हैं। वे हमें आशीर्वाद देना चाहते हैं।’

‘सॉरी ब्रजेश। मैं...’

‘हमें अभी जाना होगा। सुनो राधिका, मैं लड़कियों के मामले में एक्सपर्ट नहीं हूँ। लेकिन शायद हर लड़की अपनी शादी से पहले ऐसे ही सोचती होगी, जैसे तुम सोच रही

हो।’

‘सभी नहीं।’

‘शायद अरेंज्ड मैरिज में वे ऐसा सोचती हों। हम अब भी एक-दूसरे को जानते नहीं। क्या मैं कुछ सजेस्ट कर सकता हूँ?’

‘क्या?’

‘अपने रूम में जाओ और आराम कर लो। इन सभी मेहमानों और सेलिब्रेशन्स से तुम्हें दिक्कत हो रही है।’

‘वेल, ये मैंने ही चुना था कि मेरी शादी इतने ग्रैंड तरीके से हो।’

‘एग्ज़ैक्टली। तो शायद तुम्हारे डाउट्स केवल आखिरी समय में उपजने वाले अंदेशे भर हैं। थोड़ी देर आराम करने के बाद तुम बेहतर महसूस करोगी।’

‘लेकिन।’

‘डैड कॉलिंग अगेन।’ ब्रजेश ने कहा और फोन उठा लिया।

रूम में पहुँचते ही मैने अदिति दीदी से अपना फोन वापस लिया। जैसे ही मैंने अपना फोन अनलॉक किया, मैसेजेस की बाढ़-सी आ गई। मैसेजेस इस तरह थे:

देबू : हे बेबी, क्या हो रहा है?

देबू : क्या मैं कोई मदद कर सकता हूँ? क्या मैं तुम्हारी साइड से किसी से बात कर सकता हूँ?

नील : मैं अपने रूम में ही रहूँगा। कभी भी अगर तुम्हें ज़रूरत हो तो।

नील : हम कब बात कर सकते हैं?

नील : क्या हम मिल सकते हैं? एक मिनट के लिए?

ब्रजेश : होप यू आर फाइन। गेट सम रेस्ट, ओके?

ब्रजेश : सब ठीक हो जाएगा। शांत रहो।

जब तीन मर्द मुझे हर घंटे एक दर्जन मैसेज भेज रहे हों और कल मेरी शादी हो, तब मैं भला कैसे शांत रहूँ? अभी तो मुझे यह भी नहीं मालूम कि मेरी शादी आखिर किससे होगी?

अदिति दीदी मेरे पास सी रही थी। वे पानी पीने के लिए उठीं तो मेरे हाथ में चालू फोन देखा।

‘सो जाओ, यू इडियट! नहीं तो अपनी वेडिंग पिक्चर्स में तुम डार्क सर्कल्स के साथ नज़र आती रहोगी।’

हाँ शायद अभी मुझे इसी बात की सबसे ज़्यादा चिंता होनी चाहिए कि क्या मेरी मेकअप लेडी मेरे डार्क सर्कल्स को छुपा पाएगी या नहीं। लेकिन मैं दूसरी लड़कियों जैसी

क्यों नहीं हूँ?

टिंग। एक और मैसेज आया।

'फोन साइलेंट पर रख दो।' अदिति दीदी ने नींद में ही चिल्लाकर कहा।

मैंने अपना फोन देखा।

सूरज : होप आपको डेकोरेशंस पसंद आया, मैडम। आपका डांस बहुत अच्छा था।

मैंने फोन बंद कर दिया। आँखें मूँद लीं लेकिन सो नहीं पाई।

अब मैं क्या करूँ? राधिका, द ग्रेट डिस्ट्रेस्ड एनालायिस्ट। इस डिस्ट्रेस्ट सिचुएशन से निकलने का कोई रास्ता तो तलाशो।

कुछ लोग फैसले लेने में अच्छे होते हैं। मैं उनमें से नहीं हूँ। कुछ लोग बहुत जल्दी सो भी जाते हैं। मैं उनसे से भी नहीं हूँ। रात के 3 बजे थे, लेकिन मैं अपने बिस्तर में करवटें बदल रही थी। पंद्रह घंटे बाद मेरी शादी होने वाली थी। होटल में दो सौ गेस्ट थे, जो यहाँ मेरी शानदार डेस्टिनेशन वेडिंग में शरीक होने आए थे। सभी एक्साइटेड थे। मैं दुल्हन थी। मुझे अपनी ब्यूटी स्लीप लेना चाहिए थी। लेकिन मैं सो नहीं पा रही थी। मुझे अभी अपनी ब्यूटी की चिंता नहीं थी। मैं यही सोच रही थी कि इस मुसीबत से कैसे निकला जाए।

3.30 बजे मैं उठी और कमरे के परदे हटा दिए। समुद्र अंधेरे में डूबा हुआ था। दूर जहाजों की बत्तियाँ टिमटिमा रही थीं। मेरे आँखों में चाँदनी भर गई।

ये तुम्हारी लाइफ है, राधिका। इसका फैसला तुम्हें ही करना है। किसी ने मेरे भीतर कहा। यह एक शांत आवाज़ थी, मिनी-मी की शोरगुल से भरी आवाज़ नहीं।

'कौन हो तुम?' मैंने खुद से पूछा।

यह मैं हूं, तुम्हारे मन की आवाज़।

'मेरे भीतर रहने वाली मेरी क्रिटिक, जिस लगता है कि मैं एक टोटल बिच हूँ?'

नहीं, वह जिसे लगता है तुम्हें खुशी के साथ जीने का हक है।

'रियली? मेरे भीतर ऐसा भी कोई इंसान है?'

सभी के भीतर ऐसा एक इंसान होता है।

'वेल, तो मैं क्या करूँ? किसको चुनूँ?'

शांत रहो, राधिका। शांत रहो। तुम्हें जवाब मिल जाएगा।

मैं वही तो कर रही थी। पिछले आधे घंटे से मैं जैसे ध्यान लगा रही थी। मेरी आँखें अंधेरे में डूबे समुद्र पर जमी हुई थीं। धीरे-धीरे जैसे मेरे सिर पर से बोझ हटने लगा। मैं समझने लगी कि मुझे क्या करना चाहिए।

मैंने अपना फोन निकाला और देबू, नील और ब्रजेश तीनों को एक ही मैसेज भेज दिया : 'यू देयर?'

सबसे पहले देबू का रिप्लाई आया। चंद ही सेकेंड बाद।

'यस बेबी। सोने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन सो नहीं पा रहा।'

‘5 बजे मुझसे होटल कॉफी शॉप पर मिलो।’ मैंने जवाब दिया।
‘ओह रियली? दैट्स ग्रेट। यानी एक घंटे बाद। सी यू।’
उसने मुझे कुछ एक्साइटेड और हैप्पी स्माइली भी भेजे।
‘थैंक्स।’ मैंने जवाब दिया। ‘सी यू।’
दस मिनट बाद नील का जवाब आया।
‘यस, आई एम हियर।’
मैंने उसे वही लिख दिया, जो देबू को लिखा था। सुबह 5 बजे कॉफी शॉप पर मिलो।
‘ओके श्योर।’ उसका जवाब आया।
ब्रजेश का रिप्लाई 4.30 पर आया।
‘हे, गुड मॉर्निंग। तुम अभी से जाग गईं? आराम किया या नहीं?’
‘मैं ठीक हूँ।’
‘गुड। वॉट्सअप?’
मैंने उसे भी वही लिख दिया, जो देबू और नील को लिखा था।
‘रियली? इतनी सुबह?’
‘कैन यू? प्लीज़?’
‘ऑफ कोर्स। सी यू।’
मैंने अपना फोन एक तरफ रख दिया और एक गहरी सॉस ली। अदिति दीदी जाग गईं।
‘तुम वहाँ सोफे पर क्या कर रही हो?’
‘अपनी लाइफ को फिक्स कर रही हूँ।’
‘क्या?’
‘कुछ नहीं। बस शॉवर लेने जा रही हूँ, ’ मैंने कहा और बाथरूम में चली गई।

40

ठीक 5 बजे मैं कॉफी शॉप पहुँच गई। नील और देबू वहाँ पहले ही पहुँच चुके थे। वे अलग-अलग टेबल्स पर बैठे थे, एक-दूसरे से अनजान। देबू ने सफेद कुर्ता पायजामा पहन रखा था और अपनी दाढ़ी और चश्मे के कारण वह कोई कम्युनिस्ट इंटेलेक्चुअल लग रहा था। नील ने एक डार्क ब्यू शर्ट और बेहतरीन इस्तरी किए हुए बीज शॉर्ट्स पहने थे। मैंने सिम्पल सफेद सलवार कमीज़ पहनी थी और वह शादी के लिए पहनने वाले कपड़ों से कहीं ज़्यादा कंफर्टेबल थी। इंडिगो एयरलाइंस के चार क्रू मेंबर्स दूसरी टेबल पर बैठे कॉफी पी रहे थे। इनके अलावा कॉफी शॉप में कोई और कस्टमर्स नहीं थे। सुबह हुई ही थी और भोर की ठंडी हवा मेरे बालों को सहला रही थी, जो शॉवर के बाद अभी तक गीले थे।

जैसे ही मैं कॉफी शॉप में घुसी, नील और देबू दोनों उठकर मेरे पास आ गए।

'हे, ' देबू ने कहा।

'हाय, लुकिंग फ्रेश।' नील ने कहा।

नील और देबू ने एक-दूसरे को सरप्राइज़ और कंफ्यूजन के साथ देखा।

'गुड मॉर्निग, देबू। ये है नील। नील, दिस इज देबू।' मैंने कहा।

'गुड मॉर्निग, 'देबू ने कहा। वह सिचुएशन को समझने की कोशिश कर रहा था।

'हाय।' नील ने देबू से कहा।

'लेट्स हैव सम ब्रेकफास्ट।' मैंने कहा।

मैं एक सी-फेसिंग टेबल पर बैठ गई। दोनों अपनी जगह पर खड़े रहे।

'आओ तुम दोनों।' मैंने कहा और मुस्करा दी।

वे हिचकिचाहट के साथ बैठ गए। वेटर ऑर्डर लेने आया।

'मैं एक कपूचिनो और ब्राउन-ब्रेड टोस्ट लूंगी। पीनट बटर और हनी के साथ। और आप लोग?' मैने कहा।

देबू और नील ने एक-दूसरे की ओर देखा।

'ब्लैक कॉफी। पॉरिज।' नील ने कहा।

'ऑरेंज जूस।' देबू ने कहा।

वेटर चला गया। मैं मुस्कराती रही और उन दोनों की कंफ्यूज्ड हालत का मज़ा लेती रही।

'ये तुम्हारे फ्रेंड है?' नील ने देबू के बारे में पूछा।

'हाँ, तुम ऐसा कह सकते हो।'

'तुम मुझे प्रॉपरली इंट्रोड्यूस करना चाहोगी?' देबू ने अपना गला साफ करते हुए कहा।

‘बिलकुल।’

‘यस, बिकाँज़ सॉरी देबू, मैं तुम्हें जानता नहीं और उस वजह से यह सब बहुत कंफ्यूजिंग और सरप्राइज़िंग हो गया है।’ नील ने कहा।

‘आप दोनों मेरे एक्स हैं। मेरे पास्ट लवर्स।’ मैंने कहा।

यदि प्राइसलेस एक्सप्रेशंस के लिए कोई पुरस्कार होता तो इस वक्त नील और देबू दोनों को नोबेल मिलता।

‘सॉरी, मैं समझा नहीं।’ नील ने कहा।’ मैं तुम्हारा एक्स हूँ?, लेकिन ये कौन है?’

‘देबू, मेरा न्यूयॉर्क वाला बॉयफ्रेंड। मैंने बताया था ना?’

‘ओह दैट गाय, ’ नील ने कहा।

‘नील भी तुम्हारा एक्स है? सॉरी, ये कब हुआ?’ देबू ने कहा।

‘हांगकांग में।’

‘ओह, ’ देबू ने कहा और चुप हो गया। वह नील का अच्छी तरह से मुआयना कर रहा था।

‘यस, नील ओल्डर हैं, देबू। मच ओल्डर। वे मैरिड भी हैं।’ मैंने कहा।

‘मैरिड था। अभी नहीं हूँ।’ नील ने मुझे करेक्ट करते हुए कहा। ‘तो देबू तुम्हारी शादी में आया है? दैट्स नाइस।’

‘नहीं, वो यहाँ शादी अटेंड करने नहीं आया है। वो यहाँ मुझसे शादी करने आया है। वह खुद दूल्हे की जगह पर बैठना चाहता है यहीं, इसी जगह।’

‘क्या? ’नील ने कहा।’ मैं तो समझ रहा था तुम दोनों के बीच सबकुछ ख़त्म हो गया है। ये वही इंसान है ना, जिसकी वजह से तुम्हें न्यूयॉर्क छोड़ना पड़ा था?’

‘हाँ, लेकिन अब उसका हार्ट चेंज हो गया है। जस्ट लाइक़ यू।’

फिर मैं देबू की ओर मुड़ी।

‘और देबू, नील भी यहाँ मेरी शादी रुकवाने के लिए ही आए हैं। उनका स्टाइल थोड़ा डिफरेंट है। वे अपने साथ चार्टर्ड जेन लेकर आए हैं।’

देबू की आँखें फटी-की-फटी रह गई।

‘तो तुम देख सकते हो कि ये कितने अमीर हैं। और तुमको अमीरों से हमेशा ही प्रॉब्लम रही है।’

‘मैं... मैं... मैं...’ देबू हकलाने लगा। ‘मुझे अमीरों से कोई प्रॉब्लम नहीं है। किसने कहा तुम्हें?’

नील बीच में बोल पड़ा, ‘मैं चार्टर्ड प्लेन से इसलिए नहीं आया कि मैं अपनी अमीरी दिखाना चाह रहा था। लेकिन मेरे सामने वही बेस्ट ऑप्शन था।’

‘नील, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। लेकिन आप दोनों सिचुएशन को समझने की कोशिश करो। आप दोनों यहाँ पर मेरी शादी रुकवाने के लिए आए हो, जो कि चंद ही घंटों

में होने जा रही है। इतना ही नहीं, आप यह भी चाहते हो कि मैं आपसे शादी कर लूँ। तो जैसी कि उम्मीद की जा सकती है, इसने मुझे खासी परेशानी में डाल दिया है।'

वेटर हमारा नाश्ता लेकर आ गया। नील और देबू अपनी अपनी सीट पर असहज होकर बैठे थे और एक-दूसरे को अवॉइड करने की कोशिश कर रहे थे। मैं आराम से अपने टोस्ट पर पीनट बटर लगाती रही। वेटर के जाने के बाद देबू बोला।

'सॉरी राधिका, मुझे नहीं मालूम था कि तुम्हारा एक एक्स बॉयफ्रेंड यहाँ पर है। क्या इन जेंटलमैन को एक बॉयफ्रेड बोला भी जा सकता है? ये कितने ओल्ड और मैरिड है।'

'मैं अब मैरिड नहीं हूँ। और मेरा नाम नील है, नील गुप्ता।' नील ने अपनी कमीज़ की कॉलर ठीक करते हुए कहा।

'वॉटेवर। लेकिन, राधिका, मुझे तो लगा था कि हम यहाँ पर अकेले मिलेंगे। वैसे भी तुम्हें मेरे साथ ही जाना चाहिए।'

'क्यों? तुम भूल गए तुमने उसके साथ कैसा सलूक किया था? उसे तुम्हारे कारण अमेरिका छोड़ना पड़ा।' नील ने कहा।

'तुम्हारे लिए भी, नील।' मैंने कहा।

नील ने हैरत से मेरी ओर देखा।

'राधिका, मैंने सॉरी कह दिया था। मैंने कभी तुम्हारी बेइज़्ज़ती नहीं की। हाँ, मुझे थोडा कंफ्यूज़न जरूर था, लेकिन अब वैसा कुछ नहीं है।'

'मिस्टर नील, बेहतर होगा अगर आप अपनी उम्र की कोई ढूँढ लें।' देबू ने बीच में टोकते हुए कहा।

'उम्र से ज़्यादा महत्त्व कनेक्शन का होता है। और सॉरी टु से, लेकिन मैं तुमसे ज़्यादा फिट लग रहा हूँ।' नील ने कहा।

मैं इस बातचीत पर यकीन नहीं कर पा रही थी। मैं अपनी हँसी रोकने की पुरजोर कोशिश कर रही थी। सच कहूँ तो मुझे अच्छा लग रहा था कि वे दोनों मुझको लेकर लड़ रहे थे। मेरा बस चलता तो दिनभर यह नाटक देखती रहती, लेकिन मेरे पास समय नहीं था।

'बॉयज़-बॉयज़, लड़ना बंद करो और जो मैं कह रही हूँ, उसको सुनो।' मैंने कहा।

'मैं जानता हूँ तुम मुझे चाहती हो बेबी। मैं तुम्हारा पहला प्यार हूँ।' देबू ने कहा।

'जो अकसर एक गलती साबित होता है। हमारे बीच एक खास कनेक्शन है राधिका, प्यार से भी परे। हम एक जैसे हैं और तुम यह जानती हो।' नील ने कहा।

'मुझे तो लगता है कि आप दोनों सबसे ज़्यादा अपनी आवाज़ को प्यार करते हैं। क्या आप कुछ देर चुप रहेंगे ताकि मैं कुछ बोल सकूँ?' मैंने कहा।

दोनों ने हामी भर दी।

'थैंक्स।' मैंने कहा। 'सॉरी, मैं तुम दोनों के साथ यह कर रही हूँ। लेकिन शायद तुम दोनों एक-दूसरे से कुछ सीख सकते हो।'

‘इट्स फाइन, ’ नील ने कहा।

‘देबाशीष सेन, तुम्हें हमारी न्यूयॉर्क की वह वॉक याद है, जब तुमने कहा था कि लड़कियाँ कुछ भी कर सकती है कि लड़कियों को उड़ना चाहिए। तुमने कुछ फ़ेमिनिस्ट किताबों के बारे में भी बताया था।’

‘हाँ।’ देबू ने कहा।

‘यह सब सुनने में ही अच्छा लगता है। लेकिन असल ज़िंदगी में एक लड़की अपने बॉयफ्रेंड के प्रमोशन की पार्टी दे सकती है, जबकि बॉयफ्रेड से अपनी गर्लफ्रेड को मिलने वाला बोनस बर्दाश्त नहीं होता। है ना?’

‘ऐसा नहीं है... ‘उसने कहा, लेकिन मैंने उसे बीच में ही टोक दिया।

‘मुझे बोलने दो। तुमने कहा लड़कियों को उड़ना चाहिए, लेकिन जब मैंने ऊँची उड़ान भरी तो तुम मेरे पंख कतरने लगे।’

देबू की नज़रें नीची हो गई। तब मैं नील की ओर मुड़ी।

‘नील, तुमने मुझे इसीलिए प्यार किया, क्योंकि मैं उड़ रही थी और तुम चाहते थे कि मैं और ऊँची उड़ान शरूँ।’

‘बिलकुल।’

‘लेकिन पता है तुमसे कहाँ भूल हुई?’

‘कहाँ?’

‘तुम नहीं चाहते थे कि मेरा अपना कोई घोंसला हो।’

नील के पास इसका कोई जवाब नहीं था।

‘मैं इक्वल राइट्स में यकीन करता हूँ, तुम यह जानती हो।’ नील ने कहा।

‘तुम इस बात को समझ नहीं पाए कि मैं बेवकूफ बनने को तैयार नहीं थी? शायद इक्वल राइट्स देने का मतलब लड़कियों को समान अधिकार देना होता है, लेकिन समान चीज़ नहीं। समान अधिकार, वह हासिल करने के लिए जो वे चाहती हैं, वह नहीं जो मर्द चाहते हैं।

देबू अपना सिर खुजाने लगा।

‘इसका क्या मतलब?’ नील ने कहा।

‘तुम क्या चाहती हो? कैरियर? घर?’ देबू ने कहा। ‘मैं सचमुच कंफ्यूज्ड हूँ।’

‘हाँ, तुम चाहती क्या हो? जो तुम चाहती हो, वही चुनो, राधिका।’ नील ने कहा।

मैंने कॉफी का एक सिप लिया।

‘आह, चुनना। यह चुनना ही तो फेमिनिज्म का बेंचमार्क वर्ड है, राइट? यदि मैं औरतों को अपना घर और कैरियर चुनने की आज़ादी दूँ, तो मैं एक ग्रेट फ़ेमिनिस्ट हूँ।’

‘मैं समझा नहीं। इसमें गलत क्या है?’ नील ने कहा।

‘हाँ, यही तो फेयर बात है कि औरतों को चुनने की आज़ादी मिले।’ देबू ने कहा।

‘नहीं, यह फेयर नहीं अनफेयर है। क्योंकि यही तो बुनियादी दिक्कत है। पता है हम औरतें सचमुच क्या चाहती हैं? हम चुनना ही नहीं चाहतीं। हम उड़ना भी चाहती हैं और अपना एक खूबसूरत घोंसला भी चाहती है। हम ये दोनों चाहती हैं।’

‘मैं तो कुछ भी समझ नहीं पा रहा हूँ।’ देबू ने कहा। नील भी कंफ्यूज्ड लग रहा था।

‘अगर मर्दों के नज़रिए से सोचें तो वे क्या चाहते हैं? एक कैरियर, है ना?’

‘हाँ।’ देबू ने कहा।

‘मर्द सेक्स चाहते हैं, राइट? कोई जजमेंट नहीं है, लेकिन वे सेक्स चाहते है, ठीक?’

‘हाँ।’ इस बार नील ने कहा। मैं पलभर को रुकी और फिर बोलने लगी।

‘तो कैसा हो अगर पुरुषों के अधिकार के नाम पर उन्हें एक च्वॉइस दे दी जाए तो वे क्या चुनेंगे? कैरियर या सेक्स? उन्हें इक्वल राइट्स दिए जा रहे है और उन्हें चुनना चाहिए। वे क्या चाहेंगे : सेक्स या कैरियर?’

‘सॉरी, लेकिन यह एक बहुत बेतुकी च्वॉइस है।’ नील ने कहा।

‘बिलकुल। तुम सही हो, नील। यह बिलकुल एक बेतुकी च्वॉइस है। उतनी ही बेतुकी च्वॉइस, जैसी कि औरतों के सामने रखी जाती है : या तो उड़ो या घोंसले में रह लो। तुम दोनों चाहते हो, लेकिन औरतों से उम्मीद करते हो कि वे इन दोनों में से कोई एक चुनें?’

मैंने कॉफी के तीन सिप ले लिए, तब जाकर नील ने कुछ कहा।

‘मैं समझ गया। औरतें सबकुछ चाहती है। अच्छा घर। अच्छा परिवार। माँ बनना और अपने कैरियर को चमकाना भी।’

‘लेकिन यह प्रैक्टिकली पॉसिबल कैसे है? कैरियर का मतलब है ऑफिस में लंबा समय बिताना। घर का मतलब है बच्चे और उनकी जिम्मेदारियाँ।’ देबू ने कहा।

‘एग्ज़ैक्टली! तुमने कभी सोचा कि यह प्रैक्टिकल क्यों नहीं है?’ मैंने कहा।

‘क्यों?’ देबू ने कहा।

‘क्योंकि यह दुनिया मर्दों ने बनाई है। उन्होंने ऑफिस की टाइमिंग्स तय की हैं : नौ से छह, हफ्ते में पाँच दिन। औरतें वर्कफोर्स का हिस्सा नहीं हुआ करती थीं, लेकिन वे अब है। ये टाइमिंग्स मर्दों के लिए ठीक है, उन्हें घर पर माँ की भूमिका नहीं निभानी होती है। लेकिन हम क्या करें?’

‘हम यानी?’

‘हम यानी पूरी दुनिया। ऐसा कब होगा कि हम इसमें बदलाव लाएँगे? बदलाव लाना तो दूर हम इसको समझने की कोशिश तक नहीं कर रहे हैं।’

मैं गहरी साँस लेने के लिए रुकी। फिर उनकी बातें सुनने के लिए आगे की तरफ झुकी।

‘तुम्हारी बात में दम है। मान लिया। मैं समझ नहीं पाया था कि तुम्हारे भीतर अपना एक परिवार बनाने की भी गहरी इच्छा है। शायद इसी से बहुत गलतियाँ हो गई।’ नील ने

कहा।

‘ मैंने तुम पर अपने विचार थोप दिए। एक अच्छा कैरियर बनाने की तुम्हारी इच्छा को नज़रअंदाज़ कर दिया। इसके लिए मुझे माफ कर दो लेकिन मेरा साथ मत छोड़ो। मै तुम्हारा साथ दूँगा।’ देबू ने कहा।

‘नहीं।’ मैंने कहा। मेरी आवाज़ जैसे मेरे भीतर कहीं गहराई से आ रही थी।’

‘अगर तुम मुझको चुनोगी तो तुम एक सही फैसला कर रही होगी, राधिका।’ नील ने कहा।

‘नहीं, नील। तुम भी नहीं।’

‘क्या?’

मैंने समय देखा। 5 बजकर 28 मिनट हो चुके थे।

‘मैं तुम दोनों के ही साथ जाने को तैयार नहीं हूँ। तुम दोनों में कुछ बुनियादी बातें हैं, जो बदलेंगी नहीं। देबू, तुम कहते हो कि तुम मेरा साथ दोगे, लेकिन जिस तरह से तुम मेरी कामयाबी देखकर सकपका गए, उससे तो ऐसा नहीं लगता, जबकि मैं तो आगे चलकर और कामयाब होना चाहती हूँ।’

‘लेकिन राधिका...’ देबू ने कहना शुरू किया, लेकिन मैंने अपने होंठों पर ऊंगुली रखकर उसे चुप होने को कह दिया।

‘और नील, इसमें कोई शक नहीं कि तुम कमाल के हो। चार्टर्ड प्लेन के बारे में सोचकर यूँ भी कोई फ्लैट हो जाएगा।... और अब तो तुमने डाइवोर्स भी ले लिया है। लेकिन सच यह है कि तुम मुझे आधा ही प्यार करते हो। और मेरा दूसरा भाग है कुसुम, जिसे तुमने छोड़ दिया है। तुम्हें एक पार्टी गर्ल चाहिए। एक जवान लड़की, जो तुम्हें इस बात का अहसास दिलाती रहे कि तुम भी अभी जवान हो। लेकिन मैं कब तक एक जवान लड़की बनी रहूँगी? और तब नील गुप्ता मेरे साथ क्या करेंगे, कौन जानता है? नील अपनी यंग वाइस प्रेसिडेंट राधिका को चाहते है, लेकिन जब यही राधिका उनके बच्चों के डायपर बदल रही होगी, तब भी क्या वे उसे चाहेंगे?’

‘ऑफ कोर्स, मैं... ’

‘श्श्श! मैं कंप्रोमाइज़ करने और कम पर राज़ी होने को तैयार नहीं हूँ। मैं मन बना चुकी हूँ। मेरी बातें सुनने के लिए थैंक्यू। अब कोई लेक्चर नहीं, सीधे एक्शन प्लान पर बात करते हैं।’

‘क्या?’ देबू ने कहा।

‘मैं चाहती हूँ कि तुम दोनों अभी इसी वक्त यहाँ से चले जाओ। इस होटल से, गोवा से और मेरी ज़िंदगी से। आज के बाद तुम दोनों कभी मुझे, मेरी फैमिली या मेरे मेहमानों को तंग नहीं करोगे। कोई मैसेज नहीं, कोई कॉल्स नहीं। तुम दोनों मेरा पास्ट हो और अपने पास्ट को मैं दफना चुकी हूँ। तो प्लीज़।’ मैंने बाहर के रास्ते की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘लेकिन, ’ देबू ने कहा।

‘मैं तुम दोनों से बहुत अच्छी लैंग्वेज में कह रही हूँ कि यहाँ से दफा हो जाओ। प्लीज़, इसको एप्रिशिएट करो। और सच में यहाँ से दफा हो जाओ।’

देबू और नील एक-दूसरे की ओर देखते रहे। फिर उन्होंने मेरी तरफ देखा और जाने के लिए उठ खड़े लुए। चुपचाप वे उस रेस्तरां और मेरी ज़िंदगी से बाहर चले गए, दोनों एक साथ।

जैसे ही वे बाहर गए, ब्रजेश भीतर आया। वह सीधे मेरे पास आया। उसने ग्रे वर्कआउट क्लॉथ्स पहन रखे थे। उसने देखा कि टेबल पर इस्तेमाल की जा चुकी क्रॉकरी और कटलरी रखे हुए हैं।

‘गुड मॉर्निंग, मेरी होने वाली वाइफ।’ उसने कहा। ‘ये लोग, ये तुमसे मिलने आए थे?’

‘गुड मॉर्निंग, ब्रजेश। आओ, हमें कुछ बात करनी है।’ मैंने कहा। उसने मेरा गंभीर चेहरा देखा तो मेरे पास में बैठ गया।

‘हाँ श्योर। बाय द वे, सफेद रंग तुम पर बहुत सूट करता है।’ उसने कहा।

‘थैंक्स।’

ब्रजेश ने एक प्लेन डोसा और कॉफी ऑर्डर की।

‘कल रात से बेहतर महसूस कर पा रही हो?’ वेटर के जाते ही ब्रजेश ने कहा।

‘कुछ-कुछ।’

‘होता है। रात के वक्त हम कुछ ज़्यादा ही परेशान हो जाते है। डोंट वरी। बस यह याद रखो कि जीवन में जो कुछ भी होता है, आख़िरकार वह अच्छे के लिए ही होता है।’

‘तुम सचमुच इसमें यकीन करते हो?’ मैंने कहा।

‘हाँ।’

‘गुड। तो ब्रजेश, मैंने रातभर इस बारे में सोचा। यह मुझे ठीक नहीं लग रहा है। मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती।’

‘क्या?’ उसने कहा।’ आर यू सीरियस? तुम्हारी नर्वसनेस मैं समझ सकता हूँ लेकिन... ’

‘अब मैं अपने पैरेंट्स को बताने जा रही हूँ और उसके बाद तुम्हारे पैरेंट्स को।’

‘क्या?’

‘बशर्ते तुम खुद ही पहले उनसे बात नहीं कर लेते और मुझ पर इसका दोष नहीं डाल देते। मैं तो यही प्रिफर करूँगी।’

‘राधिका!’

मैं उसे इग्नोर कर बोलती रहाँ।

‘मैं सारे बिल्स सेटल कर दूँगी। तुम्हारी फैमिली को कुछ पे नहीं करना पड़ेगा। आई एम सो सॉरी फॉर दिस एंड... ’

ब्रजेश ने मुझे बीच में ही रोक दिया।

'तुम अपने आपको समझती क्या हो?' उसने ऊँची आवाज़ में कहा। उसके इस तेवर से मैं चौंक गई।

'आई एम सॉरी। मैं समझ सकती हूँ कि तुम अपग्रेट होगे।' मैंने कुछ देर बाद कहा।

'तुम समझ सकती हो? बस इतना ही? मेरी पूरी फैमिली यहाँ पर है।

हम लोग पिछले एक हफ्ते से सेलिब्रेट कर रहे हैं। आज हमारी शादी है। मैं उन्हें जाकर क्या बोलूँगा? यह कि दुल्हन मना कर रही है? कि अब उसकी शादी करने की कोई इच्छा नहीं है?'

'ये सब मेरी गलती है। मैं समझती हूँ।'

'सब लोग यहाँ पर हैं, राधिका। एवरीवन।'

'जानती हूँ।'

वेटर डोसा और कॉफी लेकर आया, लेकिन ब्रजेश ने उन्हें छुआ तक नहीं।

'क्या मैं जान सकता हूँ क्यों?' ब्रजेश ने कहा।

मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।

'क्या बात है, राधिका?'

'जिन लोगों को तुमने यहाँ से जाते हुए देखा था, वे मेरा पास्ट हैं। मेरे एक्स।'

उसने रेस्तरां के एग्जिट पर मुड़कर देखा।

'इट्स ओके। अब वे जा चुके हैं।' मैंने कहा।

'उन्हें तुमने यहाँ बुलाया था?'

मैंने उसे संक्षेप में बताया कि पिछले एक हफ्ते से गोवा में क्या हो रहा है। उसने ध्यान से सुना। आखिरी में उसके चेहरे पर शक एक्सप्रेशन नज़र आ रहा था।

'क्या खूब कहानी है।' उसने कहा।

'हाँ, मेरा पिछला सप्ताह इसी तरह बीता है।'

'तो तुमने फाइनली क्या डिसाइड किया?'

' मैंने उन्हें गेट आउट कर दिया। गोवा से और अपनी ज़िंदगी से, हमेशा के लिए।'

'गुड। तो फिर क्या दिक्कत है? तुम्हारा पास्ट तो जा चुका है।'

'लेकिन मैं अपने आज में भी नहीं हूँ। सच कहूँ तो मैं कहीं भी नहीं हूँ। मुझे अपने को खोजना है।'

'खोजना? तुमने मुझे बताया कि तुम दो रिलेशनशिप्स में रह चुकी हो। लेकिन अगर वे पास्ट का हिस्सा है तो मुझे उसकी परवाह नहीं।'

'नहीं ब्रजेश। यह शादी नहीं हो पाएगी। आई एम सॉरी।' मैंने कहा और उठ खड़ी हुई।

उसने मेरी ओर देखा। मेरे एक्सप्रेशन से वह समझ गया कि मैं किसी भी किस्म की बातचीत के लिए तैयार नहीं हूँ। वह चुप रहा। मैं उठी और कॉफी शॉप से बाहर निकल गई।

Downloaded from Ebookz.in

41

गोवा के मेरे रूम में मरघटी नजारा था। फाइव स्टार लग्जरी और सोने से लदी मेरी आंटियों के बावजूद लोगों के चेहरे लटके हुए थे। मैंने सबको अपना फ़ैसला बता दिया था। मेरी माँ इस पर बदहवास हो गई थीं। पापा ठोस चेहरा लिए खडे रहे। मेरी आंटियाँ माँ को घेरे हुए थीं और उन्हें दिलासा दे रही थीं। लेकिन मन-ही-मन वे उछल रही थीं। मैंने उन्हें आने वाले कई महीनों के फैमिली गॉसिप की रसद मुहैया करा दी थी।

कमला बुआ ने अभी तक हार नहीं मानी थी।

'ब्रजेश ने तुमसे कुछ कहा? सच-सच बताना।'

'मैं कई बार बता चुकी हूँ कि उसका इससे कोई ताल्लुक नहीं है। वह तो बहुत स्वीट है।'

'तो फिर प्रॉब्लम क्या है, पागल लड़की?' माँ ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा।

वे आई और मुझे कसकर एक तमाचा जड़ दिया। इससे पहले कि वे दूसरा तमाचा मारतीं, कमला बुआ ने उन्हें रोक लिया। मैंने कुछ रिएक्ट नहीं किया।

'नहीं अपर्णा, अपने पर काबू करो। सांई बाबा सब ठीक कर देंगे।' कमला बुआ ने कहा।

'क्या ठीक कर देंगे? हम बर्बाद हो गए। और इसको तो देखो, अब भी मुझे घूरकर देख रही है।'

'मुझ पर हाथ उठाने की कोई ज़रूरत नहीं है, मॉम।' मैंने कहा। मेरा चेहरा लाल हो गया था और मैं अपने आँसुओं को रोकने की भरसक कोशिश कर रही थी।

'तो मैं तुम्हारे पागलपन का इलाज करने के लिए क्या करूँ? अदिति को देखो। थर्ड ईयर में उसकी इंगेजमेंट हो गई थी और ग्रेजुएशन होते ही उसने शादी कर ली।'

'मैं अदिति दीदी नहीं हूँ।'

'लड़कियों को ज़्यादा पढ़ा देने से यही होता है।' कमला बुआ ने कहा।

'ये सब इसके पापा की गलती है। उन्होंने कभी इसकी किसी बात पर ना नहीं कहा। अहमदाबाद, न्यूयॉर्क, हांगकांग, जहाँ भी यह जाना चाहती थी, वहाँ इसे जाने दिया।'

'क्या आप डैड को इस सबसे बाहर रखेंगी, मॉम?' मैंने कहा। फिर मैं सबकी ओर मुड़ी और अपने हाथ बाँध लिए।

'आप सभी से मैं रिक्वेस्ट करती हूँ कि जो कुछ हुआ, उसके लिए मुझे ही ज़िम्मेदार ठहराएँ, किसी और को नहीं। आप मुझे जज कर सकते हैं, लेकिन प्लीज़ मेरे पैरेंट्स को जज करने की कोशिश मत कीजिए।'

मेरी आंटियों और अंकलों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

मैं बोलती रही : ‘इसे गोवा में बिताई गई छुट्टियों की तरह लीजिए। समझ लीजिए कि मैंने आपको ट्रीट दी थी। मुझे आपके सपोर्ट की ज़रूरत है। मुझे ब्रजेश और उसकी फैमिली की चिंता है। वे लोग अभी बहुत हर्ट होंगे। मैं चाहती हूँ कि जब मैं उन्हें अपना फैसला सुनाऊँ, तब मेरी साइड से बड़े-बुजुर्ग मेरे साथ रहें।’

किसी ने भी इस पर रिस्पॉन्स नहीं दिया।

‘फ़ाइन, मैं खुद ही उनसे बात कर लूँगी। प्लीज़ गोवा में अपने आखिरी दिन का मज़ा लीजिए। और जो यहाँ से जल्दी निकल जाना चाहते हैं, वे फ्लाइट बदलने के लिए सूरज से बात करें।’ मैंने कहा।

‘रुको, मैं आ रही हूँ।’ अदिति दीदी ने कहा। ‘मुझे समझ नहीं आ रहा तुम क्या कर रही हो। फिर भी मैं आ रही हूँ। मेरी बहन यह अकेले नहीं कर सकती।’

वो मेरे पास आकर खड़ी हो गई और मेरा हाथ थाम लिया। मैं मुस्करा दी, आँसुओं को रोकते हुए।

‘मैं भी तुम्हारे साथ आ रहा हूँ।’ पंकज मामा ने कहा। ‘आओ रिचा, हम उसको अकेले नहीं जाने दे सकते।’ रिचा मामी सोचने लगीं कि नाराज मामी और वफादार बीवी में से कौन-सी भूमिका निभाएँ। आखिर में उन्होंने वफादार बीवी बनना चुना।

‘इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।’ मेरी माँ ने कहा। ‘वह हर काम अकेले ही करती है।’

‘डैड, आपको भी चलना चाहिए।’ अदिति दीदी ने कहा। पापा उठ खड़े हुए।

‘चलो अपर्णा।’ पापा ने कोमल स्वर में कहा। माँ ने सबकी ओर देखा। फिर हिचकिचाहट के साथ उठ खड़ी हुईं।

‘चलो, सब मिलकर ही अपनी बेइज़्ज़ती करवाएँ।’ उन्होंने कहा।

मैंने घंटी बजाई। ब्रजेश ने दरवाज़ा खोला। उसने कुछ नहीं कहा और मुझे और मेरे परिवार वालों के लिए रास्ता छोड़ दिया।

ब्रजेश के पैरेंट्स, मिस्टर एंड मिसेज गुलाटी, जो मेरे सास और ससुर बनते-बनते रह गए थे, मुँह लटकाए खड़े थे। ब्रजेश के रिलेटिव्स बेड पर बैठे थे। उसकी दोनों मौसियाँ रोहिणी मासी और गुंजन मासी सोफे पर बैठी थीं। सभी को देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे किसी ने उनकी पीठ में चाकू घोंप दिया हो। ब्रजेश उन्हें पहले ही बता चुका था।

मैं सोचने लगी कि कहाँ से शुरू करूँ। लेकिन मेरी माँ अच्छी तरह जानती थीं कि एक मैच्योर रिएक्शन क्या होता है। वे ज़ोर से रोने लगीं और सीधे जाकर ब्रजेश की माँ के गले लग गईं।

‘हमें किसी की नज़र लग गई है, सुलोचना।’ माँ ने कहा। उनके इस विलाप से कमरे में बैठे लोग और असहज महसूस करने लगे। ब्रजेश की माँ ने कुछ रिएक्ट नहीं किया।

‘हम तो बरबाद हो गए। किसने सोचा था कि मेरी अपनी बेटी ऐसा करेगी। किसी को क्या बोलें जब अपना ही सिक्का खोटा निकले।’ माँ ने फुल वॉल्यूम में रोते हुए कहा।

‘बैठ जाइए, अपर्णा जी।’ ब्रजेश के पिता ने कहा।

मैं समझ गई कि अब मुझे सिचुएशन को कंट्रोल करना होगा। मैं कमरे के बीच में चली गई और बोलने लगी :

‘हैलो एवरीवन, मैं केवल एक मिनट का समय-लूँगी। इस कमरे में मौजूद सभी लोगों से मैं माफी माँगना चाहती हूँ। आई एम रियली, रियली सॉरी। मैं माफी इसलिए माँग रही हूँ, क्योंकि मैंने इस शादी के लिए तैयार नहीं होने के बावजूद हाँ कह दी थी। मैं इसलिए माफी माँग रही हूँ क्योंकि मैंने आप सभी की खुशियों में खलल डाल दिया। इसके बावजूद मैंने यह इसलिए किया क्योंकि मुझे लगा कि इस रिश्ते में आगे बढ़ना ब्रजेश और उनकी फैमिली के साथ ज़्यादती होगी।

‘क्या ऐसा करना सही है?’ ब्रजेश की माँ ने कहा। उनकी आवाज़ बहुत तीखी थी।

‘नहीं। लेकिन इस रिश्ते में आगे बढ़ना इससे भी गलत होता। दो गलतियों में से छोटी गलती को चुनना ठीक रहता है।’

‘लेकिन तुम्हें अंदाज़ा भी है कि अब हमें अपने मेहमानों और नाते-रिश्तेदारों के सामने कैसे ज़लील होना पड़ेगा?’ ब्रजेश की माँ ने कहा।

‘मैं समझती हूँ। मैं हाथ जोड़कर माफी माँगती हूँ।’ मैंने कहा। मेरी आँखों में आँसू थे।

ब्रजेश ने पहले अपनी माँ और फिर मेरी तरफ देखा। वह हाथ बाँधे चुपचाप खड़ा था।

‘तुम दोनों की जोड़ी कितनी अच्छी लगती है। क्या हम अब भी कुछ नहीं कर सकते?’

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।

‘हमारे रिलेटिव्स यहाँ पर हैं। सभी बंदोबस्त हो चुके हैं। हम अब भी इस नाटक को यहीं खत्म कर सकते हैं, राधिका।’ ब्रजेश की माँ ने कहा। ‘किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। शादी अब भी हो सकती है।’

‘नहीं आंटी, आई एम सॉरी।’ मैंने कहा।

‘किस तरह की लड़की हो तुम?’ उन्होंने कहा।

‘ मैंने कहा ना, हमारा ही सिक्का खोटा है।’ मेरी माँ ने कहा। ‘मेरी दूसरी बेटी हीरा है। वह कितनी अच्छी बहू साबित हुई है।’

‘इनफ, अपर्णा आंटी।’ ब्रजेश ने कहा। कमरे में मौजूद सभी लोगों ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। ‘अगर राधिका को मुझसे शादी करने के फैसले पर अफसोस हो रहा है, तो इसका यह मतलब नहीं कि आप उसे खोटा सिक्का कहें।’

मैंने आँसू भरी आँखों से उसकी ओर देखा। मैंने उसके साथ जो किया, इसके बावजूद वह मेरा साथ दे रहा था। इससे मुझे और बुरा लगने लगा।

‘और मॉम, वह अपना मन बना चुकी है। हमें भले ही यह पसंद ना आए, लेकिन इसमें कुछ नहीं किया जा सकता।’ ब्रजेश ने कहा।

‘लेकिन बेटा, सभी लोग यहाँ पर हैं और सभी तैयारियाँ हो चुकी हैं...’ ब्रजेश की माँ ने कहा।

‘मॉम, शादी केवल इसीलिए नहीं की जातीं कि तैयारियाँ पूरी थीं और मेहमान मौजूद थे।’

मैंने ब्रजेश को इशारों में थैंक्स कहा। उसने सिर हिला दिया। फिर उसने मुझे आँसू पोंछने के लिए टिशू का एक बॉक्स दिया। उसकी इस नर्मदिली ने जैसे मेरी जान ही ले ली।

‘आप लोग अब भी हमारे गेस्ट हैं।’ मेरे पिता ने हाथ जोड़ते हुए कहा। ‘और अपनी बेटी की तरफ से मैं सॉरी बोल रहा हूँ।’

मैं अपने पिता को ऐसी हालत में नहीं देख सकती थी। मैं वहाँ से चली जाना चाहती थी ताकि खुलकर रो सकूँ।

‘यदि आपको किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो सूरज इसमें आपकी मदद करेंगे। आपके सभी बिल्स भर दिए जाएँगे। थैंक यू।’ मैंने कहा और कमरे से बाहर निकल गई।

◆

गुलाटीज़ और मेहताज़ अगले दिन गोवा होटल से चेक-आउट कर गए। दोनों परिवार एक-दूसरे से नज़र मिलाने से बचते रहे। दो दिन पहले हुई संगीत नाइट में ये ही लोग ग्रुप सेल्फी लेते नहीं थक रहे थे। दो दिन में हालात पूरी तरह बदल चुके थे।

गुलाटीज़ की मुंबई फ्लाइट हमसे पहले जाने वाली थी। वे बस में अपनी-अपनी जगह जाकर बैठ गए।

‘ब्रजेश, एक सेकेंड।’ मैंने कहा। वह अपना बैकपैक पहने होटल लॉबी बाहर निकल रहा था।

‘यस, ’ उसने कहा। उसकी आवाज़ रूखी थी।

‘क्या हम दो मिनट बात कर सकते हैं?’

‘रियली? क्यों?’

मैं चुप रही। उसने एक गहरी साँस ली।

‘ठीक है।’ उसने कहा। ‘लेकिन यहाँ पर सबके सामने नहीं। पाँच मिनट में मुझसे बीच पर मिलो।’

◆

‘कल सबके सामने मेरा सपोर्ट करने के लिए थैंक्स।’ मैंने कहा।

हम मैरियट बीच पर आखिरी बार चल रहे थे।

‘मुझे यह पसंद नहीं है कि कोई ऊँची आवाज़ में किसी से बात करे या पब्लिकली किसी की इंसल्ट करे।’

‘लेकिन तुम्हें पूरा हक था कि मेरी इंसल्ट करते। तुम अब भी कर सकते हो। अभी हम पब्लिक में भी नहीं हैं।’

उसने मेरी ओर एक सेकेंड के लिए देखा, अपना सिर हिलाया और एक उदास हँसी हँस दिया।

‘आई गेस, मैं वैसे भी कभी औरतों को समझ नहीं पाया। मुझे लगता था कि मैं थोड़ा-बहुत समझने लगा हूँ, लेकिन ज़ाहिर है कि मैं अभी भी इससे कोसों दूर हूँ।’

‘नहीं, तुम समझते हो। तुम लोगों को समझते हो। तुम एक भले इंसान हो, ब्रजेश। यह मैं थी, जिसकी वजह से यह सब गड़बड़झाला हुआ।’

‘खैर। अब तुम्हारा क्या करने का प्लान है?’

‘अभी तो मैं सीधे अपने काम पर जाऊँगी। फिर शायद कुछ वीज़ा के लिए अप्लाई करूँ और लंबी छुट्टियों पर निकल जाऊँ। शायद उन राउंड-द-वर्ल्ड टिकटों में से कोई एक। एक ऐसा टिकट, जो आपको एक दिशा में उड़ने देता है। नाक की सीध में चलते चले जाना।’

‘वेल, दुनिया गोल है, इसलिए कोई भी हमेशा सीधे नहीं चल सकता। तुम्हें आखिरकार लौटकर घर आना ही होगा। हकीकत में लौटना ही होगा।’

‘यह सच है, अफसोस कि यह सच है।’

‘तो फिर, बाय।’

‘बाय, ब्रजेश।’

‘तुम होटल नहीं जा रही हो?’

‘जाऊँगी। लेकिन मैं समुद्र की इन लहरों को कुछ मिनटों तक देख लेना चाहती हूँ।’ मैंने कहा और क्षितिज की ओर देखने लगी।

Downloaded from Ebookz.in

42

तीन महीने बाद
एल अल्बर्ग होटल,
ओलान्तेताम्बू, पेरू

मैं कैफे में बैठी कॉफी पी रही थी। माचू पिच्चू ले जाने वाली छोटी नीली ट्रेनें समय-समय पर आ-जा रही थीं। मैंने अपने फोन से लैपटॉप में बैकअप के रूप में मेरी ट्रिप पिक्चर डाउनलोड की। लैपटॉप ने आज की डेट फ्लैश की : 23 मार्च। इसी के साथ एक रिमाइंडर आया : 'बी को मैसेज करना है।' गोवा में हुए तमाशे को तीन महीने पूरे हो गए थे, लेकिन मैं अभी तक मैसेज करने की हिम्मत नहीं जुटा पाई थी। ध्यान भटकाने के लिए मैं अपनी यात्रा की तस्वीरें देखने लगी।

पिछले महीने मैंने लंदन से पूर्व दिशा में अपनी यात्रा शुरू की थी। मैं बर्लिन, काहिरा, बीजिंग और सिडनी जा चुकी थी। फिर मैंने पेरू में लीमा की फ्लाइट पकड़ी। लीमा से मैं ओलान्तेताम्बू पहुँची, जो माचू पिच्चू पहुँचने के लिए सबसे अच्छी जगह मानी जाती है। मैं यहाँ मिनी ट्रेन स्टेशन पर मौजूद इस खूबसूरत होटल में ठहरी थी।

एक घंटा बीतने और दो कैपिचिनो पी लेने के बाद मैंने अपना फोन निकाला।

राधिका, जस्ट डू इट। ज़्यादा-से-ज़्यादा क्या होगा?

मैंने ब्रजेश को एक वॉट्सएप मैसेज भेजा।

'हाय।'

मैं आधे घंटे इंतज़ार करती रही। आखिरकार ब्लू टिक्स नज़र आईं। उसने मेरा मैसेज देख लिया था, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। मेरा दिल बैठने लगा।

'हाय, क्या चल रहा है?' कुछ मिनटों बाद उसका जवाब आया।

'आज तीन महीने हो गए। हमारी ऑलमोस्ट वेडिंग एनिवर्सिरी को।'

उसने एक स्माइली भेज दी।

'सॉरी अगेन।'

'हे, लाइफ में ये सब होता रहता है। क्या कर रही हो?'

'गुड। ट्रैवलिंग। मैंने कहा था कि मैं एक लंबे सफर पर निकल जाऊँगी?'

'राउंड द वर्ल्ड?'

'यस।'

'सर्कल पूरा हुआ?'

'ऑलमोस्ट। दो फ्लाइट और पकड़नी हैं।'

‘कूल। और तुम अभी कहाँ हो?’

‘पेरू। माचू पिच्चू देखने आई हूँ।’

‘नाइस।’

‘और तुम कहाँ पर हो?’

‘ऑफिस में, और कहाँ?’

‘ब्रजेश, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूँ।’

‘श्योर।’

‘मेरा अगला स्टॉप सैन फ्रांसिस्को है। मैं वहाँ तीन दिन बाद पहुँच रही हूँ।’

‘ओह, कूल।’

‘यस। क्या तुम एक कॉफी पीने मुझसे मिलोगे?’

उसने कुछ मिनटों तक जवाब नहीं दिया। मैंने एक और मैसेज भेजा :

‘अगर तुम नहीं आ सको या आना नहीं चाहो तो भी मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी।’

‘सॉरी, मुझे बॉस ने बुला लिया था। श्योर, तुम्हारे साथ कॉफी पीकर बहुत अच्छा लगेगा।’

‘रियली? ग्रेट।’

‘क्या हम मेनलो पार्क में मिल सकते हैं? इससे मुझे आसानी होगी।’

‘ऑफ कोर्स। जो भी तुम्हारे ऑफिस के करीब हो। तो बुधवार को मिलें?’

‘श्योर। मेनलो पार्क में फिल्ज कॉफी पर। चार बजे।’

फिल्म कॉफी,
मेनलो पार्क

मैं पाँच मिनट पहले पहुँच गई थी। फिल्ज कॉफी फ़ेसबुक कैम्पस के ठीक बाहर मौजूद है। मैंने खिड़की के पास वाली एक सीट ले ली और एक ऐसी कंपनी के ऑफिस को देखने लगी, जिसने दुनिया के डेढ़ अरब लोगों को जोड़ रखा है। मैंने ब्लू-व्हाइट चेक्ड ड्रेस पहनी थी, जो कैलिफोर्निया की धूप को रिफ्लेक्ट करती लग रही थी।

‘हाय।’ ब्रजेश ने मेरी टेबल के करीब आने पर कहा। मैं उठ खड़ी हुई और हमने एक छोटा-सा हग किया।

‘मुझसे मिलने के लिए थैंक्स।’ मैंने कुछ-कुछ सेल्फ-कांशियस होते हुए कहा।

‘नो इशूज़ मेरे शहर में स्वागत है।’ उसने कहा। उसने एक ब्लैक हुडी और ब्लू जीन्स पहन रखी थी। उसके कंधे ज़्यादा चौड़े लग रहे थे, जैसे कि वह पहले से ज़्यादा मज़बूत हो गया हो। उसने गले में फ़ेसबुक कॉर्पोरेट आईडी बैज पहन रखा था।

‘तुम्हें काम पर देखकर थोड़ा अजीब लग रहा है।’

‘हाँ, रिश्तेदारों के बिना। लेकिन तुम्हें देखकर मुझे लग रहा है, जैसे अभी कहीं से मेरी कोई आंटी बाहर निकलकर आ जाएगी।’

‘बिलकुल। मुझे भी यही लग रहा है कि बुआ और मासी कहाँ हैं?’

‘और मुझे किसी के पैर छूने की ज़रूरत महसूस हो रही है।’

हम दोनों हँस पड़े।

वह बरिस्ता काउंटर पर गया और दो कैपिचिनो ले आया। उसके बैठने के बाद मैं बोली।

‘हालाँकि कोई भी माफी नाक़ाफी ही होगी, फिर भी, एक बार फिर सॉरी। जिस एक इंडियन लड़की से तुम आखिरकार शादी करने आए, उसने ऐसा ड्रामा कर दिया।’

उसने अपने हाथ लहराते हुए कहा : ‘तुम्हें ऐसा कहने की ज़रूरत नहीं है। मैं लगभग उससे उबर चुका हूँ। लाइफ गोज़ ऑन। हालाँकि मैं लगातार सोचता रहा हूँ कि तुमने वैसा क्यों किया था।’

‘तो तुम्हें क्या लगा?’

‘यही कि तुम्हें या किसी भी लड़की को खुद को जानने के लिए किसी मर्द की ज़रूरत नहीं है। तुम्हें एक ऐसे इंसान की ज़रूरत है, जो तुम्हें सपोर्ट कर सके, इंस्पायर कर सके, या तुम्हें समझ सके। जो तुम्हें सबसे बेहतर बनने में मदद कर सके, फिर चाहे वह बैंकर बनना हो या माँ बनना या दोनों ही हो या और कुछ हो। और जब तक तुम ऐसा कोई इंसान खोज नहीं लेतीं, तब तक तुम सेटल होना नहीं चाहती।’

मैंने ब्रजेश की ओर देखा और मन ही मन उसकी समझ की सराहना की।

‘तुम्हें ऐसा लगता है?’

‘बिलकुल। और तुम केवल एक इंडियन गर्ल नहीं हो। तुम एक स्पेशल इंडियन गर्ल हो।’

मैं मुस्कराई और उसे एक थैंक्स का ईशारा किया।

‘फिर भी मैं खुद को दोष देती हूँ। बहुत ज़्यादा दोष। मैंने तुम्हें अपने रिलेटिव्स के सामने इतना बुरा महसूस कराया।’

‘ऐसा मत करो। एक्चुअली, मैं तो जब भी गोवा को याद करता हूँ तो मेरे रिलेटिव्स के बारे में सोचता तक नहीं।’

‘दैट्स गुड। तो तुम्हें कोई अफसोस नहीं?’

‘ऐसा तो नहीं। ओके, एक अफसोस है।’

‘क्या?’

‘तुम्हें पुलिस स्टेशन वाली वो रात याद है?’

‘ओह यस। जब हम अंजुना गए थे। वो इंस्पेक्टर। हमारे पैरेंट्स का वहाँ पर आना। टेरिबल।’

‘हाँ, और वो जो सब हमने किया था, वह मैं तुम्हारे बिना कभी नहीं कर पाता।’

‘वेल, मेरी सोहबत बुरी है। वो एक क्रेज़ी रात थी।’

‘यस, तो बात यह है कि उसके बाद मैं तुम्हारे साथ ऐसी ही एक क्रेजी ज़िंदगी बिताने के सपने संजोने लगा था। वो हो ना सका और यही मेरा अफसोस है।’ उसने कंधे उचकाए और मुस्करा दिया।

हमारी आँखें मिलीं। मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था। इसलिए मैंने यह विषय बदलना ही बेहतर समझा।

‘तुम पहले से ज़्यादा फिट लग रहे हो।’

‘ मैंने एक जिम ज्वॉइन कर लिया है। मैं वहाँ रोज जाने की कोशिश करता हूँ।’

‘हाँ, दिख रहा है।’

‘थैंक्स। तुम भी रिलैक्स लग रही हो। तुम्हारे चेहरे पर अब ज़्यादा शांति है।’

‘मेरे मन में भी। एक महीने की ट्रैवलिंग का यह फल है।’

‘यस, आई एम श्योर। तुम अच्छी लग रही हो।’

मैं मुस्करा दी। हमने अपनी कॉफी सिप की।

‘काम कैसा चल रहा है?’ मैंने पूछा।

‘बढ़िया। मेरा बिज़नेस आइडिया भी आगे बढ़ रहा है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स या आईओटी एप्स को डेवलप करने के लिए एक सर्विस प्रोवाइडर। आईओटी नेक्स्ट बिग थिंग है। जो भी कंपनी आईओटी एप्स बनाएगी, उसके लिए स्कोप है।

‘सो तो है।’

‘लेकिन वीसीज़ के लिए मुझे एक फॉर्मल बिज़नेस प्लान की ज़रूरत है, जो तकलीफ दे रहा है। उन्हें फाइनेंशियल मॉडल्स और प्रोजेक्शंस और क्या कुछ नहीं चाहिए।’

‘तुम चाहो तो मैं मदद कर सकती हूँ।’

‘रियली?’

‘यही मेरा काम है।’ मैंने कहा और मुस्करा दी।

‘ओह यस, ऑफ कोर्स।’

‘मुझे बिज़नेस को समझना होगा। और फिर उसे नंबर्स से भरी एक स्प्रेडशीट में बदल देना होगा। मैं पूरे समय यही करती रहती हूँ।’

‘मैं तुमसे डिटेल्स शेयर करूँगा। तुम यहाँ कितने समय के लिए हो?’

‘मेरे पास पाँच दिन की छुट्टियाँ और हैं। मैं एक-दो दिन में एक क्विक मॉडल बना सकती हूँ।’

‘ओह, यह तो बहुत कमाल होगा। क्या हम वीकेंड में इस पर काम कर सकते हैं?’

‘नो प्रॉब्लम।’ मैंने कहा।

हम चुपचाप अपनी कॉफी सिप करते रहे।

‘वैसे, वीकेंड में ही यहाँ अरिजित सिंह का एक कॉन्सर्ट भी है।’

‘ओह कूल। मुझे वो बहुत पसंद है।’ मैंने कहा। उसने मुझे कॉन्सर्ट के बारे में बताया। लेकिन मैं समझ नहीं पाई कि उसने इशारों-इशारों में मुझे अपने साथ कॉन्सर्ट में चलने को कहा है।

‘यस। तो?’ उसने कॉफी का एक और सिप लेते हुए कहा। उसके होंठों पर झाग का एक घेरा बन गया था।

मैं उसके होंठों की ओर इशारा किया।

‘क्या?’

मैं अपने फोन का कैमरा खोला, उसे सेल्फी मोड पर किया और उसे उसका चेहरा दिखा दिया।

‘ओह नो।’ उसने झेंपते हुए कहा। उसने एक टिशू से झाग वाली अपनी मूँछें साफ कर दीं।

‘ब्रजेश, क्या तुम मेरे साथ अरिजित सिंह के कॉन्सर्ट में चलोगे?’ मैंने धड़कते दिल से पूछा।

‘ऑफ कोर्स। मैं वही तो कहना चाह रहा था। तुम काम में मेरी मदद कर रही हो तो हम साथ में कॉन्सर्ट तो जा ही सकते हैं।’

‘मुझे तुम्हारे साथ जाकर बहुत अच्छा लगेगा।’

‘हाँ, और मुझे तुम्हारे साथ और वक्त बिताकर बहुत अच्छा लगेगा।’

हमारी आँखें मिलीं। उसने कॉफी का एक और सिप लिया। उसके होंठों पर झाग की एक और मूँछ बन गई। मैंने उसे फिर अपने फ़ोन के कैमरे से उसका चेहरा दिखाया। वह मुस्करा दिया। मैं भी मुस्करा दी। और फिर हम दोनों ठहाका लगाकर हँस पड़े।

Downloaded from Ebookz.in